चतुर्थ आवृत्ति : वि सं. २००३

मूल्य ४-४-०

प्रकाशक :
शंभुलाल जगशीभाई
गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय
गांधीरस्तो अमदावाद.

मुद्रक
गोविंदलाल जगशीभाई
श्री शारदा मुद्रणालय
पानकोरनाका : अमदावाद

सौ० श्रीअजवाळीने

वेचरदास.

पुनरपि

प्राकृतमार्गोपदेशिकानी आ चोथी आवृत्ति छे. बीजी आवृत्ति वखते में **कांइक** ए मथाळा नीचे कांइक लखेलुं, जे त्रीजी आवृत्तिमां पण एना ए ज रूपे छपायेलुं छे, केमके त्रीजी आवृत्ति ए बीजी आवृत्तिनुं मात्र नवुं संस्करण हतुं; परंतु आ चोथी आवृत्ति मात्र पहेलांनी आवृत्तिओनुं नवुं संस्करण ज नथी पण तेमां केटलाक वधारा अने सुधारा पण छे. तेथी हुं **कांइक** फरीने लखुं तो ते लेश पण अस्थाने नथी एम धारीने आ **पुनरपि** लखवा प्रेरायो छुं.

आ आवृत्तिनी पहेली विशेषता **अर्धमागधीनो परिचय** ए मथाळा नीचे लखायेल विचारमां छे. पंडित बेचरदासजीए आ परिचयमां लोकभाषा प्राकृत अने विद्वद्भाषा संस्कृत ए बन्नेनुं तुलनात्मक विवेचन कर्युं छे अने तेने उदाहरणो साथे प्रत्यक्षवत् कराववा प्रयत्न कर्यो छे. नामरूपोनां अने धातुरूपोनां उदाहरणो एटलां बधां छूटथी आप्यां छे अने ते, जोडणीना फेरफारो तेम ज गुजराती अर्थ साथे आपेलां छे के जेथी उभय भाषाना अभ्यासीने बहु मार्गदर्शक बने.

सामान्य प्राकृत भाषा देशभेदे अने प्रांतभेदे केवी केटला प्रमाणमां फेरफार पामती गई अने ते क्या क्या नामे प्रसिद्ध थती गई ते, तेमणे खुब स्पष्टताथी बताव्युं छे.

वर्तमान प्रांतिक भाषाओनुं भाषादृष्टिए अध्ययन करवुं होय तो ते माटे ते ते प्रांतनी अपभ्रंश भाषा उपरांत व्यापक अपभ्रंश

अने व्यापक प्राकृत तेम ज ते प्राकृतमांथी फुटेल ते ते प्रांतनी शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची आदि भाषाओनुं तलस्पर्शी ज्ञान आवश्यक छे. आवा ज्ञाननी पूरवणी करवाना प्रयत्न माटे आ **परिचय** प्रेरणादायी बने एवो छे तेथी मारी दृष्टिए कोलेजमां प्राकृत के संस्कृत शीखता कोई पण विद्यार्थीए आ **परिचय** वांची जवो घटे.

जाति अने धर्मना वाडामां दाखल थएल संकुचितताए ज्ञानना क्षेत्रमां पण लांबा वखतथी पगडंडो जमाव्यो छे ते, अत्यारना नवयुगीन ज्ञानप्रदेशमां पण कांइक अंशे काम करी रह्यो होय तेम कोलेज अने युनिवर्सिटिना क्षेत्रमां काम करनार अने भणनार विद्यार्थीओनुं मानस जोता देखाई आवे छे.

ज्ञान ए शुद्ध ज्ञाननी दृष्टिए ज मेळववुं जोईए ए वात घणी वार गौण बनी जाय छे तेथी मात्र विद्यार्थीओमां ज नहीं पण अध्यापको सुद्धामां ज्ञाननी सीमा अने रुचि एकदेशीय जोवामां आवे छे.

सांप्रदायिक लोकोनी हिलचालथी प्राकृत अने पालि भाषाए स्कूल तेम ज कोलेजमां स्थान मेळव्युं विद्यार्थीओने ए भाषा लेवामां वधारे सरळता देखाई. शिक्षकोने अने अध्यापकोने मात्र विद्यार्थीओने संतोषवा तेम ज सोंपेलुं काम बजाववा सिवाय ज्ञानदृष्टिए ए शिखववामां वधारे कांइ महत्त्व छे एम भाग्ये ज देखायुं. परिणामे ज्यां त्यां मोटे भागे विद्यार्थीओ प्राकृत पालि पाछळ गाळेल समय नकामो लेखता देखाय छे.

ए ज रीते प्राकृत पालि शिखवनार शिक्षको के अध्यापको सुद्धामा ए विषयनो ऊंडो रस भाग्ये ज होय छे अने तेथी ते विषयनुं ज्ञान पण साव अधूरुं अने लंगडुं होय छे. आनी छाप विद्यार्थीओ ऊपर पड्या विना रहेती नथी. आ स्थिति सुधारवी होय अने हजारो नवलोहिया विद्यार्थीओनां समय तथा शक्तिने सफळ बनाववा होय तो शिक्षणखाताना सुकानीओए फरी योग्य रीते विचार करवो घटे छे.

हुं आ स्थळे ते विशे कांइक सूचन करवा इच्छुं छुंः

पहेलुं तो ए के, जे संस्कृत शीखेल न होय तेने प्राकृत के पालि लेवानी छूट न होवी जोईए. चोथा इंग्लिश धोरणथी प्राकृत पालि लेवानी छूट होवा छतां व्यवहारमां मोटे भागे छट्ठा धोरणथी प्राकृत पालि लेवानुं देखाय छे पण मारी दृष्टिए आटलुं पूरतुं नथी. छट्ठा धोरण सुधी संस्कृत शीख्यो होय ते ज मेट्रिकमां प्राकृत ले तो एनी भूमिका कांइक योग्य गणाय अने तो ज शीखनार अने शिखवनारने रस पडे. तेम ज शीखेलुं कांइक सार्थक बने. अने ए ज रीते कोलेजमां प्राकृत पालिने लेनार माटे पण संस्कृत ज्ञान अनिवार्य गणावुं जोईएः ओछामां ओछुं मेट्रिक सुधी संस्कृत शीखेल होय ए ज कोलेजमां प्राकृतपालि शीखवानो अधिकारी लेखावो जोईए अने साथे साथे दरेक चडता क्लासमां प्राकृत के पालि ले तेने माटे अमुक अंशे पण संस्कृत शीखवुं अनिवार्य होवुं जोईए

ए ज रीते जेओ मुख्यत्वे कोलेजमां सस्कृत शीखता होय तेमने

माटे पण अमुक अंशे प्राकृत–पालिनुं अध्ययन अनिवार्य लेखावुं जोईए. ज्यारे नाटकोमां प्राकृत आवे ज छे अने केटलांक नाटको तो प्राकृतप्रचुर ज छे तो ए संस्कृत नाटको शीखनार अगर शिखवनार ठीक ठीक प्राकृत न जाणे अने मात्र साचीखोटी के अधूरी संस्कृत छायाथी काम चलवी ले ए युनिवर्सिटिना आत्माने न समजवा बराबर छे.

खरी रीते अध्यापकोनी भूमिका ज उन्नत करवी घटे: संस्कृतना अध्यापकनी पसंदगीमां ज प्राकृत अने पालिभाषानुं अध्ययन अनिवार्य लेखावुं जोईए अने ए ज रीते प्राकृत के पालि भाषाना अध्यापकोनी पसंदगीमां पण संस्कृत भाषानुं ठीक ठीक अध्ययन अनिवार्य लेखावुं जोईए. आम थाय तो ज एक भाषानो शिक्षक बीजी भाषानां उच्चारणो, अर्थो वगेरेनो मर्म समजी शके अने ज्ञाननी दृष्टिए शिक्षणनुं वातावरण उन्नत करी शके.

महाभाष्यकार पतंजलि, वाक्यपदीयकार भर्तृहरि अने मीमांसक धुरीण कुमारिले जे पोतपोताना क्षेत्रमा काम कर्युं छे तेनुं मूल्य शाश्वत छे पण ए जमानामां सर्वव्यापी बनेल सांप्रदायिकताना संस्कारोथी एओ मुक्त रही शक्या नहीं अने प्राकृत के पालि भाषाना रूढ धार्मिक उपासकोए जे भूल पोतपोताना क्षेत्रमां करेली ते भूल ते संस्कृतना असाधारण विद्वानोए पण करी अने संस्कृत सिवायनी भाषाओने अपभ्रष्ट के तुच्छ भाषा कही उवेखी अने तिरस्कारी. एक बाजु ते अने तेमनी अनुगामिनी जनता प्राकृत पालि आदि लोकभाषाथी मुक्त रही शके तेम न हतुं अने बीजी बाजु ते जनता-

नो अणगमो ते भाषाओ प्रत्ये एटलो ज पोषाये जतो हतो. एनुं परिणाम मानवता अने ज्ञाननी दृष्टिए अनिष्ट आव्युं छे; पण हवे आ युगमां ज्ञानप्रदीप साम्प्रदायिक रह्यो नथी तेथी शुद्ध ज्ञाननी दृष्टिए ज शिक्षकोए अने अध्यापकोए विचार करवो घटे; केमके हवे तेओ कोई रूढ धर्मसंस्थामां काम करता नथी.

पंडितजीए संस्कृत प्राकृत भाषानां रूपोनी तुलना करतां अवेस्तानी भाषानां रूपोनी पण थोडीक तुलना करी छे ते ए शिखववा खातर के ज्ञानदृष्टिए संस्कृत अने प्राकृत भाषाओनो अभ्यास करावनार शिक्षकोनुं तेम ज अध्यापकोनुं ध्यान अवेस्ताना अज्ञात प्रदेश तरफ जाय अने तेमनो ज्ञानप्रदेश विस्तरे.

घणा लोको एम धारता होय छे के प्राकृत भाषामां मात्र धार्मिक साहित्य ज लखायेलुं छे तेथी ते भाषामां विषयवैविध्य नथी. ए भ्रम दूर करवा पृ० ३८ ऊपर प्राकृतमां लखायेल अनेक विषयोनां नामोनी एक टुंकी यादी आपवामां आवी छे. मने लागे छे के छेवट बीजा भागना अंतमां उपर्युक्त यादीमां सूचवायेल विषयो ऊपर लखायेल होय एवा साहित्यनी टुंकी नामावळी आपवामां आवे तो जिज्ञासुओने ते ते विषयोना ग्रंथो विशे कांइक जाणवानुं मळे अने तेवा ग्रंथो मेळववानु पण सुलभ बने.

आ आवृत्तिनी बीजी एक विशेषता पृष्ठ ४९ थी शरु थता शब्दरचनाना प्रकरणमां छे. आ प्रकरणमां पंडितजीए स्वर, व्यंजन

अने संयुक्ताक्षरना फेरफारोने संपूर्णपणे दर्शावेल छे पण ते, एवी री
के, भणनारने वधारेमां वधारे सरळ पडे.

आचार्य हेमचंद्रे आवा फेरफारो विशे जे कांई लखेलुं छे तेम
पूर्वना प्राकृत वैयाकरणोए दर्शावेला बधा ज फेरफारोनो समावे
थई जाय छे.

पंडितजीए शब्दरचनाना प्रकरणमां आचार्य हेमचंद्रे दर्शावे
बधा ज फेरफारो वर्णवेल होई तेमां हेमचंद्र पहेलानां प्राकृत वैया
करणोना कथनोनो समावेश तो थई ज जाय छे परंतु विशेषत
क्रमनी छे:

शब्दरचनामां स्वीकारेलो क्रम वधारे सुगम छे.

अत्यारे आ चोथी आवृत्तिनो प्रथम भाग ज मागणीने जलद
पहोंची वळवानी दृष्टिए प्रसिद्ध थाय छे पण एनो बीजो भाग जलद
प्रसिद्ध थवानो छे. तेमां त्रीजी आवृत्ति करतां एक विशेषता ह
अने ते ए के ज्यारे त्रीजी आवृत्तिमा प्राकृत शब्दोनो गुजराती अ
साथे कोश आपेल छे त्यारे प्रस्तुत आवृत्तिमां गुजराती शब्दोने
तेना प्राकृत पर्याय साथे पण कोश हशे.

हुं धारु छुं के प्रस्तुत आवृत्ति विद्यार्थीओने तेम ज शिक्षको
वधारे उपयोगी थशे.

आझादहिन्ददिनोत्सव
ता १६-८-४७
अमदावाद

सुखलाल

प्रस्तावना

प्राकृतमार्गोपदेशिकानी आ चोथी आवृत्ति छे. चोथी आवृत्ति थतां सारो एवो समय वीत्यो छे छतां विद्यार्थीवर्ग अने अर्धमागधीनो वीजो अभ्यासी वर्ग हवे ठीक ठीक वधतो चाल्यो छे ए हकीकत संतोषजनक छे.

प्रथमावृत्ति करतां वीजी आवृत्तिमां विशेष सुधारो करेलो अने आ चोथी आवृत्तिमां वळी एथी य विशेष सुधारो करेलो छे.

आ आवृत्तिमां विद्यार्थीने उपयोगी एवुं प्राकृतभाषाने लगतुं आखुं य व्याकरण लगभग समावी देवामां आव्युं छे अने तेमां हेमचंद्रे जे जे हकीकत पोताना व्याकरणमां नोंधेली छे ते लगभग बधी ज समावी दीधेली छे.

प्रारंभमां अर्धमागधी भाषानो सविस्तर परिचय कराववा २९ पानां रोकेलां छे तेमां अर्धमागधी साहित्यमां खेडायेला विषयोनो पण नामनिर्देश करेलो छे अने प्रसंगवशात् प्रांतिक प्राकृतोनो अने वर्तमान लोकभाषाओनो तुलनात्मक परिचय पण संक्षेपथी करावेलो छे तथा जे विशे कोई पण प्राचीन के अर्वाचीन गुजरातना वैयाकरणे प्राकृत व्याकरण लखवाना प्रसंगे कशी नोंध लखी नथी ते अवेस्तानी भाषा विशे पण थोडी तुलनात्मक नोंध लखेली छे.

आम आरंभनां २९ पानां अर्धमागधीना परिचय माटे पूरां थयां पछी वर्णविज्ञाननी समजुती आपेली छे अने त्यार बाद व्याकरणनो भाग आपेलो छे. वर्णविज्ञाननी समज विशेष स्पष्टताथी उदा-

-हरण साथे आपेली छे. व्याकरणनो भाग शब्दरचनाना मथाळा नीचे -शब्दकोशनी पेठे अकारादि क्रमे योजेलो छे. जेमके, प्रथम 'अ'ना फेरफारो. पछी 'आ'ना फेरफारो वगेरे. स्वरना बधा फेरफारो क्रमवार बताव्या पछी व्यंजनना अने संयुक्त व्यंजनना पण फेरफारो ए ज क्रमे नोंधी बतावेला छे. आ बधा फेरफारो क्रमवार आपेला होवाथी अने उदाहरणो साथे समजावेला होवाथी विद्यार्थी तेमने घणी सरळताथी याद राखी शकशे. आ उपरांत संधिनुं एक खास नवुं प्रकरण अने समासनुं पण तद्दन नवुं प्रकरण आ आवृत्तिमां वधारेलुं छे. समासना प्रकरणमां समासनो उद्भव अने समासनी विशेषता पण उदाहरण साथे समजावेलां छे अने प्रत्येक समासने समजवा माटे सारां एवां उदाहरणो पण नोंधी बताव्यां छे.

आटलो उमेरो आ नवी आवृत्तिमां कर्या पछी तेनो प्रथम भाग पूरो करी पछी बीजा भागमां पाठमाळानी पद्धतिए धातुओ, नामो वगेरे आप्या छे, तेमना रूपोने समजवानी तथा साधवानी रीत समजावेली छे तथा भाषाना अभ्यासने दृढमूळ करवा गुजरातीनां अने अर्धमागधीनां वाक्यो अनुवाद माटे आपेलां छे पहेलां करतां आ आवृत्तिमां वाक्यो थोडां ओछा करेलां छे अने नामनां अने धातुनां रूपो पण उपयोगितानी दृष्टिए ज जणावेलां छे, कोई स्थळे टिप्पणमां वधारे रूपो पण सूचवेलां छे.

रूपोनी निष्पत्तिनुं जे लखाण भाषाशास्त्रनी दृष्टिए आगली आवृत्तिमां हतुं तेने आमां कमी करेल छे. शब्दना एटले नाम के धातुना जे अर्थो आपेला छे ते बधामां तुलनात्मक पद्धतिने ज

स्वीकारी छे एटले 'धण–(धन)–धन' एम आपेलुं छे पण 'धण–(धन)–लक्ष्मी' एम नहीं अर्थात् सर्वत्र समान संस्कृत पर्याय तथा गुजराती अर्थ पण समान शब्दमां ज आपेला छे एथी विद्यार्थी एने सरळताथी स्मृतिमां राखी शकशे अने तेने एम पण नहीं लागे के ते कोई अजाणी भाषा ज शीखी रहेल छे.

भाषाशास्त्रनी दृष्टिए लखेलुं लखाण विद्यार्थी करतां अध्यापकने सारु विशेष उपयोगी छे एटले वळी नवा संस्करणमां एनो समावेश विद्यार्थीनी रुचिने बाध न आवे ए रीते जरूर करवानो छे.

शब्दरचनाना मथाळामां प्राकृतना बे ज भेद स्वीकारेला छे अने एम करीने आ एक नवी ज प्रणाली पाडवानी दृष्टि राखेली छे.

जुनी परंपरामां प्राकृतना त्रण भेद मानेला छेः तद्भव, तत्सम अने देश्य. आमांनो 'तद्भव' भेद अहीं स्वीकार्यो नथी परंतु एनो समावेश 'तत्सम'मां ज करेलो छे. 'प्राकृतभाषा संस्कृतभाषामांथी ज जन्मेली छे' एवो भ्रम उक्त 'तद्भव' भेदने लीधे ज फेलायेलो छे ए भ्रमनो निरास करवा ज तेने अहीं स्वीकार्यो नथी.

पाछळ शब्दकोश अने विविध विषयवाळा अर्धमागधी साहित्यग्रंथोनां नामोनी यादी आपेली छे. जेथी अध्यापकोने अने विद्यार्थीओने अर्धमागधीमां लखायेला साहित्यनी विपुलतानो थोडो ख्याल आवी शके.

भणाववानो क्रम

जे विद्यार्थी सारुं संस्कृत जाणतो होय अथवा सारुं साहित्यिक गुजराती जाणतो होय अने व्याकरणना उपयोगी विषयोथी सुपरि-

चित होय तेने अध्यापके प्रारंभनुं शब्दरचनानुं प्रकरण क्रमे क्रमे शिखववुं अने संस्कृतमांथी अर्धमागधी रूपांतरो कराववानो महावरो कराववो अने त्यार बाद बीजा भागने शरू करवो तथा तेमां आपेलां तमाम वाक्योनो अनुवाद विद्यार्थी पासे जरूर कराववो.

जे विद्यार्थी संस्कृत जाणतो नथी अने गुजराती पण साधारण जाणे छे तेने माटे बीजो भाग ठीक रहेशे अने एवो विद्यार्थी बीजो भाग पूरो कर्या पछी पहेलो भाग वाचशे तो तेने वधारे सरळताथी प्रथम भागनी समजण पडशे.

आ पुस्तकने भणवानी दृष्टिए जे कोई शीखशे तेने त्रणेक महिनामां तो जरूर अर्धमागधी आवडी जवुं जोईए. आ पुस्तक द्वारा ए जातनो अखतरो थयेलो छे अने ते बराबर सफळ पण थयेल छे. जो कोई विद्यार्थी केवळ पास थवानी दृष्टिए ज आ चोपडीने वाचशे तो कदाच ते, एटलुं ज मेळवशे पण तेने भाषानो स्पर्श जोईए तेवो नहीं थाय.

माननीय सुहृद्वर प्रज्ञाचक्षु पंडित सुखलालजीए आ आवृत्तिमां पुनःपि लखी आपेल छे अने आगली आवृत्तिमां कांइक लखी आपेलुं आ रीते तेओ मारा प्रयासने उत्तेजित करता रह्या छे ते माटे तेमनो हार्दिक आभार मानवानुं वीसराय तेवुं नथी.

'पुनरपि'मां पंडितजीए अर्धमागधीना अभ्यास माटे विद्यार्थीनी अने शिक्षकोनी तथा अध्यापकोनी जे जातनी योग्यता विशे चर्चा करेली छे ते तद्दन सुसंगत अने अत्यंत महत्त्वनी छे. शिक्षण-विभागने संभाळनारा आपणा आगेवानो ए सूचना तरफ लक्ष आपे

एवी आशा अस्थाने नथी. खरी वात तो ए छे के हाल जे रीते भाषा शिखववानी पद्धति चालु छे ते सविशेष खामीवाळी छे. जे वर्गथी बीजी भाषा शिखवाय छे ते वर्गना छात्रोने तेमनी मातृभाषाना व्याकरणनुं घणुं सुंदर तलस्पर्शी ज्ञान थाय ए ज रीत अखत्यार करवी जोईए अने बीजी प्राचीन वा अर्वाचीन भाषानुं ज्ञान तुलनात्मक रीते अपावुं जोईए. तदुपरांत ते माटेनो जे अभ्यासक्रम छे ते सविशेष खामीवाळो छे. अभ्यासक्रममां शीखवाती बीजी भाषाना व्याकरणज्ञानने अग्रपद अपावुं जोईए अने परीक्षामां पण व्याकरणज्ञानने ज महत्त्व अपावुं जोईए तथा अभ्यासक्रममां एवां पुस्तको योजावां जोईए के चडता ऊतरता वर्गमां तेमनो एकबीजानो परस्पर संबंध सचवातो होय तथा मेट्रिक पछीना वर्गोमा पण व्याकरणना ज्ञान ऊपर सविशेष भार अपावो जोईए अने परीक्षामां पण व्याकरणना ज्ञानने ज अग्रस्थाने गणवुं जोईए कोई पण जुनी भाषाने शिखववा माटे अने तेना ऊपर सारो अधिकार विद्यार्थी मेळवी शके ते माटे केवळ साहित्य वंचाववाथी कशुं ज वळतुं नथी ते माटे तो एकबीजी समानकोटिनी भाषानुं तुलनात्मक रीते शिक्षण अपावुं जोईए साथे ज व्याकरणने पण सचोट रीते समजाववु जोईए अने आटलुं थया पछी साहित्यनो अभ्यास करावी शकाय तो भाषा शीखवा -शिखववानो प्रयास लेखे गणाय. वर्तमानमा तो गुजराती लेनार, संस्कृत लेनार के पालि-अर्धमागधी लेनार विद्यर्थीने नथी खबर होती व्याकरणनी-विभक्तिओनी के तेमना उपयोगनी. श्लोक वा गाथानो पदच्छेद पण विद्यार्थी करी शकतो नथी, अरे ! शुद्ध वाचन पण

करी शकतो नथी—आ स्थिति भाषाओना अभ्यासनी छे. माटे विद्यार्थीआलमने आमांथी उगारवी होय अने तेमने भारतीय संस्कृतिनुं पय पावुं होय तो पंडितजीए जे सूचन करेलुं छे तेने शिक्षणना कर्णधारोए पीछानवु जोईए. वळी ते कर्णधारो विद्यार्थी पास थाय छे एटलुं ज जाणीने संतोष न पामे परंतु विद्यार्थीने जे विद्या आपेली छे ते, तेने स्पर्शेली छे के नहीं ते तरफ पण लक्ष्य आपे. मने महाविद्यालयमां शिखववानो घणो अनुभव छे एटले ज अहीं विद्यार्थीओ अने एमना अभ्यासक्रम माटे थोडी चर्चा करी लीधी छे. बाकी ए विशे विशेष ऊहापोह थवो जोईए अने विद्यार्थीओ ज्ञानना उच्च भूमिका सुधी पहोंचे ए माटे विश्वविद्यालये चोक्कस लक्ष्य आपवुं जोईए.

जेम जेम प्राचीन भाषाओनो अभ्यास वधशे तेम तेम वर्तमान भाषाओना साचा इतिहासनुं अने तेमनी व्युत्पत्तिनुं प्रामाणिक ज्ञान वधशे. मारी आ चोपडी ए रीते भाषाना अभ्यासीने सहायता करी शकशे तो मने आनंद थशे.

जे जे अभ्यासी भाई बहेनोए मारी आ प्रवृत्तिमां रस लीधो छे तेमनो बधानो हुं ऋणी छुं अने खास करीने गूर्जरग्रंथरत्नकार्यालयना मालिक अने मारा आत्मीय भाई शंभुलाल अने भाई गोविंदलाल मारी आ प्रवृत्तिमां रस धरावे छे एटले मारे सारु ते बन्ने बंधुओ अभिनंदनीय छे.

भारतीनिवास सोसायटी
अमदावाद–६
ता २९–८–४७

वेचरदास

पितरौ वन्दे।

प्राकृत–मार्गोपदेशिका

[१]

अर्धमागधीनो परिचय

अर्धमागधीनो परिचय मेळवतां पहेलां व्यापक प्राकृत, प्रांतिक प्राकृत अने संस्कृत (संस्कृत एटले सुधारेली) भाषाना साधारण स्वरूपनो अने तेमनी वच्चेना संबंधनो सामान्य परिचय मेळववो जरूरी छे.

भाषानी मुख्य बे जात छेः बोलचालनी भाषा अने साहित्यनी भाषा. बोलचालनी भाषाना पण बे प्रकार छेः जनतानी भाषा अने पंडिताउ[1] भाषा.

साहित्य, जनतानी भाषामां होय छे अने पंडिताउ भाषामां पण होय छे.

जनतानी भाषानुं नाम प्राकृत भाषा छे. 'प्राकृत' शब्दनुं मूळ 'प्रकृति'मां छे. प्रकृति एटले स्वभाव, जे भाषा प्रकृतिसिद्ध होय—स्वभावसिद्ध होय—वगर भण्ये बोली शकाती होय—सांभळी सांभळीने जे भाषा जन्मसिद्ध—सहज थई शकती होय तेनु नाम प्राकृत.

प्राकृत, ए लोकभाषानुं व्यापक नाम छे आपणा आखा

---

१ जे भाषाने पंडितो ज एटले साक्षरो—भणेला गणेला लोको—ज पोतानी खास प्रकारनी रीतथी बोले वा लखे ते भाषानु नाम पंडिताउ भाषा.

खंडमां–समग्र भारतवर्षमां–हिमालयथी सेतुबंध रामेश्वर सुधी उत्तर-दक्षिणमां अने मणिपुरथी द्वारका सुधी पूर्वपश्चिममां जे भाषाने आबाळ-गोपाळ सौ कोई समजतुं होय तेनुं नाम व्यापक प्राकृत.

व्यापक प्राकृतनां अने प्रांतिक प्राकृतनां बीजां नामो पण प्रसिद्ध छे: राष्ट्रभाषा, देशभाषा, लोकभाषा, जनपदभाषा अने साधारणभाषा वगेरे अने सुधारेली संस्कृतभाषानां आ नामो जाणीतां छे: संस्कृतं, देवभाषा, गीर्वाणवाणी वगेरे. अहीं ए याद राखवुं जरूरी छे के संस्कृत भाषानां जे जाणीतां नामो ऊपर जणाव्यां छे तेमांनुं एक पण नाम संस्कृतने लोकभाषा तरिके सूचवे एवुं नथी.

भरतखंडमां अनेक प्रांतो छे. ते ते प्रांतोमां पण जे भाषा आम-जनतानी छे ते पण प्राकृत ज कहेवाय प्रांतनी जनतानी भाषा प्रांतिक प्राकृत कहेवाय. अने समग्र राष्ट्रनी भाषा व्यापक प्राकृत कहेवाय. व्यापक प्राकृत अने प्रांतिक प्राकृत वच्चे विशेष भेद नथी उलटुं ए बेनी वच्चे गाढ संबंध छे ए ध्यानमां राखवानुं छे. आ बाबत उदाहरण साथे हवे पछी समजाववामां आवशे.

अहीं आ हकीकत खास याद राखवानी छे के व्यापक प्राकृत अने प्रांतिक प्राकृत लोकभाषा छे–आमजनतानी भाषा छे–ए भाषा-ओने आबाळगोपाळ समजी शके छे अने बोली शके छे. एमने शीखवा माटे खास कोई शाळापाठशाळामां जईने अभ्यास करवानी जरूर रहेती नथी अने ए लोकभाषामां विशेष ओज, तेज, मधुरता,

---

१ अमरकोशकारे 'संस्कृत' शब्दनो अर्थ 'कृत्रिम–बनावटी' नोंध्यो छे

सचोटता वगेरे अनेक गुणो रहेला छे ए पण सिद्ध हकीकत छे त्यारे जे पंडिताउ भाषा छे तेने समजतां तथा बोलतां शीखवा माटे विशेष आयास साथे अभ्यास करवो पडे छे.

पंडिताउ भाषा जूनी अने नवी एम बे प्रकारनी छेः ऊपर 'देवभाषा' वगेरे नामथी जे पंडिताउ भाषाने ओळखावी छे ते जूनी पंडिताउ भाषा छे अने वर्तमानमां जे भाषा साक्षरी गुजराती, साक्षरी हिन्दी, साक्षरी बंगाळी अने साक्षरी मराठीने नामे ओळखाय छे ते बधी नवी पंडिताउ भाषामां समाय छे. आ पुस्तकमां ज्या त्यां पंडिताउ भाषारूपे जूनी पंडिताउ भाषा एटले संस्कृतने समजवानी छे.

लोकभाषा पण जूनी अने नवी एम बे जातनी छे· ऊपर जणावेली लोकभाषाने एटले व्यापक प्राकृतने जूनी लोकभाषारूपे ओळखवानी छे अने शौरसेनी[१], मागधी, पैशाची तथा चूलिका पैशाची वगेरे प्रांतिक प्राकृत भाषाओने पण जूनी लोकभाषामां गणवानी छे अने वर्तमानमां जे आमजनतानी गुजराती भाषा छे, आमजनतानी हिन्दी भाषा छे, आमजनतानी बंगाळी भाषा छे अने आमजनतानी मराठी भाषा छे तथा बीजी पण जे ते आमजनतानी वर्तमान भाषाओ छे ते बधीने नवी लोकभाषाओमां समावानी छे.

अहीं ए याद राखवुं जरूरी छे के अर्वाचीन पंडिताउ भाषानो विशेष संबंध प्राचीन पंडिताउ भाषा साथे छे अने अर्वाचीन लोकभाषानुं मूळ उपादान प्राचीन लोकभाषामां छे एटले वर्तमान लोक-

---

१ शौरसेनी वगेरेनो परिचय हवे पछी आवनार छे.

भाषाओनां इतिहास, क्रमविकास तथा व्युत्पत्ति वगेरेना अभ्यास माटे जूनी लोकभाषाओना सविशेष अभ्यासनी खास जरूर छे, केवळ पंडिताउ भाषाना अभ्यासथी लोकभाषानो मर्म पामी शकातो नथी.

पंडितलोको राजसभाओमां, शास्त्रचर्चाओमां, लग्नविवाहनी विधिओमां तथा यज्ञयागादिक धार्मिक गणातां अनुष्ठानोने प्रसंगे वा एवा ज बीजा केटलाक विशिष्ट प्रसंगो ऊपर ए पंडिताउ भाषानो उपयोग करता आव्या छे, आमजनता तो ए पंडिताउ बोलीने भाग्ये ज समजी शकती, एथी एने मन ए बधा प्रसंगो केवळ अर्थहीन हता एटलुं ज नहीं पण भारे बोजारूप हता अने अत्यारे पण एम ज छे.

पंडितो पोताना घरमां पोतानां संतानो साथेना व्यवहारमां के बजारु व्यवहारमां तो लोकभाषानो ज उपयोग करता आव्या छे.

तात्पर्य ए के मानवी सभ्यता शरू थई त्यारथी आमजनता अने पंडितजनता लोकभाषानो उपयोग करती आवी छे अने पंडिताउ भाषानो उपयोग केवळ पंडितवर्ग सुधी ज पहोंचेलो छे

लोकभाषानुं स्वरूप हमेशां विकासमान रह्या करे छे, जेम जेम समस्त प्रजानां उच्चारण करवानां साधनोमा फेरफार थया करे छे वा समस्त प्रजानी नवी नवी प्रवृत्तिओ विकस्या करे छे तेम तेम जनसाधारणनी लोकभाषानां उच्चारणो बदलाया करे छे, तेमां नवा नवा अर्थवाहक शब्दो उमेराया करे छे त्यारे पंडिताउ भाषानु स्वरूप भाग्ये ज बदलाय छे, पंडितोए ज ए भाषाने अमुक नियमो द्वारा जकडीने बांधी राखेली छे.

भाषाना आ बन्ने प्रवाहो निरंतर साथे साथे ज वह्या करे छे,

एथी पंडिताउ भाषा ऊपर लोकभाषानी असाधारण असर रहेती आवी छे अने लोकभाषा ऊपर पण पंडिताउ भाषानो थोडो घणो प्रभाव पड्या सिवाय रहेतो नथी—लोकभाषा दरिद्रनारायणनी प्रतिनिधि छे अने पंडिताउ भाषा वैभवशालीओनी प्रतिनिधि छे.

भाषानुं उपादान शब्दो अने तेने लगता प्रत्ययो (नामना के क्रियापदना प्रत्ययो) वगेरे छे. प्राचीन लोकभाषा प्राकृतनुं अने पंडिताउ भाषा संस्कृतनुं ए उपादान एकदम सरखुं छे, केवळ तेनुं उच्चारण ते बन्ने भाषामां थोडुं जुदुं जुदुं जणाय छे.

प्राचीन लोकभाषा.	प्राचीन पंडिताउ भाषाः	अर्थ
देव	देव	देव
चन्द्र, चंद, चन्द	चन्द्र	चांदो, चंदर
राजा, लाजा, राया, राय	राजा	राजा, राय
निगंठ, निगंथ, नियंठ	निर्ग्रन्थ	निर्ग्रंथ[४]

४ ग्रंथ एटले गांठ बांधवा जेवी वस्तु, जेनी पासे एवी कोई वस्तु नथी ते निर्ग्रंथ एटले अपरिग्रही मानव.

प्राचीन लोकभाषाः	प्राचीन पंडिताउ भाषाः	अर्थ
प्रिय	प्रिय	प्रिय
पिय		
पुरुस	पुरुष	पुरुष
पुरिस		पुरष
पुलिस		
इन्द्र	इन्द्र	इन्द्र
इन्दर		इन्दर
इंन्द		
उट्ट	उष्ट्र	ऊंट
खत्तिय	क्षत्रिय	खत्री
संसार	संसार	संसार
पुरोहित	पुरोहित	पुरोहित
पुरोहिअ		
अग्गि	अग्नि	अग्नि
अग्गिनि		अगन
गिनि		आग
अगणि		
कल्याण	कल्याण	कल्याण
कल्लाण		
पुप्फ	पुष्प	पुष्प
		पुहप—फूल

	(प्रत्ययवाळां नामरूपो)		अर्थ
१[१]	देवो	देवः	देव
	देवा	देवाः	देवो
२	देवं	देवम्	देवने
	देवा	देवान्	देवोने
३	देवेन देवेण देवेणं	देवेन	देववडे
	देवेभि देवेहि	देवेभिः देवैः	देवो वडे "
६	देवस्स	देवस्य	देवनुं
	देवान देवाण देवाणं	देवानाम्	देवोनुं
५	देवा	देवात्	देवथी
	देवत्तो	देवतः	"
७	देवे	देवे	देवमां
	तंसि तम्मि	तस्मिन्	तेमां
	देवेसु देवेसुं	देवेषु	देवोमां

---

१ आ आंकडा विभक्तिनी [illegible]

	(प्रत्ययवाळां क्रियापदरूपो)		अर्थ
[6] तृ. १	भेदति	भेदति	ते भेदे छे
	हनति हणइ	हनति	ते हणे छे
	धाति	धाति	ते धारण करे छे
	मरते	मरते	ते मरे छे
[7] सं० कृ०	वंदित्ता	वन्दित्वा	वांदीने
[8] हे० कृ०	कत्तवे कातवे करित्तए	कर्तवे	करवा माटे

आ रीते मानवजातनी सभ्यताना प्रचारनी साथे आ बन्ने जातनां उच्चारणोनो प्रवाह चालतो आवे छे. आमां अमुक ज प्रकारनुं उच्चारण पूर्वनु-पहेलानुं अने अमुक ज प्रकारनुं उच्चारण पाछलुं-पछीनुं एम ठरावी शकाय एम नथी अने एथी ज ए जुदां जुदां उच्चारणो वच्चे कोई रीते कार्यकारणसंबंध बतावी शकाय एम नथी एटले 'प्राकृत भाषामाथी संस्कृत भाषा जन्मेली छे' वा 'संस्कृत भाषामाथी प्राकृत भाषा जन्मेली छे' एवुं विधान सर्वथा अनुचित छे अने युक्तिरहित छे ए हकीकत दरेक विद्यार्थीए खास याद राखवानी छे.

वळी, ऊपर जणावेलां उच्चारणोमां अमुक ज उच्चारण शुद्ध छे अने अमुक उच्चारण अशुद्ध छे एवी कल्पना पण थई शके एम नथी.

६ तृतीय पुरुष एकवचन ७ संबंधकभूतकृदन्त ८ हेत्वर्थकृदन्त

चा अमुक ज उच्चारण आदरणीय छे अने अमुक उच्चारण अनादरणीय छे एवी कल्पना पण करी शकाय एम नथी.

भाषा अर्थने सूचववा वपराय छे एटले अर्थसूचक भाषामात्र व्यवहारदृष्टिए शुद्ध छे अने आदरणीय छे एथी अमुक ज भाषा शुद्ध छे, अमुक ज भाषा पूजनीय छे वा अमुक ज भाषा शिष्टभाषा छे ए वधी कल्पनाओ सर्वथा मिथ्या छे ए मुद्दो बराबर याद राखवानो छे. आपणो संशोधकशिरोमणि माननीय कवि अखो आ बाबत आ प्रमाणे लखी गयेल छे:

' भाषाने शुं वळगे भूर, जे रणमां जिते ते शूर;
संस्कृत बोले ते शुं थयुं, कांइ प्राकृतमांथी नाशी गयुं.
बावननो सघळो विस्तार, अखा त्रेपनमो जाणे पार. २४६
संस्कृत प्राकृत जे वडे जाण, जेम काष्ठ विशे रह्यो भाथा कणे,
ते छोड्यां वाणो नव अर्थ, तेम प्राकृत विना संस्कृत ते व्यर्थ.
बधा दाम वेपारी लखे, अखा व्याज नो य छुटा पखे " २४७

—(बृहत्काव्यदोहन भाग १, अखानी कृति)

घणा प्राचीन समयमा भाषाना आ बन्ने प्रवाहो पोतपोताना क्षेत्रमा समान बळे प्रवर्तेला छे अने पछी पण सगा भाईनी पेठे प्रवर्तता हता.

ए बे प्रवाहो वच्चे अमुक ज प्रवाह आदरणीय अने अमुक ज प्रवाह अनादरणीय एवो कशो भेदभाव न हतो तेम अमुक भाषा बोलनारा ज उत्तम कोटिना अने अमुक भाषा बोलनारा अधम

कोटिना एवुं विषमपणुं—एवो आतरो वा एवो कोईनो तारोवारो पण न होतां.

जे समये सदाचार, सत्य, त्याग, नम्रता अने समभाव वगेरे गुणोनी प्रतिष्ठा हती एटले मानवनी उत्तमता वा अधमता मापवानुं साधन ए गुणो ज हता, ते समये भाषा तो मात्र अर्थने वहेवानुं केवळ साधन हती, पछी ते लोकभाषा हो के पंडिताउ भाषा हो. भाषाने बोलनारनी प्रतिष्ठा के अप्रतिष्ठा केवळ भाषा द्वारा अंकाती न हती तेम अमुक ज भाषाने बोलनारो पूजनीय छे के धर्मी छे अने अमुक भाषाने बोलनारो निंदनीय छे के अधर्मी छे एवी कोई मान्यता प्रचलित न होती.

धर्मना धुरंधरो अने राजवहीवटना धुरंधरो एक सरखी रीते समस्त जनताना हित तरफ लक्ष्यवाळा हता. 'साधारण लोक' के 'पंडित लोक' एवा कोई बनावटी भेद ऊपर तेमनुं तंत्र रचायेलुं न हतुं तेम ए समस्त जनताना हितवाछु धुरंधरोनी धर्मनीति के राजनीति 'अमुक जाति उत्तम छे अने अमुक जाति अधम छे' एवा खोटा भेदने मानती पण न होती.

मानवसमूहमाना मानवो प्रकृतिए करीने विविध प्रकारना होय छे. कोई विशेष चतुर, कोई ओछा चतुर अने कोईक वळी भद्र अने सरळ, ए ज रीते आर्यभाषा बोलनारा वर्गमा केटलाकनां उच्चारणोमां विसर्गो विशेषमा विशेष आवे के न आवे तथा जुदा जुदा जोडिया अक्षरो (क्त्व, ष्क, क्ष्य, ङ्क, क्त्र, ष्ट, ष्ट्र वगेरे) वधु आवे के एवा एवा जुदा जोडिया अक्षरो मुद्दल न आवे; एवा एवा मात्र उच्चारण-

भेदोथी मानवप्रजा मूलवाती नथी, तेने मूलववानुं साचुं साधन तो ते ते प्रजामां रहेला सदाचार, नम्रता, त्यागभाव, सहनशीलता, संयम अने समभाव वगेरे गुणो ज छे ए हकीकतने बधी प्रजाओए विना आनाकानीए सदाने माटे स्वीकारेली छे. एथी आपणे माटे तो आ काळे ए हकीकत वारंवार विचारवा जेवी छे अने सविशेष रीते समजवा जेवी पण छे.

वळी, घरनो व्यवहार सरळ रीते अने व्यवस्थित पद्धतिए चाल्या करे ए ज एक हेतुथी प्रेराइने पिता जेम पोतानां पुत्रोने घरना जुदां जुदा कामकाजो वहेंची आपे छे तेम अतिप्राचीन समयना कोई नीतिनिपुण धर्मधुरंधर पुरुषोए आ समस्त देशनो परस्परनो जीवन-व्यवहार वधु सरळ अने सुव्यवस्थित रीते नभ्या करे ए ज एक दृष्टिने सामे राखीने समग्र जीवनव्यवहारनी देशभरनी जुदी जुदी प्रवृत्तिओने चार भागमां गोठवीने पोताना बंधुओने वहेंची आपेल छे. ते वहेंचणीमा एम तो हतुं ज नहीं के कळामय परिश्रम करनारो कुंभार के चमार हलको छे अने देशनी लेणदेण वा बजारू व्यव-हारने संभाळनार तथा धनने पेदा करनार वाणियो उत्तम छे अथवा वाणियो हलको छे अने प्राण आपीने पण देशनी तथा प्रजानी आबरु के दोलतनो रखेवाळ गरासियो उत्तम छे अथवा आ गरासियो हलको छे अने प्रजाने संस्कारी बनावे एवा तप—संयमना तेजथी चमकतो ब्रह्मचारी ब्राह्मण उत्तम छे.

आमजनतामा भणावनारथी मांडीने चमार सुधीना तमाम वर्गो समाइ जाय छे, तेमनामा एकबीजाने एकबीजाना सहकारनी

अने निरंतर जरूर रहे छे–रह्या करे छे एटलुं ज नहीं पण एवा सहकार विना देश समग्रनो तमाम व्यवहार थंभी जाय एम छे तथा जीवननो पूर्ण सहज आनंद मेळववानी साधना पण खोरवाइ जाय एम छे. माटे ज 'अमुक ज धंधो करनारो उत्तम अने अमुक ज धंधो करनारो अधम' एवी कल्पनाने ते आर्योनी योजनामां अवकाश ज न हतो.

ज्यां सुधी एक बीजा वर्ग वच्चे सहकारनी प्रेममय भावना अचळ टकी शकी त्यां सुधी भाषाना ऊपर जणाव्या तेवा बे प्रवाहो वच्चे पण कोई प्रकारनी अथडामण ऊभी थई न होती तेम केवळ भाषाना ज बळ ऊपर कोई एक वर्गनी उत्तमता के अधमता आंकवानी हालत ऊभी थयेली न होती.

परंतु "कालचक्रनेमिक्रमेण"[१] ज्यारे गुणोनी पूजाने तथा प्रधानताने बदले जातिओनी ज पूजा अने प्रधानता मानवानी हालतमां देशनो धुरंधर वर्ग सरी पड्यो अने तपने कोरे मूकी सुखनी लालचमां लपसी पड्यो त्यारे ज 'अमुक जाति ज उत्तम अने अमुक जाति ज अधम' आवो वाद शरू थयो तथा ए वादने ईश्वरीय आदेशरूपे धर्मना अने राज्यना धुरंधरोए टेको आप्यो एटले पंडिताउ भाषानो पक्षपाती वर्ग वधु जोरमा आव्यो तथा ए वर्गे ज ते पंडिताउ भाषाने ज वधु प्रतिष्ठा आपी, एटलुं ज नहीं पण ए वर्गे 'पंडिताउ

---

१ जेम पैडुं फरे त्यारे तेनी धरीओ ऊची आवे छे अने नीची जाय छे तेम काळनुं पैडुं फरतां पण प्रजानो उतार अने चडाव थया करे छे

भाषा ज उत्तम अने लोकभाषा बगडेली' 'पंडिताउ भाषा बोलवामां ज धर्म अने बगडेली भाषा बोलवामां अधर्म' आवी आवी अनर्थकर अनेक कल्पनाओ वहेती करी.

वळी, ते वर्ग आटलुं कहीने ज न अटक्यो पण तेणे ए पोतानी ज्ञातिप्रधानतावादनी कल्पनाने धर्मनुं रूप आपवा साथे ज लोकभाषा विशे अनादरसूचक वचनोवाळा शास्त्रो पण रची काढ्यां, ज्यारथी आवी शरूआत थई छे त्यारथी ज लोकप्रतिनिधिक व्यवस्था अने लोकभाषा ए बन्नेने भारे सोसवुं पडयुं छे अने ते बन्ने ऊपर एवो सखत फटको पडयो छे के आज सुधी एटले आ एकवीशमो सैको

---

१० महाभाष्यकार पतंजलि मुनिए पोते रचेला महाभाष्यना प्रारभमां ज कहेलुं छे के "'गावी' 'गोणी' वगेरे शब्दो अपभ्रष्ट छे, अपभ्रष्ट शब्दोने बोलवाथी अधर्म थाय छे, माटे अपभ्रष्ट शब्दोने न बोलवा तेम म्लेच्छ शब्दोने पण न बोलवा"

भाषानो इतिहास तपासतां स्पष्ट जणाय छे के 'गावी' 'गोणी' (एटले गाय) शब्दो ते समयनी लोकभाषाना छे—प्राकृत भाषाना छे अने ए शब्दोने बोलवामां महाभाष्यकार 'अधर्म छे' एम स्पष्ट कही तेवा शब्दोने नही बोलवानो लोकोने आदेश आपे छे वळी खूबीनी वात तो ए छे के पोते लौकिक शब्दोना व्याकरणने रचवानी प्रतिज्ञा करतां शरूआतमां ज आवु विधान करे छे अने बीजी तरफ 'गावी' 'गोणी' जेवा लौकिक—तद्भवपदा—शब्दोने बोलवामां महान अधर्म छे एम कहे छे ए उपरथी एम सूचित थाय छे के महाभाष्यकारने मन 'गौः' एवुं उच्चारण शुद्ध छे अने 'गावी' एवुं उच्चारण अशुद्ध छे एटली महाभाष्यकारना कथन मुजब जेनुं बीजु नाम संस्कृत छे ए पंडिताउ भाषा तो सर्वोत्तम छे अने प्राकृत भाषा वा लोकभाषा अपभ्रष्ट छे—

आवतां सुधी पण लोकशासन अने लोकभाषा फरी पाछां पोतानां पूर्ण रूपमां आवी ज शक्यां नथी.

ऊपर जणाव्युं ते रीते आमजनतानी अने आमजनतानी भाषानी अवगणनाने परिणामे पंडिताउ भाषा अने लोकभाषा वच्चे संगठन संधायुं नहीं तेम आमजनता अने पंडितलोक वच्चे निर्मळ प्रेम वा एकरसता थई शक्यां नहीं. ए हालतना फळरूपे वर्तमानमां आपणुं पोतानुं लोकशासन एटले लोकराज्य आपणाथी दूर दूर नासतुं रहे छे.

अने बगडेली भाषा बोलवामा अधर्म छे अने सुधारेली भाषा—संस्कृत भाषा—बोलवामां धर्म छे.

वाक्यपदीय नामना प्रथमां महावैयाकरण भर्तृहरि वळी ए बाबत महाभाष्यकार करता आगळ जइने एम कहे छे के "बगडेली भाषाना शब्दो अर्थनो बोध करावी शकता नथी, सुधारेली भाषाना शब्दो अर्थनो बोध करावी शके छे. बगडेली भाषाना शब्दोने सांभळीने सांभळनारने सुधारेली भाषाना शब्दो याद आवे छे अने तेथी ज तेने अर्थनो बोध थाय छे."

भर्तृहरिना आ कथननो सार ए छे के बगडेली भाषाना अर्थात् प्राकृतभाषा के लोकभाषाना शब्दो अर्थनो बोध ज करावी शकता नथी.

महापंडित कुमारिल भट्ट तो वळी पोताना तंत्रवार्तिक नामना ग्रंथमां ए विशे स्पष्ट शब्दोमां कहे छे के "जे जे शास्त्रो एवी बगडेली भाषामां लखायेलां छे ते बधां मिथ्या छे, माटे एवां बगडेली भाषामां लखायेलां शास्त्रोमां विश्वास करवा जेवो नथी" अर्थात् कुमारिल भट्टना कहेवा प्रमाणे जे जे मतो पोतानी भावनाने लोकवाणीमां कही बतावी छे ते वाणी मात्र विश्वास करवा जेवी नथी.

उपरना लखाणमां प्राचीन व्यापक प्राकृत भाषा अने प्राचीन पंडिताउ भाषा वच्चेना संबंध विशे अने केटलांक उदाहरणो आपीने ते बे भाषानी वच्चेनां जुदां जुदां उच्चारणो संबंधे टुंकी माहिती आपी छे तथा प्रमुख मानवोनी भावना संकुचित अने स्वार्थी बनतां तेनी असर साधारण मानवसमाज माटे केवी भयानक नीवडे छे अने तेनां केवां अनिष्ट फळो भोगववां पडे छे तथा भाषा ऊपर पण तेनी केवी बुरी असर थाय छे अने केवा केवा मिथ्याग्रहो नीपजतां साधारण जनसमाजने केवुं भारे कष्ट वेठवुं पडे छे ए बधुं संक्षेपमा समजाववा थोडी ऐतिहासिक माहिती पण आधार साथे आपेली छे.

हवे प्रस्तुत लखाणमां केटलीक प्राचीन प्राकृत भाषाओनां नाम तथा व्यापकप्राकृत भाषा अने तेमनी वच्चेनी समानता विशे उदाहरणो बतावीने जणाववानुं छे:

वर्तमानमां आपणा भरतखंडमां अनेक प्रांतो छे तेम प्राचीन

आ रीते महाभाष्यकारना समयथी मांडीने पंडितलोको तरफथी लोकभाषाने जाकारो मळतो रहेलो छे एटला ए जाकाराना मूळ ऊंडां छे.

ए जाकारानी असरने लीधे ज आपणा देशना संतो कबीर, नानक, दादू, तुकाराम, ज्ञानेश्वर, नरसिंह, तुलसीदास वगेरेए रचेली भावनामय लोकवाणीनो ते ते काळना पंडितोए अनादर ज करेलो ए हकीकत इतिहासप्रसिद्ध छे अने ए जाकारानी असर हजु सुधी पण ओछी जणाती नथी.

आ बाबत वधारे खुलासो मेळववा जुओ 'गुजराती भाषानी उत्क्रान्ति' पृ० १५८थी.

समयमां पण आपणा आ खंडमा अनेक प्रांतो न होय एम केम कही शकाय ?

प्राचीन समयमा आपणा खंडमां अनेक प्रातोनी संभावना होवा छतां प्राकृत भाषाना व्याकरणनी रचना करनारा वररुचि, चंड, हेमचंद्र वगेरे तमाम पंडितोए प्रातिक प्राकृत भाषाओ संबंधे लखतां तेनां केवळ चार नामो ज नोंधेला छेः शौरसेनी प्राकृत, मागधी प्राकृत, पैशाची प्राकृत अने चूलिकापैशाची प्राकृत.

मथुरा अने तेनी आसपासनी अमुक सीमा सुधीना प्रदेशनुं नाम शूरसेन देश. ते देशमा प्रचलित आमजनतानी भाषानु नाम शौरसेनी प्राकृत.

राजगृह (वर्तमान राजगिर) अने तेनी आसपासनी अमुक सीमा सुधीना प्रदेशनुं नाम मगधदेश. ते देशमा प्रचलित आमजनतानी भाषानुं नाम मागधी प्राकृत.

बौद्ध परंपरामां आ मागधी प्राकृतनुं ज बीजुं नाम 'पालि' भाषा छे. मूळे 'पालि' शब्द बुद्ध भगवानना उपदेशनो सूचक छे अने पछीथी ए शब्द, जे भाषामां बुद्ध भगवाने उपदेश करेलो ते भाषानो पण सूचक थई गयो ए ध्यानमां राखवानु छे. खरी रीते 'पालि' शब्द सहज रीते कोई भाषानो सूचक नथी. प्रसिद्ध नरपति अशोकनी धर्मलिपिओ तथा महामेघवाहन महाराजा खारवेलना शिलालेखो ए मागधी भाषामा लखायेला मळी आवेला छे.

पेशावर अने तेनी आसपासनी अमुक सीमा सुधीना प्रदेशनुं

नाम पिशाचदेश. ते देशमा प्रचलित आमजनतानी भाषानुं नाम पैशाची प्राकृत.

गुजरात देशना वाग्भट नामना पंडिते पोते रचेला वाग्भटालंकारमां एक 'भूतभाषा' नामे भाषाने नोंधेली छे. भूतभाषा एटले भूतलोकोनी भाषा. आपणा आ खंडमां नेपाळ देशनी पासे एक 'भूतान' नामनो प्रांत आवेलो छे, त्याना लोको 'भोटिया' वा 'भूतिया' नामे जाणीता छे. ते लोकोनी मातृभाषानुं नाम भूतभाषा समजवानुं छे. ए भूतभाषाना उच्चारणो पैशाची प्राकृतने मळतां आवे छे. 'भूतभाषा'मा वपरायेला 'भूत' शब्दनो अर्थ भूत पिशाच व्यंतर वा अवगतियो जीव; एवो समजवानो नथी किंतु भूतान देशमां वसनारी भोटिया प्रजा समजवानो छे.

ऊपर जणावेला पिशाच देशनी सीमा करतां विशेष उत्तर तरफ आवेला चोटीना प्रदेशोनुं नाम चूलिकापिशाच प्रदेश छे. ते देशमां वसती आमजनतानी प्रचलित भाषानुं नाम चूलिकापैशाची प्राकृत छे.

पैशाची अने चूलिका पैशाची भाषामां अमुक प्रकारनां उच्चारणोनो ज खास तफावत छे.

संभव छे के प्राचीन समयमा अथवा जेमणे प्रांतिक प्राकृतना ऊपर जणावेला चार ज भेदो दर्शावेला छे तेमना समयमा आपणा आ मोटा खंडमा बीजी बीजी प्रांतिक प्राकृतो पण प्रचलित होय छता परिचय न होवाने कारणे तेमणे ए बाबत नोंध न करी होय अथवा ए समये आ चार ज प्रदेशो महासत्ताशाली हशे तेथी पण कदाच तेमनो ज उल्लेख प्रधानपणे करवामां आव्यो हशे अथवा

आ चार प्रांतिक प्राकृतो ज साहित्यमां वपरायेली तेमने मळेली होय एटले पण ते पंडितोए ए चार ज प्रांतिक प्राकृतनी नोध पोतपोताना व्याकरणमां लीधेली होय.

व्याकरण रचनारा उपरांत अलंकारशास्त्रनी रचना करनारा पंडितो पण उक्त चार ज प्रांतिक प्राकृतोनी नोंध पोतपोताना अलंकारग्रंथोमां करी गया छे. केवळ एक भरत मुनि (नाट्यशास्त्रकार) पोताना नाट्यशास्त्रमां उक्त चार प्रांतिक प्राकृतना भेदोनी नोध करवा उपरात बीजा बीजा प्रांतिक प्राकृतोनी नोंध पण करी बतावे छे.[११]

नाटकोमां जे प्राकृत भाषा वपरायेली छे ते मोटे भागे शौरसेनी प्राकृत छे. जैन दिगंबर परंपराना ग्रंथोमां पण वधारे अंशे शौरसेनी प्राकृतनो उपयोग थयेल छे.

वौद्ध धर्मना मूळ पिटकग्रंथोमां, तेनी अट्ठकथा नामनी टीकाओमां अने जातककथाओमां पण मागधी भाषा वपरायेली छे.

---

११ भरतमुनिना कहेवा प्रमाणे मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, शौरसेनी, अर्धमागधी, वाल्हीका अने दाक्षिणात्या ए सात भाषाओ छे अने एमना नाम उपरथी ते प्रांतिक भाषाओ छे.

मगधनी भाषा ते मागधी भाषा, अवन्तीमां (उज्जयिनी अने तेनी आसपासनी अमुक सीमा सुधीमां) प्रचलित भाषानु नाम अवन्तिजा भाषा. प्राच्य एटले अमुक सीमा सुधीनो पूर्वदेश अने तेमां प्रचलित भाषानु नाम प्राच्या शूरसेन देशनी भाषानु नाम शौरसेनी भाषा मागधीने अडधी मळती भाषानुं नाम अर्धमागधी भाषा. वाल्हीक एटले आजकालनो बल्ख अने ते प्रदेशनी भाषानु नाम वाल्हीका भाषा आ भाषा अने पैशाची भाषा एकबीजी परस्पर सरखी छे दक्षिणना प्रदेशनी भाषानु नाम दाक्षिणात्या भाषा.

वर्तमानमां पैशाची भाषामां कोई विशेष साहित्य उपलब्ध नथी. पण कहेवाय छे के गुणाढ्य नामना पंडिते बृहत्कथा नामनो एक मोटो कथाग्रंथ पैशाची भाषामां रचेलो हतो जे हाल मळतो नथी.[१२]

जैनाचार्योए रचेलां केटलांक स्तोत्रोमां संस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने चूलिका-पैशाची ए छए भाषाओनो उपयोग थयेलो छे.

व्यापक प्राकृत अने शौरसेनी वगेरे बीजां प्रांतिक प्राकृतोमां जे उच्चारणभेद छे ते आ प्रमाणे छे :

प्राकृत	शौरसेनी	मागधी	पैशाची	संस्कृत	गुजराती
उवट्ठिन } उवट्ठिअ	उवट्ठिद	उवस्थिद	उवट्ठित	उपस्थित	उपस्थित-हाजर
सोभा }	सोभा	शोभा	सोभा	शोभा	शोभा
सोहा	सोहा	शोहा			
अज्ज	अज्ज	अय्य	अज्ज	अद्य	आज-आजे
पह }	पद	पह	पथ	पथ	पथ-मारग
पध	पध	पध			
नर	नर	नल	नर	नर	नर-पुरुष

१२ आचार्य हेमचंद्रे पोताना प्राकृत व्याकरणमां आ पैशाची भाषानु स्वरूप बताव्युं छे त्यां (८-४-१२६) "पनमथ पनय—" वगेरे एक गाथा आपेली छे ते, बृहत्कथानु मंगलाचरण छे एम कहेवाय छे.

प्राकृत	शौरसेनी	मागधी	पैशाची	संस्कृत	गुजराती
हत्थी	हत्थी	हस्ती	हत्थी	हस्ती	हस्ती, हाथी
विण्हु	विण्हु	विस्नु	विण्हु	विष्णु	विष्णु, विस्नु
दुज्जण	दुज्जण	दुय्यण	दुज्जन	दुर्जन	दुर्जन, दुरजन
जाति, जाइ	जादि	यादि	याति	याति	जाय छे
कन्ना, कञ्ञा	कन्ना	कञ्ञा	कञ्ञा	कन्या	कन्या
पुण्य, पुण्ण	पुण्ण	पुञ्ञ	पुञ्ञ	पुण्य	पुण्य
सव्वण्णु, सव्वन्नु, सव्वज्ज	सव्वण्णु, सव्वन्नु, सव्वज्ज	शव्वञ्ञ	सव्वञ्ञ	सर्वज्ञ	सर्वज्ञ, सरवज्ञ
पुच्छति, पुच्छइ	पुच्छदि	पुश्चदि	पुच्छति	पृच्छति	पूछे छे
गुण	गुण	गुण	गुन	गुण	गुण
भगवती, भगवई	भगवदी	भगवदी	भगवती	भगवती	भगवती
सील	सील	शील	सीळ	शील	शील–आचार

पैशाची अने चूलिकापैशाचीनो उच्चारणभेद

प्राकृत	पैशाची	चूलिकापैशाची	संस्कृत	गुजराती
मग्गन, मग्गण	मग्गन	मक्कन	मार्गण	मागण-भिखारी
नगर, नयर	नगर	नकर	नगर	नगर
गिरि	गिरि	किरि	गिरि	गिरि-पहाड
मेघ, मेह	मेघ	मेख	मेघ	मेघ, मेह, मे-वरसाद
वग्घ	वग्घ	वक्ख	व्याघ्र	वाघ-व्याघ्र
घम्म	घम्म	खम्म	घर्म	घाम-गरमी
राजा	राजा	राचा	राजा	राजा
निज्झर, णिज्झर	निज्झर	निच्छर	निर्झर	झरो-झरणुं
तडाग	तडाग	तटाक	तडाग	तळाव
गाढ	गाढ	काठ	गाढ	गाढ
ढक्का	ढक्का	ठक्का	ढक्का	डाकलुं
मदन	मदन	मतन	मदन	मदन
दामोदर	दामोदर	तामोतर	दामोदर	दामोदर
मधुर	मधुर	मथुर	मधुर	मधुर
धूली	धूली	थूली	धूली	धूळ
बालक	बालक	पालक	बालक	बाळक
भगवती	भगवती	फकवती	भगवती	भगवती

चूलिकापैशाचीमां वर्गना त्रीजा अक्षरनो पहेलो अक्षर बोलाय छे अने वर्गना चोथा अक्षरनो बीजो अक्षर बोलाय छे ए हकीकत ऊपर आपेलां उदाहरणो द्वारा ज जणाई आवे छे. तात्पर्य ए छे के चूलिकापैशाचीमां ग ज ड द ब ने बदले अनुक्रमे क च ट त प बोलाय छे अने घ झ ढ ध भ ने बदले अनुक्रमे ख छ ठ थ फ बोलाय छे.

---

[२]

आगळनुं-आटलुं लखाण वांच्या पछी हवे अर्धमागधी भाषानो परिचय पामवो सुगम थशे. अर्धमागधीनो खास एक भाषा तरिकेनो उल्लेख जैन अग-आगम-ग्रंथोमां आवे छे. भरतमुनिए[13] पण अर्धमागधीने एक खास भाषारूपे नोंधेली छे. जेमणे जेमणे प्राचीन प्राकृत भाषानां व्याकरणो लखेलां छे ते वररुचि, चंड, हेमचंद्र वगेरेए प्रधानपणे खास एक जुदो तरी आवे ते रीते अर्धमागधीनो उल्लेख करेल नथी.

केवळ एक हेमचंद्रे साधारण प्राकृत करतां जुदो तरी आवे ते रीते आर्ष प्राकृतनो उल्लेख करेल छे अने अर्धमागधी भाषाने आर्ष प्राकृतमां समावेल छे तथा ज्यां हेमचंद्रे मागधी भाषानुं निरूपण करेल छे त्यां टीकामां 'पुराण अद्धमागह' शब्दनो उल्लेख करी मागधी अने अर्धमागधीनी विशेषता बतावेल छे.

आर्ष एटले ऋषिओए कहेलां वचनो अर्थात् 'छांदस' शब्द वेदनी भाषाने सूचवे छे तेम 'आर्ष' शब्द जैन आगमोनी भाषाने

---

१३ जुओ टिप्पण ११ मु.

सूचवे छे. समर्थ सूत्रविवेचक आचार्य शीलांके तो छादस अने आर्ष ए बन्ने शब्दोने एक सरखा अर्थमां पोताना विवेचनमां वापरेला छे

एक घणा अर्वाचीन वैयाकरण मार्कंडेये पोताना 'प्राकृतसर्वस्व' नामना व्याकरणमां अर्धमागधीने भाषारूपे जुदी नोंधी बतावेली छे अने तेनो समावेश शौरसेनी भाषामां करी बतावेल छे.

जैनग्रंथोमा 'अद्धमागह'नो जे अर्थ बतावेल छे ते द्वारा अर्धमागधीना स्थाननो के स्वरूपनो स्पष्ट ख्याल एकदम आववो मुस्केल लागे छे.

प्राचीन जैनग्रथोमां अर्धमागधीनी व्याख्या सबंधे जणावेलु छे के "मगधना अडधा विषयमां—देशमा—भागमां—जे भाषा प्रचलित होय अने ते भाषामां जे शास्त्र निबद्ध होय ते 'अर्धमागध' कहेवाय अथवा अढार (जातनी) देशी भाषामा जे शास्त्र नियत होय ते 'अर्धमागध' कहेवाय.

ऊपर जणावेली बन्ने व्याख्या अर्धमागधी भाषाना स्वरूपने मुद्दल स्पष्ट करी शकती नथी: प्रथम व्याख्यामा मगधनो जे अडधो भाग जणावेलो छे तेनी सीमानी स्पष्ट कल्पना आवी शकती नथी अने बीजी व्याख्यामां जे अढार देशी भाषाओ सूचवेली छे तेमना स्वरूपनी पण कल्पना आवती नथी. बीजी व्याख्याथी एवो भास थाय छे के जाणे अढार देशी बोलीओना मिश्रणनु नाम अर्धमागधी होय; परतु ते अढार बोलीओ कई कई छे' एनो स्पष्ट खुलासो क्याय पण मळी शकतो नथी. ज्यारे भगवान महावीरनुं निर्वाण थयुं त्यारे अढार देशना गण राजाओ ए प्रसंगे आवेल हता. एना नव

राजाओ काशी देशना अने मल्लकि वंशना हता अने नव राजाओ कोशल देशना अने लिच्छवि वंशना हता. शुं आ काशी अने कोशल देशनी सीमा साथे ए अढार देशी भाषाओनो कोई संबंध हशे? वळी, बीजे अनेक स्थळे सूत्रविवेचकोए 'अढार देशी भाषा'नो अर्थ 'अढार प्रकारनी लिपियो' एवो पण करेलो छे. एटले आम अनेक रीते विचारतां ए अढार देशी भाषाओनो स्पष्ट खुलासो मळी शकतो नथी अने तेथी अर्धमागधी भाषानी ऊपर जणावेली व्याख्या चोक्कस समजाती नथी.

वळी, एक बीजी वात–जैनशास्त्रोमां घणा प्राचीन समयमां श्रमणोना भ्रमणक्षेत्रनी अमुक मर्यादा नक्की थयेली छे. तेमां जणावेलुं छे के, जैन श्रमणो अने श्रमणीओ पूर्व दिशामां अंग अने मगध सुधी, दक्षिणमां कोसंबी नगरी सुधी, पश्चिममां स्थूण (स्थानेश्वर–कुरुक्षेत्र)सुधी अने उत्तरमां कुणालदेशनी सीमा सुधी विचरी शके छे आटलुं आर्य-क्षेत्र छे माटे ते सीमाथी बहारना भागमां भ्रमण न करी शकाय.

आमा भ्रमणमर्यादाना जे देशो बतावेला छे ते देशोनी सीमा साथे अर्धमागधी भाषानो संबंध संभवी शके अर्थात् ए संभावना खरी होय तो एटला आर्यक्षेत्रमां जे भाषा प्रचलित होय तेने अर्ध-मागधी कही शकाय.

ऊपर जणाव्या प्रमाणे अर्धमागधी भाषानी भूगोलिक मर्यादा स्पष्टपणे जाणी शकाती नथी परंतु अर्धमागधी नाम उपरथी एम तो साफ जणाय छे के अर्धमागधी अने मागधी वच्चे जरूर संबंध स्थपायेलो छे एटले मागधी भाषानी जे उच्चारण पद्धति छे तेने ज मळती

आवती उच्चारण पद्धति अर्धमागधी भाषानी पण होय ए स्वाभाविक छे. वर्तमानमां जे प्राचीन [१४] हस्तलिखित जैन आगमो अने बीजुं जैन साहित्य उपलब्ध छे ते द्वारा अर्धमागधीनी उच्चारणपद्धति बराबर समजी शकाय एम छे.

व्यापक प्राकृत अने अर्धमागधी भाषा ए बन्नेनी उच्चारणपद्धति साधारण रीते मळती आवे छे. विशेषमां अर्धमागधी भाषामां केटलांक उच्चारणो मागधी भाषा जेवां पण छे एटले जे भाषा केवळ व्यापक प्राकृत पण नहीं अने केवळ मागधी पण नहीं किंतु व्यापक प्राकृत भाषा अने मागधी भाषा ए बन्नेनी साथे समानता धरावे छे माटे तेनुं नाम अर्धमागधी भाषा कही शकाय. बौद्ध पिटकग्रंथोमां जे मागधी भाषा वपरायेली छे तेनी साथे अर्धमागधीनी विशेषरूप उच्चा-रण पद्धति घणी मळती आवे छे ए ध्यानमां राखवानुं छे.

मागधीभाषामां 'र'ने बदले 'ल'नुं उच्चारण प्रचलित छे तेम अर्धमागधीमां पण 'र'ने बदले 'ल'नुं उच्चारण प्रचलित छे:

व्यापकप्राकृत	मागधी	अर्धमागधी	संस्कृत	गुजराती
सुकुमार	सुकुमाल	सुकुमाल	सुकुमार	सुकुमाळ-सुंवाळुं
चरण	चलण	चलण	चरण	चरण-पग

१४ वर्तमानमां जे आगमो छपायेलां छे तेमना द्वारा अर्धमागधी भाषानु स्वरूप नक्की थई शकवुं कठण छे. ते आगमोनु संपादन संशोधन छेल्ली ढबनी वैज्ञानिक रीते थयेल नथी एथी ए छपायेला आगमोमा भाषानु एक धोरण नियत जणातु नथी अने एम छे माटे ज अहीं हस्तलिखित जैन आगमोनी भलामण करवामां आवेली छे.

अंतरिक्ख	अंतलिक्ख	अंतलिक्ख	अन्तरिक्ष	अंतरीख-आकाश
रेखा	लेहा	लेहा	रेखा	रेख
सारिक्ख	शालिक्ख	सालिक्ख	सदृक्ष	सारखुं-सरखुं
उदार	उदाल	उराल	उदार	उदार
वेडुरिय	वेडुलिय	वेरुलिय	वैडूर्य	वैडूर्य रत्न

(अगीयारमा सैकामां लखायेली व्याख्याप्रज्ञप्ति-भगवती-सूत्रनी ताडपत्रनी प्रतिमां अनेक स्थळे 'थ'ने बदले तथा 'ह'ने बदले 'ध'नो प्रयोग थयेलो होय एवा प्रयोगो मळे छे :)

महावीर	महावील	मधावीर	महावीर	माहावीर, महावीर
जहा	जहा जधा	जधा	यथा	यथा-जेम

वळी, जैन आगमोनी केटलीक प्राचीन पोथीओमां तकारवाळा शब्दो विशेष प्रमाणमां मळे छे :

व्या० प्रा०	अर्धमागधी प्राचीन पाठ	संस्कृत	गुजराती
वइ, वय	वति	वचस्	वच-वचन
वज्जिर, वइर	वतिर	वज्र	वज्जर, वज्र
पाय	पात	पाद	पाय-पग

अंतिअ	अंतित	अन्तिक	अंतिक-पासे
राईसर	रातीसर	राजेश्वर	राजेश्वर
नदी } नई }	नती	नदी	नदी
गायति } गायइ }	गातति	गायति	गाय छे-गीत गाय छे
परिवार	परिताल	परिवार	परवार
कवि	कति	कवि	कवि
वड्डइ	वड्डति	वर्धकि	बढइ-सतार
पूआ	पूता	पूजा	पूजा
जदा } जया }	जता	यदा	ज्यारे

आवां तकारवाळां उच्चारणो ए मागधीनी खास विशेषता छे.

अर्धमागधीमां प्रथमा विभक्तिना एकवचननो प्रयोग आ प्रमाणे छेः

व्या० प्रा०	मागधी	अर्धमागधी	संस्कृत	गुजराती
वीरो	वीरे	वीरे वीरो	वीरः	वीरो वीर
समणो	शमणे	समणे समणो	श्रमणः	श्रमण

आ रीते अर्धमागधीनी उच्चारण पद्धति खास विशेष प्रकारनी छे. आचार्य हेमचंद्रे आ खास उच्चारण पद्धतिने आर्ष कहेली छे अने तेनां, पोतानां व्याकरणमां घणां उदाहरणो आपेलां छे. ते नीचे प्रमाणे छे:

व्या० प्रा०	आर्ष वा अर्धमागधी	संस्कृत	गुजराती
सिविण	सुविण	स्वप्न	सोणुं
पुराकम्म	पुरेकम्म	पुराकर्म	पुराकर्म–पहेलानुं काम
सुण्ह सण्ह	सुहुम	सूक्ष्म	सूक्ष्म–नानु
दुअल्ल दुऊल	दुगुल्ल	दुकूल	डगलो
चेइअ	ची	चैत्य	चैत्य–चिता उपरनुं स्मारक
अमुअ अमुक	अमुग	अमुक	अमुक
आयार आकार	आगार	आकार	आकार–घाट
सावय	सावग	श्रावक	श्रावक
लोअ	लोग	लोक	लोक
आउचण	आउंटण	आकुञ्चन	आकुंचन–संकोच
कासिअ	खासिअ	कासित	खांसी
जहक्खाय	अहक्खाय	यथाख्यात	जेम ख्यात–कहेल
उहजाय	अहाजाय	यथाजात	जेम जात-जन्मेल

आ प्रकारे व्यापक प्राकृत करतां अर्धमागधीनी विशेषतावाळा अनेक प्रयोगो जैन साहित्यमां सचवायेला छे एथी प्राचीन जैन साहित्यनी भाषाने आर्षप्राकृत वा अर्धमागधी ज मानवी जोईए.

आगळ कह्युं छे तेम प्राकृत भाषाओमां एटले लोकभाषाओमां–लोकोनी बोलचालनी भाषाओमा समये समये उच्चारणभेदनां निमित्तो ऊठतां ज रहे छे एथी कोई पण लोकभाषा कदी एकसरखी उच्चारणशैलीवाळी मळी शकती नथी. ए अपेक्षाए जोतां कोई पण लोकभाषानुं उच्चारणोनी दृष्टिए एक नियत स्वरूप टकी शकतुं नथी एम छे माटे ज अर्धमागधी भाषा पण समय प्रमाणे विविध उच्चारणशैलीवाळी थती रही छे. बहु ज प्राचीन समयमा एटले भगवान महावीरना समयमां अर्धमागधी भाषा संभव छे के व्यंजनप्रधान उच्चारणोवाळी हशे, वळी, पछीना समयमां क्यारेक ते तकारप्रधान उच्चारणोवाळी थई गई हशे अने पछी वळी कोई काळथी ते भाषामां शब्दोनी अंदरना व्यंजनो घसाई घसाईने नीकळी जवा लाग्या हशे आ रीते अर्धमागधीनां त्रण थरो कल्पी शकाय छे, ए दरेक थरनो अमुक चोकस समय पण कल्पी शकाय एम छे परंतु ए विशेनी चर्चा अहीं प्रस्तुत नथी एटले जती करवामां आवे छे.

बौद्ध साहित्यमां वपरायेली अने अशोकनी धर्मलिपियोमां सचवायेली भाषा व्यंजनप्रधान छे एटले तेने घणी रीते मळती आवती अर्धमागधी भाषाने पण तेवी कहेवाने हरकत नथी. व्यंजनप्रधान एटले शब्दोनी अंदरना व्यंजनोनी हयातीवाळी, तकारप्रधान एटले शब्दोनी अंदरना व्यंजनोने स्थाने 'त'ना उच्चारणवाळी अने व्यंजनोना घसारावाळी एटले शब्दोनी अंदरना व्यंजनो विनानी. अर्धमागधी भाषानी आ त्रणे स्थिति समजवा नीचेनां थोडां उदाहरणो पूरता छे.

१ अर्धमागधी (व्यंजनवाळी)	संस्कृत
लोग	लोक
कणग	कनक
पग	पक
अमुग	अमुक
कूणित	कूणिक
सावत	श्रावक

२ अर्धमागधी (तकारवाळो)	संस्कृत
नती	नदी
परिताल	परिवार
कति	कवि
पात	पाद
अंतित	अंतिक
गातति	गायति
वद्धति	वर्धकि
रातीसर	राजेश्वर
पूता	पूजा
सामायित	सामायिक

३ अर्धमागधी (शब्दनी अंदर व्यंजनविनानी)	संस्कृत
छेय	छेक
कय	कच,
कय	कज
नयर	नगर
पूआ	पूजा
पाय	पाद
सय	शत
सयय	सतत
गइ	गति
वाउ	वायु
रिउ	रिपु
लायण्ण	लावण्य

(दरेक शब्दो सामे संस्कृत शब्दो एटला माटे आपेला छे के स्पष्टपणे उच्चारणभेदनो ख्याल आवी शके.)

अहीं ए याद राखवानुं छे के हेमचंद्रे पोताना व्याकरणमां त्रीजा नंबरवाळी अर्धमागधीने समजावेली छे अने तेमां तेमने अर्धमागधीनी जूनी उच्चारणपद्धतिवाळा जे केटलाक प्रयोगो मळ्या ते पण आर्ष कहीने समजावेला छे हेमचंद्रनुं व्याकरण जैन आगमोमां वपरायेला

जूनी उच्चारण पद्धतिवाळा तमाम प्रयोगोने समजावी शकतुं नथी. कारण के हेमचंद्रना व्याकरणनी मुख्य दृष्टि त्रीजा नंबरवाळी अने साहित्यमां सुरक्षित एवी अर्धमागधी तरफ ज छे एटले तेमणे व्याकरण लखती वखते आगमना तमाम प्रयोगो तरफ नजर नथी राखी.

त्रणे नंबरवाळी अर्धमागधीमां क्यांय विसर्ग वपरायेलो नथी तथा विजातीय जोडिया अक्षरो पण घणा ज ओछा वपरायेला छे तथा ऋ, ॠ, लृ, ॡ, ऐ औ ए स्वरो पण वपरायेला नथी. आ समानता कोई पण समयनी अर्धमागधीमां एकसरखी रीते सचवायेली छे.

व्यापक प्राकृत वा प्रांतिक प्राकृत भाषाओ एक समये जीवती भाषाओ—बोलाती भाषाओ—हती. ते बधी वर्तमानकाळमां केवळ साहित्यनी भाषाओ बनी गई छे एटले ते बधी भाषाओ वर्तमान लोकभाषाओनी पेठे वर्तमानमां सहज सिद्ध नथी रही ए याद राखवानुं छे. वर्तमानमां तेमनुं साहित्यिक स्वरूप उपलब्ध छे परंतु तेमना साहित्यिक स्वरूपमां अने लोकप्रचलित स्वरूपमां विशेष भेद होवानो संभव नथी ए ध्यानमां राखवानुं छे.

---

[४]

आगळना लखाणमां जे जे प्राचीन लोकभाषाओनो परिचय बतावेल छे ते उपरांत एक बीजी एवी ज प्राचीन आवेस्तिक भाषा पण छे. ए भाषा पारसी लोकोना प्राचीन धर्मग्रंथोमां वपरायेली छे, तेनुं स्वरूप पण प्राचीनतम प्राकृत भाषा साथे मळतुं आवे छे.

प्राचीन प्राकृत	आवेस्तिक भाषा	गुजराती भाषा
हस्त	झस्त	हाथ
असि	अहि	छे (तुं)
ब्रूते	म्रूते	बोले छे
पश्चात्	पस्कात्	पछीथी
द्वारम्	द्वारेम्	द्वार-बारणुं
त्वा	थ्वा	तने
प्रति	पइति	पेठे
अभ्र	अब्र	आभ
देव	दएव	देव
सा	हा	तेणी
तथा	तथा	तथा

आटला उपरथी स्पष्टपणे जणाई आवे छे के प्राचीन व्यापक प्राकृतनो, प्रांतिक प्राकृतोनो अने आवेस्तिक भाषानो उपादानरूप शब्ददेह परस्पर घणो ज मळतो आवे छे एटले एम पण सिद्ध थाय छे के ए बधी भाषाओने बोलनारो मानवसमूह परस्पर एक सूत्रथी संकळायेलो हतो.

---

[५]

अहीं ए पण बराबर याद राखवानुं छे के वर्तमानमां गुजराती, मराठी, बंगाळी, हिन्दी, मारवाडी, माळवी, सिंधी, पंजाबी वगेरे जे अनेक लोकभाषाओ प्रचलित छे ते बधीनो प्रधान संबंध लोकभाषारूप व्यापक प्राकृत अने प्रांतिक प्राकृत भाषाओ साथे ज छे

व्यापक प्राकृत अने प्रांतिक प्राकृत भाषाओनो अभ्यास वर्तमानमां घणो ज मंद रीते चाले छे अने पंडिताउ भाषा संस्कृतनो

अभ्यास थोडो ठीक रीते वधेलो छे एटला उपरथी लोकभाषा अने पंडिताउ भाषा वच्चे शब्दोनी समानतानो भास थतां आपणा राजनीति-कुशळ राष्ट्रपुरुषो एम पण कहेवा लाग्या छे के प्रचलित लोकभाषा-ओनी जननी पंडिताउ भाषा संस्कृत छे. परन्तु तेमनुं आ कथन भाषाविज्ञाननी दृष्टिए बराबर नथी अने लोकभाषाओनुं आंतरिक बंधारण तपासता पण तेमनुं ए कथन साचुं जणातुं नथी. जेम बे सगी बहेनो होय, तेमांनी एक बहेन प्रकृतिने खोळे रमती होय अने बीजी बहेन सुधारारूप श्रीमताईनो वैभव माणती होय, जो के ते बन्नेना स्वभाव तद्दन जुदा जुदा छे अने छताय प्रकृतिने खोळे रमती बहेन उपर पेली श्रीमंत बहेननी कशी असर नथी थती एम नहीं कहेवाय. तेम प्रकृतिने खोळे रमती लोकभाषा अने सुधारानी असरमां आवेली लोकभाषा एटले पंडिताउ भाषा, ए बन्नेना प्रवाह तद्दन निर-निराळा छे छता सुधारानी असरमा आवेली ते लोकभाषा एटले पंडि-ताउ भाषा, पेली प्रकृतिने खोळे खेलती लोकभाषा उपर जरूर पोतानो थोडो घणो पास तो लगावे छे, ए दृष्टिए प्राकृत भाषाओ अने संस्कृत भाषा वच्चे जरूर संबंध छे, परंतु संस्कृत भाषा, ते लोक-भाषाओनी जननी छे एवुं कथन तो सर्वथा असंगत छे, परंतु तेथी उलटुं ए खरु छे के पंडिताउ भाषा उपर लोकभाषानी घणी विशेष असर होय छे जे अभ्यासी लोकभाषानुं बंधारण तपासे तेने ज आ ख्याल आववानो, परंतु जे अभ्यासी केवळ थोडुं घणुं शब्दसाम्य जोईने अटकी जशे तेना ध्यानमां आ हकीकत नहीं आवी शके.

वर्तमान लोकभाषाओनी जननी प्राचीन लोकभाषाओ छे ए हकीकतने समजवा आ नीचेना जुदी जुदी भाषाओनां केटलाक उदा-हरणो पूरतां छे·

प्राकृत भाषा	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाळी	सिन्धी	संस्कृत
एगारह	ग्यारह	अगीयार	अकरा	एगारो	कारहं	एकादश
बारह	बारह	बार	बारा	बारो	बारंहं	द्वादश
तेरह	तेरह	तेर	तेरा	तेरो	तेरंहं	त्रयोदश
चउद्दह	चउदह	चौद	चौदा	चोद्द	चोडँहँ	चतुर्दश
पण्णरह	पन्नरह	पंदर	पंधरा	पनेरो	पंद्रहं	पञ्चदश
सोलह	सोलह	सोळ	सोळा	सोलो	सोरंहं	षोडश
सत्तरह	सत्तर	सत्तर	सतरा	सतेरो	सत्रा	सप्तदश
अट्ठारह	अठारह	अढार	आठरा	आठारो	अठारो	अष्टादश
एगूणवीसा	उन्नीस	ओगणीश	एकोणीस	उनीस	उण्वीह	एकोनविंशति
वीसा	वीस	वीश	वीस	कुडि[१४]	वीह	विंशति
एगवीसा इक्कवीसा }	इक्कीस	एकवीश	एकवीस	एकुस	एकीह	एकविंशति
बावीसा	बाईस	बावीश	बावीस	बाईस	बावीह	द्वाविंशति
तेवीसा	तेईस	तेवीश	तेवीस	तेईस	टेवीह	त्रयोविंशति

१४ गुजरातीमां २० नगने एक 'कोडी' कहेवाय छे तेम बंगाळीमां 'वीश'ने 'कुडि' कहेवाय छे. आ 'कुडि' शब्द स्वतंत्र छे. 'वीसा' साथे तेनो कशो संबंध नथी.

प्राकृत भाषा	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बेंगाली	सिन्धी	संस्कृत
चोवीसा	चोवीस	चोवीश	चोवीस	चोव्वीस	चोवीह	चतुर्विंशति
पंचवीसा, पणवीसा	पच्चीस	पचीश	पंचवीस	पंचीस	पंज्वीह	पञ्चविंशति
छव्वीसा	छव्वीस	छव्वीश	छव्वीस	छाव्वीस	छवीह	षड्विंशति
सत्तावीसा	सत्ताईस	सत्तावीश	सत्तावीस	साताईस	सतावीह	सप्तविंशति
अट्ठावीसा	अट्ठाईस	अट्ठावीश	अट्ठावीस	आटास	अठावीह	अष्टाविंशति
एगूणतीसा	उनतीस	ओगणत्रीश	एकोणतीश	उनत्रीस	उणटीह	एकोन-त्रिंशत्
तीसा	तीस	त्रीश	तीस	त्रीस	टीह	त्रिंशत्

आर्यशाखानी वर्तमान लोकभाषाओनी जननी प्राचीन लोकभाषा ज छे ए सत्य सिद्ध करवा सारु ऊपर जणाव्या करतां पण अनेकगणा वधारे शब्दो आपी शकाय; परंतु अहीं एवो विस्तार करवो अस्थाने छे.

ऊपर जणावेली तमाम हकीकत उपरथी अने स्थळे स्थळे आपेलां अनेक उदाहरणो उपरथी एम पुरवार थाय छे के मथुरा अने तेनी आसपास रहेनारी प्रजा, मगधमां रहेनारी प्रजा, पेशावरमां अने तेनी आसपास तथा त्यांथी उत्तरमां रहेनारी पिशाचदेशनी प्रजा, आवेस्तिक भाषा बोलनारी प्रजा,

व्यापक प्राकृत बोलनारी प्रजा तथा वर्तमान गुजराती बोलनारी प्रजा, मराठी बोलनारी प्रजा, बंगाळी बोलनारी प्रजा, सिंधी, पंजाबी अने हिन्दी वगेरे लोकभाषा बोलनारी तमाम प्रजा भाषानी दृष्टिए एक-सूत्रमां संकळायेली छे एटले केवळ भाषानी दृष्टिए पण अखंड भारत-नी घोषणा कांई नवी कल्पना नथी. भाषानी दृष्टिए आखो आर्यावर्त एक ज हतो, एक ज छे अने एक ज रहेशे.

आ इतिहाससिद्ध अखंडताने टकावी राखवा अने सात लाख गामडामां वहेंचायेला समग्र भारतनो साचो परिचय मेळववा आपणा अध्यापकोए अने विद्यार्थीओए प्राचीन प्राकृत भाषाओनो सविशेष अभ्यास वधारवो घटे. एटलुं ज नहीं पण ए प्राचीन प्राकृत भाषाओ साथे जुदी जुदी प्राचीन लोकभाषाओनो अने अर्वाचीन लोकभाषा-ओनो पण तुलनात्मक अभ्यास खूब झडपथी वधारवो घटे ए माटे आपणी राष्ट्रीय सरकारे खास चीवट राखी मोटी मोटी शिष्यवृत्तिओ स्थापवी जोईए अने शाळा, महाशाळा के विश्वविद्यालयोमां प्राकृत, पालि, अर्धमागधी वगेरे प्राचीन भाषाओना अभ्यासने उत्तेजित करवो जोईए. ए प्राचीन प्राकृत भाषाओ, प्राचीन लोकभाषाओ अने अर्वा-चीन लोकभाषाओना तुलनात्मक अभ्यास विना गामडा अने नगरोनी एकता स्थपावानी नथी अने एवी एकता स्थपाया विना अखंड भारतनी कल्पनाने कोई व्यवहारु रूप मळवानो संभव ज नथी.

आर्षप्राकृत-अर्धमागधी-नुं साहित्य

कोई पण भाषा एक संप्रदाय के मतनी नथी होती ए तो लोक समस्तनी होय छे. तेम अर्धमागधी भाषा पण कोई एक संप्र-

दाय के धर्मपंथनी नथी, परंतु समग्र आर्यावर्तमां जे जे आर्य भाषाओ फेलायेली छे तेमनी साथे गाढ संबंध राखनारी ए, एक काळे लोकभाषा हती. वर्तमानमां ए भाषा, लोकोनां भिन्न भिन्न उच्चारणोने लीधे जुदां जुदां रूपांतर पामी हिन्दी भाषारूपे, गुजराती भाषारूपे, मराठी भाषारूपे के बंगाळी भाषारूपे अथवा बीजी कोई आर्य भाषानी शाखारूपे आपणा तमाम प्रांतोमां फेलायेली छे अने ते ते भाषानां उच्चारणो ए अर्धमागधीना आजना लौकिक उच्चारणो छे त्यारे तेनां प्राचीन उच्चारणोनुं स्वरूप जैन साहित्यमां सचवायेलुं छे. जैन साहित्यमां आगळ जणावेली एक बे अने त्रण नंबरवाळी अर्धमागधी भाषा बराबर सचवायेली छे. जैन साहित्यनो जे प्राचीन अंश छे तेमां व्यंजनप्रधान अने तकारप्रधान अर्धमागधीनुं स्वरूप सचवायेलुं छे अने जे साहित्य त्यार पछीनुं एटले मध्ययुगनुं छे तेमा तेनुं व्यंजनोना घसारावाळुं रूप सचवायेलुं छे अने हवे तो ए ज रूप प्रचार पामेलुं छे अने व्याकरणनी दृष्टिए प्रमाणताने पामेलुं छे.

जैन परंपरानां मूळ अगीयार अंगशास्त्रो, तेना बार उपांगशास्त्रो, पयन्ना (प्रकीर्णक) शास्त्रो, प्रायश्चित्त विधायक मूळ छेदशास्त्रो, ए तमाम शास्त्रो ऊपर रचायेली व्याख्याओ एटले निर्युक्तिओ, भाष्यो, चूर्णिओ, अवचूर्णिओ वगेरे अनेकानेक ग्रंथो अर्धमागधी भाषामां सचवायेला छे. आ उपरांत प्रथमानुयोगमां एटले प्राचीन कथाग्रंथोमां पण ए ज भाषा सचवायेली छे. ए कथाग्रंथोना श्लोकोनुं पूर कांई नानुंसूनुं नथी पण लाखोनी संख्यामा छे. ए ग्रंथोमां प्रांजल गद्य पण छे अने सुमधुर पद्य पण छे. तर्कग्रंथो पण ए ज भाषामां रचायेला

छे. विशेषावश्यक भाष्य, धर्मसंग्रहणी वगेरे ग्रंथोमां जीवतत्त्व, ईश्वर-तत्त्व, कर्मतत्त्व वगेरेनी आलोचना–प्रत्यालोचनावाळा वादो ए अर्ध-मागधी भाषामां गुंथायेला छे. तथा सांख्यदर्शन, कणाददर्शन, न्यायदर्शन, बौद्धदर्शन वगेरे भिन्न भिन्न दर्शनोनी तथा बीजा मत-मतांतरोनी पण ए ग्रंथोमां तर्कनी सरणीए विशेष आलोचना थयेली छे. सन्मतितर्क जेवो महान् वादार्णव ग्रंथ मूळ ए ज भाषामां गाथा-रूपे रचायेलो छे. ए उपरांत ज्योतिषना, सामुद्रिकना, वैद्यकना, मंत्र-तंत्रना, खगोळभूगोळना, गणितना, इतिहास–पुराणना, योगना, चरित्रोना, नाटकोना, कथाप्रबंधोना, छंदशास्त्रना, कामशास्त्रना अने सुभाषित वगेरे बीजा बीजा अनेक विषयोने लगता ग्रंथो अर्धमागधी प्राकृतमां लखायेला आजे मळे छे. एटले संस्कृत साहित्यनी अपेक्षाए पण अर्धमागधी साहित्यनुं प्रमाण कांई नानुंसूनुं नथी।

वळी, जैनधर्म संबंधी प्राचीनमां प्राचीन शिलालेखो पण आ भाषामां ज लखायेला छे अने चक्रवर्ती अशोकना लेखोनी भाषा पण आ भाषाने घणी ज मळती आवे छे.

ब्राह्मणपरंपराना पंडितोए पण आ भाषाने मधुर, सरळ अने विशेष व्यापक मानेली छे तथा तेमणे गाथासप्तशती, सेतुबंध, गउड-वहो, रावणवहो वगेरे महाकाव्यो तथा अनेक नाटको आ भाषामां रचेलां छे. जैनपरंपराना ग्रन्थोमां वपरायेली आ भाषा सहज जेवी छे त्यारे ब्राह्मणपरंपराना ग्रन्थोमां वपरायेली आ भाषा ऊपर पंडिताउ भाषानो पास बेठेलो होवाथी ते कृत्रिम जेवी जणाय छे ए ध्यानमां राखवानुं छे.

आ रीते श्रमणपरंपराना अने ब्राह्मणपरंपराना पंडितोए आ प्राकृत भाषानी भक्तिभावपूर्वक सेवा करीने तेना साहित्यनो प्रचार करेलो छे.

तात्पर्य ए के साहित्यनी दृष्टिए, भारतीय समग्र संस्कृतिना अभ्यासनी दृष्टिए, प्राचीन अने अर्वाचीन भाषाना तुलनात्मक अभ्यासनी दृष्टिए, भाषाना अने शब्दोना प्रामाणिक क्रमविकास तथा इतिहासज्ञाननी दृष्टिए प्रस्तुत अर्धमागधीना अभ्यासनी खास अगत्य छे तथा ग्रामजनतानी सेवानी दृष्टिए पण अर्धमागधीना अभ्यासनुं विशेष महत्व छे. वळी, भारतीय धर्मसंस्कृतिना ज्ञान माटे अने सर्व-धर्मसमभावनी भावनाना विकास माटे पण अर्धमागधी भाषाना अभ्यासनुं ओछुं महत्त्व नथी अहीं ए खास याद राखवानुं छे के एक अर्धमागधीनो अभ्यास करवाथी शौरसेनी वगेरे प्राचीन प्रांतिक लोकभाषाओनुं ज्ञान सहजमां थई शके छे अने समग्र बौद्ध साहित्यने वांचवा समजवानां बारणा पण खुल्लां थई जाय छे.

वर्णविज्ञान

अर्धमागधीमा वपराता स्वरो अने व्यंजनोनी माहिती आ प्रमाणे छे:

स्वरो

ह्रस्व	दीर्घ	उच्चारणस्थान
अ	आ	कंठ—गळुं
इ	ई	तालु—ताळवुं
उ	ऊ	ओष्ठ—होठ
	ए	कंठ अने तालु
	ओ	कंठ अने ओष्ठ

१ स्वरनुं प्लुत उच्चारण वपरातुं ज नथी

२ ह्रस्व 'ऋ'ने बदले विशेषे करीने 'अ' वपराय छे अने क्यांय 'इ' तथा 'उ' पण वपराय छे.

३ 'ऌ' ने बदले 'इलि' वपराय छे.

४ कोई कोई प्रयोगोमां 'ए' अने 'ओ' ह्रस्व पण होय छे: एक्क–(एक). सोत्त–(श्रोत्र–कान).

५ 'ऐ'ने बदले विशेषे करीने 'ए' वपराय छे अने क्यांय क्यांय 'अइ' वपराय छे. फक्त एक 'अयि' अव्ययने बदले 'ऐ' अव्यय वपराय छे. 'ऐ' एटले संभावना अथवा कोमळ संबोधन:

ऐ रमे !—(हे रमे !) ऐ रमा !—(हे रमा !)

६ 'औ'ने बदले विशेषे करीने 'ओ' वपराय छे अने क्यांय क्यांय 'अउ' वपराय छे.

व्यजनो		उच्चारणस्थान
क् ख् ग् घ् ङ्	(क वर्ग)	कंठ
च् छ् ज् झ् ञ्	(च वर्ग)	तालु
ट् ठ् ड् ढ् ण्	(ट वर्ग)	मूर्धा–माथुं
त् थ् द् ध् न्	(त वर्ग)	दंत–दात
प् फ् ब् भ् म्	(प वर्ग)	ओष्ठ
अर्धस्वर–स्वर जेवा	य्	तालु
	र्	मूर्धा
	ल्	दंत
	व्	दंत–ओष्ठ
	स्	दंत
	ह्	कंठ
य् ल् व् ङ् ञ् ण् न् म्		नासिका–नाक

७ अर्धमागधी भाषामां कोई पण व्यंजननो स्वर वगरनो एकलो प्रयोग थतो नथी परंतु तमाम व्यंजनोनो प्रयोग स्वर साथे ज थाय छे एटले क् च् त् प् एवा खोडा व्यंजनो कोई पण स्थळे वपराता नथी.

८ जे व्यंजनो एक सरखा वर्गना छे वा आकारमां एक सरखा छे तेवा व्यंजनो स्वर वगरना होय तोपण वपराय छेः

चक्क	नक्ख	वग्ग	वग्घ
सच्च	वच्छ	अज्ज	ज्झाय

अय्य–(आर्य) (केवळ शौरसेनी मागधी अने पैशाची भाषामां ज)

कल्लाण सव्व सिस्स

९ 'ङ्' खोडो क्यांय एकलो वपरातो नथी परंतु क वर्गना अक्षरोनी साथे आगळना भागमां जोडायेलो होय तो ज ते एकलो-स्वर वगरनो खोडो-पण वपराय छे: अङ्क, सङ्ख, गङ्गा, सङ्घ.

स्वर साथे 'ङ' के 'ङ्ङ'नो प्रयोग क्यांय वपरातो ज नथी.

१० 'ञ्' खोडो क्याय एकलो वपरातो नथी परंतु च वर्गना अक्षरोनी साथे आगळना भागमां जोडायेलो होय तो ज ते एकलो-स्वर वगरनो-खोडो-पण वपराय छे:

मञ्च वाञ्छा अञ्जण सञ्झा

स्वर साथे 'ञ'नो प्रयोग क्यांय वपरातो नथी. परंतु मागधी, पालि अने पैशाची भाषामां स्वर साथे 'ञ्ञ'नो प्रयोग थाय छे: कञ्ञा-(कन्या)

११ ण् न् म् नो प्रयोग स्वर साथे स्वतंत्र थाय छे अने स्वर वगर ते त्रणे खोडा पण वपराय छे. तेमना वर्गना अक्षरोनी साथे आगला भागमां जोडायेला होय त्यारे ते त्रणे खोडा वपराय छे अने बीजे स्थळे ते त्रणे स्वतंत्र पण वपराय छे:

कण्टक कण्ठ वरण्ड सण्ढ

तन्तु पन्थ चन्द अन्ध

कम्प वम्फइ बिम्ब भम्भा

आ उदाहरणोमां वपरायेला ण् न् अने म् नुं उच्चारणस्थान नाक छे.

पुण्ण कन्ना धम्म गुण नर मल

आ उदाहरणोमां वपरायेला ण् न् अने म्नुं स्थान ते ते वर्गना व्यंजन जेवुं छे. जो के पुण्ण, कन्ना, धम्म मां ण् न् अने म्नुं उच्चारण स्थान नाक होय एवो भास थाय छे परंतु खरेखर तेम जणातुं नथी.

१२ अर्धमागधी भाषामां कोई पण प्रयोगमां जुदा जुदा जोडा अक्षरो (जेवा के–क्य क्र क्ल क्क क्ष वगेरे) वपराता ज नथी परंतु आठमी कलममां जणावेला जोडा अक्षरो ज वपराय छे. अपवाद तरिके च्म, द्र (द्+र), स्स, म्ह, ण्ह अने ल्ह आटला जुदा जुदा जोडिया अक्षरो केटलाक प्रयोगोमां वपराय छे: रुच्मी. चन्द्र. अक-स्मात् (आ एक ज शब्दमां अपवादरूपे खोडो त् पण वपरायेलो छे.) बम्हण. तिण्ह. आल्हाय.

१३ विसर्गनो प्रयोग मुद्दल थतो नथी 'अ' पछी विसर्ग आवे तो तेने बदले 'ओ' थाय छे अने बीजे क्यांय विसर्ग होय तो ते चाल्यो ज जाय छे: नरो (नरः) हरी (हरिः) बाहू (बाहुः)

१४ आठमी कलममां जणाव्या प्रमाणे जे जोडाक्षरो अर्ध-मागधीमां वपराय छे ते बधा मळीने २३ छे अने ते बधा उदाहरण साथे आ प्रमाणे छे:

१ क्क—चक्क–(चाक–चाकडो–चक्र)
२ क्ख—अक्खि–(आंख–अक्षि)
३ ग्ग—वग्ग–(वर्ग)
४ ग्घ—वग्घ–(वाघ–व्याघ्र)

५ च्च—सच्च–(साच, साचुं–सत्य)

६ च्छ—वच्छ–(वच्चुं / वच्चो / वच्चा)–वत्स)

७ ज्ज—अज्ज–(आज–अद्य)

८ ज्झ—उवज्झाय–(ओझो / ओझा)–उपाध्याय)

९ ट्ट—उट्ट–(ऊंट–उष्ट्र)

१० ट्ठ—कट्ठ–(काठ–काष्ठ)

११ ड्ड—गड्डा–(खाडो–गर्ता)

१२ ड्ढ—कड्ढइ–(काढे छे–कर्षति)

१३ त्त—रत्त–(रातु–रक्त)

१४ त्थ—नत्थि–(नथी–नास्ति)

१५ द्द—सद्द–(साद–शब्द)

१६ द्ध—बुद्धि

१७ प्प—अप्पा–(आप–आत्मा)

१८ प्फ—बप्फ–(बाफ–बाष्प)

१९ ब्ब—सुब्ब–(शुम्ब–दोरडु–वरत)

२० ब्भ—अब्भ–(आभ–अभ्र)

य्य—अय्य–(आर्य) जुओ कलम आठमी–'अय्य'नो प्रयोग.

२१ ल्ल—कल्ल–(काल्य–आवती काल–कल्य)

२२---व्व–सव्व–{ सब / सउ }–सर्व)

२३ स्स—सिस्स–(शिष्य)

१५ शब्दमां ज्यां ज्यां जुदा जुदा जोडिया व्यंजनो होय छे त्यां बधे अर्धमागधीमा ते जोडिया व्यंजनने बदले तेने मळतो एवो एक व्यंजन आवी जाय छे अथवा तो जोडिया व्यंजनमांनो एक, लोप पामी जाय छे एवे तमाम स्थळे ख छ ठ थ अने फनुं उच्चारण क्ख च्छ ट्ठ त्थ अने प्फ करवुं तथा घ झ ढ ध अने भनुं उच्चारण ग्घ ज्झ ड्ढ द्ध अने ब्भ करवु. जुओ कलम १४ मीना उदाहरणो—अक्खि, वग्ग, वग्घ, वच्छ, अज्ज वगेरे.

१५ जेम सरखेसरखा वर्गना के सरखेसरखा आकारना जोडाक्षरो त्रेवीश, कलम चौदमीमां बताव्या छे तेम नाकथी बोलाता एवा ङ् ञ् ण् न् अने म् साथे जोडायेला ते ते वर्गना जोडाक्षरो चोवीश छे.

अङ्क–(आंक). सङ्ख–(शङ्ख) गङ्गा. सङ्घ.

चञ्चु–(चांच) विञ्छिअ–(वींछी) अञ्जण–(आंजण)

सञ्झा–(साझ–संध्या) कञ्ञा–(कन्या)

कण्टक–(कांटो). कण्ठ वरण्ड–(वरंडो) सण्ढ–(सांढ)

पण्ण–(पान)

अन्त. पन्थ. चन्द–(चांदो) बन्धु. कन्ना–(कन्या)

चम्पग–(चंपो) वम्फइ–(इच्छे छे) अम्ब–(आंबो) बम्भण–(बाभण–ब्राह्मण) कम्म–(काम)

१६ ए उपरांत १२ मी कलममां पण जुदा जुदा छ जोडाक्षरो बतावेला छे एम एकंदर बधा मळीने २३+२४+६=५३ जोडाक्षरो अर्धमागधीमां प्रचलित छे.

शब्दविभाग

अर्धमागधी प्राकृत शब्दोनी बे जात छे: तत्सम अने देश्य.

जे शब्दो पंडिताउ भाषा साथे मळता आवे छे ते तत्सम शब्दो गणाय अने बीजा जे घणा प्राचीन शब्दो होई व्युत्पत्तिनी दृष्टिए पंडिताउ भाषा साथे के प्राकृत भाषा साथे सरखावी शकाय एवा न होय ते देश्य शब्दो गणाय आ देश्य शब्दो घणा जूना छे— वेदमां पण आवा देश्य शब्दो वपरायेला छे, देश्य शब्दोमां अनार्य शब्दो पण होय छे.

तत्सम शब्दोमां केटलाक शब्दो एवा होय छे जेओ पंडिताउ भाषा साथे एकदम मळता आवे छे अने बीजा केटलाक शब्दो एवा होय छे जेओ थोडा थोडा मळता आवे छे:

प्राकृत (एकदम मळता)	पंडिताउ भाषा	गुजराती
संसार	संसार	संसार
दावानल	दावानल	दावानळ
दाह	दाह	दाह-बळवुं
नीर	नीर	नीर
संमोह	संमोह	संमोह-मूढता
धूलि	धूलि	धूळ
हरण	हरण	हरण-हरी जवुं
समीर	समीर	समीर-वा-हवा

माया	माया	माया-मोहमाया
रसा	रसा	रसा-पृथ्वी
दारण	दारण	दारण-फाडी नाखवुं
सीर	सीर	सीर-हळ
वीर	वीर	वीर-शूरवीर
गिरि	गिरि	गिरि, गिर, गर-पर्वत
धीर	धीर	धीर

प्राकृत (थोडा थोडा मळता)	पंडिताउ भाषा	गुजराती
कणग	कनक	कनक-सोनुं
सुवण्ण	सुवर्ण	सोनु
विलया	वनिता	वनिता-स्त्री
घर	गृह	घर
इत्थी	स्त्री	स्त्री-तिरिया
रुक्ख	वृक्ष	रूंखडो-झाड
वाणारसी	वाराणसी	वनारस-काशी
(क्रियापदो) नच्चति	नृत्यति	नाचे छे
पुच्छति	पृच्छति	पूछे छे
कहति	कथयति	कहे छे
जपति	जल्पति	जंपे छे-बोले छे
जीहति	जिह्रेति	लाजे छे-शरमाय छे
चवति	वच्+ति	वांचे छे-बोले छे
जुज्झति	युध्यते	जूझे छे-लडे छे

देश्य शब्दो

देश्य	प्राकृत	पंडिताउ	गुजराती
खडक्की		-	खडकी
खड्डा	गड्डा	गर्त	खाडो

उत्तरिविडि			उतरेड-वासणो- नी मांड
ओज्झरी			होजरी
अआलि	अकाले (?)	अकाले (?)	पली-हेळी-वर- सादनी पली
गडयडी			गडगडाट
गायरी	गागरी		गागर
छासी			छाश
जोवारी			जुवार

आ देश्य शब्दोनी वधारेमां वधारे माहिती मळे ए माटे आचार्य हेमचन्द्रे 'देशी शब्दसंग्रह' नामे एक कोश रचेलो छे एनुं बीजुं नाम 'देशी नाममाला' पण छे. ए देश्यशब्दोमा अनेक शब्दो तामिल-तेलगुना छे अने अरबी-फारसीना पण छे.

शब्दरचना

आजकाल पंडिताउ भाषा संस्कृतनो विशेष प्रचार छे एथी आ नीचे अर्धमागधी शब्दोनी रचना समजाववा ते पंडिताउ शब्दोनो आश्रय लईने स्वरना अने व्यंजनना फेरफारने लगता केटलाक नियमो आपवाना छे अर्थात् संस्कृत शब्दना स्वरमां के व्यंजनमां केवा प्रकारनो फेरफार करवाथी तेनुं अर्धमागधी रूप बनी शके छे ए आ नीचे समजाववानुं छे:

स्वरना फेरफार

(विशेषरूप नियमो बाळबोध आंकडाओ साथे आपेला छे अने सामान्यरूप नियमो गुजराती आंकडाओ साथे आपेला छे.)

'अ' ना फेरफारो

केटलाक शब्दोमां 'अ'ना नीचे प्रमाणे फेरफार थाय छे:

१ अ नो आ

समृद्धि—सामिद्धि, समिद्धि.

प्रकट—पायड, पयड.

प्रतिपत्—पाडिवआ, पडिवआ-(पडवो तिथि).

प्रसुप्त—पासुत्त, पसुत्त-(सूतेलो)

सदृक्ष—सारिच्छ, सरिच्छ, सारिक्ख, सरिक्ख } सरखुं

प्रवासि—पावासु, पवासु

परकीय—पारकेर, परकेर, पारक्क, परक्क } पारकुं

अस्पर्श—आफंस

प्रवचन—पावयण
चतुरन्त—चाउरंत
दक्षिण—दाहिण, दक्खिण वगेरे.

२ अ नो इ्

स्वप्न—सिविण
सिमिण } —सोणुं.

ईषत्—इसि-(थोडुं)
वेतस—वेडिस-(वेतस, वेंत-नेतर-नुं झाड)
व्यलीक—विलिअ-(खोटुं).

व्यजन—विजण
विअण } —(विंजणो)

मृदङ्ग—मुइंग.
कृपण—किविण.
उत्तम—उत्तिम-(उत्तिम, उत्यम, उत्तम).

मरिच—मिरिच
मिरिअ } —(मरी-मरचुं)

दत्त — { दिन्न
दत्त } —दीना, दीधेल वगेरे.

पक्व—पिक्क
पक्क } —(पाकेलुं)

अङ्गार—इंगाल
अंगार } —(अंगारो).

ललाट—णिडाल
णडाल } —(निलाड-कपाळ)

मध्यम—मज्झिम-(मझमुं, माझम).
कतम—कइम-(कोण).

सप्तपर्ण—छत्तिवण्ण
छत्तवण्ण } —(सादडनुं झाड).

विषमय—विसमइअ }
विसमअ }

३ अ नो ई—हर-हीर-(हर-महादेव)

४ अ नो उ

ध्वनि—झुणि—(झुण, झण-अवाज).

विष्वक्-वीसुं-(व्यापक)

वन्द्र— { वुद्र
वंद्र }

खण्डित—खुडिअ }
खंडिअ }

गवय—गउअ—(गाय जेवुं प्राणी).

प्रथम—पुढुम }
पुढम
पढुम
पढम }

अभिज्ञ—अहिण्णु }
अहिज्ञ }

सर्वज्ञ—सव्वण्णु }
सव्वज्ञ }

कृतज्ञ—कयण्णु }
कयज्ञ }

आगमज्ञ—आगमण्णु }
आगमज्ञ }

स्वप्न—सुमिण }
सुविण } वगेरे

५ अ नो ए

शय्या—सेज्ञा—(सेज).

सौन्दर्य—सुन्देर

कन्दुक—गेंदुअ—(गेंद-दडो).

अत्र—एत्थ—(इत्थे, अठे, अत्रे, अतरे-अहीं).

पुराकर्म—पुरेकम्म—(पूर्वेनुं काम).

वल्ली—{ वेल्ली / वल्ली }—(वेल-वेलडी).

उत्कर—{ उक्केर / उक्कर }—(उकेरो, ऊकरडो-ढगलो)

पर्यन्त—{ पेरंत / पज्जंत }

आश्चर्य—अच्छेर—(अच्छेरुं).
अच्छरिअ
अच्छअर
अच्छरिज्ज—(अचरज).
अच्छरीअ

ब्रह्मचर्य—बभचेर.

अन्तःपुर—अंतेउर

अन्तश्चारी—अंतेआरी

६ अ नो ओ

पद्म—{ पोम्म / पउम }—(पद्म, पदम-कमळ)

नमस्कार—नमोक्कार

परस्पर—परोप्पर

अर्पयति—{ ओप्पेइ }—(ओपे छे)
{ अप्पेइ }—(आपे छे)

अर्पित—{ ओप्पिअ }—(ओपेलुं)
{ अप्पिअ }—(आपेलुं)

स्वपिति—{ सोवइ / सुवइ }—(सुवे छे)

७ अ नो लोप

अलाबु—{ लाउ / अलाउ }—(लउकी-दुधी)

अरण्य—{ रण्ण / अरण्ण }

'आ' ना फेरफारो

केटलाक शब्दोमा 'आ'ना नीचे प्रमाणे फेरफारो थाय छे:

८ आ नो अ—(केवळ भाववाचक अकारांत नरजातिनां नामोमां)

प्रवाह—{ पवह / पवाह }

प्रहार—{ पहर / पहार }

प्रचार—{ पयर / पयार }

प्रकार—{ पयर / पयार }—(पेर-रीत)

प्रस्ताव—{ पत्थव / पत्थाव }

बीजा केटलाक शब्दोमां पण आ नो अ थाय छे:

यथा	जह, जहा	(जेम)
तथा	तह, तहा	(तेम)
वा	व, वा	(वा-अथवा)
हा	ह, हा	(हा !)
उत्खात	उक्खय, उक्खाय	

चामर	चमर, चामर	(चमर, चम्मर, चामर)
कालक	कलअ, कालअ	(कालुं)
स्थापित	ठविअ, ठाविअ	(ठव्यो-स्थाप्यो)
प्राकृत	पयय, पायय	(प्राकृत)
तालवृन्त	तलवेंट, तालवेंट	(ताडनुं वींट-पंखो)
हालिक	हलिअ, हालिअ	(हाळी-खेडुत)
नाराच	नाराय, नराय	(लोढानुं बाण)
बलाका	बलया, बलाया	(बगलुं)
कुमार	कुमर, कुमार	(कुंवर)
खादिर	खाइर, खइर	(खेरनुं लाकडुं)
महाराष्ट्र	मरहट्ठ	(मराठा)
मांस	मंस	(मंस)
पांसु	पंसु	
पांसन	पंसण	
कांस्य	कंस	(कांसुं)
कांसिक	कंसिअ	
वांशिक	वंसिअ	
पाण्डव	पंडव	
सांयात्रिक	संजत्तिअ	(समुद्रनो प्रवासी)
श्यामाक	सामअ	(खेड्या विना ऊगतुं सामो नामनुं धान)

२. आ नो इ

सदा— { सइ / सया }

निशाकर—{ निसिअर / निसाअर }

निशाचर— ,,

कूर्पास—{ कुप्पिस / कुप्पास }

आचार्य—{ आइरिअ / आयरिअ }

१० आ नो ई

स्त्यान—{ थीण / ठीण }—(थीणुं-थीजी गयेलुं)

खल्वाट— खल्लीड—(टालियो)

११ आ नो उ

सास्ना—सुण्हा—(गायने गळे लटकतो रोटला जेवो भाग)

स्थावक— थुवअ (स्तुति करनारो)

आर्द्र— उल्ल—(आलुं)

१२ आ नो ऊ—आसार—{ ऊसार / आसार }—(धारबंध वरसाद अथवा फेलावुं)

आर्या—{ अज्जू / अज्जा }—(आजी-सासू) —(देवी)

१३ आ नो ए—ग्राह्य—गेज्झ

द्वार—{ देर / दार / दुआर / वार }—(दार-द्वार) —(दुआर, दुवार) —(वार-वारणुं)

पारापत—{ पारेवअ / पारावअ }—(पारेवुं)

एतावन्मात्र—{ एत्तिअमेत्त / एत्तिअमत्त }—(एटलुं मात्र)

भोजनमात्र—भोअणमेत्त

१४ आ नो ओ—आर्द्र— { ओल्ल / अल्ल / अद्द } —(ओला-पाणीना [करा / —(आळुं- भीनुं)

इकारना फेरफारो

केटलाक शब्दोमा इकारना नीचे प्रमाणे फेरफारो थाय छेः

१५ इ नो अ—पथि— पह— (पथ-मारग)

पृथिवी— { पुहवी / पुढवी }

प्रतिश्रुत्—पडंसुआ—(सामुं संभळावुं—पडघो)

मूषिक—मूसअ—(मूसो-उंदर)

हरिद्रा—हलद्दा (हळदर-हलदी)

विभीतक—वहेडअ—(बहेडुं)

शिथिल— { सढिल / सिढिल } —(ढीलुं)

इङ्गुद— { अंगुअ / इंगुअ }

तित्तिरि—तित्तिर—(तेतर पंखी)

इति—इअ (वाक्यनी आदिमां ज)

१६ इ नो ई—जिह्वा—जीहा—(जीभ)

सिंह—सीह—(सीह, सिंघ, सी).

त्रिंशत्—तीसा—(त्रीश-तीस)

विंशति—वीसा (वीश-वीस)

निःश्वास—नीसास—(नीसासो)

नि सरति—नीसरइ—(नीसरे छे)

१७ इ नो उ—द्वि—दु—(दु-बे)

द्विमात्र—दुमत्त

द्विरेफ—दुरेह

द्विरेख—दुरेह

द्विविध—दुविह

द्विवचन—दुवयण

द्विगुण— { दुउण, बिउण } —बमणुं

द्वितीय— { दुइअ —(दूजा), बिइअ —(बीजो) }

निमज्जति—णुमज्जइ

निमग्न—णुमन्न

प्रवासि—पावासु

इक्षु—उच्छु—(ऊस-शेरडी)

युधिष्ठिर— { जहुट्ठिल, जहिट्ठिल }

१८ इ नो ए—मिरा— मेरा— { मर्यादा, माळानो मेर }

१९ इ नो ओ—द्विवचन— दोवयण

द्विधा— { दोहा, दुहा }

२० ई नो अ—हरीतकी— हरडई—(हरडे)

२१ ई नो आ - कश्मीर— कम्हार

२२ ई नो इ—पानीय— पाणिअ—(पाणी)

अलीक— अलिअ—(आळ ?)

जीवति— जिवइ—(जिवे छे)

जीवतु— जिवउ—(जिवो-जिवता रहो)

व्रीडित— विलिअ—(वीलुं-भोंठुं)

करीष— करिस—(छाणुं)

द्वितीय— दुइअ
तृतीय— तइअ
गभीर— गहिर—(घेरु)
उपनीत— उवणिअ—(पासे आणेलुं)
प्रदीपित— पलिविअ—(पलीतो-सळगेलु)
प्रसीद— पसिअ—(प्रसन्न था)
गृहीत— गहिअ—(ग्रहण करेलुं)
वल्मीक— वम्मिअ—(बांबी-राफडो)
तदानीम्— तयाणि—(ते समये-ते टाणे)

२३ ई नो उ—जीर्ण—{ जुण्ण }—(जूनुं)
{ जिण्ण }—(पची गयेलु)

२४ ई नो ऊ—हीन—{ हूण }—(हूण जाति)
{ हीण }—(हीणुं)

विहीन—{ विहूण
विहीण }

तीर्थ—{ तूह
तित्थ }—(तीर्थ-नदीनो घाट)

२५ ई नो ए—पीयूष पेयूस
आपीड— आमेल—(छोगुं)
बिभीतक बहेडअ
कीदृश— केरिस —(कैसा-केवुं)
ईदृश— एरिस—(ऐसा-एवुं)
नीड—{ नेड
नीड }—(नीड-निलय-माळो पक्षीनो)'
पीठ—{ पेढ
पीढ }—(पेढली)

उकारना फेरफारो

केटलाक शब्दोमां उकारना नीचे प्रमाणे फेरफार थाय छे:

२६ उ नो अ—मुकुल— मउल

मुकुर— मउर—(मोर आंबानो)

मुकुट— मउड—(मोड-मोडियो)

अगुरु— अगरु—(अगरनो धूप)

गुर्वी — गरुई—(गुर्वी-मोटी-भारे)

युधिष्ठिर—{ जहुट्ठिल / जहिट्ठिल }

सौकुमार्य—सोअमल्ल—(सुंवाळप)

गुडूची—गलोई—(गळो)

उपरि— { अवरिं / उवरिं }—(ऊपर)

गुरुक — { गरुअ / गुरुअ }—(गरवो-भारे गौरव-वाळो)

२७ उ नो आ—विद्रुत— विद्दाअ

२८ उ नो इ—भ्रुकुटि— भिउडि—(भवां चडवां-गुस्सानी निशानी)

पुरुष— पुरिस

२९ उ नो ई— क्षुत— छीअ –(छींक)

३० उ नो ऊ—सुभग— { सूहव / सुहअ } (सौभाग्यवाळो)

दुर्भग— { दूहव / दुहव }—(दौर्भाग्यवाळो)

दुस्सह— { दूसह / दुस्सह / दुसह }—(सहन करवुं कठण)

मुसल—{ मूसल / मुसल }—मूसळ, मूशळ.

३१ उ नो ओ—कुतूहल—{ कोऊहल / कोउहल्ल / कुऊहल }—(कुतूहळ, कतोहळ)

३२ ऊ नो अ—दुकूल—{ दुअल्ल / दुऊल / दुगुल्ल }—(डगलो ?)

३३ ऊ नो ई—उद्व्यूढ—{ उव्वीढ / उव्वूढ }

३४ ऊ नो उ—भ्रू— भुमया—(भवां)

हनूमत— हणुमंत

कण्डूया— कण्डुया—(कण्डू–खरज–चळ)

कण्डूयते— कंडुयइ—(खंजवाळे छे)

वातूल— वाउल

मधूक—{ महुअ / महूअ }—(महुडां)

३५ ऊ नो इ अने ए—नूपुर—{ निउर / नेउर / नूउर }—(नेवळ–झांझर)

३६ ऊ नो ओ—कूष्माण्डी—{ कोहंडी / कोहली }—(कोळी–कोळा-नी वेल)

तूणीर—तोणीर

कूर्पर—कोप्पर

स्थूल—थोर

ताम्बूल—तंबोल—(तंबोळ)

गुडूची—गलोई

मूल्य—मोल्ल—(मूल–मोल)

स्थूणा—{ थोणा / थूणा }—(घरनो थांभलो)

तूण—{ तोण / तूण }

ऋकार अने ऌकारना फेरफारो

केटलाक शब्दोमां ऋकारना अने ऌकारना नीचे प्रमाणे फेर-फारो थाय छेः

३७ ऋ नो अ—

घृत—घय (घी)
तृण—तण (तरणुं-तणखलुं)
कृत—कय (कर्युं)
मृत—मड (मडुं-मरेलुं)
वृक—वग (वरु)
मृत्तिका—मट्टिआ (माटी)
कृत—कड (कर्युं)
कृष्ट—कड्ढ (काढेलुं)
तृतीय—तइअ (त्रीजुं)
मृदुक—मउअ (मउ-कोमळ-नरम
मृदुत्व—मउत्तण (मउपणुं)
पृष्ठ—पट्ठ (पाठुं-पाछलो भाग)
मसृण—मसण (मसृण-सुंवाळुं)
मृगाङ्क—मयंक (चंद्र)
मृत्यु—मच्चु
शृङ्ग—संग (शिंग, शिंगडुं)
धृष्ट—धट्ठ (धीठ)
निवृत्त—निअत्त
वंदारय—वृन्दारय (देव)
वृषभ—वसह (बळद)
बृहस्पति—वहप्फइ

३८ ऋ नो आ

कृशा—कासा मृदुक—माउक्क मृदुत्व—माउत्तण

३९ ऋ नो इ

हृदय—हियय (हैयुं)
मृष्ट—मिट्ठ (मीठो रस)
शृंग—सिंग
वृष्ट—विट्ठ

दृष्ट—दिट्ठ (दीठुं)
शृगाल—सिआल (शियाळ)
वृश्चिक—विंछिअ (वींछी)
पृष्ठ—पिट्ठ (पीठ)
मसृण—मसिण
मृगाङ्क—मिअंक
मृत्यु—मिच्चु (मीच)
बृहस्पति—विहप्फइ (वीफे—गुरुवार)
वृन्त—विंट (बींट-बेट-डींट)
मातृ—माइ (माइ-मा)
वृष्टि—विट्ठि
वृष्ट—विट्ठ
पृथक्—पिहं (पृथक्-जुदुं)
मृदङ्ग—मिइंग
नप्तृक—नत्तिअ (नातु-दीकरीनो दीकरो)
ऋषि—इसि
कृसरा—किसरा (खीचडी)

४० ऋ नो रि

ऋषि—रिसि (रिखि-रख)
ऋण—रिण (रण-करज)
ऋद्धि—रिद्धि (रद्धि-रध)
ऋषभ—रिसह (बळद)
ऋग्वेद—रिउव्वेय
ऋक्ष—{ रिच्छ (रींछ) / रिक्ख }
ऋत—{ रित (ऋत-साचुं) / रिअ }
ऋजु—रिज्जु (ऋजु-सरळ)
ऋतु—{ रितु (रत) / रिउ }

४१ ऋ नो उ

वृद्ध—वुड्ढ (वूढो)
वृद्धि—वुड्ढि (वद्दि-वधारो)
जामातृक—जामाउअ (जमाई)
भ्रातृक—भाउअ (भाउ-भाई)
पितृक—पिउअ (पिता)
प्रावृष—पाउस (पाउस-वरसाद-वर्षा)
मातृष्वसा—माउसिसा (माशी-मानी बेन)
पितृष्वसा—पिउसिआ (बापनी बेन-फई)
मृषा—मुसा (मरखा-खोटुं वचन)
वृष्ट—वुट्ठ (वूठो-वरस्यो)

निवृत्त—निवुत्त	पृथक्—पुहं
वृन्दारक—वुंदारय	मृदङ्ग—मुइंग
वृषभ—उसह	नप्तृक—नत्तुअ
मातृगृह—माउहर (मायरु-मानुं घर)	बृहस्पति—बुहप्फइ
	ऋजु—उज्जु
पितृगृह—पिउहर (पीहर, पियर-बापनुं घर)	ऋषभ—उसह
	ऋतु—उउ
पृच्छति—पुच्छइ (पूछे छे)	भ्रातृ—भाउ (भाउ-भाई)
मृषा—मुसा	

४२ ऋ नो ऊ—मृषा— मूसा, मुसा

मृषावाद— मूसावाअ, मुसावाअ.

४३ ऋ नो ए—वृन्त— वेण्ट, विंट.

४४ ऋ नो ओ—वृन्त— वोण्ट, विंट.

मृषा— मोसा

मृषावाद— मोसावाअ

४५ दृ नो रि

सदृश—सरिस (सरखुं-सरखुं)	युष्मादृश—तुम्हारिस (तमारी जेवुं)
ईदृश—एरिस (एनी जेवुं-एवुं)	
कीदृश—केरिस (केनी जेवु-केवुं)	अस्मादृश—अम्हारिस (अमारी जेवुं)
तादृश—तारिस (तेनी जेवुं-तेवु)	अन्यादृश—अन्नारिस (अन्यनी जेवुं-बीजानी जेवुं)
भवादृश—भवारिस—(आपनी जेवु)	

४६ ऋ नो ढि—आदृत— आढिअ (आदरेलुं)

४७ ऋ नो अरि—दृप्त— दरिअ (दृप्त-दर्पने लीधे फाटी गयेल)

४८ ऌ नो इलि—क्लृप्त— किलित्त (कल्पेल-तैयार करेल)
क्लृन्न— किलिन्न (गीलुं-भीनुं)

ए ना फेरफारो

केटलाक शब्दोमा 'ए'ना नीचे प्रमाणे फेरफारो थाय छेः

४९ ए नो इ

वेदना—{ विअणा / वेअणा }—(वीण-प्रसूतिनी पीडा)

चपेटा—{ चविडा / चवेडा }—(चपत-लापोट)

देवर—{ दिअर / देवर }—(दियर, देर, देवर-वरनो नानो भाई)

केसर—{ किसर / केसर }—(केसर-केशर)

५० ए नो ऊ—स्तेन—{ थूण / थेण }—(चोर)

ऐ ना फेरफारो

केटलाक शब्दोमां 'ऐ'ना नीचे प्रमाणे फेरफारो थाय छेः

५१ ऐ नो इ—सैन्धव—सिंधव—(सिंधव-विशेष प्रकारनुं मीठुं)

शनैश्चर—सणिच्छर—(शनीचर-शनिवार)

सैन्य—{ सिन्न / सेन्न }—{ सैन्य / सेन }

५२ ऐ नो ए

शैल—सेल—(शैल-पहाड) वैद्य—वेज्ज—(वैद्य-वेद)

त्रैलोक्य—तेलुक—(त्रण लोक) कैटभ—केढव—(कैटभ नामनो राक्षस)

ऐरावण—एरावण-(ऐरावण)
कैलास—केलास—(कैलास-हिमालय)
वैताढ्य—वेयड्ढ—(वेयर्ध-वैताढ्य पर्वत)
वैधव्य—वेहव्व—(विधवा-पणुं)
अवैधव्य—अवेहव्वत्तण—(एवातण-सौभाग्य)

१२ ऐ नो अइ

सैन्य—सइन्न
दैत्य—दइच्च—(दइत-दैत्य)
भैरव—भइरव—(भैरव)
वैदेह—वइएह—(वैदेह)
वैदर्भ—वइदब्भ—(विदर्भ देशनुं)
वैश्वानर—वइस्साणर—(विश्वानर-अग्नि)
दैवत—दइवअ—(दई-दैव)
वैतालीय—वइआलीअ
वैदेश—वइएस—(विदेशनुं)
कैतव—कइअव
वैशाख—वइसाह—(वइ-शाख-वैशाख-मास)
कैरव—{ कइरव / केरव }—(एक जातनुं कमळ)
वैश्रवण—वइसवण / वेसवण
वैशम्पायन—{ वइसंपायण / वेसंपायण }—(वइशंपायन)
वैतालिक—{ वइआलिअ / वेआलिअ }
दैन्य—दइन्न (दीनता)
ऐश्वर्य—अइसरिअ—(ऐश्वर्य)
वैशाल —वइसाल—(विशाला नगरनुं)
स्वैर—सइर—(सेर-स्व-च्छंदी प्रवृत्ति)
चैत्य—{ चइत्त / चेइअ / ची }
वैर—{ वइर / वेर }—वेर-दुस्मनी
दैव—देव्व
कैलास—कइलास

वैशिक—{ वइसिअ / वेसिअ }

चैत्र —{ चइत्त / चेत्त }—(चइतर-चेत-मास)

दैव— { दइव्व / दइव / देव्व }—(दई)

५४ ऐ नो ई—धैर्य—धीर—(धीरज)

ओ ना फेरफारो

केटलाक शब्दोमां ओ ना नीचे प्रमाणे फेरफारो थाय छेः

५५ ओ नो अ

अन्योन्य—{ अन्नन्न / अन्नुन्न }

प्रकोष्ट—{ पवट्ठ / पउट्ठ }—(पोंचो)

आतोद्य—{ आवज्ज / आउज्ज }—(आवज-पख+आवज-पखावज पखाज-पडखेथी वागतुं).

शिरोवेदना—{ सिरविअणा / सिरोविअणा }

मनोहर—{ मणहर / मणोहर }—(मनहर)

सरोरुह—{ सररुह / सरोरुह }—(सर-सरोवर-मां ऊगतु कमळ)

५६ ओ नो ऊ—सोच्छ्वास—सूसास

५७ ओ नो अउ, आअ } गो—गउ—(गउ)
गो—गाअ—(गाय)
गाई (नारीजाति-गाई)

औ ना फेरफारो

केटलाक शब्दोमां औ ना नीचे प्रमाणेना फेरफारो थाय छे:

५८ औ नो आ—गौरव—{ गारव / गउरव } (गारव)

५९ औ नो आव—नौ—नावा—(नाव)

६० औ नो उ—सौन्दर्य—{ सुन्देर / सुन्दरिअ }

मौञ्जायन—मुजायण

शौण्ड—सुण्ड

शौद्धोदनि—सुद्धोअणि—(शुद्धोदन राजानो पुत्र-सिद्धार्थ बुद्ध)

दौवारिक—दुआरिअ—(डोढियो-डोढि ऊपर बेसनारो-चोकीदार)

सौगन्ध्य (सुगंधपणु)—सुगंध

पौलोमी—(पुलोमी)

सौवर्णिक—सुवण्णिअ—(सोनी)

कौक्षेयक—{ कुच्छेअय / कोच्छेअय }—काखमां राखी शकाय ते-तलवार

६१ औ नो अउ—कौक्षेयक—कउच्छेअय

पौर—पउर—(पुरनो वासी)

कौरव—कउरव—(कउरव-पांडव)

कौशल—कउसल

पौरुष—पउरिस—(फोरस-फोरद्द)

सौध—सउध—(सुधा एटले चूनो-चूनाथी चणेलुं मकान)

गोड—गउड—(गोड देशनो वासी)
मौलि—मउलि—(मोळियुं-माथे बांधवानुं)
मौन—मउण—(मोन-मउन)
सौर—सउर
कौल—कउल

६२ औ नो ओ—कौमुदी—कोमुई
यौवन—जोव्वण—(जोवन)
कौस्तुभ—कोत्थुह
कौशाम्बी—कोसंबी
क्रौञ्च—कोंच
कौशिक—कोसिअ

६३ नीचे जणावेला संस्कृत शब्दोने बदले तेमनी सामे जणावेल शब्दो अर्धमागधीमां वपराय छे.

संस्कृत	अर्धमागधी	गुजराती
त्रयोदश—	तेरह—	तेर
त्रयोविंशति—	तेवीसा—	तेवीश-त्रेवीश
त्रयस्त्रिंशत्—	तेत्तीसा—	तेत्रीश-तेतीस
स्थविर—	थेर	
विचकिल—	वेइल्ल-विअइल्ल	
अयस्कार—	एक्कार	
कदल—	केल, कयल—	केळुं
कदली—	केली, कयली—	केळनुं झाड
कर्णिकार—	कण्णेर / कण्णिआर	कणेरनुं झाड
अयि—	ए / अयि	ए ! ऐ ! अइ !

संस्कृत	अर्धमागधी	गुजराती
मयूख—	मोह, मऊह	किरण
लवण—	लोण, लवण—	लूण
चतुर्गुण—	चोग्गुण, चउग्गुण—	चोगणुं
चतुर्थ—	चोत्थ, चउत्थ —	चोथुं
चतुर्दश—	चोद्दह, चउद्दह —	चौद
चतुर्दशी—	चोद्दसी, चउद्दसी—	चौदश
चतुर्वार—	चोव्वार, चउव्वार—	चार वार
सुकुमार—	सोमाल, सुकुमाल—	सूंवाळुं
कुतूहल—	कोहल, कोउहल्ल—	कतूहळ
उदूखल—	ओहल, उऊहल—	ओखली-खांणियो
उलूखल—	ओक्खल, उलूहल—	ओखली-खांणियो
अव	ओ, अव	
अप	ओ, अव	
उप	ओ, ऊ, उव	
अवमाल्य—	ओमल्ल अवमल्ल —	निर्माल्य
अवसर—	ओज्झर—	निर्झरणुं
आवलि—	ओलि—	ओळ-पंगत
अवसर—	ओसर	अवसर ओसरमोसर- अवसर-महा-अवसर
उपाध्याय—	ओज्झाय, उज्झाय उवज्झाय —	ओझा
उपालंभ—	ओलंभ, उवालंभ —	ओलंभो

संस्कृत	अर्धमागधी	गुजराती
उत	ओ, उअ	
निषण्ण	णुमण्ण णिसण्ण	
प्रावरण—	पंगुरण पाउरण पावरण —	पागरण
प्रतिष्ठा—	परिट्ठा— पइट्ठा	प्रतिष्ठा
प्रतिष्ठित—	परिट्ठिअ— पइट्ठिअ	प्रतिष्ठित
बाहु—	बाहा (नारीजाति)	बांय
पूतर—	पोर—	पोरो
बदर—	बोर—	बोर
बदरी—	बोरी—	बोरी
नवमालिका—	नोमालिया	
नवफलिका—	नोहलिया	
पूगफल—	पोप्फल—	फोफळ-सोपारी
पूगफली—	पोप्फली—	फोफळनुं झाड
नव—	नो नव —	नउ, नव (संख्या)
न+पुन. —	न+उणा न+उणाइ न+उण न+उणो	
पुनः	पुणाइ	
च	अ, य, च	
इति	इअ (वाक्यनी आदिमां ज वपराय)	

व्यंजनोना फेरफारो

आ नीचे शब्दने छेडे रहेला व्यंजनना तथा शब्दनी अंदर रहेला असंयुक्त के संयुक्त व्यंजनना फेरफारो बताववाना छे.

तेमां शरुआतमां छेडे रहेला व्यंजननो लोप अने बीजा फेरफारो बतावी पछी शब्दनी अंदरना व्यंजनना लोपने अगेनां सूचनो करी त्यार बाद व्यंजनना जुदा जुदा फेरफारो विशे सूचन करवानां छे.

६४ शब्दना छेडानो व्यंजन लोप पामे छे:

तमस्	तम	तम-अंधकार
नामन्	नाम	नाम
यशस्	जस	जश-जस
तपस्	तप	तप
तावत्	ताव	त्यां सुधी

६५ नारी जातिना शब्दोना छेडाना व्यजननो आ थाय छे अने तेनु उच्चारण या जेवुं पण थाय छे'

सरित्—	सरिआ, सरिया—	सरिता-नदी
प्रतिपद्—	पाडिवआ, पाडिवया—	पडवो
संपद्	संपआ, संपया	संपदा

(विद्युतनु विज्जु के विज्जुला थाय पण विज्जुआ के विज्जुया न थाय.)

६६ नारी जातिना शब्दोना छेडाना र नो रा थाय छे:

गिर्	गिरा	गिरा-वाणी
पुर्	पुरा	पुर-नगरी
धुर्	धुरा	धोंसरुं

६७ केटलाक शब्दोना छेडाना व्यंजननो अ थाय छे:

शरत्	सरअ	शरद् ऋतु
भिषक्	भिसअ	वैद्य

६८ केटलाक शब्दोना छेडाना व्यंजननो फेरफार नीचे प्रमाणे थाय छे:

क्षुध	छुहा	क्षुधा-खध्या
दिश्	दिसा	दिशा-दश
प्रावृष्	पाउस	पावस-चोमासुं
आयुष्	आउ, आउस	आयखुं-आवखुं
अप्सरस्	{ अच्छरसा / अच्छरा }	अपसरा
ककुभ्	कउहा	दिशा
धनुष्	धणु, धणुह	धनुष

६९ शब्दनी अंदर आवेला अने बीजा कोई व्यंजननी साथे नहि जोडाएला एवा क् ग् च् ज् त् द् प् ब् य् अने व् नो लोप थाय छे

७० लोप थया पछी बाकी रहेलो स्वर अ के आ होय अने तेनी पूर्वे पण अ के आ आवेलो होय तो तेनुं उच्चारण य के या जेवु थाय छे

संस्कृत	अर्धमागधी	गुजराती
लोक	लोअ	लोक
तीर्थंकर	तित्थयर	तीर्थंकर
शकट	सयढ	{ छकडो, सगडी, शकट
चित्रकर	चित्तयर	चितारो-चितेरो

संस्कृत	अर्धमागधी	गुजराती
नग	नय	नग–पर्वत
नगर	नयर	नगर–नेर
मृगाङ्क	मयंक	चंद्र
शची	सई	शची–इंद्राणी
कच	कय	कच–वाळ
वाचा	वाया	वाचा
वचन	वयण	वेण–वचन
रजत	रयय	रजत–रूपुं
प्रजा	पया	परज–प्रजा
गज	गय	गज–हाथी
गति	गइ	गति
गत	गय	गयो
यति	जइ	जति
अमृत	अमय	अमी
गदा	गया	गदा
वदन	वयण	वदन–मुख
मदन	मयण	मदन
हृदय	हियय	हैयुं
रिपु	रिउ	रिपु–शत्रु
सुपुरुष	सुउरिस	सुपुरुष
विबुध	विउह	विबुध
कबन्ध	कयंध	धड
नयन	नयण	नेण
वियोग	विओग	विजोग–वजोग
यथाख्यात	अहक्खाय	
यथाजात	अहाजाय	

प्रयोग	पओअ	
लावण्य	लायण्ण	लावण्य
वडवानल	वलयाणल	वडवानल

७१ म नो लोपः

यमुना—	जँउणा	
चामुण्डा—	चाँउण्डा	
कामुक—	काँउअ	
अतिमुक्तक—	अणिउँतय अइमुंतय अइमुत्तय	
कुमर	कुँवर	कंवर

७२ जोडाक्षरमां आगला भागमां आवेला क् ग् ट् ड् त् द् प् श् ष् अने स् नो लोप थाय छे.

७३ लोप थया पछी कोई पण शब्दनी अंदरनो ज व्यंजन डबल थाय छेः

भुक्त	भुत्त	भुक्त-भोगवेलुं
युक्त	जुत्त	जूत्युं-जोडेलुं
दुग्ध	दुद्ध[1]	दूध
षटपद	छप्पय	छ पगवाळो-भमरो अथवा छप्पो—छ चरणवाळो
खड्ग	खग्ग	खांडुं—तरवार
षड्ज	सज्ज	
उत्पाद	उप्पाय	

[1] जुओ जोडाक्षरोनी समजुती कलम १५ पृ० ४५.

उत्पत्ति	उप्पत्ति	
मुद्गर	मोग्गर	मोगरी-कूटवानी मोगरी
मुद्ग	मुग्ग	मग
तप्त	तत्त	तातुं—गरम
सुप्त	सुत्त	सुतो
निश्चल	निच्चल	निश्चळ
श्च्युत	चुअ	चुयुं-चुपलुं
श्लक्ष्ण	लण्ह	नानुं-लहान
आश्लिष्ट	आलिद्ध	
शुष्क	सुक	सूकुं
षष्ठ	छट्ठ	छट्ठुं
गोष्ठी	गोट्ठी	गोठ
निष्ठुर	निट्ठुर	नठोर
स्नेह	नेह	नेह-स्नेह
स्खलित	खलिअ	खळेल-लपसी पडेल

७४ जोडाक्षरमा पाछला भागमां आवेला म् न् अने य् नो लोप थाय छे.

युग्म	जुग्ग	जोडी-चे त्रेनी जोडी
नग्न	नग्ग	नागो-नंगा
व्याध	वाह	व्याध-शिकारी

(वधु करवा माटे जुओ नियम ७२)

७५ जोडाक्षरना आगला के पाछला भागमां रहेला ल् व् व् अने र् तथा विसर्गनो लोप थाय छे.

आगला—	उल्का	उक्का	उल्का
	वल्कल	वक्कल	वागळ-वल्कल
	शब्द	सद्द	साद
	शब्दायते	सद्दायए	सादे छे—साद करे छे
	स्तब्ध	ठड्ढ	ठंडुं
	लुब्धअ	लोद्धअ	लोधो-लालचु
	वर्ग	वग्ग	वर्ग
	स्वर्ग	सग्ग	सरग-स्वर्ग
	वार्ता	वत्ता	वात-वात
	दुःख	दुक्ख	दुख
पाछला—	श्लक्ष्ण	सण्ह	सूनुं-नानुं सूनुं-लहान-सहान
	विक्लव	विक्कव	
	पक्व	पक्क	पाकुं
	ध्वंस	धंस	ध्वस
	चक्र	चक्क	चाक-चाकडो
	ग्रह	गह	ग्रह
	रात्रि	रत्ति	रात

(डबल करवा माटे जुओ नियम ७३)

(ज्यां आगला के पाछला बन्ने अक्षरोना लोपनो संभव होय त्यां अर्थनो भ्रम पेदा न थाय ए रीते लोप करवानुं ध्यानमां राखवानुं छे.)

आगलानो लोप—

द्विगुण	विउण	बमणुं
कल्मष	कम्मस	कल्मष-पाप

(अहीं ' द्विगुण ' शब्दमां ७२ मा नियमथी ' द् 'नो लोप प्राप्त हतो अने ७५ मा नियमथी व् नो लोप प्राप्त हतो. एमां एकला द् नो लोप प्राप्त थयेल छे.)

' कल्मष ' मां ७४ मा नियमथी ' म् 'नो लोप प्राप्त हतो अने ७५ मा नियमथी ल् नो लोप प्राप्त हतो. एमां केवळ ल् नो लोप थयेल छे.)

पाछलानो लोप—

काव्य	कव्व	(जुओ नियम ७४ तथा ७५)	काव्य
माल्य	मल्ल	,, ,, ,,	माळा
द्विजाति	दुआइ	,, ७२ तथा ७५	द्विजाति-ब्राह्मण

बन्नेनो वाराफरती लोप—

उद्विग्न—	उव्विग्ग	(न् नो लोप–नियम ७४)	
	उव्विन्न	(ग् नो लोप–नियम ७२)	
द्वार—	बार	(द् नो लोप–नियम ७२)	बार–बारणुं
	दार	(व् नो लोप–नियम ७५)	दार ,,

७६ ' द्र 'ना र् नो लोप विकल्पे थाय छे:

चन्द्र—	चन्द्र, चन्द—	चंद–चांदो
रुद्र—	रुद्र, रुद—	रुदर–रुद्र
समुद्र—	समुद्र, समुद—	समुदर–समदर
द्रह—	द्रह, दह—	धरो–पाणीनो धरो
द्राक्षा—	द्रक्खा. दक्खा—	दराख–द्राख–धराख
द्रव्य—	द्रव्व, दव्व—	द्रव्य

आगला—उल्का	उक्का	उल्का
वल्कल	वक्कल	वागळ-वल्कल
शब्द	सद्द	साद
शब्दायते	सद्दायए	सादे छे—साद करे छे
स्तब्ध	ठड्ढ	ठंडुं
लुब्धअ	लोद्धअ	लोधो-लालचु
वर्ग	वग्ग	वर्ग
स्वर्ग	सग्ग	सरग-स्वर्ग
वार्ता	वत्ता	वात-वात
दुःख	दुक्ख	दुख
पाछला—श्लक्ष्ण	सण्ह	सूनुं-नानुं सूनुं-लहान-सहान
विक्लव	विक्कव	
पक्व	पक्क	पाकुं
ध्वंस	धंस	ध्वस
चक्र	चक्क	चाक-चाकडो
ग्रह	गह	ग्रह
रात्रि	रत्ति	रात

(डबल करवा माटे जुओ नियम ७३)

(ज्या आगला के पाछला बन्ने अक्षरोना लोपनो संभव होय त्यां अर्थनो भ्रम पेदा न थाय ए रीते लोप करवानुं ध्यानमां राखवानुं छे.)

— आगलानो लोप—

द्विगुण	विउण	वमणुं
कल्मष	कम्मस	कल्मष-पाप

(અહીં 'દ્વિગુણ' શબ્દમાં ૭૨ મા નિયમથી 'દ્'નો લોપ પ્રાપ્ત હતો અને ૭૫ મા નિયમથી વ્ નો લોપ પ્રાપ્ત હતો. એમાં એકલા દ્ નો લોપ પ્રાપ્ત થયેલ છે.)

'કલ્મષ' માં ૭૪ મા નિયમથી 'મ્'નો લોપ પ્રાપ્ત હતો અને ૭૫ મા નિયમથી લ્ નો લોપ પ્રાપ્ત હતો. એમાં કેવળ લ્ નો લોપ થયેલ છે)

પાછલાનો લોપ—

काव्य	कव्व	(જુઓ નિયમ ૭૪ તથા ૭૫)	કાવ્ય
माल्य	मल्ल	,, ,, ,,	માળા
द्विजाति	दुआइ	,, ૭૨ તથા ૭૫	દ્વિજાતિ-બ્રાહ્મણ

બન્નેનો વારાફરતી લોપ—

उद्विग्न—	उव्विग्ग	(ન્ નો લોપ-નિયમ ૭૪)	
	उव्विन्न	(ગ્ નો લોપ-નિયમ ૭૨)	
द्वार—	वार	(દ્ નો લોપ-નિયમ ૭૨)	બાર-બારણું
	दार	(વ્ નો લોપ-નિયમ ૭૫)	દાર ,,

૭૬ 'द्र'ના ર્ નો લોપ વિકલ્પે થાય છે.

चन्द्र—	चन्द्र, चन्द—	ચંદ-ચાંદો
रुद्र—	रुद्र, रुद्द—	રુદર-રુદ્ર
समुद्र—	समुद्र, समुद्द—	સમુદર-સમદર
द्रह—	द्रह, दह—	ધરો-પાણીનો ધરો
द्राक्षा—	द्रक्खा. दक्खा—	દરાખ-દ્રાખ-ધરાખ
द्रव्य—	द्रव्व, दव्व—	દ્રવ્ય

७७ नीचेना शब्दोमां अनुस्वारनो लोप थाय छे अने ज्यां अनुस्वार लोपातो नथी त्यां आगळनो दीर्घ स्वर ह्रस्व थई जाय छे.

विंशति—वीसा	संस्कृत—सकय
त्रिंशत्—तीसा	संस्कार—सकार
मांस—मास, मंस	कांस्य—कास, कंस.
पांसु—पासु, पंसु	कथम्—कह, कहं
एवम्—एव, एवं.	नूनम्—नूण, नूणं.
इदानीम्—इआणि, इआणिं, दाणि, दाणिं.	
किम्—कि, किं	संमुख—समुह, संमुह.
किंशुक—केसुअ, किंसुअ.	सिंह—सीह, सिंघ.

७८ 'ज्ञ' मां 'ञ्' अने 'ज' एम बे व्यंजन छे एमांनो ञ् विकल्पे लोप पामे छे:

ज्ञान—	जाण, णाण—	जाण-ज्ञान-जाणवुं
सर्वज्ञ—	सव्वज्ज, सव्वण्णु—	सर्वज्ञ
आत्मज्ञ—	अप्पज्ज, अप्पण्णु	
मनोज्ञ—	मणोज्ज, मणोण्ण	
प्रज्ञा—	पज्जा, पण्णा	
संज्ञा—	संजा, सन्ना—	सान
आज्ञा—	अज्जा, आणा—	आण

७९. केटलाक जोडाक्षरवाळा शब्दोनां रूप नीचे प्रमाणे छे:

धात्री—	धारी, धाई, धत्ती—	धाई-धावमाता
रात्री—	राई, रत्ति—	रात
दशार्ह—	दसार—	एक वंशनुं नाम
मध्याह्न—	मज्झन्ह, मज्झण्ह—	मध्यान
हरिश्चन्द्र—	हरिअंद—	हरिचंद

श्मश्रु—	मंसु, मासु—	दाढीमूंछ
श्मशान—	{ मसाण सीआण, सुसाण } —	मसाण
दीर्घ	दिग्घ, दीह	
धृष्टद्युम्न	धट्ठज्जुण	
कर्णिकार—	{ कणिआर कण्णिआर } —	कणेरनुं झाड
दृप्त—	दरिअ—	छकी गयेल.
तीक्ष्ण—	{ तिक्ख }— { तिण्ह }—	तीखुं तीणुं

८० दीर्घ स्वरनी पछी आवेलो कोई पण व्यंजन डबल थतो नथी.

पार्श्व—	पास—	पासुं-पडखुं
शीर्ष—	सीस—	शीष-माथुं
ईश्वर—	ईसर—	ईसर-ईश्वर

८१ अनुस्वारनी पछी आवेलो कोई पण व्यंजन डबल थतो नथी.

वक्र—	वंक—	वांकुं
विन्ध्य—	विंझ	विन्ध्य पर्वत
सन्ध्या—	संझा—	सांझ
चन्द्र—	चंद—	चांदो
इन्द्र—	इंद—	इंद्र

('विञ्छिअ' 'चन्द' वगेरे शब्दोमां ज्यां बे व्यंजनो जोडायेला ज छे त्यां कोई व्यंजनने डबल करवानी जरूर रहेती नथी.)

८२ कोई पण शब्दमां र् अने ह् डबल थता ज नथी.

दशार्ह—	दसार—	कृष्णना दसार कुळनुं नाम
धैर्य—	धीर—	धीरज
विह्वल—	विहल—	विफल

कार्षापण—	{ कहावण काहावण }	कार्षापण-जुनो सिक्को

८३ समासमां आवेला पाछला पदनो शरुआतनो व्यंजन विकल्पे डबल थाय छे:

देवस्तुति—	देवत्थुइ, देवथुइ—	देवनी स्तुति
प्रतिकूल—	पडिक्कूल, पडिकूल—	प्रतिकूळ
कुसुमप्रकर—	कुसुमप्पयर, कुसुमपयर—	कुसुमनो पगर-समूह-फूलफगर
अदर्शन—	अद्दंसण, अदंसण—	अदर्शन

८४ केटलाक शब्दोमां अंदरनो व्यंजन डबल बोलाय छे अने विकल्पे डबल बोलाय छे:

तेल—	तेल्ल—	तेल
मण्डूक—	मंडुक्क—	मेंडक-देडको
विचकिल—	वेइल्ल	वेलानी वेल
ऋजु—	उज्जु	सरळ
व्रीडा—	विड्डा—	व्रीडा-शरम
प्रभूत—	बहुत्त—	बहुत-बहोत-बोत-घणुं
स्रोतस्—	सोत्त—	स्रोत-सरवणी-प्रवाह
प्रेम—	पेम्म—	प्रेम-पेम
यौवन—	जुव्वण—	जोबन
प्रतिस्रोतस्	पडिस्सोअ—	सामे पूर
विस्रोतसिका—	विस्सोअसिआ—	

वगेरे.

कल्पे—

सेवा—	सेव्वा, सेवा	
नीड—	नेड्ड, नीड—	नेड-माळो
नख—	नक्ख, नह—	नख
निहित—	निहित्त, निहिअ —	स्थापित
व्याहृत—	वाहित्त, वाहिअ —	बोलावेल
मृदुक—	माउक्क, माउअ —	मउ-माउ-कोमळ
पक्व—	पक्क, पअ	
कुतूहल—	कोउहल्ल, कोउहल	
व्याकुल—	वाउल्ल, वाउल —	बावरो
स्थूल—	थुल्ल, थूल, थूर, थोर	
हृत—	हुत्त, हूअ	
दैव—	दइव्व, दइव	
तूष्णीक—	तुण्हिक्क, तुण्हिअ	मौन राखनार-चूप रहेनार
मूक—	मुक्क, मूअ, मूग—	मूंगो
स्थाणु—	खण्णु, खाणु —	ठूंठं
स्त्यान—	थिण्ण, थीण—	थीणुं
असदीय—	अम्हकेर, अम्हकेर —	अमारुं

चेअ—	च्चेअ, चेअ—	चैव-नक्की
चिअ—	च्चिअ, च्चिअ—	" "

वगेरे

कना फेरफारो

८५ क नो ख—	कुब्ज—	खुज्ज—	एक जातनुं फूल
	कर्पर—	खप्पर—	खप्पर
	कील—	खील—	खीलो
८६ क नो ग—	अशोक—	असोग—	अशोकनुं झाड
	फलक—	फलग—	फलक-पाटियुं
	तीर्थंकर—	तित्थगर—	तीर्थंकर
	लोक—	लोग—	लोक-लोग
	अमुक—	अमुग—	अमुक
	आकर—	आगर—	अगर-खाण
	एक—	एग—	एक
	अनेक—	अणेग—	अनेक
	कनक—	कणग—	कनक
	निजक—	नियग—	निजनुं-पोतानुं
	श्लोक—	सिलोग—	श्लोक
	श्रावक—	सावग—	श्रावक
	मरकत—	मरगय—	मरकत मणि
	दारक—	दारग—	छोकरो
	शावक—	छावग—	छैयो-छोकरो
	यमकसमक—	जमगसमग—	एक साथे
	आकार—	आगार—	आकार
	आकर्ष—	आगरिस—	खेंचाण
	उद्द्योतकर—	उज्जोअगर—	उद्द्योत करनार

पडिहार
पडि
पहुडि
पाहुड
वावड
पडाया— पडाई
बहेडअ— बहेडुं
हरडई— हरडे
मडय— मडुं
दुक्कड
सुकड
आहड
अवहड
{ वेडिस
वेअस }
ित— गब्भिण
ुत्तक—अणिउँतय
— रुण्ण— रोणुं
सत्तरि— ि्तेर-शित्तेर
लसी
ा
ाम

गुड— { गुल / गुड } — गोळ

दाडिम— { दालिम / दाडिम } —दाडम-दाढम

वडिश— { वलिस / वडिस }

नाडी— { नाली / नाडी } —नाळी / —नाडी

नड— { नल / नड }

आपीड— { आमेल / आपीड }

ण ना फेरफार

१०७ ण नो ल—वेणु— वेलु, वेणु-वांस

त ना फेरफार

१०८ त नो च
त नो छ { तुच्छ— { चुच्छ / छुच्छ / तुच्छ } —तुच्छ-तोछडुं

१०९ त नो ट—तगर— टगर
त्रसर— टसर
तूवर— टूवर

११० त नो ड

प्रतिपन्न—	पडिवन्न	
प्रतिहास—	पडिहास	
प्रतिमा—	पडिमा	
प्रतिपदा—	पडिवया—	पडवो
प्रतिश्रुत्—	पडंसुआ	

प्रतिहार—	पडिहार	
प्रति—	पडि	
प्रभृति—	पहुडि	
प्राभृत—	पाहुड	
व्यापृत—	वावड	
पताका—	पडाया—	पडाई
बिभीतक—	बहेडअ—	बहेडुं
हरीतकी—	हरडई—	हरडे
मृतक—	मडय—	मडुं
दुष्कृत—	दुकड	
सुकृत—	सुकड	
आहत—	आहड	
अवहृत—	अवहड	
वेतस—	वेडिस / वेअस	

१११ त नो ण—गर्भित— गब्भिण
अतिमुक्तक—अणिउँतय
रुदित— रुण्ण— रोणुं

११२ त नो र—सप्तति— सत्तरि— सित्तेर—शित्तेर

११३ त नो ल—अतसी—अलसी— अळसी

सातवाहन—{ सालवाहण / सालाहण }—राजानुं नाम

पलित—{ पलिल / पलिअ }— पळियां

११४ त नो व—पीत— { पीवल / पीअल / पीअ }—पीळुं

११५ त नो ह—वितस्ति—	विहत्थि—	वॅंत
वसति—	वसहि—	वसति-घर
भरत—	भरह—	राजानुं नाम
कातर—	काहल—	कायर
मातुलिङ्ग	माहुलिंग	

थ ना फेरफार

११६ थ नो ढ—मेथि—	मेढि	
शिथिर / शिथिल —सिढिल—		ढीलुं
प्रथम—	पढम	
निशीथ—	निसीढ, निसीह	
पृथिवी—	पुढवी, पुहवी	

११७ थ नो ध—पृथक्— { पिधं, पिहं / पुधं, पुहं }

११८ थ नो ह

नाथ—	नाह—	नाहलो, नावलियो
कथनी—	कहणी—	कहाणी, काणी, कहेणी
कथा—	कहा	
कथयति	कहेइ—	कहे छे

द ना फेरफार

११९ द नो ड

दष्ट—	डट्ठ, दट्ठ
दग्ध—	डड्ढ, दड्ढ

दशन— डसण, दसण —

दोला— डोला, दोला— डोली

दण्ड— डंड, दंड— { डांडो, डडो, डंडिको }

दर— डर, दर— डर-भय

दाह— डाह, दाह— डाह

दम्भ— डंभ, दंभ

दर्भ— डब्भ, दब्भ— डाभ-डाभडो

कदन— कडण, कदण

दोहद— डोहल, दोहल— डोळो-मननो भाव

दंश— डस— डांस

दशति— डसइ— डसे छे

दहति— डहइ— दहे छे, बळे छे, बाळे छे

दह्यते— डज्झए, दज्झए— दाझे छे

दाह्य— डज्झ, दज्झ— दाझ

१२० द नो ध—दीप्यते— धिप्पइ, दिप्पइ

१२१ द नो र— गद्गद— गग्गर— गळगळुं थई जवुं अथवा गांगरवुं

एकादश—{ एगारह, एआरह }— अगीयार

द्वादश— बारह— बार

त्रयोदश— तेरह— तेर

कदली— करली

१२२ द नो ल—प्रदीपयति—पलीवेइ

प्रदीप्त— पलित्त— पलीता-आग

	दोहद—	दोहल	
	कदम्ब—	कलंब / कयंब	
१२३ द नो व—	कदर्थित—	कवट्टिअ—	कचरावतुं (?)
१२४ द नो ह—	ककुद—	कउह—	बळदनी खुंध

ध ना फेरफार

१२५ ध नो ढ—	निषध—	निसढ	
	औषध—	ओसढ / ओसह —	ओसड
१२६ ध नो ह—	साधु—	साहु	
	बधिर—	बहिर—	बहेरो
	बाधा—	बाहा	
	व्याध—	वाह	
	व्याधि—	वाहि	

न ना फेरफार

१२७ न नो ण—	वचन—	वयण—	वेण
	वदन—	वयण	
	कनक—	कणय	
	मदन—	मयण—	मीण-मेण (?)
	नयन—	नयण—	नेण
	नर—	णर / नर	
	नदी—	णई / नई	
	नयति—	णेइ-नेइ	लई जाय छे-दोरी जाय छे.

१२८ न नो न— आरनाल
अनिल
अनल

१२९ न नो ल—निम्ब— लिंब— लिंमडो-लिंबडो, लिंबोळी

प ना फेरफार

१३० प नो व—पाप— पाव
शाप— साव
शपथ— सवह— सम-सोगन
उपसर्ग— उवसग्ग
दीप— दीव— दीवो
प्रदीप— पईव
काश्यप— कासव
उपमा— उवमा
कपिल— कविल
कुणप— कुणव
कलाप— कलाव
कपाल— कवाल
महिपाल— महिवाल
गोपति— गोवइ
तपति— तवई
तापयति— तावइ— तावे छे
तप— तव— तवो-तावडी
तपस्— तव— तप
ताप— ताव— ताव

१३१ प नो फ—पाटयति—{ फाडेइ / फालेइ }—फाडे छे

य ना फेरफार

(शब्दनी शरुआतना ज 'य'नो ज थाय छे.)

१४४ य नो ज—यम— जम

यशस्— जस

याति— जाइ— जाय छे

संयम— संजम

योग— जोग— जोग

संयोग— संजोग

योगिन्— जोगि— जोगि

अपयशस्— अवजस— अपजश

१४५ य नो ज्ज—उत्तरीय— उत्तरिज्ज, उत्तरीअ

अनीय— अणिज्ज

करणीय— करणिज्ज. करणीअ

यापनीय— जवणिज्ज, जवणीअ.

कथनीय— कहणिज्ज, कहणीअ

वचनीय— वयणिज्ज, वयणीअ

तीय— तिज्ज

द्वितीय— { विइज्ज / बीअ } —बीजुं

तृतीय— { तइज्ज / तइअ } —त्रीजुं, तीजुं

य (प्रत्यय)—ज्ज—पेया— पेज्जा, पेआ

नेय— नेज्ज, नेअ

नामधेय— नामधेज्ज, नामधेअ

१४६ य नो त—युष्मे तुम्हे तमे

युष्मादृश— तुम्हारिस—तमारोस्रो

युष्मदीय— तुम्हकेर— तमकेरुं

१४७ य नो इ—छाया—{ छाही / छाया }— छांयो

सच्छाय—{ सच्छाइ / सच्छाय }—छांयावाळुं

१४८ य नो आह, व }— कतिपय—{ कइवाह / कइअव }

र ना फेरफार

१४९ र नो ड—किरि— किडि— शूकर
मेर— मेड

१५० र नो डा—पर्याण—{ पडायाण / पल्लाण }—पलाण

१५१ र नो ण—करवीर— कणवीर

१५२ र नो ल—हरिद्रा— हलद्दा— हळदर
दारिद्र्य— दालिद्द— दळदर, दाळदर
दरिद्र— दालिद्द— दळद्री
दरिद्राति— दलिद्दाइ—दळद्री थाय छे
हरिद्र— हलिद्द— हळदरवो
युधिष्ठिर— जहुट्ठिल
शिथिर— सिढिल
मुखर— मुहल
चरण— चलण— पग अथवा श्लोक [के गाथानुं पाद
वरुण— वलुण
करुण— कलुण
अङ्गार—{ अंगाल / इंगाल }
सत्कार— सक्काल

सुकुमार—	सोमाल—	सूंवालुं
किरात—	चिलाअ	
परिखा—	फलिहा	
परिघ—	फलिह	
पारिभद्र—	फालिहद्द	
कातर—	काहल	
रुग्ण—	लुक्क	
अपद्वार—	अवद्दाल	
भ्रमर—	भसल	
जठर—	जढल	
बठर—	बढल	
निष्ठुर—	निट्ठुल	
द्वादशाङ्ग—	दुवारसंग-दुवालसंग	

ल ना फेरफार

१५३ ल नो ण—लाहल— णाहल, लाहल
लाङ्गल— णगल, लंगल
लाङ्गूल— णंगल, लंगूल
ललाट— { णडाल / णिडाल }

१५४ ल नो र—स्थूल— थूर

व ना फेरफार

१५५ व नो म—स्वप्न— { सिमिण / सिमिण }
नीवी— { नीमी / नीवी }

१५६ व नो भ—विह्वल— { भिब्भल / विब्भल / विहल }

श ना फेरफार

१५७ श नो छ—शमी— छमी

शाव— छाव

शिरा— { छिरा / सिरा }

१५८ श नो स

शब्द— सद्द	शान्ति— संति
कुश— कुस	शोभते— सोहए
नृशंस निसंस	विशति— विसइ—प्रवेश करे छे.
वंश— वंस	शाक— साग
श्यामा— सामा	शेष— सेस
शुद्ध— सुद्ध	शेषा— सेसा
दश— दस	विशेष— विसेस
शोभा— सोहा	
शिखर— सिहर	

१५९ श नो ह

दश—{ दह / दस }—दह-दस	चतुर्दश—{ चोद्दह / चोद्दस }
एकादश—{ एआरह / एआरस }	दशमुख—{ दहमुह / दसमुह }
द्वादश—{ बारह / बारस }	दशरथ—{ दहरह / दसरह }
त्रयोदश—{ तेरह / तेरस }	दशबल—{ दहबल / दसबल }

७

ष ना फेरफार

१६० ष नो छ—षट्— छ छ
षष्ठ— छट्ठ छट्ठुं
षष्ठी— छट्ठी— छठी, छठ
षट्पद— छप्पय
षण्मुख— छम्मुह
षट्कर्ण— छक्कण्ण
षड्गुण— छग्गुण— छगणुं

१६१ ष नो स—कषपट्ट— कसवट्ट— कसोटी
कषाय— कसाअ
निकष— निहस
षण्ड— संड
घोष— घोस
घोषति— घोसइ— गोखे छे
शेष— सेस
शेषा— सेसा
विशेष— विसेस

१६२ ष नो ह—पाषाण—{ पाहाण }—पाणो, पहाण
{ पासाण }—पाखाण

१६३ ष नो ण्ह—स्नुषा— सुण्हा, सुसा

स ना फेरफार

१६४ ह नो र—उत्साह—{ उत्थार
उच्छाह }

१६५ म नो छ—सुधा— छुहा— छो— चूनो
सुधाबन्ध—छुहाबंध— छोबंध

सुधागुड— छुहागुल— छागोळ
सप्तपर्ण— छत्तिवण्ण

१६६ ह नो घ—क्यांय एकला ह नो अने विशेषे करीने अनुस्वारथी पछी आवेला 'ह' नो घ विकल्पे थाय छे.

दाह— दाघ, दाह
सिंह— सिंघ, सीह
संहार— संघार, संहार
सिंहासन— सिंघासण, सीहासण

१६७ स नो ह—दिवस—{ दिवह, दिवस }

१६८ नीचेना केटलाक शब्दोमांनो अंदरनो आखो व्यंजन लोपाई जाय छे:

भाजन— { भाण, भायण }— भाणुं
दनुज— { दणु, दणुअ }
दनुजवध—{ दणुवह, दणुअवह }
राजकुल—{ राउल, रायउल }— रावळ
राजपुत्र— { राउत्त, रायउत्त }— राउत, रावत
व्याकरण—{ वारण, वाअरण }
प्राकार— { पार, पागार, पायार }

आगत— { आअ, आय }—आयो
{ आगअ, आगय }—आगयो

किसलय—{ किसल, किसलय }

कालायस—{ कालास, कालायस }

हृदय— { हिअ, हिअय }

सहृदय— { सहिअ, सहिअय }

दुर्गादेवी— { दुग्गावी, दुग्गाएवी }

उदुम्बर— { उंबर, ऊंबर }— उंबरो (झाड)

पादपतन—{ पावडण, पायवडण }

पादलग्न— { पालग्ग, पायलग्ग }— पालागण, पायलागण

पादढोक— { पाढोअ, पाढोक, पायढोक }—पायोक

पदधार—{ पधार, पयधार }—पधारवु-पग धरवा-पग मूकवा

पादपीठ—{ पावीढ, पायवीढ }— पावीठुं

यावत्— { जा, जाव }

तावत्— { ता, ताव }

जीवित— { जीअ, जीविअ }

आवर्त्तमान— { अत्तमाण, आवत्तमाण }

अवट— { अड, अवड }

प्रावारक— { पारअ, पावारअ }

देवकुल— { देउल, देवकुल } — देवळ

एवमेव— { एमेव, एवमेव } — एम ज

संयुक्त व्यंजनना फेरफार

ऊपर जणावेला व्यंजनोने लगता फेरफारवाळा प्रकरणमां जे १६८ नियमो आपेला छे तेमांना वधारे भागना नियमो असंयुक्त व्यंजनोने लगता छे. हवे आ प्रकरणमां विशेषे करीने खास संयुक्त व्यंजनोने लगता फेरफारो बताववाना छे.

१६९ क् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

क्त नो क्क—शक्त—सक्क, सत्त—शक्युं
मुक्त—मुक्क, मुत्त—मुक्युं

क्त नो ग्ग—रक्त—रत्त, रग्ग—रातुं

*क्म नो प्प—रुक्म—रुप्प—रूपुं
रुक्मिणी—रुप्पिणी

क्म नो च्म—रुक्मी—रुच्मी

*क्ष नो ख, क्ख

क्षय—	खय—	खे	रक्ष्—	रक्ख्—	राखवुं—साचववुं
क्षीण—	खीण—	खीण	पक्ष—	पक्ख—	पांख
लक्षण—	लक्खण—	लखण	पक्षिन्—	पक्खि—	पंखी
क्ष्वेटक—	खेडअ		अक्षि—	अक्खि—	आंख
क्ष्वोटक—	खोडअ		कुक्षि—	कुक्खि—	कूख, कोख, कूखियो
लाक्षा—	लक्खा—	लाख			
लक्ष—	लक्ख—	लाख			
रक्षा—	रक्खा—	राख			

* फुदडीना निशानवाळा फेरफार सर्वसाधारण छे.

छ, च्छ

—	छीअ —	छींक
—	छीर } खीर }	छीर खीर
—	छेत्त } खेत्त }	छेतर खेतर
—	छुहा खुहा	
—	छुण्ण खुण्ण	
—	{ छार } { खार }	छार खारुं
—	{ छुर } { खुर }	छुरो
—	{ छय } { खय }	
ा—	छमा—	पृथ्वी
	खमा—	क्षमा
ा—	छमा—	पृथ्वी
ण—	{छण} {खण}	—सण-उत्सव —क्षण-पळ
क्षि—	अच्छि—	आंछ
क्षु—	उच्छु— इक्खु—	ऊस ईख
क्ष्मी—	लच्छी	—लाछ

कक्ष — { कच्छ— काछ { कक्ख— काख

सदृक्ष— { सरिच्छ { सारिक्ख— सरखु

वृक्ष— { वच्छ { रुक्ख

मक्षिका— { मच्छिआ-माछी { मक्खिआ-माखी

दक्ष— { दच्छ { दक्ख

कुक्षि— { कुच्छि { कुक्खि

वक्षस्— वच्छ— छाती

कक्षा— { कच्छा } काछ { कक्खा } काख

कौक्षेयक—कुच्छेअय— कुक्षिमां रहेनार— तरवार

उक्षन्— उच्छ

सादृक्ष्य— { सारिच्छ } { सारिक्ख }

ऋक्ष— रिच्छ— रींछ रिक्ख— नक्षत्र

क्ष नो झ—

क्षीण— झीण—खीण, छीण

क्षीयते— झिज्जइ, खिज्जइ, छिज्जइ

क्ष नो ह—दक्षिण— दाहिण
दक्खिण

क्ष्ण नो ण्ह—श्लक्ष्ण— सण्ह
तीक्ष्ण— तिण्ह

क्ष्म नो म्ह—पक्ष्म— पम्ह— पांपण

१७० ग् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

ग्ण नो क्क— रुग्ण— लुक्क, लुग्ग

ग्ध नो द्ध— दग्ध— दद्ध— दाधुं-बळेलुं
विदग्ध— विअद्ध

*ग्म नो म्म— युग्म—{ जुम्म / जुग्ग }—जुमले, जुम्मो-जोडी
तिग्म— तिम्म
तिग्ग-तेग

१७१ ञ् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*ज्ञ नो ण, ण्ण — ज्ञान— णाण
संज्ञा— सण्णा
प्रज्ञा— पण्णा
विज्ञान— विण्णाण

ञ्च नो ण्ण—पञ्चाशत्— पण्णासा—{ पचास / पन्नास }

ञ्च नो ण्ट—आकुञ्चन— आउण्टण

१७२ ड् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*ड्म नो प्प—कुड्मल— कुंपल— कुंपळ

ण्ड नो ल—कूष्माण्डी—{ कोहली / कोहण्डी }—कोळानी वेल

सांवत्सरिका — संवच्छरिआ — { संवछरी / समछरी }
चिकित्सा — चिइच्छा
चिकित्सक — चिइच्छअ
वत्सल — वच्छल
वात्सल्य — वच्छल्ल
चिकित्सति — चिइच्छइ
उत्सुक — उच्छुअ
उत्सव — उच्छव — ओछव
औत्सविक — ओच्छविअ — ओछविया भवाया

१७४ थ् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*थ्य नो च्छ — पथ्य — { पच्छ / पच्च }
पथ्या — पच्छा
मिथ्या — मिच्छा
थ्व नो च्छ — पृथ्वी — पिच्छी

१७५ द् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

द्ध नो ड्ढ — वृद्ध — वुड्ढ — वूढो
वृद्धि — वुड्ढि — वाढि
श्रद्धा — सड्ढा-सद्धा
ऋद्धि — इड्ढि-इद्धि

*द्य नो ज, ज्ज —

द्युति — जुइ
द्योत — जोत
द्योतते — जोअए
मद्य — मज्ज
अवद्य — अवज्ज
वेद्य — वेज्ज
अनवद्य — अणवज्ज
माद्यति — मज्जइ — माचे छे
विद्या — विज्जा
विद्यते — विज्जए

द्व नो ज्ज — विद्वान् — विज्जं

१७६ ध् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*ध्य नो झ, ज्झ—

ध्यान—	झाण
ध्यायति—	झायइ
विन्ध्य—	विंझ
उपाध्याय—	उवज्झाय
स्वाध्याय—	सज्झाय
साध्य—	सज्झ
वध्यते—	वज्झए

*ध्व नो झ, ज्झ—

ध्वज—	{ झअ धअ
साध्वस—	सज्झस
बुद्ध्वा—	बुज्झा

१७७ न् साथेना संयुक्त व्यंजनना फेरफार

न्त नो ण्ट—	वृन्त—	वेण्ट
	तालवृन्त—	तालवेण्ट
न्द नो ण्ड—	कन्दारिका—	कण्डलिआ
	भिन्दिपाल—	भिण्डिवाल
न्ध नो झा—	इन्ध्—	इज्झा
	समिन्ध्—	समिज्झाइ
	वि+इन्ध—	विज्झाइ
*न्म नो म्म—	जन्मन्—	जम्म
	मन्मथ—	वम्मह
	मन्मन—	मम्मण-ममणउ
न्य नो ज, ञ्ञ—	अभिमन्यु—	{ अहिमज्जु अहिमन्नु
न्य नो न्त—	मन्यु—	{ मन्तु मन्नु

न्ह नो न्ध—चिन्ह—{ चिन्ध— चिधतुं
इन्ध
चिण्ह— चेन }

१७८ प् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*प्स नो च्छ

अप्सरा—अच्छरा	जुगुप्सते—जुगुच्छइ
लिप्सते—लिच्छइ	जुगुप्सा—जुगुच्छा
ईप्सति—इच्छइ	ईप्सा—इच्छा

१७९ ब् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

ब्ध नो ड्ढ—स्तब्ध— ठड्ढ— ठाढो—ठंडो

१८० म् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*म्न नो ण्ण—निम्न— निण्ण— नेनुं-नीचुं
द्युम्न— जुण्ण
प्रद्युम्न— पज्जुण्ण

म्र नो म्ब—ताम्र— तम्ब— तांबुं

१८१ य् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*य्य नो ज्ज - शय्या— सेज्जा
जय्य— जज्ज

१८२ र् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*र्त नो ट्ट—

कैवर्त— कैवट्ट—खेवटियो	वर्तुल— वट्टुल
वर्ति— वट्टि— वाट-वत्ती	राजवर्तक—रायवट्टय
जर्त— जट्ट	नर्तकी— नट्टई
प्रवर्तते— पयट्टइ	संवर्तित— संवट्टिअ

र्त नो ड्ड— गर्त— गड्ड, खाड. खाडो, गड्डा

र्त नो त्त—

धूर्त— धुत्त
कीर्ति— कित्ति
वार्ता— वत्ता
वर्तन— वत्तण
वर्तिका— वत्तिआ
कार्तिक— कत्तिअ

उत्कर्तित— उक्कत्तिअ
कर्तरी— कत्तरी— कातर
मूर्ति— मुत्ति
मूर्त— मुत्त
मुहूर्त— मुहुत्त वगेरे

र्थ नो ट्ट— कदर्थित— कवट्टिअ

र्थ नो ट्ठ—चतुर्थ— { चउट्ठ / चउत्थ }

चतुर्थी— { चउट्ठी / चउत्थी }

अर्थ— { अट्ठ— प्रयोजन / अत्थ— धन }

र्थ नो ह—तीर्थ— { तूह / तित्थ }

र्थ्य नो च्छ—सामर्थ्य— { सामच्छ / सामत्थ }

र्द नो ड्ड—

संमर्द— संमड्ड
वितर्दि— विअड्डि
विच्छर्द— विच्छड्ड
छर्दि— छड्डि

कपर्द— कवड्ड
कपर्दक— कवड्डय—कोडो
कपर्दिका—कवड्डिआ—कोडी
गर्दभ—{ गड्डह / गद्दह }—गधेडो, गद्धो

र्द्ध नो ड्ढ—मूर्द्धन्— { मुंढा / मुद्धा }

अर्द्ध— { अड्ढ / अद्ध— आधा-अडधुं }

र्ध्व नो ब्भ—ऊर्ध्व— उब्भ— ऊभुं
उद्ध— ऊंधुं

र्य नो र—

ब्रह्मचर्य— बम्हचेर
तूर्य— तूर— वाजुं, गांडोतूर
सौन्दर्य— सुन्देर
शौण्डीर्य— सोंडीर
धैर्य— { धीर / धिज्ज }

पर्यन्त— { पेरंत / पज्जंत }
आश्चर्य— { अच्छअर / अच्छेर / अच्छरिअ / अच्छरिज्ज / अच्छरीअ }

र्य नो ल्ल—पर्यस्त— पल्लट्ट— पालटो
पल्लत्थ
पर्यस्तिका— पल्लट्टिआ
पल्लत्थिआ— पलोंठी
पर्याण— पल्लाण— पलाण
सौकुमार्य सोअमल्ल

र्प नो ह— कार्षापण— { काहावण / कहावण }

२८३ ल् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

ल्क नो ङ्ग— शुल्क— { सुङ्ग / सुक्क } — चुंगी-दाण

२८४ श्र् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

*श्च नो च्छ—पश्चिम— पच्छिम— पच्छम
आश्चर्य— अच्छेर
पश्चात्— पच्छा— पछी

श्च नो ञ्चु—वृश्चिक— { विञ्चुअ / विचुअ / विछिअ— वींछी

*श्न नो ण्ह—प्रश्न— पण्ह

शिश्न— सिण्ह

श्म नो म्भ—कश्मीर— कम्भार

कम्हार

श्म नो म्ह—कुश्मान— कुम्हाण

कश्मीर— कम्हार

१८५ ष् साथेना संयुक्त व्यंजननो फेरफार

ष्क नो क्ख—

पुष्कर—पोक्खर—पोखर | निष्क— निक्ख

पुष्करिणी—पोक्खरिणी | शुष्क— सुक्ख—सूका

सुष्क— सुक्कुं

*ष्ट नो ट्ठ—

मुष्टि—मुट्ठि—मूठि-मूठ | कष्ट— कट्ठ— काठुं

यष्टि—जट्ठि—जेष्ठिका-लाकडी | सुराष्ट्र—सुरट्ठ—सोरठ

दृष्टि—दिट्ठि | इष्ट— इट्ठ

पृष्ठ—पुट्ठ | अनिष्ट— अणिट्ठ

ष्ट नो ट्ट—

उष्ट्र—उट्ट—ऊंट | संदष्ट—संदट्ट

इष्टा—इट्टा—ईंट

*ष्ण नो ण्ह—

विष्णु—विण्हु | कृष्ण—कण्ह—कान-कृष्ण

जिष्णु—जिण्हु | उष्णीष—उण्हीस

तृष्णा—तण्हा

ष्प नो प्प—निष्प्रभ— णिप्पह

निष्पुंसन— निप्पुंसण

*ष्प नो प्फ—

पुष्प— पुप्फ
शष्प— शप्फ
निष्पेष— निप्फेस
निष्पाव— निप्फाव
वाष्प— बप्फ— वाफ

ष्प नो ह— वाष्प— बाह— आंसु

ष्म नो फ, प्फ—श्लेष्मन्— सेफ,

सिलिम्ह

भीष्म— भिप्फ

ष्म नो म्भ—श्लेष्मन्— सिम्भ

ष्म नो ह—कूष्माण्डी— कोहण्डी

कोहली

कूष्माण्ड— कोहण्ड

कोहल

*ष्म नो म्ह— ग्रीष्म— गिम्ह

ऊष्मन्— उम्हा-हुंफ

१८९ स् साथेना संयुक्त व्यंजनना फेरफार

स्क नो ख, क्ख—

स्कन्द— { खंद / कंद }
स्कन्धावार—खंधावार
अवस्कन्द – अवक्खंद

स्कन्ध—खंध—खंधो-खंभो

स्त नो ख—स्तम्भ— खंभ—खंभो, खांभी

थंभ

स्त नो ठ—स्तम्भ— ठंभ

थंभ

स्तब्ध— ठड्ढ—ठाढो

*स्त नो थ, त्थ—

स्तुति— थुइ— थोय	प्रशस्त— पसत्थ
स्तोत्र— थोत्त	अस्ति— अत्थि
स्तोक—, थोअ	स्वस्ति— सत्थि
स्तव— थव, तव	उत्साह— उत्थार, उच्छाह
हस्त— हत्थ— हाथ	स्तम्भ— थंभ—थांभलो
प्रस्तर— पत्थर— पत्थर, पाथर	

स्त्य नो ठ—स्त्यान— ठीण, थीण

स्थ नो ख— स्थाणु— खाणु— ठुंठुं

थाणु— महादेव

स्थ नो छ—स्थगित— छइअ

स्थ नो ठ— अस्थि— अट्ठि

विसंस्थुल— विसंठुल

*स्न नो ण्ह—

स्नान— ण्हाण— न्हाण- न्हावुं	ज्योत्स्ना—जुण्हा
स्नात— ण्हाय— न्हायो	स्नापित—ण्हाविअ— नावी-हजाम
प्रस्नुत— पण्हुअ	स्नुषा— ण्हुसा
प्रस्नव— पण्हव— पानो	

*स्प नो फ, प्फ—

स्पन्दन— फंदण	बृहस्पति—बुहप्फइ, बुहप्पइ
स्पन्द— फंद—फांद	वनस्पति—वणप्फइ
स्पन्दते— फंदए	

स्प नो प्प—परस्परम्— परोप्परं

ष्प नो प्प—निष्प्रभ— णिप्पह

निष्पुंसन— निप्पुंसण

*ष्प नो प्फ—

पुष्प—	पुप्फ	निष्पाव—	निप्फाव
शष्प—	शप्फ	वाष्प—	वप्फ— वाफ
निष्पेष—	निप्फेस		

ष्प नो ह— वाष्प— वाह— आंसु

ष्म नो फ, प्फ— श्लेष्मन्— सेफ,

सिलिम्ह

भीष्म— भिप्फ

ष्म नो म्भ—श्लेष्मन्— सिम्भ

ष्म नो ह—कूष्माण्डी— कोहण्डी

कोहली

कूष्माण्ड— कोहण्ड

कोहल

*ष्म नो म्ह— ग्रीष्म— गिम्ह

ऊष्मन्— उम्हा-हुंफ

१८६ स् साथेना संयुक्त व्यंजनना फेरफार

स्क नो ख, क्ख—

स्कन्द— { खंद, कंद } | स्कन्धावार—खंधावार

अवस्कन्द – अवक्खंद

स्कन्ध—खंध—खंधो-खंभो

स्त नो ख—स्तम्भ— खंभ—खंभो, खांभी

थंभ

स्त नो ठ—स्तम्भ— ठंभ

थंभ

स्तब्ध— ठड्ढ—ठाढो

*स्त नो थ, त्थ—

स्तुति— थुइ— थोय	प्रशस्त— पसत्थ
स्तोत्र— थोत्त	अस्ति— अत्थि
स्तोक—, थोअ	स्वस्ति— सत्थि
स्तव— थव, तव	उत्साह— उत्थार, उच्छाह
हस्त— हत्थ— हाथ	स्तम्भ— थंभ—थांभलो
प्रस्तर— पत्थर— पत्थर, पाथर	

स्त्य नो ठ—स्त्यान— ठीण, थीण

स्थ नो ख— स्थाणु— खाणु— ठूंठुं
थाणु— महादेव

स्थ नो छ—स्थगित— छइअ

स्थ नो ठ— अस्थि— अट्ठि
विसंस्थुल— विसंठुल

*स्न नो ण्ह—

स्नान— ण्हाण— न्हाण— न्हावुं	ज्योत्स्ना—जुण्हा
स्नात— ण्हाय— न्हायो	स्नापित—ण्हाविअ— नावी–हजाम
प्रस्नुत— पण्हुअ	स्नुषा— ण्हुसा
प्रस्नव— पण्हव— पानो	

*स्प नो फ, प्फ—

स्पन्दन— फंदण	बृहस्पति—बुहप्फइ, बुहप्पइ
स्पन्द— फंद—फांद	वनस्पति—वणप्फइ
स्पन्दते— फंदए	

स्प नो प्प—परस्परम्— परोप्परं

स्प नो स्स—

बृहस्पति—	बहस्सइ बहप्फइ भयस्सइ भयप्फइ	वनस्पति—	वणस्सइ वणप्फइ

स्फ नो ख—

स्फेटक—	खेडअ	स्फेटित—	खेडिअ
स्फोटक—	खोडअ		

स्पृ नो छ—

स्पृहा—	छिहा, पिहा	निःस्पृह—	निच्छिह, निप्पिह

*स्म नो म्ह—असमादृश— अम्हारिस
विस्मय— विम्हअ

१८७ ह् साथेना संयुक्त व्यंजनना फेरफार

*ह्ण नो ण्ह—पूर्वाह्ण— पुव्वण्ह
अपराह्ण— अवरण्ह

*ह्न नो ण्ह—वह्नि— वण्हि
जह्नु— जण्हु
जाह्नवी— जण्हवी

*ह्म नो म्ह—ब्रह्मा— बम्हा
ब्राह्मण— बम्हण
ब्रह्मचर्य— बम्हचेर

ह्म नो म्भ—ब्राह्मण— बंभण
ब्रह्मन्— बंभ
ब्रह्मचर्य— बंभचेर

ह्य नो ज्झ—सह्य — सज्झ

महाम्— मज्झं

गुह्य— गुज्झ— गूंझु

नह्यति— नज्झइ

*ह्य नो य्ह—गुह्य— गुय्ह

सह्य— सय्ह

मह्यम्— मय्हं

नह्यति— नय्हति

*ह्र नो ल्ह—कह्लार— कल्हार

पह्लाद— पल्हाअ

आह्लाद— आल्हाअ

*ह्व नो ब्भ—जिह्वा— जिब्भा, जीहा

विह्वल— भिब्भल

विब्भल

विहल

२८८ विसर्ग साथेना संयुक्त व्यंजनना फेरफार

:ख नो ह—दुह, दुक्ख

स्वरभक्ति

१८९ नीचेना शब्दोमां संयुक्त अक्षरोमां वच्चे स्वर उमेराय छे.

अ—शार्ङ्ग—	सारंग	सूक्ष्म—	सुहम, सुखम
क्ष्मा—	छमा	स्नेह—	सणेह, नेह
श्लाघा—	सलाहा	अग्नि—	अगणि, अग्गि
रत्न—	रतन, रयण		
इ—अर्हति—	अरिहइ	ह्रीत—	हिरीअ
अर्हन्—	अरिहा	अह्रीक—	अहिरीअ
गर्हा—	गरिहा	कृत्स्न—	कसिण
बर्ह—	बरिह	क्रिया—	किरिया, किया
श्री—	सिरी	दिष्ट्या—	दिट्ठिआ
ह्री—	हिरी		
स्वप्न—	सिविण		

(र् साथेना संयुक्त श अने ष नी वच्चे इ उमेराय छे तथा 'तप्त' अने 'वज्र' मां इ उमेराय छे.)

आदर्श—आयरिस, आयंस—आरिसो	वर्षशत—वरिससय, वाससय
सुदर्शन—सुदरिसण, सुदंसण	परामर्श—परामरिस, परामास
दर्शन— दरिसण, दंसण	हर्ष—हरिस
वर्ष— वरिस, वास	अमर्श—अमरिस
वर्षा— वरिसा, वासा	तप्त—तविअ, तत्त—तातुं
वर्षावास—वरिसावास, वासावास	वज्र—वजिर, वइर, वज्ज

(संयुक्त ल मां इ उमेराय छे)

क्लिन्न—	किलिन्न	श्लिष्ट—	सिलिट्ठ
क्लिष्ट—	किलिट्ठ	प्लुष्ट—	पिलुट्ठ

प्लोष— पिलोस
श्लेष्मन्— सिलिम्ह
श्लेष— सिलेस
शुक्ल— सुकिल
सुइल
शुक्लपक्ष— सुकिलपक्ख,
सुक्कपक्ख
श्लोक— सिलोअ
क्लेश— किलेस
अम्ल— अंबिल
ग्लान— गिलाण
ग्लायति— गिलायइ
म्लायति— मिलायइ
म्लान— मिलाण
क्लाम्यति— किलम्मइ
क्लान्त— किलंत
क्लम— किलम, कम
प्लव— पिलव, पव
विप्लव— विपिलव,
विप्पव
उत्प्लावयति—उप्पिलावेइ,
उप्पावेइ

स्यात्— सिया
स्याद्वाद— सियावाअ
भव्य— भविय, भव्व
चैत्य— चेतिअ, चेइअ

*(चौर्य अने एनी जेवा र्य वाळा बीजा शब्दोमां इ उमेराय छे)

चौर्य— चोरिअ
स्थैर्य— थेरिअ
भार्या— भारिआ
गाम्भीर्य— गंभीरिअ
गाभीर्य— गहीरिअ
आचार्य— आयरिअ
सौन्दर्य— सुन्दरिअ
शौर्य— सोरिअ
वीर्य— वीरिअ
वर्य— वरिअ
सूर्य— सूरिअ
धैर्य— धीरिअ
ब्रह्मचर्य— बम्हचरिअ

अ तथा इ—

स्निग्ध—सणिद्ध, सिणिद्ध,
निद्ध
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अ, इ, उ—

अर्हत्— अरहंत, अरिहंत, अरुहंत
अरह, अरिह, अरुह

उ—

पद्म—पदुम, पोम्म	मूर्ख—मुरुक्ख, मुक्ख
छद्म—छदुम, छम्म छउम	द्वार—दुवार, दार, देर, बार

*(तन्वी अने एनी जेवा पृथ्वी, बह्वी वगेरे शब्दोमां '
उमेराय छे.)

तन्वी—	तणुवी	बह्वी—	बहुवी
लघ्वी—	लहुवी	पृथ्वी—	पुहुवी
गुर्वी—	गुरुवी	मृद्वी—	मउवी

उ—

स्रुघ्न— सुरुग्घ	स्व—सुवे— वधुं अथवा पोतानु
सूक्ष्म— सुहुम	
श्वः सुवे— आवती काल	

('स्व' शब्द बीजा कोई शब्द साथे जोडायेलो होय तो ते
'उ' न उमेराय: स्वजन– सयण)

ई— ज्याया— जीआ— जीवा-दोरी

१९० व्यत्यय

नीचेना शब्दोमां अक्षरोने उलटासुलटा करवाना छे:

करेणु—	कणेरु	अचलपुर—	अलचपुर
वाराणसी—	वाणारसी	महाराष्ट्र—	मरहट्ठ
आलान—	आणाल	ह्रद—	द्रह, हर

हरिताल— हलिआर, हरिआल | लघुक—हलुअ, लहुअ —हळवुं

ललाट— णडाल, णलाड

१९१ नीचेना शब्दोने बदले सामे जणावेला शब्दो वपराय छे:

स्तोक— थोक्क, थोव, थेव, थोअ

दुहितृ— धूआ, दुहिआ

भगिनी— बहिणी, भइणी

वृक्ष— रुक्ख, वच्छ

क्षिप्त— छूढ, खित्त

वनिता— विलया, वणिआ

ईषत्— कूर, ईसि

स्त्री— इत्थी

धृति— दिही

मार्जार— मंजर, वजर, मंजार, मज्जार

वैडूर्य— वेरुलिअ, वेडुज्ज

इदानीम्—एण्हि, एत्ताहे, इआणि

पूर्व— पुरिम, पुव्व

त्रस्त— हित्थ, तट्ठ

बृहस्पति—भयस्सइ, भयप्फइ, भयप्पइ

बृहस्पति—बहस्सइ, बहप्फइ, बहप्पइ, बिहस्सइ, बिहप्फइ, बिहप्पइ, बुहस्सइ, बुहप्फइ, बुहप्पइ

मलिन — मइल— मेलुं, मलिण

उभय— अवह, उभय, उभयो, उवह

शुक्ति— सिप्पी—छीप, सुत्ति

छुप्त— छिक्क, छुत्त

आरब्ध — आढत्त, आरद्ध

पदाति—पाइक्क, पयाइ — पायग, पायका

दंष्ट्रा— दाढा

बहिस्—बाहिं, बाहिर
अधस्—हेट्ठं
मातृष्वसा— माउसिआ-माशी
माउच्छा
पितृष्वसा—पिउसिआ--फई
पिउच्छा
तिर्यक्— तिरिच्छि
गृह— घर
गृहस्वामी—घरसामी

गृहपति— गहवइ
लत्तिआ— { लट्ठिआ-लाठी / लट्ठि }
भ्रू— भुमया
भमया—भवाँ
मिश्र—मीसालिअ-मसालो
मीस
दीर्घ— { दीहर / दीह }

१९२ अनुस्वारनो वधारो

नीचेना शब्दोमां अनुस्वार वधी जाय छेः

वक्र— वंक— वांकु
त्र्यस्र—तंस— त्रांसु, तांसु
अश्रु— अंसु— आंसु
श्मश्रु—मंसु
पुच्छ—पुंछ—पूंछ, पूंछडुं
गुच्छ—गुंछ—गुच्छो
मूर्धन्—मुंढा—मुंड-मुंडो
पर्शु— पंसु
बुध्न— बुंध—बुंधु

कर्कोट—कंकोड
कुड्मल—कुंपल—कुंपळ
दर्शन—दंसण
वृश्चिक—विंछिअ—वींछी
गृष्टि—गिंठि, गिट्ठि
मार्जार—मंजार, मज्जार
वयस्य—वयंस
मनस्विन्—मणंसि
मनस्विनी—मणसिणी

मनःशिला— { मणंसिला, मणसिला / मणासिला, मणोसिला } —मणसिल

प्रतिश्रुत्—पडंसुआ
उपरि—अवरिं, उवरि

अतिमुक्तक—अइमुंतय, अइमुत्तय

(कोई स्थळे छंदनी पूरवणी माटे पण अनुस्वार वधी जाय छे:)

देवनागसुवण्ण—	देवंनागसुवण्ण—
किन्नरगणसम्भूअभावच्चिए	किन्नरगणसम्भूअभाव-च्चिए

१९३ जातिनो फेरफार

नीचे जणावेला शब्दो नरजातिमां वपराय छे:

प्रावृष्—पाउस. शरद्—सरअ तरणि.

*स् छेडावाळा अने न् छेडावाळा तमाम शब्दो नरजातिमां वपराय छे:

यशस्—जसो (जस+ओ)	उरस्—उरो (उर+ओ)
पयस्—पयो (पय+ओ)	जन्मन्—जम्म (जम्म+ओ)
तमस्—तमो (तम+ओ)	नर्मन्—नम्म (नम्म+ओ)
तेजस्—तेओ (तेअ+ओ)	मर्मन्—मम्म (मम्म+ओ)

(अहीं जणावेलो 'ओ', 'अ' छेडावाळां नरजाति नामोने लागतो प्रथमाना एकवचननो प्रत्यय छे.)

अपवाद—दामन्—दाम. शिरस्—सिर. नभस्—नह.

आ त्रण शब्दो नपुंसकमां—नान्यतरजातिमां—वपराय छे:

दामं सिरं नहं तथा

सेय (श्रेयस्) वच (वचस्) सुमन (सुमनस्)

सम्म (शर्मन्) अने चम्म (चर्मन्)

ए शब्दो नान्यतरजातिमां वपराय छे.

सेयं. वयं. सुमणं सम्मं. चम्मं.

(सेय वगेरे ऊपर जे अनुस्वार छे ते नान्यतरजातिना प्रथमाना एकवचननो सूचक छे.)

बहिस्—बाहिं, बाहिर
अधस्—हेट्ठ
मातृष्वसा— माउसिआ-
माशी
माउच्छा
पितृष्वसा—पिउसिआ—फई
पिउच्छा
तिर्यक्— तिरिच्छि
गृह— घर
गृहस्वामी—घरसामी

गृहपति— गहवइ
लत्तिआ— { लट्ठिआ-लाठी
लट्ठि }
भ्रू— भुमया
भमया—भवाँ
मिश्र—मीसालिअ-मसालो
मीस
दीर्घ— { दीहर
दीह }

---

१९२ अनुस्वारनो वधारो

नीचेना शब्दोमां अनुस्वार वधी जाय छे:

वक्र— वंक— वांकुं
त्र्यस्र—तंस— त्रांसुं, तांसुं
अश्रु— अंसु— आंसु
श्मश्रु—मंसु
पुच्छ—पुंछ—पूंछ, पूंछडुं
गुच्छ—गुंछ—गुच्छो
मूर्धन्—मुंढा—मुंड-मुंडो
पर्शु— पंसु
बुध्न— बुंध—बुंधु

कर्कोट—कंकोड
कुड्मल—कुंपल—कुंपळ
दर्शन—दंसण
वृश्चिक—विंछिअ—वींछी
गृष्टि—गिंठि, गिट्ठि
मार्जार—मंजार, मज्जार
वयस्य—वयंस
मनस्विन्—मणंसि
मनस्विनी—मणसिणी

मनःशिला— { मणंसिला, मणसिला
मणासिला, मणोसिला } —मणसिल

प्रतिश्रुत—पडंसुआ
उपरि—अवरिं, उवरि

अतिमुक्तक—अइमुंतय,
अइमुत्तय

(कोई स्थळे छंदनी पूरवणी माटे पण अनुस्वार वधी जाय छे:)

देवनागसुवण्ण—	देवंनागसुवण्ण—
किन्नरगणसम्भूअभावच्छिप	किन्नरगणसम्भूअभाव-च्छिप

१९३ जातिनो फेरफार

नीचे जणावेला शब्दो नरजातिमां वपराय छे:

प्रावृष्—पाउस शरद्—सरअ तरणि.

*स् छेडावाळा अने न् छेडावाळा तमाम शब्दो नरजातिमां वपराय छे:

यशस्—जसो (जस+ओ)	उरस्—उरो (उर+ओ)
पयस्—पयो (पय+ओ)	जन्मन्—जम्म (जम्म+ओ)
तमस्—तमो (तम+ओ)	नर्मन्—नम्म (नम्म+ओ)
तेजस्—तेओ (तेअ+ओ)	मर्मन्—मम्म (मम्म+ओ)

(अहीं जणावेलो 'ओ', 'अ' छेडावाळां नरजाति नामोने लागतो प्रथमाना एकवचननो प्रत्यय छे.)

अपवाद—दामन्—दाम. शिरस्—सिर. नभस्—नह.

आ त्रण शब्दो नपुंसकमां—नान्यतरजातिमां—वपराय छे:

दामं सिरं नहं तथा

सेय (श्रेयस्) वच (वचस्) सुमन (सुमनस्)

सम्म (शर्मन्) अने चम्म (चर्मन्)

ए शब्दो नान्यतरजातिमां वपराय छे.

सेयं. वयं. सुमणं सम्मं. चम्मं.

(सेय वगेरे ऊपर जे अनुस्वार छे ते नान्यतरजातिना प्रथमाना एकवचननो सूचक छे.)

*'आंख' ना अर्थने सूचवनारा तमाम शब्दो नरजातिमां विकल्पे वपराय छे.

	नरजाति प्रथमा बहुवचन	नान्यतरजाति प्रथमा बहुवचन
अक्खि—	अक्खी	अक्खीणि
	अच्छी	अच्छीणि
चक्खु—	चक्खू	चक्खूणि
नयण—	नयणा	नयणाणि
लोअण—	लोअणा	लोअणाणि

नीचेना शब्दो नरजातिमां विकल्पे वपराय छे:

वयण	वयणा	वयणाणि
विज्जु	विज्जुणा (तृ० ए०)	विज्जूए (तृ० ए०)
कुल	कुलो (प्र० ए०)	कुलं (प्र० ए०)
छन्द	छंदो	छंदं
माहप्प (माहात्म्य)	माहप्पो	माहप्पं
दुक्ख	दुक्खा (प्र० व०)	दुक्खाइं (प्र० व०)
भायण (भाजन)	भायणा	भायणाइं

नीचेना शब्दो नान्यतरजातिमां विकल्पे वपराय छे:

	नर०	नान्य०
गुण—	गुणा	गुणाइं
देव—	देवा	देवाणि
बिंदु—	बिन्दुणो	बिंदूणि
खग्ग—	खग्गो	खग्गं
मंडलग्ग—	मंडलग्गो	मंडलग्गं
कररुह—	कररुहो	कररुहं
रुक्ख—	रुक्खो	रुक्खं

*'पणुं' अर्थनो सूचक 'इमा' प्रत्यय जेने छेडे होय तेवां नामो नारीजातिमां विकल्पे वपराय छे:

	नारी०	नर०
गरिमा	गरिमा	गरिमा
महिमा	महिमा	महिमा
निल्लज्जिमा(निर्लज्जत्व)	निल्लज्जिमा	निल्लज्जिमा
धुत्तिमा (धूर्त्तत्व)	धुत्तिमा	धुत्तिमा
चन्द्रिका	चंदिमा (चद+इमा)	

अंजलि वगेरे शब्दो नारीजातिमां विकल्पे वपराय छे:

	नारी०	नर०
अंजलि—	अंजली	अंजली
		नान्यतर०
पिट्ठी—	पिट्ठी	पिट्ठं
अच्छि—	अच्छी	अच्छि
		नरजाति
पण्ह—	पण्हा	पण्हो
		नान्यतर०
चोरिअ—	चोरिआ	चोरिअं

	नारी०	नर०
कुच्छि—	कुच्छी	कुच्छी
बलि—	बली	बली
निहि (निधि)—	निही	निही
विहि (विधि)—	विही	विही
रस्सि—	रस्सी (रश्मि)	रस्सी (राश)
गंठि—	गठी (ग्रन्थि)	गंठी (गांठ)

१९४ ह्रस्वनो दीर्घ

*श्य, श्र, र्श, श्व, अने श्श नी पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छेः

पश्यति—पासइ—देखे छे	मिश्र— मीस
कश्यप—कासव—काश्यप-गोत्र अथवा खसिया जातिनो	परामर्श—परामास
	संस्पर्श—संफास
	अश्व— आस
आवश्यक–आवासय–अवश्य कर्तव्य	विश्वास—वीसास
	विश्वसिति–वीससइ
विश्राम—वीसाम—वीसामो	निश्श्वास—नीसास
विश्राम्यति–वीसमइ–वीसमे छे–वीहमे छे	दुश्शासन—दूसासण
	मनश्शिला—मणासिला

*ष्य ष्र र्ष ष्व अने ष्ष नी पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छेः

शिष्य— सीस	कर्षक— कासअ
पुष्य— पूस	विष्वाण— वीसाण
मनुष्य— मणूस—माणस	विष्वक्— वीसुं
वर्षा— वासा	निष्षक्त— नीसत्त
वर्ष— वास	

*स्य स्र र्स स्व अने स्स नी पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छेः

सस्य— सास	दुस्सह— दूसह, दुस्सह
कस्य— कास—कोनु	निस्स्व— नीस
उस्र— ऊस	निस्सह— नीसह, निस्सह
विस्रम्भ— वीसंभ	निस्सरइ— नीसरइ
विकस्वर— विकासर	दुस्सह— दूसह, दुस्सह

१९५ दीर्घनो ह्रस्व

*संयुक्त अक्षरनी पूर्वनो दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे:

आम्र—	अम्ब	मुनीन्द्र—	मुणिन्द
ताम्र—	तम्ब	तीर्थ—	तित्थ
विरहाग्नि—	विरहग्गि	गुरूल्लाप—	गुरुल्लाव
आस्य—	अस्स	चूर्ण—	चुण्ण—चूनो
उत्तराध्ययन—	उत्तराज्झयण—उत्तरज्झयण	नरेन्द्र—	नरिंद
		म्लेच्छ—	मिलिच्छ
भिक्षार्थ—	भिक्खाट्ठा—भिक्खट्ठा	अधरोष्ठ—	अहरुट्ठ
		नीलोत्पल—	नीलुप्पल

१९६ इ नो ए

*संयुक्त अक्षरनी पूर्वना 'इ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे:

पिण्ड–पेंड, पिंड–पिंडो, पेंडो

धम्मिल्ल—धम्मेल्ल, धम्मिल

सिन्दूर–सेंदूर, सिंदूर–सिंदोर

विष्णु—वेण्हु, विण्हु

पिष्ट—पेट्ठ, पिट्ठ—मगनुं पीठुं

बिल्व–बेल्ल, बिल्ल–{वीलुं फळ / बेलुं}

किंशुक–केसुअ, किंसुअ–केसुडुं

१९७ उ नो ओ

*संयुक्त अक्षरनी पूर्वना 'उ' नो 'ओ' थाय छे:

तुण्ड—	तोंड	लुब्धक—	लोद्धअ—लोधो
मुण्ड—	मोंड	मुद्गर—	मोग्गर—मोगरो (मारवानो)
पुष्कर—	पोक्खर	पुद्गल—	पोग्गल—पोगळ
कुट्टिम—	कोट्टिम	कुण्ठ—	कोंढ—कोंढियो
पुस्तक—	पोत्थअ—पोथो	कुन्त—	कोंतो
पुस्तिका—	पोत्थिआ—पोथी	व्युत्क्रान्त—	वोक्कंत
मुस्ता—	मोत्था—मोथ		

संधि

संधि एटले परस्पर संधाई जवुं—एक बीजामां मळी जवुं के एक बीजामां छुपाई जवुं.

प्रथम पदनो छेडानो स्वर अने पाछला पदनो पहेलो स्वर ए बन्ने एक बीजामां मळी जई जे फेरफार पामे तेनुं नाम स्वरसंधि.

पदनी अंदरनो व्यंजन तेनी पछीना व्यंजनने लीधे जे फेरफार पामे तेनुं नाम व्यंजन संधि:

जेमके:

कंठ, कण्ठ. चंद, चन्द. कंकण, कङ्कण.
संख, सङ्ख. गंगा, गङ्गा वगेरे

अर्धमागधीमां संस्कृतनी पेठे जुदा जुदा व्यंजनोनी संधि थती नथी.

१ एक पदमां संधि थती ज नथी.

नई (नदी) पइ (पति) कइ (कवि) गअ (गज)
गउआ (गो-गाय) काअ (काक) लोअ (लोक)
रुइ (रुचि) रइ (रति) वगेरे.

अपवाद: केटलाक शब्दोमां एक पदमां पण स्वर संधि थई जाय छे:

वि + ईअ = बीअ
वि - इअ = विइअ } —बीजुं-द्वितीय

काहि + इ = काही
काहिइ } —करशे-करिष्यति

*थ + इर = थेर (वृद्ध-स्थविर)
च + उ + द्दस = चोद्दस (चौद-चतुर्दश)
कुंभ + आर = कुंभार (कुंभार-कुम्भकार)
चक्क + आअ = चक्काअ (चक्रवाक)
साल + आहण = सालाहण (शालिवाहन राजा)

२ क्रियापदना छेडाना स्वरनी कोई बीजा पदना स्वर साथे संधि थती नथी: जेमके;

होइ + इह = होइ इह

३ इ ई के उ ऊ पछी कोई विजातीय स्वर आवे तो संधि थती नथी: जेमके;

इ—जाइ + अंध = जाइअंध (जातिअंध-जात्यन्ध-जन्मांध)

ई—पुढवी + आउ = पुढवीआउ (पृथ्वी पाणी-पृथ्वी आप)

उ—बहु + अट्ठिय = बहुअट्ठिय (बहुअस्थिक-घणां हाडकांवाळुं)

ऊ—वहू + अवगूढ = वहूअवगूढ (वधूअवगूढ)

४ ए के ओ पछी कोई पण स्वर आवे तो संधि थती नथी:

ए—महावीरे + आगच्छइ
पगे + आया | पगे + एवं

ओ—अहो + अच्छरियं
गोयमो + आघवेइ | आलक्खिमो + इण्हिं

---

* जुओ—आगळना उदाहरणो पृ० ६८-६९ अंक ६३

५ बे पदमां पण व्यंजन लोपाया पछी ज्यां जे स्वर बाकी रहेले होय त्यां ते स्वरनी संधि थती नथीः

निशाकर—निसा + अर = निसाअर
,, निसि + अर = निसिअर
रजनीकर—रयणी + अर = रयणीअर
रजनीचर—रयणी + अर = रयणीअर
निशाचर—निसा + अर = निसाअर
,, —निसि + अर = निसिअर
गन्धपुटी—गंध + उडी = गंधउडी

६ अ के आ पछी अ के आ आवे तो आ थई जाय छेः

अ - जीव + अजीव = जीवाजीव
विसम + आयव = विसमायव (विषम आतप)
आ—गंगा + अहिवइ = गंगाहिवइ
जउणा + आणयण = जउणाणयण (यमुना आनयन)

७ इ के ई पछी इ के ई आवे तो ई थई जाय छे·

मुणि + इयर = मुणीयर
दहि + ईसर = दहीसर
पुहवी + ईस = पुहवीस
पुहवी + इसि = पुहवीसि

८ उ के ऊ पछी उ के ऊ आवे तो ऊ थई जाय छेः

बहु + उदग = बहूदग
साउ + उदग = साऊदग
बहु + ऊसास = बहूसास
बहू + उवमा = बहूवमा
बहू + ऊसास = बहूसास

९ स्वर पछी स्वर आवे तो आगला स्वरनो लोप पण थई जाय छेः

नर + ईसर—नर् + ईसर = नरीसर, नरेसर
तिदस + ईस—तिदस् + ईस = तिदसीस, तिदसेस

नीसास + ऊसास = नीसास् + ऊसास = नीसासूसास
रमामि + अहं = रमामहं
तम्मि + अंसहर = तम्मंसहर
उवलभामि + अहं = उवलभामहं
देविंद + अभिवंदिअ = देविंदभिवंदिअ
ददामि + अहं = ददामहं
ण + एव = णेव

१० ज्यां बे स्वर पासे पासे आवेला होय त्यां केटलेक स्थळे पाछला पदनो पहेलो स्वर लोप पामी जाय छे:

फासे + अहियासए = फासे हियासए
बालो + अवरज्झइ = बालो वरज्झइ

११ सर्वनामनो स्वर के अव्ययनो स्वर पासे पासे आवेला होय तो ते बेमांथी गमे ते एकनो स्वर लोप पामे छे.

तुम्मे + इत्थ = तुब्भित्थ	जे + एत्थ = जेत्थ
अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ	जइ + अहं = जइहं
जे + इमे = जेमे	जइ + इमा = जइमा

१२ कोई पण पदनी पछी **अपि** के **अवि** अव्यय आवेल होय तो तेनो **अ** विकल्पे लोप पामे छे:

किं + अपि = किं पि, किमवि.
केण + अवि = केण वि, केणावि
कहं + अपि = कहं पि, कहमवि

१३ कोई पण पद पछी **इति** अव्यय आवेल होय तो तेनो आदिनो इ लोप पामे छे.

जं + इति = जं ति	जुत्तं + इति = जुत्तं ति
दिट्ठं + इति = दिट्ठं ति	

१४ कोई पण पदना छेडाना स्वर पछी **इति** अव्यय आवेल होय तो तेना आदिना इनो लोप करवो अने **तिने** बदले **त्ति** करवोः

तहा + इति = तहत्ति†	पुरिसो + इति = पुरिसो त्ति
पिओ + इति = पिओ त्ति	

१५ **अ** के **आ** पछी इ के **ई** आवे तो **ए** थाय छेः

न + इच्छति = नेच्छति	जाया + ईस = जायेस
वास + इसि = वासेसि	खट्टा + इह = खट्टेह
दिण + ईस = दिणेस	(खट्वा + इह)

१६ **अ** के **आ** पछी **उ** के **ऊ** आवे तो **ओ** थाय छेः

सिहर + उवरि = सिहरोवरि	गंगा + उवरि = गंगोवरि
पग + ऊण = पगोण	वीसा + ऊण = वीसोण
पाअ + ऊण = पाओण (पोणुं)	

१७ पदना छेडाना **म्**नो अनुस्वार थाय छेः

जलम्—जलं	अपवादः—
फलम्—फलं	वणम्मि—वणंमि
गिरिम्—गिरिं	वणम्मि

† जुओ पृ० १२५, नियम १९५.

८ पदने छेडे आवेला **म्** पछी स्वर आवे तो तेनो विकल्पे अनुस्वार थाय छे

उसभम् + अजिअं = उसभं अजिअं, उसभमजिअं.
नगरम् + आगच्छइ = नगरं आगच्छइ, नगरमागच्छइ

९ केटलाक शब्दोमां छेडाना व्यंजननो अनुस्वार थई जाय छेः

साक्षात्—सक्खं	पृथक्—पिहं
यत्—जं	सम्यक्—सम्मं
तत्—तं	ऋधक्—इहं
विष्वक्—वीसुं	ऋधकक्—इहयं

० ङ् ञ् ण् अने **न्** पछी कोई पण व्यंजन आवे तो तेनो अनुस्वार थई जाय छेः

शङ्ख—सङ्ख—संख	षण्मुख—छण्मुह-छंमुह
कञ्चुक—कञ्चुअ-कंचुअ	सन्ध्या—संझा

१ केटलाक शब्दोमां अनुस्वारनो लोप थई जाय छेः

विंशति—वीसा	एवम्—एवं-एव, एवं
त्रिंशत्—तीसा	नूनम्—नूनं-नूण, नूणं
संस्कृत—सक्कय	इदानीम्—इआणिं—इआणि, इआणिं
संस्कार—सक्कार	,, ,, दाणि, दाणिं
मांस—मांस, मंस	किम्—किं—कि, किं
मांसल—मासल, मंसल	संमुख—समुह, संमुह
कांस्य—कास, कंस	किंशुक—केसुअ, किंसुअ
पांशु—पासु, पंसु	सिंह—सीह, सिंघ
कथम्—कथं-कह, कहं	

२२ अनुस्वार पछी वर्गनो कोई पण अक्षर आवतां अनुस्वारने बदले वर्गनो पांचमो अक्षर विकल्पे मुकाय छेः

पंक—पङ्क, पंक	कंड—कण्ड, कंड
संख—सङ्ख, संख	संढ—सण्ढ, संढ
अंगण—अङ्गण, अंगण	अंतर—अन्तर, अंतर
लंघण—लङ्घण, लंघण	पंथ—पन्थ, पंथ
कंचुअ—कञ्चुअ, कंचुअ	चंद—चन्द, चंद
लंछण—लञ्छण—लंछण	बंधु—बन्धु, बंधु
अंजण—अञ्जण, अंजण	कंप—कम्प, कंप
संझा—सञ्झा, संझा	गुंफ—गुम्फ, गुंफ
कंटअ—कण्टअ, कंटअ	कलंब—कलम्ब, कलंब
कंठ—कण्ठ, कंठ	आरंभ—आरम्भ, आरंभ

२३ केटलाक पदोमां बे पदनी वच्चे **म्** उमेराय छेः

अन्न + अन्न = अन्नम् अन्न–अन्नमन्न
पग + पग = पगम् पग–पगमेग
चित्त + आणंदिय = चित्तम् आणंदिय–चित्तमाणंदिय
जहा + इसि = जहाम् इसि–जहामिसि
इह + आगअ = इहम् आगअ–इहमागअ
हट्ठतुट्ठ + अलंकिय = हट्ठतुट्ठम् 'अलंकिय—हट्ठतुट्ठमलंकिय
अणेगछंदा + इह = अणेगछंदाम् इह–अणेगछंदामिह
जुव्वण + अप्फुण्ण = जुव्वणम् अप्फुण्ण–जुव्वणमप्फुण्ण

२४ केटलाक शब्दोनो छेडानो व्यंजन लोपातो नथी परंतु [illegible] पासेना स्वरमां भळी जाय छे

किम् + इहं = किमिहं	निर् + अंतर = निरंतर
यद् + अस्ति = जदत्थि	दुर् + अतिक्रम = दुर्
पुनर् + अपि = पुणरवि	अइक्कम = दुरइक्कम

२५ अहीं जे जे संधिना नियमो जणावेला छे ते बधानो उपयोग बे पदो वच्चे ज करवानो छे अने ज्या एक करतां वधारे नियमो लागवानो संभव जणाय त्यां प्रयोगोने अनुसारे अने अर्थभ्रम न थाय ए रीते ज संधि करवी.

समास

समास एटले संक्षेप. वधारे अर्थने सूचववा सारु ओछा शब्दो वापरवानी शैलीनुं नाम समास छे.

लखवुं ओछुं पडे अने बोलवानुं पण ओछुं रहे छतां अर्थ विशेषपणे कई रीते सूचवी शकाय ए दृष्टिमांथी आ समासनी शैलीनी शोध थयेली छे अने ए शोध पंडिताउ शैलीमा सविशेषपणे विकास पण पामी छे.

बोलचालनी लोकभाषामा आ शैलीनो प्रचार ओछो जणाय छे. परंतु लोकभाषा ज ज्यारे केवळ साहित्यनी भाषा बनी जाय छे त्यारे तेमां आ समासनी शैलीनो उपयोग सारी रीते थयेलो मळे छे.

'न्यायनो अधीश' कहेवुं होय तो समास वगरनी शैलीमा 'नायस्स अधीसो' कहेवाय अने समासवाळी शैलीमा 'नायाधीसो' कहेवाय. अर्थात् जे अर्थने बताववा सारु समास वगरनी शैलीमा छ अक्षरोनो खप पडे छे ते ज अर्थने बताववा समासवाळी शैलीमां केवळ चार अक्षरोथी ज चाले छे.

ए ज रीते 'जे देशमां घणा वीरो छे ते देश' कहेवुं होय तो समास वगरनी शैलीमां 'जम्मि देसे बहवो वीरा संति सो देसो' एटलुं लांबुं कहेवुं पडे त्यारे ते ज अर्थने बताववा सारु समासवाळी शैलीमा 'बहुवीरो देसो' एटलुं ओछुं कहेवाथी ज पूरुं काम सरी जाय अर्थात् जे अर्थने बताववा माटे समास वगरनी शैलीमा चौद अक्षरोनी जरूर रहे छे ते ज अर्थने समासवाळी शैली केवळ छ

अक्षरोथी संपूर्णपणे बतावी शके छे. आ रीते समासवाळी अने समास वगरनी शैलीनी ते एक मोटी विशेषता छे.

आ उपरांत समासवाळी शैलीनी बीजी पण अनेक विशेषताओ छे. जेमके, 'अहिणउलं' (अहिनकुलम्) एवो एकवचनी द्वन्द्व, ते बे वच्चेना एटले साप अने नोळीया वच्चेना स्वाभाविक वैरने बतावे छे त्यारे 'देवासुरं' एवो एकवचनी द्वन्द्व, ते बे (एटले देव अने असुर) वच्चेना मात्र विरोधने सूचवे छे.

उपरांत जे समासमां केटलीक वार पूर्वपदनी विभक्ति लोपाती नथी ते पण विशेष अर्थने बतावे छे. 'गेहेसूरो' समास माणसनी कायरताने सूचित करे छे. 'तित्थे कागो अत्थि' एवी समास वगरनी शैलीवाळुं वाक्य खास कोई विशेषता बतावतुं नथी त्यारे 'तित्थ-काग' (तीर्थकाक) एवी समासवाळी शैलीनुं वाक्य तीर्थवासी मनुष्यनी अधमता बतावे छे.

केटलीक वार समासमानुं मध्यम पद ज लोपाई जाय छे छतां समास द्वारा ते लोपायेला मध्यम पदनो अर्थ बराबर सूचित थतो रहे छे. जेमके, 'झसोदर' शब्द समासयुक्त छे. तेनो अर्थ 'माछला-ना पेटनी जेवुं जेनुं पेट छे ते' एवो थाय छे. खरी रीते आवो अर्थ बताववा झसोदरोदर (झस—माछलुं, उदर—पेट, उदर—पेट) आवो शब्द वपरावो जोइए; त्यारे एने बदले केवळ 'झसोदर' शब्द ज उक्त अर्थने पूर्णपणे बतावे छे ए आ समासनो ज एक चमत्कार छे. आवा समासनुं नाम 'मध्यमपदलोपी' समास कहेवाय छे आ सिवाय पण समासवाळी शैलीनी विशेषता बताववा दंडादंडी (दण्डा-

दण्ड) केसाकेसि (केशाकेशि) अणुरूव (अनुरूप) जहासत्ति (यथाशक्ति) वगेरे अनेक उदाहरणो आपी शकाय, परंतु एवां बधां अनेक उदाहरणो आपवानुं आ स्थान नथी माटे ए विशे वधारे न जणावतां अर्धमागधीमां वपराता केटलाक समासो संबंधे चर्चा करवी उचित छे.

अहीं ए खास याद राखवुं जोईए के समासोनी जे खूबी पंडिताउ भाषामां छे तेवी खूबी एक समयनी लोकभाषारूप आ अर्ध-मागधी भाषामां नथी. परंतु ज्यारथी आ भाषा पण साहित्यनी ज बनी गई त्यारथी आना ऊपर पण ए पंडिताउ भाषाना समासोनी असर सारी पेठे थयेली छे अने एम छे माटे ज अहीं समासोनी थोडी विगतवार चर्चा बराबर समुचित छे.

समासना प्रसिद्ध चार प्रकार नीचे प्रमाणे छे·

१ दद (द्वन्द्व). २ तप्पुरिस (तत्पुरुष). ३ बहुव्वीहि (बहुव्रीहि) ४ अव्वईभाव (अव्ययीभाव)

(जे शब्दोनो समास करवो होय तेमने छूटा छूटा वापरी बतावया तेनुं नाम 'विग्रह' छे: विग्रह एटले छूटुं करवुं)

१ दंद समास

दंद एटले जोडकुं दंद समासना जोडकामां वपराता बन्ने शब्दोमां वा बेथी पण वधारे शब्दोमां कोई, मुख्य के गौण नथी होता. अर्थात् दंद समासमां वपराता तमाम शब्दोनी समान मर्यादा छे. जेमके 'माबाप' 'सगांवहालां' ए बन्ने उदाहरणो दंद समास-

ना छे. तेम पुण्णपावाइं, जीवाजीवा, सुहदुक्खाइं, सुरासुरा—वगेरे उदाहरणो पण दंद समासनां छे. ए दंद समासनो विग्रह आ प्रमाणे छेः

पुण्णं च पावं च पुण्णपावाइं.

जीवा य अजीवा य जीवाजीवा.

सुहं अ दुक्खं च सुहदुक्खाइं.

सुरा य असुरा य सुरासुरा.

दंद समासद्वारा तैयार थयेलुं पद घणुं करीने बहुवचनमां वपराय छे. ए ज रीते हत्थपाया (हस्तपादाः) लाहालाहा (लाभालाभाः) सारासारं (सारासारम्) देवदाणवगंधव्वा (देवदानवगान्धर्वाः) वगेरे.

दंद समासना विग्रहमां 'य' 'अ' के 'च' वपराय छे.

२ तप्पुरिस समास

जे समासनुं पूर्वपद पोतानी विभक्तिना संबंधथी उत्तरपद साथे एटले पाछला पद साथे जोडायेलुं होय ते तप्पुरिस समास. आ समासनु पूर्वपद बीजी विभक्तिथी मांडीने सातमी विभक्ति सुधीनी विभक्तिवाळुं होय छे. जे जे विभक्तिवाळु ए पूर्वपद होय ते ते विभक्तिना नामवाळो तप्पुरिस समास कहेवाय. जेमके;

बिईयातप्पुरिस (द्वितीयातत्पुरुष) तईयातप्पुरिस (तृतीयातत्पुरुष) चउत्थीतप्पुरिस (चतुर्थीतत्पुरुष) पञ्चमीतप्पुरिस (पञ्चमीतत्पुरुष) छट्ठीतप्पुरिस (षष्ठीतत्पुरुष) अने सत्तमीतप्पुरिस (सप्तमीतत्पुरुष).

ते दरेकनां क्रमवार उदाहरणो आ प्रमाणे छेः

बिईया तप्पुरिस—

इंदियं अतीतो—इंदियातीतो
सुहं पत्तो—सुहपत्तो
दिवं गतो—दिवंगतो
वीरं अस्सिओ—वीरस्सिओ (वीराश्रितः)
खणं सुहा—खणसुहा

तईया तप्पुरिस—

ईसरेण कडे—ईसरकडे (ईश्वरकृतः)
दयाए जुत्तो—दयाजुत्तो
गुणेहिं संपन्नो—गुणसंपन्नो
रसेण पुण्णं—रसपुण्णं (-पूर्ण)
मायाए सरिसी—माउसरिसी
कुलेण गुणेण सरिसी—कुलगुणसरिसी
रूवेण समाणा—रूवसमाणा

चउत्थी तप्पुरिस

लोगाय हितो—लोगहितो
लोगस्स सुहो—लोगसुहो
वहुजणस्स हितो—वहुजणहितो
थंभाय कट्ठं—थंभकट्ठं

पंचमी तप्पुरिस

दंसणाओ भट्ठो—दंसणभट्ठो
अन्नाणाओ भयं—अन्नाणभयं
संसाराओ भीओ—संसारभीओ
वग्घाओ भयं—वग्घभयं
रिणाओ मुत्तो—रिणमुत्तो (—मुक्तः)

छट्ठी तप्पुरिस

देवस्स मंदिरं—देवमंदिरं
कन्नाए मुहं—कन्नामुहं
नरस्स इंदो—नरिंदो
देवस्स इंदो—देविंदो
लेहस्स साला—लेहसाला
विज्जाए ठाणं—विज्जाठाणं
समाहिणो ठाणं—समाहिठाणं

सत्तमी तप्पुरिस--

कलासु कुसलो—कला-कुसलो	जिणेसु उत्तमो—जिणोत्तमो
बंभणेसु उत्तमो-बंभणोत्तमो	दिएसु उत्तिमे—दिओत्तिमे
	नरेसु सेट्ठो—नरसेट्ठो

तप्पुरिस समासना पेटामां **उववय समास** (उपपद समास) आवी जाय छे. उववय समासमां पाछलुं पद कृदंतसाधित होय छे ए ध्यानमा राखवानुं छे.

उवयव समासनां केटलांक उदाहरणोः

कुंभगार—(कुम्भकार)	भासगार—(भाष्यकार)
सव्वण्णु—(सर्वज्ञ)	निण्णया—(निम्नगा)
पायव—(पादप)	नीयगा—(नीचगा)
कच्छव—(कच्छप)	नम्मया—(नर्मदा)
अहिव—(अधिप)	सगडब्भि—(स्वकृतभित्)
गिहत्थ—(गृहस्थ)	पावनासग—(पापनाशक)
सुत्तगार—(सूत्रकार)	
वुत्तिगार—(वृत्तिकार)	वगेरे

विशेषण अने विशेष्यनो समास पण तप्पुरिसना पेटामां आवी जाय छे. तेनुं बीजुं नाम '**कम्मधारय**' समास छेः तेनां उदाहरणोः

पीअं च तं वत्थं च—पीअवत्थं
रत्तो च सो घडो च—रत्तघडो
गोरो च सो वसभो च—गोरवसभो
महंतो च सो वीरो च—महावीरो
वीरो च सो जिणो च—वीरजिणो
महंतो च सो रायो च—महारायो

ते दरेकनां क्रमवार उदाहरणो आ प्रमाणे छेः

बिईया तप्पुरिस—

इंदियं अतीतो—इंदियातीतो
सुहं पत्तो—सुहपत्तो
दिवं गतो—दिवंगतो
वीरं अस्सिओ—वीरस्सिओ (वीराश्रितः)
खणं सुहा—खणसुहा

तईया तप्पुरिस—

ईसरेण कडे—ईसरकडे (ईश्वरकृतः)
दयाए जुत्तो—दयाजुत्तो
गुणेहिं संपन्नो—गुणसंपन्नो
रसेण पुण्णं—रसपुण्णं (-पूर्ण)
मायाए सरिसी—माउसरिसी
कुलेण गुणेण सरिसी—कुलगुणसरिसी
रूवेण समाणा—रूवसमाणा

चउत्थी तप्पुरिस

लोगाय हितो—लोगहितो
लोगस्स सुहो—लोगसुहो
बहुजणस्स हितो—बहुजणहितो
थंभाय कट्ठं—थंभकट्ठं

पंचमी तप्पुरिस

दंसणाओ भट्ठो—दंसणभट्ठो
अन्नाणाओ भयं—अन्नाणभयं
संसाराओ भीओ—संसारभीओ
वग्घाओ भयं—वग्घभयं
रिणाओ मुत्तो—रिणमुत्तो (—मुक्तः)

छट्ठी तप्पुरिस

देवस्स मंदिरं—देवमदिरं
कन्नाए मुहं—कन्नामुहं
नरस्स इंदो—नरिंदो
देवस्स इंदो—देविंदो
लेहस्स साला—लेहसाला
विज्जाए ठाणं—विज्जाठाणं
समाहिणो ठाणं—समाहिठाणं

सत्तमी तप्पुरिस—

कलासु कुसलो—कला-कुसलो	जिणेसु उत्तमो—जिणोत्तमो
बम्भणेसु उत्तमो-बंभणोत्तमो	दिएसु उत्तिमे—दिओत्तिमे
	नरेसु सेट्ठो—नरसेट्ठो

तप्पुरिस समासना पेटामां **उववय समास** (उपपद समास) आवी जाय छे. उववय समासमां पाछलुं पद कृदंतसाधित होय छे ए ध्यानमा राखवानुं छे.

उवयव समासनां केटलांक उदाहरणोः

कुंभगार—(कुम्भकार)	भासगार—(भाष्यकार)
सव्वण्णु—(सर्वज्ञ)	निण्णया—(निम्नगा)
पायव—(पादप)	नीयगा—(नीचगा)
कच्छव—(कच्छप)	नम्मया—(नर्मदा)
अहिव—(अधिप)	सगडब्भि—(स्वकृतभित्)
गिहत्थ—(गृहस्थ)	पावनासग—(पापनाशक)
सुत्तगार—(सूत्रकार)	वगेरे
वुत्तिगार—(वृत्तिकार)	

विशेषण अने विशेष्यनो समास पण तप्पुरिसना पेटामां आवी जाय छे. तेनुं बीजुं नाम '**कम्मधारय**' समास छेः तेनां उदाहरणोः

पीअं च तं वत्थं च—पीअवत्थं
रत्तो च सो घडो च—रत्तघडो
गोरो च सो वसभो च—गोरवसभो
महंतो च सो वीरो च—महावीरो
वीरो च सो जिणो च—वीरजिणो
महंतो च सो रायो च—महारायो

कण्हो च सो पक्खो च—कण्हपक्खो
सुद्धो च सो पक्खो च—सुद्धपक्खो

वळी, आ समासमां घणी वार बन्ने विशेषणो पण होय छेः

रत्तपीअं वत्थं—(रक्तपीतं वस्त्रम्)
सीउण्हं जलं—(शीतोष्णं जलम)

घणी वार पूर्वपद उपमासूचक होय छेः

चंदो इव मुहं—चंदमुहं
घणो इव सामो—घणसामो
वज्जो इव देहो—वज्जदेहो (वज्रदेह.)

घणी वार पाछलुं पद उपमासूचक होय छे.

मुहं चंदो इव—मुहचंदो | जिणो इंदो इव—जिणेंदो

घणी वार पूर्वपद केवळ निश्चयदर्शक होय छेः

संजमो एव धणं—संजमधणं
तवो चिअ धणं—तवोधणं
पुण्णं चेअ पाहेज्जं—पुण्णपाहेज्जं

कम्मधारय समासनो प्रथम शब्द संख्यासूचक होय तो तेनुं नाम दिगु (द्विगु) समास कहेवाय छेः

नवण्ह तत्ताणं समाहारो—नवतत्तं
चउण्हं कसायाणं समूहो—चउक्कसायं
तिण्हं लोआणं समूहो—तिलोई
तिण्ह लोगाणं समूहो—तिलोगं

निषेधदर्शक ' अ ' के ' अण 'नो नाम साथे जे समास थाय तेनुं नाम नतप्पुरिस समास. जेमके;

न लोगो—अलोगो	न इट्ठं—अणिट्ठं
न देवो—अदेवो	न दिट्ठं—अदिट्ठं
न आयारो—अणायारो	न इत्थि—अणित्थी

(ज्यां नामनी आदिमां स्वर होय त्यां ज 'अण' वपराय छे.)

प अइ अव परि अने नि वगेरे उपसर्गोनी साथे पण तप्पुरिस समास थाय छे. आनुं नाम पादि तप्पुरिस कहेवाय छे:

पगतो आयरियो पायरियो	उग्गओ वेलं उव्वेलो
संगतो अत्थो समत्थो	निग्गओ कासीए निक्कासी
अइक्कंतो पल्लंकं अइपल्लंको	

ए ज रीते पुणोपवुड्ढो, अंतब्भूओ वगेरे पण समजवा.

३ बहुव्वीहि समास—

आ समासमां बे के तेथी वधारे पदोनो उपयोग थाय छे. 'बहुव्वीहि' एटले बहु छे व्रीहि (डांगर) जेनी पासे एवो जे कोई होय ते 'बहुव्वीहि' कहेवाय जेवो 'बहुव्वीहि' नो अर्थ छे तेवो ज आ समास द्वारा तैयार थयेला तमाम शब्दोनो अर्थ छे. तात्पर्य ए के आ समासमां प्रथम पद घणुं करीने विशेषणरूप होय छे अथवा उपमासूचक होय छे अने प्रथम पछीनुं पद विशेष्यरूप होय छे अने समास थया पछी जे एक आखुं विशिष्ट नाम तैयार थाय छे ते पण बीजा कोईनुं विशेषण होय छे. आ समासमां वपराता नामो प्रधान नथी परंतु तेमनाथी जुदुं अन्य तत्त्व प्रधान होय छे माटे ज आ समासने अन्यपदार्थप्रधान कहेलो छे. ऊपर जणावेलो 'बहुव्वीहि' पदनो अर्थ ज आ हकीकतने स्पष्ट करे छे.

ज्यारे आ समासमां वपरातां नामो समान विभक्तिवाळां होय छे त्यारे आ समासने **समानाधिकरण बहुव्रीहि** कहेवामा आवे छे अने ज्यारे ए नामो जुदी जुदी विभक्तिवाळां होय छे त्यारे आ समासने **व्यधिकरण बहुव्रीहि** कहेवामां आवे छे.

आ समासनां उदाहरणो

†२ आरूढो वाणरो जं रुक्खं सो आरूढवाणरो रुक्खो
(वृक्ष.)

३ जिआणि इंदियाणि जेण सो जिइंदियो मुणी
जिओ कामो जेण सो जिअकामो महादेवो
जिआ परीसहा जेण सो जिअपरीसहो गोयमो

५ भट्ठो आयारो जाओ सो भट्ठायारो जणो
नट्ठो मोहो जाओ सो नट्ठमोहो साहू

६ घोरं बंभचेरं जस्स सो घोरबंभचेरो जबू
समं चउरंसं संठाणं जस्स सो समचउरंससंठाणो रामो
कओ अत्थो जस्स सो कयत्थो कण्हो
आसा अंबरं जेसिं ते आसंबरा
सेयं अंबरं जेसिं ते सेयंबरा
महंता बाहुणो जस्स सो महाबाहू
पच वत्ताणि जस्स सो पंचवत्तो—सीहो
चत्तारि मुहाणि जस्स सो चउम्मुहो—बम्हा
तिण्णि नेत्ताणि जस्स सो तिणेत्तो—हरो
एगो दंतो जस्स सो एगदंतो—गणेसो

७ वीरा नरा जम्मि गामे सो गामो वीरणरो
सुत्तो सिंघो जाए गुहाए सा सुत्तसिंहा गुहा

† सख्या, विभक्तिनी सूचक छे.

व्यधिकरण बहुव्रीहि

चक्कं पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी

गंडीवं करे जस्स सो गंडीवकरो अज्जुणो

उपमान जेमा प्रथमपद छे एवा बहुव्रीहिनां उदाहरणः

मिगनयणाइं इव नयणाणि जाए सा मिगनयणा

ए ज प्रमाणे कमलनयणा, गजाणणो, हंसगमणा, चंदमुही वगेरे.

'न' बहुव्रीहि—

नकारसूचक 'अ' के 'अण' साथे पण बहुव्रीहि समास थाय छे. ते आ प्रमाणेः

न अत्थि भयं जस्स सो अभयो.
न अत्थि पुत्तो जस्स सो अपुत्तो.
न अत्थि नाहो जस्स सो अणाहो.
न अत्थि पच्छिमो जस्स सो अपच्छिमो.
न अत्थि उयरं जीए सा अणुयरा

'स' बहुव्रीहि

ए ज प्रमाणे 'सह' सूचक 'स' अव्यय साथे पण बहुव्रीहि समास थाय छेः

पुत्तेण सह सपुत्तो राया.
सीसेण सह ससीसो आयरिओ
पुण्णेण सह सपुण्णो लोगो
पावेण सह सपावो रक्खसो.
कम्मणा सह सकम्मो नरो
फलेण सह सफलं
मूलेण सह समूलं

चेलेण सह सचेलं ण्हाणं
कलत्तेण सह सकलत्तो नरो.

ए ज रीते प नि वि अव अइ परि वगेरे उपसर्गो साथे बहुव्रीहि समास थाय छे अने तेनुं नाम प्रादि बहुव्रीहि छेः

प (पगिट्ठं) पुण्णं जस्स सो पपुण्णो जणो.
नि (निग्गया) लज्जा जस्स सो निल्लज्जो.
वि (विगतो) धवो जीए सा विधवा.
अव (अपगत) रूवं जस्स सो अवरूवो.
अइ (अइक्कंतो) मग्गो जेण सो अइमग्गो रहो.
परि (परिगतं) जलं जाए सा परिजला परिहा

४ अव्वईभाव समास—

ज्यारे युद्ध एटले लडाई वा झगडो बताववा सामसामी क्रिया वारंवार बताववी होय त्यारे आ समासनो उपयोग छे. भाषामां वपराता मारामारी, मुक्कामुक्की वगेरे शब्दो आ समासना गणाय. प्रस्तुतमां केसाकेसि, दंडादंडि वगेरे शब्दो छे. आ समासमा जे बे नामोनो समास थाय ते बन्ने नामो तद्दन एक सरखां होवां जोईए ए ध्यानमा राखवानुं छे एटले ‘ हत्थ ’ अने ‘ पाय ’ जेवा जुदा जुदा शब्दोनो आ समास न थाय.

आ समास अव्यय समान गणाय छे.

आ सिवाय बीजां केटलांक अव्ययो साथे पण आ समास थाय छे

उव—गुरुणो समीव उवगुरु.
अणु—भोयणस्स पच्छा अणुभोयणं.
अहि—अप्पंसि अंतो अज्झप्पं.

जहा—सत्ति अणइक्कमिऊण जहासत्ति.
जहा—विहि अणइक्कमिऊण जहाविहि.
जहा—जुग्गयं अणइक्कमिऊण जहारिहं.
पइ—पुरं पुर पइ पइपुरं

जे शब्दो समासमां आवेला होय छे तेमांना प्रथम शब्दनो स्वर ह्रस्व होय तो समासमां घणुं करीने दीर्घ करवो अने ए ज रीते दीर्घ स्वर होय तो ह्रस्व करवो.

ह्रस्वनो दीर्घ—

अन्तर्वेदि—अतावेइ	भुजयन्त्र—भुआयंत, भुअयत
सप्तविंशति—सत्तावीसा	पतिगृह—पईहर, पइहर
वारिमती—वारीमई, वारिमई	वेणुवन—वेलूवण, वेलुवण

दीर्घनो ह्रस्व—

यमुनातट—जउणयड, जँउणायड
नदीस्रोतस्—नइसोत्त, नईसोत्त
गौरीगृह—गोरिहर, गोरीहर
वधूमुख—वहुमुह, वहूमुह

आ सिवाय आ समासना बीजा घणा प्रयोगो पंडिताउ भाषा संस्कृतमां मळे छे पण ते बधानो अहीं विशेष उपयोग नथी माटे तेमने नोंध्या नथी.

आ रीते समासो विशे उपयोगितानी दृष्टिए उदाहरणो साथे अहीं जोईए तेटली स्पष्टता थई गई छे एटले आथी अधिक लखवानी अपेक्षा नथी.

प्राकृत मार्गोपदेशिका

भाग—२

प्रथम भागमा अर्धमागधीनो परिचय, वर्णविज्ञान, शब्दना विभाग अने शब्दना फेरफारने लगती तमाम हकीकतो समजावेली छे. 'शब्दना फेरफार' वाळा भागमां व्याकरणनो घणोखरो भाग 'स्वरना फेरफार' अने 'व्यंजनना फेरफार' ना मथाळा नीचे बतावेलो छे. आ बधुं समजवुं सरळ जणाय माटे ए फेरफारवाळी हकीकत आगला प्रकरणमा अकारादि क्रमे अने ककारादि क्रमे गोठवेली छे तथा उदाहरणोमां जे शब्दो आपेला छे तेना तमामना अर्थो नथी आप्या परंतु तेमांना जे शब्दो गुजराती भाषाने तद्दन मळता आवे छे तेमना प्रचलित एवा गुजराती शब्दो आपेला छे. वळी, तेमाना केटलाक शब्दो तद्दन सुगम छे एथी पण ए बधाना अर्थो नथी आप्या, आम छे छता क्यांय क्यांय अर्थो नोंधेला छे. तेमना बधाना अर्थो छेवटना शब्दकोशमा तो आपवाना ज छे. फेरफारवाळा प्रकरणमां संधि अने समासनी हकीकत वीगतथी उमेरेली छे अने विद्यार्थीने समजवी ते सुगम पडे माटे उदाहरणो विशेषे करीने समजावेलां छे.

हवे आ भागना जुदा जुदा पाठोमां क्रियापदोनां रूपो, नामनां रूपो तथा कृदंतोनां अने तद्धितनां रूपो आपवानां छे तथा अर्ध-

मागधीना विशेष अभ्यास माटे गुजराती वाक्योनां भाषांतरो अने अर्धमागधी वाक्योनां भाषांतरो पण विद्यार्थी करे ते माटे उपयोगी पण थोडां थोडां वाक्यो मूकवानी योजना करवानी छे. विद्यार्थी माटे प्रश्नोवाळा वा परीक्षावाळा पाठो जाणी जोईने राख्या नथी, एने सारु एकाद पाठ मूकेल छे एटले ए माटे तो शिक्षके पोते ज योजना करी लेवानी छे अथवा समजदार विद्यार्थीए पोतानी जाते ज प्रश्नो उपजावी पोतानो अभ्यास पाको करवानो छे.

पाठ १ लो

वर्तमान काळ

एक वचनना पुरुषबोधक प्रत्ययो

१ पुरुष एटले (हुं)   २ पुरुष एटले (तुं)   ३ पुरुष एटले (ते)

पुरुष	प्रत्यय	संस्कृत प्रत्यय
१	मि	(मि)
२	सि[1]	(सि)
३	ति[2]	(ति)
	इ	

---

१ संस्कृतना 'से' प्रत्ययनी पेठे अहीं 'से' प्रत्यय पण वपराय छे.

२ संस्कृतना ते' प्रत्ययनी पेठे अहीं 'ते' अने 'ए' प्रत्यय पण वपराय छे

धातुओ

हरिस् ([3] हर्ष्)[4] हरखवु
वरिस् (वर्ष्) वरसवुं
करिस (कर्ष्) कर्षवुं–काढवुं–खेंचवुं, खेडवुं
मरिस् (मर्श्) विमासवुं–विचारवुं
धरिस (धर्ष्) धसवु–सामा थवुं
गरिह् (गर्ह्) गरहवुं–निंदवुं
जेम् (जेम्) जमवु
देक्ख् (दृश्) देखवुं
पुच्छ् (पृच्छ्) पूछवुं
जाण् (जाना) जाणवुं
मरिस् (मर्ष्) सहवुं–क्षमा राखवी
घरिस् (घर्ष्) घसवुं
तुरिय् (तूर्य्) त्वरा करवी–उतावळ करवी
अरिह् (अर्ह्) पूजवुं
पुरिय् (पूर्य्) पूरवुं–बूरवुं–भरवुं
पूर् (पूर्) पूरवु
कर् (कर्) करवुं
वंद् (वन्द्) वांदवुं
पड् (पत्) पडवुं

---

१ मि ति न्ति वगेरे पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेलां मूळ धातुओमां विकरण 'अ' उमेरवामां आवे छे. जेमके;

वंद् + ति— वंद् + अ + ति = वंदति
पुच्छ् + ति– पुच्छ् + अ + ति = पुच्छति

२ प्रथम पुरुषना 'म'थी शरु थता प्रत्ययोनी पूर्वे आवेला 'अ'नो विकल्पे 'आ' थाय छे जेमके;

---

३ ( ) आ निशानमा मूकेला तमाम धातुओ के नामो वगेरे संस्कृत छे अने केवळ सरखामणी करवा माटे तेमने अहीं जणावेला छे.

४ जुओ पृ० ११६ नियम १८९

वंद् + अ + मि = वंदामि, वदमि
पड् + अ + मि = पडामि, पडमि

३ पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाड्या पछी धातुना अगना 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे. जेमके;

वद् + अ + इ = वदेइ, वंदइ
जाण् + अ + सि = जाणेसि, जाणसि
पुच्छ् + अ + मि = पुच्छेमि, पुच्छामि, पुच्छमि

रूपाख्यान

१ पु०	देक्खमि, देक्खामि, देक्खेमि
२ पु०	देक्खसि, देक्खेसि[5]
३ पु०	देक्खइ, देक्खेइ[5]

भाषांतर—वाक्यो

वांदुं छुं
घसुं छुं
करुं छुं
(तुं) वांदे छे
,, जमे छे
,, हरखे छे
(ते) देखे छे
,, करे छे
,, सहे छे

घसुं छुं
पडुं छुं
पूछुं छुं
(ते) घसे छे
,, जाणे छे
,, पडे छे
(तु) खेंचे छे
,, वरसे छे
,, सहे छे

(ते) जमे छे
,, विचारे छे
,, पूरे छे
(तुं) उतावळ करे छे
,, निंदे छे
,, पूजे छे
(हुं) सहुं छुं
,, करुं छुं
,, पडुं छुं

---

५ जुओ पृ० १४८, टिप्पण १ लु तथा २ बीजु

[6]वदामि	अरिहेइ	हरिससि
करिससे	पुच्छामि	मरिसामि
हरिसमि	घरिससि	गरिहसि
घरिसति	करते	जेमइ
देक्खसि	जाणेसि	घरिसेमि
गरिहामि	करिससि	मरिसामि
तुरियइ	पूरइ	तुरियेसि

पाठ २ जो

लोकव्यापक कोई पण भाषामां द्विवचनने बतावबा माटे खास जुदा प्रत्ययो जणाता नथी. ए प्रमाणे लोकव्यापक प्राकृतभाषामां पण द्विवचनना दर्शक जुदा प्रत्ययो नथी तेथी एकवचन पछी लागला ज बहुवचनना प्रत्ययो आपवामां आव्या छे. परंतु ज्यारे द्विवचननो अर्थ सूचववो होय त्यारे क्रियापद के नाम साथे द्विवचनदर्शक 'द्वि' शब्दनां बहुवचननां प्राकृतरूपोनो उपयोग करवो पडे छे. ते रूपो आ प्रमाणे छेः

प्रथमा तथा द्वितीया —
[7]दोण्णि, दुण्णि
वेण्णि, विण्णि
दो (द्वौ)
दुवे (द्वे)
वे, बे (द्वे)

प्रयोगः बे सिव्वामो— अमे बे सीवीए छीए

[6] प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'वदे' रूप पण वपराय छे वन्द्+अ+ए=वदे (स० वन्दे—हु वांदु छु) "उसभं अजिअं च वन्दे"

[7] 'दु' शब्दना जे रूपो ऊपर जणाव्या छे तेमांथी कतरी आवेलां

वर्तमानकाळ (चालु)

बहुवचनना पुरुषबोधक प्रत्ययो

पु०	प्रत्यय	संस्कृत प्रत्यय
१	मो[८]	(मः)
२	ह[९]	(थ)
३	न्ति[१०]	(न्ति)

धातुओ

खुब्भ् (क्षुभ्य[११]) खोभवुं-छोभवुं-क्षोभ थवो, गभरावुं

कुप्प् (कुप्य) कोपवु

सिव्व् (सिव्य) सीववुं

लव् (लप्[१२]) लववु-लवारो करवो

तव् (तप्) तपवु-संताप थवो, तप करवो

दीव् (दीप्) दीपवु

जव (जप्) जपवु-जाप करवो

खिप्प् (क्षिप्य) खेपवुं-खेववु-फेंकवु

लुट्ट् (लुट्य) लोटवु-आळोटवु

दिप्प् (दीप्य) दीपवुं

गच्छ् (गच्छ) जवुं

रूपो आज पण जुदी जुदी लोकभाषानां प्रचलित छे. जेमके.—

बे, बे	गूजराती —	बे
बिण्णि, बेण्णि	,,	बन्ने
दो	हिंदी—	दो
दुण्णि, दोण्णि	मराठी—	दोन
दुवे	बंगाली -	दुई

८ 'मु' अने 'म' प्रत्ययो तथा संस्कृतना 'महे'नी पेठे 'म्ह' प्रत्यय पण वपराय छे देक्खामु, देक्खाम, देक्खम्ह.

९ 'इत्था' प्रत्यय पण वपराय छे बोल्लित्था.

१० 'न्ते' अने 'इरे' प्रत्ययो पण वपराय छे. करन्ते, करिरे.

११ जुओ पृ० ७५ नियम ७४. १२ जुओ पृ० ९१ नियम १३०.

बोल्ल (ब्रू) बोलवुं [illegible]
वेव् (वेप्) वेपवुं-कंपवुं [illegible]
सव् (शप्) शापवुं-शाप देवो

४ प्रथम पुरुषना 'म'थी [illegible]
आवेला 'अ'नो विकल्पे 'इ' [illegible]

बोल्ल् + अ + मो = बोल्लमो, [illegible]

[illegible]

१ पु० बोल्लमो, बोल्लामो, [illegible]
२ पु० बोल्लह, बोल्लह [illegible]
३ पु० बोल्लंति, [illegible]

[illegible]

अमे सीवियें छिये [illegible]
" वांदिये छिये [illegible]
" आळोटिये छिये [illegible]
(तमे बे) बोलो छो [illegible]
" मांगो छो [illegible]

(अमे बे) फँकिये छिये	(ते) सीवे छे
,, कंपिये छिये	(हु) कंपु छुं
(तेओ बे) शाप दे छे	(हुं) फँकुं छुं
,, वांदे छे	(तुं) आळोटे छे
,, जपे छे	,, सीवे छे
(हुं) जाउं छुं	,, जपे छे
(ते) दीपे छे	

वंदामो	खुब्भित्था बे	वन्दंते
सविरे	कुप्पेह	वोल्लामु
वंदह	गच्छम्ह	लुट्टामि
वोल्लमो	वंदेत्ते	कुप्पेह
लवेम	गच्छंति	खिवामि
लुट्टह दुण्णि	जविमो	वोल्लसि
खिप्पित्था बे	वंदेम	वंदति

पाठ ३ जो

वर्तमानकाळ (चालु)

सर्वे पुरुष } ज्ज[16]
सर्व वचन } ज्जा

ज्ज अने ज्जा प्रत्ययो लागतां तेमनी पूर्वे आवेला अंगना अंत्य 'अ'नो 'ए' थाय छे.

वंद् + अ + ज्ज = वंदेज्ज[17]
वद् + अ + ज्जा = वंदेज्जा

स्वरांत—छेडे स्वरवाळा—धातुओ

दा (दा) देवुं	ठा (स्था) स्थिर रहेवुं-ऊभा रहेवुं के बेसवुं
वा (वा) वावुं	झा (ध्या) ध्यावुं-ध्यान करवुं
पा (पा) पीवुं	
गा (गा) गावुं	
जा (या) जावुं-जवुं	

---

१६ पुरुषबोधक प्रत्ययो अने स्वरांत धातुओनी वच्चे ज्ज अने ज्जा ए बेमांथी गमे ते एक प्रत्यय उमेरीने पण रूपो थई शके छे.

हो + इ = हो + ज्ज + इ = होज्जइ अथवा होइ
हो + इ = हो + ज्जा + इ = होज्जाइ अथवा होइ

विकरण लगाड्या पछी—

हो + अ + इ = हो + अ + ज्ज + इ = होएज्जइ, होअइ
हो + अ + इ = हो + अ + ज्जा + इ = होएज्जाइ, होअइ

१७ करजे, चालजे, देजे, लेजे—वगेरे गुजराती भाषाना रूपो सरखावो.

धा (धाव्) धावुं-दोडवुं	बू (ब्रू) बोलवुं
खा (खाद्) खावुं	हो (भू) होवुं-थवुं
हा (हा) हीणा थवुं-तजवुं	णी } (नी) लई जवुं- णे } दोरवुं

अकारांत सिवायना स्वरांत धातुओने पुरुषबोधक प्रत्यय लगाडतां पहेलां विकल्पे विकरण 'अ' लागे छे:

हो + इ = होइ. हो + अ + इ = होअइ.
खा + इ = खाइ खा + अ + इ = खाअइ.
धा + इ = धाइ. धा + अ + इ = धाअइ.

(अकारांत धातुने छेडे 'अ' छे ज माटे विकरण 'अ' फरीवार लगाडवानी जरूर नथी.)

अकारांत धातु—

चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी—शंका करवी अथवा उपाय करवो.
जुउच्छ (जुगुप्स) घृणा करवी अथवा दया करवी.
अमराय (अमराय) देव जेवुं रहेवुं.

चिइच्छइ. जुउच्छइ. अमरायइ.

रूपाख्यान

विकरण विनानां

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	होमि	होमो
२ पु०	होसि	होह
३ पु०	होइ	होंति, हुंति

विकरणवाळां

१ पु०	होअमि होआमि होएमि	होअमो, होआमो, होइमो होएमो
२ पु०	होअसि होएसि	होअह होएह
३ पु०	होअइ होएइ	होअंति होएंति होइंति

सर्व पुरुष } होज्ज, होज्जा
सर्व वचन } होएज्ज, होएज्जा (विकरणवाळु)

वाक्यो

गाइये छिये
दोडो छो
(तेओ) बोले छे
ते बे खाय छे
ऊभो रहुं छुं
तुं दोरी जाय छे
अमे जईए छीए
तमे पीओ छो
तेओ गाय छे

अमे बे तजीए छीए
तेओ दे छे
वाय छे
अमे दोरीए छीए
तेओ दोरे छे
तमो उपाय करो छो
हुं घृणा करु छुं
अमे देव जेवा रहिये छिये

हुंति	गाएसि	जासि	मज्जंते
जंति	जोतसि	ठामि	म्ह
बूम	जोआमु	म्हि	सि
चाइ	खिज्जेह	निप्पज्जह	थ
वे जाम	वेण्णि संति	अंसि	असि
दो मो	धाह	अत्थि	अम्हि
निप्पज्जसे	बूमि	दो मज्जह	बूमो
संति	संपज्जइ	दोण्णि	वे खाएमु
सिज्जंति	गाइ	दिव्वामु	मज्जेसि

पाठ ५ मो

पुज्ज् (पूर्य[२३]) पूरवुं, पूगवु
विज्झ् (विध्य[२४]) वींधवुं
गिज्झ् (गृध्य) गृद्ध थवुं–ललचावुं
कुज्झ् (क्रुध्य) क्रोध करवो
सिज्झ् (सिध्य) सीझवुं—सिद्ध थवुं
नज्झ् (नह्य[२५]) नाझवुं–बांधवुं
जुज्झ् (युध्य) जूझवुं–युद्ध करवुं

खाद्, खाम् (खाद्) खावुं
कह् (कथ[२६]) कहेवुं
कुह् (कुथ) कोहवुं–सडवुं
बाह् (बाध[२६]) बाधा करवी–अडचण करवी
लिह् (लिख[२६]) लखवुं
लह् (लभ[२६]) लेवुं–मेळववुं
सिलाह् (श्लाघ[२६]) सराहवुं–वखाणवुं

२३ ‘ र्य ’ नो ‘ ज्ज ’ थई जाय छे.
भार्या—भज्जा कार्य—कज्ज वर्य—वज्ज.
२४ पृ० १०७ नियम १७६. २५ पृ० ११५ नियम १८७.
२६ पृ० ८८ नियम ११८. पृ० ९० नियम १२६. पृ० ८३ नियम ९०. पृ० ९३ नियम १४०. पृ० ८४ नियम ९७.

बोह् (बोध) बोध थवो- जाणवुं

वह् (वध) वध करवो- हणवुं

सोह् (शोभ) सोहवुं— शोभवुं

सोह् (शोध) शोधवुं-शु करवुं

सुज्झ् (शुध्य) सोझवुं— साफ करवुं

धाव् } (धाव) धोडवुं-
धाय् } दोडवुं

वाक्यो

वे ध्यान धरीए छीए
(ते) वींधे छे
ललचाइये छिये
वे मुंझाओ छो
वे सडो छो
वींधीए छीए
शोभो छो
शोधो छो
सोझो छो
वे लखीए छीए
खेंचो छो
सांपडे छे
वे निंदा करे छे
(तमे) वे दोडो छो
गाउं छुं
शाप दे छे
प्रकाशे छे

छो
तेओ छे
छुं
(तुं) छे
छीए
(ते) छे
द्यो छो
जाणे छे
माचुं छुं
वे जाय छे
कंपो छो
वे वखाणे छे
वाय छे
थईए छीए
खेद करीए छीए
(ते) ऊभो रहे छे
सिद्ध थाउं छुं

कुहंति
सिलाहंति
गिज्झम
मि
कहेमि
नज्झसि
ठाइ
बे सोहामो
मुज्झमु
बेन्नि विज्झंति
ठापह
बे बाहह

झाम
होंति
दुन्नि वोहंति
जुज्झेम
सि
बिंति
लिहेज्ज
सिज्झंति
दो लहेज्जा
कुज्झेसि
अंसि

धातुओ

पुच्छ (पृच्छ) पूछवुं
[२७]बीह् (भी) बीवु
पड् (पत्) पडवु
छज्ज् (सज्ज) छाजवुं-शोभवुं
वेढ् (वेष्ट) वींटवुं
कर् (कर) करवुं
तर् (तर) तरवुं
चिण् (चिनु) चणवुं-एकठुं करवुं
डह (दह) / डज्झ् (दह्य) } दहवुं-दाझवुं-बळवुं-बाळवुं

नम् / नव् } (नम) नमवु
चय् (त्यज) तजवु-छोडवुं
जिण् (जिना) जितवुं
छिंद् (छिनद्) छेदवुं
चल् (चल) चालवु
निंद / निन्द् } (निन्द) निंदवुं-निंदा करवी
सूस् / सुस्स् } [२८](शुष्य) शोषवुं-सुकावुं
सुण् / हुण् } (श्रृणु) सुणवु-साभळवुं

२७ व् + ह् + ई = 'भी' उपरथी 'बीह्'
२८ जुओ पृ० १२४ नियम १६४.

सुमर् (स्मर) स्मरण करवुं-याद करवुं	नच्च् (नृत्य) नाचवुं
गच्छ् (गच्छ) गति करवी-जवुं	कुण् (कृणु) करवुं
नस्स्, नास् } (नश्य) नाश थवो	रूस्, रुस्स् } (रुष्य) रूठवुं-रोष करवो
गेण्ह् (गृह्णा) ग्रहण करवुं	हण् (हन्) हणवुं-मारवुं

सार अने प्रश्नो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	वंदमि, वंदामि, वंदेमि	वंदमो, वंदामो, वंदिमो, वंदेमो
२ पु०	वंदसि, वदेसि	वंदह, वंदेह
३ पु०	वंदइ, वदेइ वदति, वदेति	वंदंति, वंदेंति, वंदिंति

सर्व पुरुष, सर्व वचन } वंदेज्ज, वंदेज्जा

स्वरांत धातुनां विकरण विनानां रूपो

१ पु०	होमि	होमो, होमु, होम
२ पु०	होसि	होह
३ पु०	होइ, होति	होंति, हुंति होन्ति, हुन्ति

सर्व पुरुष, सर्व वचन—होज्ज, होज्जा

स्वरांत धातुनां विकरणवाळां रूपो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	होअमि, होआमि होएमि	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो
२ पु०	होअसि, होएसि.	होअह, होएह

३ पु०	होअइ, होएइ होअति, होएति	होअंति, होएंति होइंति
सर्व पुरुष सर्व वचन	होएज्ज, होएज्जा	

१ अर्धमागधी भाषामां कया कया स्वरो नथी वपराता? जे नथी वपराता तेमना बदलामां कया कया स्वरो वपराय छे? ते उदाहरण साथे समजावो.

२ नीचेना शब्दोनां अर्धमागधी रूपो करी बतावो·

मृत्तिका. ताम्बूल. कीदृश. दैत्य. पौर.
कौमुदी. तमस्. तीर्थंकर. गोष्ठी. नग्न. चन्द्र.

३ नीचेना शब्दोनां संस्कृत रूपो बतावो:

समुद्द. वंक. साहा. पढइ साहु. हलद्दा.
अंगाल सद्द. चोद्दह. छट्ठ. भायण.

४ नीचेना संयुक्त व्यंजनोनो जे फेरफार थतो होय ते उदाहरण साथे जणावो:

क्ष. त्य. द्य. प्स ष्ट

५ नीचेना संयुक्त व्यंजनवाळा शब्दोनां अर्धमागधी रूपांतर करी बतावो:

ग्रीष्म. स्तम्भ पुष्प. प्रश्न मुष्टि ध्यान.
शौण्डीर्य ऊर्ध्व. तीर्थ निम्न कर्तरी.

६ अर्धमागधीनो परिचय संक्षेपमां समजावो

७ गुजराती, हिंदी, बंगाळी, मराठी अने सिंधी भाषाओनी अर्धमागधी भाषा साथे केवी अने केटली समानता छे ते संक्षेपमां लखी बतावो.

८ अवेस्ता भाषा अने अर्धमागधी भाषा वच्चेनी समानताने समजावो.

९ नीचेना शब्दोनी संधि छुटी करी बतावोः

वासेसि ददामहं. बहूदगं. पुहवीसो. काही.

१० नीचेना शब्दोना समास समजावोः

देवदाणवगंधव्वा. वीतरागो. तीत्थयर.
नरिंद महावीरो.

११ दीर्घनो ह्रस्व अने ह्रस्वनो दीर्घ क्यारे क्यारे थाय छे ते उदाहरण साथे समजावो.

१२ स्वरांत धातु अने व्यंजनांत धातुनी रूपसाधनामां जे भेद छे ते समजावो.

१३ अर्धमागधीमां द्विवचन छे? द्विवचननो अर्थ कई रीते बतावाय छे?

१४ संस्कृत अने अर्धमागधीमां उच्चारणभेदने लीधे जे केटलाक फेरफारो बतावेला छे तेमने लीधे अर्धमागधी भाषामां सरलता आवी छे खरी?

१५ अर्धमागधी भाषा साथे आपणी गुजराती भाषानो केवो संबंध जणाय छे?

१६ लोकभाषा कई छे? पंडिताउ भाषा के प्राकृत भाषा?

उवसग्ग (उपसर्ग)

उपसर्ग धातुनी पूर्वे आवी घणुं करीने धातुना मूळ अर्थमां न्यूनाधिकता करी विशेष अर्थ—न्यून अर्थ, अधिक अर्थ के जुदो अर्थ—बतावे छे. एवा उपसर्ग नीचे मुजब छे:

प (प्र) आगळ प+जाइ=पजाइ=आगळ जाय छे.
प+जोतते=पजोतते=विशेष प्रकाशे छे.
प+हरति=पहरति=प्रहार करे छे

परा—सामुं, ऊलटुं. परा+जिणइ=पराजिणइ=पराजय करे छे.
परा+होइ=पराहोइ=पराभव करे छे—हरावे छे.

ओ, अव, अप } (अप) हलकुं, रहित, नीचे, दूर. ओ+सरइ=ओसरइ, अव+सरइ=अवसरइ, अप+सरइ=अपसरइ } सरके छे—खसे छे
अप+अर्थकम्=अवत्थयं=अपार्थक—अमथुं.
ओ+माल्यम्=ओमल्लं=निर्माल्य.

सं (सम्) एकठुं, साथे. सं + गच्छति = संगच्छति-साथे जाय छे.
सं+चिणइ=संचिणइ—संचय करे छे—एकठुं करे छे.

अणु, अनु } (अनु) पाछळ, सरखुं अणु + जाइ = अणुजाइ—पाछळ जाय छे.
अणु+करइ=अणुकरइ—अनुकरण करे छे

ओ, अव } (अव) नीचे ओ+तरइ=ओतरइ, अव+तरइ=अवतरइ } अवतरे छे, ऊतरे छे. नीचे जाय छे

(निर्) निरंतर, सतत, रहित

निर्+इक्खइ=निरिक्खइ-नीरखे छे-निरीक्षण करे छे.

नि+ज्झरइ=निज्झरइ-झर्या करे छे.

नी+सरइ=नीसरइ-नीसरे छे-निरंतर सरे छे.

निर्+अंतरं=निरंतरं-निरंतर-सतत.

निर्+धन=निद्धणो-निर्धनियो-धन वगरनो.

(दुर्) दुष्टता दु+गच्छइ=दुग्गच्छइ-दुर्गतिए जाय छे.

दो+गच्चं=दोगच्चं-दौर्गत्य-दुर्गति

दू+हवो=दूहवो-दुर्भग-कमनसीव.

(अभि) सामे अभि+भासइ=अभिभासइ-सामे बोले छे.

अहि+मुहं=अहिमुहं-अभिमुख-सामु.

विशेष, नहि, विपरीत. वि + जाणइ = विजाणइ-विशेष जाणे छे.

वि + जुंजइ = विजुंजइ-वियोग करे छे.

वि + कुव्वइ = विकुव्वइ-विकृत करे छे.

(अधि) अधिक अधि+गच्छति=अधिगच्छति-मेळवे छे, जाणे छे, उपर जाय छे

अहि+गमो=अहिगमो-अधिगम-ज्ञान

(सु) सारुं सु+भासए=सुभासए-सारुं बोले छे.

सू + हवो = सूहवो-सुभग-भाग्यवान.

---

२१ 'दू' अने सू'नो उपयोग फक्त 'हव'-(भग) शब्दनी साथे थाय छे जुओ पृ० ५९ नियम ३.

उ (उत्) ऊंचे उ+गच्छते=उग्गच्छते-ऊंचे जाय छे-ऊगे छे.

अइ } अतिशय, हद बहार. अइ + सेइ = अइसेइ—अतिशय
अति } करे छे—हद बहार वखाणे छे.

अति+गच्छति=अतिगच्छति-
हद बहार जाय छे.

णि } (नि) निरंतर, नीचे णि+पडइ=णिपडइ } निरंतर पडे छे,
नि } नि+पडइ=निपडइ } नीचे पडे छे.

पडि } प्रति-सामुं, सरखुं. विपरीत.
पति } पडि+भासए=पडिभासए-सामुं बोले छे.
[30]परि } पति+ट्ठाइ=पतिट्ठाइ-प्रतिष्ठित थाय छे.

परि+ट्ठा=परिट्ठा-प्रतिष्टा

पडि+मा=पडिमा-सरखी आकृति.

पडि+कूलं=पडिकूलं-प्रतिकूल.

परि } (परि) चारे बाजु. परि+वुडो=परिवुडो-परिवृत-चारे
पलि } बाजुथी वींटायलो.

पलि+घो=पलिघो-परिघ-घण.

[31]अपि } (अपि) ऊलटुं, पण अवि+हेइ=अविहेइ } ढांके
अवि } अपि+हेइ=अपिहेइ } छे
पि } पि+हेइ=पिहेइ }
वि } को+वि=कोवि } कोई
इ } को+इ=कोइ } पण

किम्+अवि=किमवि-कांइ पण

जं+पि=जंपि-जे पण

---

३० 'परि' ए 'पडि'नु ज भिन्न उच्चारण छे, 'र' अने 'ड'नु उच्चारण स्थान पण सरखु छे. ३१ जुओ पृ० १२९ नियम १२.

ऊ } (उप) पासे उव+गच्छइ=उवगच्छइ-पासे जाय छे.
ओ }
उव }

ऊ+ज्झायो=उज्झायो }
ओ+ज्झायो=ओज्झायो } उपाध्याय
उव+ज्झायो=उवज्झायो }

आ—मर्यादा, ऊलटुं आ + वसइ = आवसइ-अमुक मर्यादामां रहे छे.

आ+गच्छइ=आगच्छइ-आवे छे.

उपसर्गना अर्थो नियत नथी. कोई उपसर्ग धातुना मूळ अर्थ करतां विपरीत अर्थ बतावे छे. कोई ए मूळ अर्थने अनुसरे छे, कोई एमां थोडो वधारो देखाडे छे अने कोइ, मात्र शोभा माटे ज वपराय छे--धातुना अर्थमां कशो फेरफार बतावतो नथी. 'अपि' उपसर्ग छे अने 'पण' अर्थमां अव्यय पण छे एथी 'अपि' साथेना उदाहरणोमां तेनो बन्ने जातनो उपयोग बताव्यो छे.

धातु

पुण (पुना) पवित्र करवु	छिंद् (छिनद्) छेदवु
थुण् (स्तुनु) स्तुति करवी	सिंच् (सिञ्च) सींचवुं
वच्च् (व्रज) फरता रहेवुं	मुंच् (मुञ्च) मूकवुं
कुद्द् (कुर्द) कूदवुं	लुण् (लुना) लणवुं-कापवुं
अच्च् (अर्च) अर्चवुं-पूजवुं	गंठ् (ग्रन्थ) गंठवुं-गुंथवुं
वड्ढ् (वर्ध) वधवुं	गज्ज् (गर्ज) गाजवुं
भम् (भ्रम) भमवुं	मिला (म्ला) म्लान थवुं-
भम्म् (भ्राम्य) भमवु	
भिंद् (भिनद्) भेदवु-कटका करवा	गिला (ग्ला)

चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी-रोगनो उपचार करवो	वीसर् (वि+स्मर्) वीसरवुं
जग्ग् (जागृ) जागवुं	जम्म् (जन्मन्) जन्मवुं
	रुव् (रुद्) रोवुं
	तोल् (तोल) तोल्वुं

पाठ ५ मो

अकारांत नामनां रूपाख्यानो (नरजाति)

वीर.

एकवचन	बहुवचन
१ वीर+ओ=वीरो (वीरः) वीर+ए=वीरे	वीर+आ=वीरा (वीराः)
२ वीर+म्=वीरं (वीरम्)	वीर+आ+वीरा (वीरान्) वीर+ए=वीरे
३ वीर+एण=वीरेण (वीरेण) वीरेणं	वीर+एहि=वीरेहि (वीरेभिः, वीरेहिं, वीरेहिँ वीरैः)
४ वीर+आय=वीराय (वीराय) वीर+आए=वीराए वीर+स्स=वीरस्स (वीरस्य)	वीर+ण=वीराण (वीराणाम्) वीराणं

३[२१]५ वीर+आ=वीरा (वीरात्)	
वीर+ओ=वीराओ	वीर+ओ=वीराओ
वीर+उ=वीराउ	वीर+उ=वीराउ
	वीर+हिंतो=वीराहिंतो, वीरेहिंतो (वीरेभ्यः)
	वीर+सुंतो=वीरासुंतो वीरेसुंतो
६ वीर+स्स=वीरस्स (वीरस्य)	वीर+ण=वीराण (वीराणाम्) वीराणं
७ वीर+ए=वीरे (वीरे)	वीर+सु=वीरेसु (वीरेषु) वीरेसुं
वीर+ंसि=वीरंसि (वीरस्मिन् ?)	
वीर+म्मि=वीरम्मि	
सं० वीर ! (वीर !)	वीर+आ=वीरा (वीराः !]
वीरा !	
वीरो !	
वीरे !	

संस्कृत अने प्राकृत रूपोनां उच्चारणोमां नहि जेवो भेद छे. ए भेद, ए रूपो बोलता ज समजाय छे मात्र पाचमी विभक्तिमां वधारे अनियमित रूपो छे.

---

२१ पांचमी विभक्तिमां नीचेना वधारे रूपो पण थाय छे

एकवचन	बहुवचन
वीर+तो=वीरातो	वीरातो
वीर+तु=वीरातु	वीरातु
वीर+हि=वीराहि	वीराहि
वीर+हिंतो=वीराहिंतो	वीरेहि
वीर+त्तो=वीरत्तो	वीरत्तो

चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी-रोगनो उपचार करवो	वीसर् (वि+स्मर्) वीसरवुं
जग्ग् (जागृ) जागवुं	जम्म् (जन्मन्) जन्मवुं
	रुव् (रुद्) रोवुं
	तोल् (तोल) तोळवुं

पाठ ५ मो

अकारांत नामनां रूपाख्यानो (नरजाति)

वीर.

एकवचन	बहुवचन
१ वीर+ओ=वीरो (वीरः) वीर+ए=वीरे	वीर+आ=वीरा (वीराः)
२ वीर+म्=वीरं (वीरम्)	वीर+आ+वीरा (वीरान्) वीर+ए=वीरे
३ वीर+एण=वीरेण (वीरेण) वीरेणं	वीर+एहि=वीरेहि (वीरेभिः, वीरेहिं, वीरेहिँ वीरैः)
४ वीर+आय=वीराय (वीराय) वीर+आए=वीराए वीर+स्स=वीरस्स (वीरस्य)	वीर+ण=वीराण (वीराणाम्) वीराणं

३२५ वीर+आ=वीरा (वीरात्)

वीर+ओ=वीराओ	वीर+ओ=वीराओ
वीर+उ=वीराउ	वीर+उ=वीराउ
	वीर+हिंतो=वीराहिंतो, वीरेहिंतो (वीरेभ्यः)
	वीर+सुंतो=वीरासुंतो वीरेसुंतो
६ वीर+स्स=वीरस्स (वीरस्य)	वीर+ण=वीराण (वीराणाम्) वीराणं
७ वीर+ए=वीरे (वीरे)	वीर+सु=वीरेसु (वीरेषु) वीरेसुं
वीर+ंसि=वीरंसि (वीरस्मिन् ?)	
वीर+म्मि=वीरम्मि	
सं० वीर ! (वीर !) वीरा ! वीरो ! वीरे !	वीर+आ=वीरा (वीराः !]

सस्कृत अने प्राकृत रूपोनां उच्चारणोमां नहि जेवो भेद छे. ए भेद, ए रूपो बोलता ज समजाय छे. मात्र पाचमी विभक्तिमां वधारे अनियमित रूपो छे.

---

३१ पांचमी विभक्तिमां नीचेना वधारे रूपो पण थाय छे.

एकवचन	बहुवचन
वीर+तो=वीरातो	वीरातो
वीर+तु=वीरातु	वीरातु
वीर+हि=वीराहि	वीराहि }
वीर+हिंतो=वीराहिंतो	वीरेहि }
वीर+त्तो=वीरत्तो	वीरत्तो

रूपो बतावतां नामनुं मूळ अंग अने प्रत्ययनो अंश–ए बन्ने छूटा पाडीने जणावेलां छे. अने साथे ए उपरथी साधित थतां दरेक रूपो पण जुदा जुदा दर्शावेलां छे. एथी आ साधनपद्धति द्वारा ज, विद्यार्थी अकारांत नामनां रूपोने समजी लेशे.

साधनपद्धतिनी समजण

१ प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी अने सप्तमी विभक्तिना स्वरादि प्रत्ययो तथा पंचमीनो एक मात्र 'आ' प्रत्यय लगाडी अंगना अन्त्य 'अ'नो लोप करवानो छे. (जुओ पृ० १२८ नियम ९)

जेमके–

वीर + ओ = वीरो. वीर + ए = वीरे.

२ वीर + म् = वीरं. (जुओ पृ० १३०–१३१ नियम १७–१८)

वीरम् + अवि = वीरं अवि, वीरमवि.

३ तृतीया अने षष्ठी विभक्तिना 'ण' उपर तथा सप्तमी विभक्तिना 'सु' उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे:

वीर + एण = वीरेण, वीरेणं.
वीर + ण = वीराण, वीराणं.
वीर + सु = वीरेसु, वीरेसुं.

४ तृतीया अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययोनी पूर्वना अकारांत अंगना अंत्य 'अ'नो 'ए' थाय छे अने इकारांत अंगनो तथा उकारांत अंगनो अंत्य 'इ' अने 'उ' दीर्घ थाय छे:

वीर+हि=वीरेहि	रिसि+हि=रिसीहि	भाणु+हि=भाणूहि
वीर+सु=वीरेसु	रिसि+सु=रिसीसु	भाणु+सु=भाणूसु

५ पंचमीना 'ओ' 'उ' 'हिंतो' अने 'सुंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना स्वरांत अंगनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे तथा पंचमीना बहुवचनना 'हि' 'हिंतो' अने 'सुंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' पण थाय छे:

एकवचन	बहुवचन
वीर+ओ=वीराओ	वीर+हि=वीराहि, वीरेहि
वीर+उ=वीराउ	वीर+हिंतो=वीराहिंतो, वीरेहिंतो
	वीर+सुंतो=वीरासुतो, वीरेसुंतो
	रिसि+हि=रिसीहि
रिसि+ओ=रिसीओ	भाणु+हि=भाणूहि
भाणु+ओ=भाणूओ	रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो

६ षष्ठीना बहुवचननो 'ण' लागतां पूर्वना अंगनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे: **वीर + ण = वीराण, वीराणं.**
रिसि + ण = रिसीण

७ संबोधननां रूपोनी साधना प्रथमा प्रमाणे छे. वधारामां मूळ अंग पण जेमनुं तेम वपराय छे· **वीर ! वीरो ! वीरा ! वीरे !**

८ तृतीया विभक्तिनो 'हि' प्रत्यय माथे अनुस्वार पण ले छे अने तेनो सानुनासिक उच्चार पण थाय छे. आ रीते ते एक 'हि' नां पण त्रण रूपो थाय छे: **वीरेहि, वीरेहिं वीरेहिँ**

९ वीराए[33] (च० ए०) वीरंसि (स० ए०) रूपोनो व्यवहार विशेषे करीने आर्षप्राकृतमां देखाय छे. केटलेक स्थळे

एकवचनमां 'आइ' प्रत्ययवाळुं रूप पण मळे छेः वहाइ (वधाय). 'आय' 'आए' अने 'आइ' ए त्रणेमां खास कशी विषमता नथी. 'आइ' प्रत्ययवाळुं रूप बहु प्रचलित नथी तेथी ज ते उपरनां रूपोमां जणाव्युं नथी, केटलेक स्थळे 'आए'ने बदले 'आते' प्रत्यय पण वपराएलो छे एथी 'वीराए'नी पेठे 'वीराते' रूप पण आर्ष प्राकृतमां वपराएलुं छे. प्राकृतभाषामां चतुर्थी विभक्ति खास जुदी नथी पण ते षष्ठी विभक्तिमां समाइ गएली छे तेथी ते बन्ने विभक्तिना रूपो एक सरखां थाय छे.

नाम [नरजाति]

अरिहंत (अर्हत्) वीतराग देव
हर (हर) महादेव.
बुद्ध (बुद्ध) बुद्धदेव.
मग्ग (मार्ग) मार्ग–मारग
कलह (कलह) कलह.
हत्थ (हस्त) हाथ.
पाय (पाद) पाद–पग, पायो
भार (भार) भार.
बाल (बाल) बाळ–बालक
उवज्झाय (उपाध्याय) उपाध्याय-अध्यापक–गुरु–ओझा
आयरिय (आचार्य) सदाचारवत गुरु.
सिद्ध (सिद्ध) अदेही वीतराग
निव (नृप) नृप–राजा
बुह (बुध) बुद्धिमान–डाह्यो पुरुष

---

३२ अजिणाए (अजिनाय) मसाए (मांसाय) पुच्छाए (पुच्छाय) वगेरे 'आए' प्रत्ययवाळा अने लोगसि (लोके) कंसि (कस्मिन्) अगारंसि (अगारे) सुसाणंसि (श्मशाने) वगेरे '°सि' प्रत्ययवाळा रूपो आचारांगादिसूत्रोमां मळे छे.

पुरिस (पुरुष) पुरुष
आइच्च (आदित्य) आदित्य–सूर्य
इंद (इन्द्र) इन्द्र
चंद (चन्द्र) चंद्र
मेह (मेघ) मेघ–वरसाद
भारवह (भारवह) भार वह-नार–मजूर

समुद्द } (समुद्र) समुद्र
समुद्र }
नयण (नयन) नेण–आंख
कण्ण (कर्ण) कान
महावीर (महावीर) महावीर देव
जिण (जिन) जय पामनार—वीतराग

मेघ मार्गने सिंचे छे
इन्द्र बुद्धदेवने नमे छे
डाह्यो पुरुष बाळकने पूछे छे
आंखवडे चन्द्रने जोउं छुं
समुद्रने कानवडे सांभळुं छुं
बालकना हाथमां चंद्र छे
कलहने छेदो छो
सूर्य तपे छे
राजा मार्गने जाणे छे

सिद्धोने नमो
मजूरो मार्गमां दोडे छे
समुद्रमां चंद्रोने देखीए छीए
बाळको उपाध्यायने पूछे छे
राजाना पगोमां पडुं छुं
वीतराग देव! नमुं छुं
बे बालक बोले छे
समुद्रो गाजे छे
राजा शोभे छे

[34]नमो अरिहंताणं
भारवहो हरं वंदइ
महावीरो जिणो झाअइ
कण्णेहिं सुणेमि
नयणेहिं देक्खामु
भारवहा भारं चिणंति
नमो उवज्झायाणं
समुद्दो खुब्भइ

मेहो समुद्दम्मि पडइ
बाला हत्थे धरिसंति
समुद्दं तरह
हत्थाओ हरं अच्चेमि
नमो आयरियाय
आयरियाण पाए नमाम
बाला कुदंति
चन्दो वड्ढइ

[34] णमो के नमो साथे वपरातु नाम छट्ठी विभक्तिमां आवे छे.

पाठ ६ ट्ठो

अकारांत नामनां रूपाख्यानो [नान्यतर जाति]

	एकवचन	बहुवचन	
१	कमल+म्=कमलं (कमलम्)	कमल+णि=कमलाणि कमल+इं=कमलाइं कमल+इँ=कमलाइँ	(कमलानि)
२	,, = ,, (,,)	,, ,, = ,,	(,,)
सं०	कमल ! (कमल !)	,, ,, = ,,	(,,)

तृतीयाथी सप्तमी सुधीनां रूपो 'वीर'नी जेवां जाणवां.

१० 'णि' 'इं' 'इँ' प्रत्ययोनी पूर्वना अंगना अंत्य ह्रस्व स्वरनो दीर्घ थाय छे कमल + णि = कमलाणि.
वारि + इं = वारीइं.
महु + इँ = महूइँ.

११ संबोधनना एकवचनमां मूळ अंग ज वपराय छेः कमल !

नाम [नान्यतर जाति]

नयण (नयन) नेण
मत्थय (मस्तक) माथु
नाण (ज्ञान) ज्ञान
चंदण (चन्दन) चदनतु झाड के लाकडु

वेर (वर) वेर–वैर
वयण (वचन) वचन–वेण
वयण (वदन) वदन–मुख

कल्प-काम-वास्तु-ज्योतिष-निमित्त-स्वप्न अने विज्ञानना ग्रंथो

सूर्यप्रज्ञप्ति	तीर्थकल्प
चंद्रप्रज्ञप्ति	अकालदंतकल्प
ज्योतिषचक्रविचार	मयणवाल
पिपीलिकाज्ञान	वास्तुविचार
अंगविज्जा	स्वप्नविचार वगेरे.
महग्घपयरण	

कागळनी अछतने कारणे अने फरमाओ वधी जवाना हेतुथी अमे प्रस्तावनामां सूचव्या प्रमाणेनो 'गुजराती अर्ध-मागधी' कोश आपी शक्या नथी ते माटे अमारा वाचको अमने क्षमा आपशे.

प्रकाशक

भक्तपरिज्ञा	चंद्रवेध्यक	महाप्रत्याख्यान
संस्तारक	देवेंद्रस्तव	वीरस्तव
तंदुलवैचारिक	गणिविद्या	

आ उपरात आगमग्रंथो ऊपरनी व्याख्याओ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि अने अवचूर्णि वगेर साहित्य अर्धमागधीमा रचायेलुं छे.

बीजा ग्रंथो

तत्त्वज्ञान	कर्मशास्त्र	आचार
सम्मइपयरण	कम्मपयडि	पंचाशक
धम्मसंगहणि	पंचसंग्रह	षोडशक
विशेषावश्यक	पंचवस्तु	पंचसूत्र
भाषारहस्य	प्राचीन कर्मग्रंथ	प्रवचनसारोद्धार
नवतत्त्व	नव्य ,,	आचारविधि
जीवविचार	सत्तरि	गुरुतत्त्व-निर्णय
प्रवचनसार वगेरे	गोम्मटसार वगेरे	वगेरे

कथा-चरित्र-उपदेश

उपदेशमाला	सनत्कुमारचरित्र
परमात्मप्रकाश	सीताचरित्र
कुमारपालचरित्र	पउमचरिय
कुवलयमाला	कथारत्नकोश
जंबूस्वामिचरित्र	कथावलि
पृथ्वीचंद्रचरित्र	तरंगलोला
प्रत्येकबुद्धचरित्र	समराइच्चकहा
महापुरुषचरित्र	चोवीश तीर्थंकरोनां एक एकनां जुदां जुदां चरित्रो वगेरे
विजयानंदकेवलिचरित्र	
वसुदेवहिंडि	

अर्धमागधीनुं साहित्य

अर्धमागधीनुं साहित्य अतिशय विपुल छे, तेमा तत्वज्ञान, आचार, विधिविधान–कर्मकाड, ज्योतिष, गणित, वास्तु वगेरेने लगता अनेक ग्रथो छे. संक्षेपमा कहुं तो ए साहित्य करोडो श्लोकोमा रचाएलुं छे. तेमाथी अहीं थोडाक ग्रंथोनो नामनिर्देश करेल छे.

आगमग्रंथो

अंगसूत्रो

आचारअंग
सूत्रकृतअंग
स्थानअंग
समवायअंग
भगवती अथवा व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग
ज्ञातधर्मकथाअंग
उपासकदशाअंग
अंतकृद्दशाअंग
अनुत्तरोपपातिक अंग
प्रश्नव्याकरणअंग
विपाकअंग

उपांगसूत्रो

औपपातिक उपांग
राजप्रश्नीय ,,
जीवाजीवाभिगम ,,
प्रज्ञापना ,,
जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति ,,
चंद्रप्रज्ञप्ति ,,
सूर्यप्रज्ञप्ति ,,
निरयावलि वगेरे पांच ,,

छेदसूत्रो

निशीथ
बृहत्कल्प
व्यवहार
दशाश्रुत
महानिशीथ
पंचकल्प (अप्राप्य)

मूळसूत्रो

आवश्यक
दशवैकालिक
उत्तराध्ययन
नंदि
अनुयोगद्वार

छूटकसूत्र

कल्पसूत्र
जीतकल्प
यतिजीतकल्प
श्राद्धजीतकल्प
पाक्षिकसूत्र
ऋषिभाषित
वगेरे

पयन्ना ग्रंथ

चतु.शरण
आतुरप्रत्याख्यान

[नान्यतरजाति]

आरोग्गिअ–आरोगेल–खाधेलु
उज्झड–ऊज्जड
उल्लट्ट–ऊलटु
उंड–ऊंडु
ऊसअ–ओशीकु
ओक्किअ–ओकेलु–वमेलुं
ओचुल्ल–ओलोचूलो
कंकोड–ककोडुं
कंटोल–कटोलु
कुल्लड–कूलडु
कोंडिय–कोडियु
खट्ट–खाटु
खड–खड–घास
खुट्ट–खूटेलु
खुत्त–खूतेलु
गवत्त–गवत–घास
घग्घर–घाघरो
चंग–चगु–सारु
छिक्क–छींक
छिल्लर–पाणीनु खाबोचियु
जेमणय–जमणुं
झुड्ड–झडु
टिक्क–टिकी–टीलु
तग्ग–तागडो
तुंद–पेट–दुद
पद्द–पादर
पद्धर–पाधरु
परिहण–पहेरण
पंगुरण–पागरण–पाथरवा–ओढ-
वाना साधन
पिंजिय–पींजेलु
पोच्च–पोचु
पोट्ट–पेट
वरूअ–वरु–कलमनुं वरु
रंदुअ–रांढवु
रूअ–रु–कपास
लक्कुड–लाकडुं
लाहण–लाणु
वद्दल–वादळ
वंग–वेगण–वागी
विहाण–वहाणु–सवारनो समय
संखलय–शखलु
संपडिय–पांपडेल
सिंदुरय–छिंदरु–दोरडी
सुंघिय–सुघेलु
सोल्ल–मासना सोळा
हड्ड–हाडकु
हल्लिअ–हालेल–चालेल

चिरिहिही } —चणोठी
चिणोट्ठी }

चुच्छुंदरिया—छछुंदर

चोट्टी—चोटली

छल्ली—छाल

छवडी—चामडी

छासी—छाश

छडी—छींडी—छीडु

जाडी—झाडी

जोवारी—जुवार—जार

झडी—वरसादनी झडी

झंटी—झटियां—माथाना विखरा-येला वाळ

झोलिका—झोळी

डाली—डाळ—झाडनी डाळ

ढंकणी—ढांकणी

ढेंका—ढिकवो

णत्था } —नाथ—बळदनी नाथ, नाकनी नथडी
नत्था }

णहरी } —नेरणी
नहरी }

णिंदणी—नींदवु, नकामु घास कापवु

णीसणिआ—नीसरणी

तजा—छाल—तज

दअरी—दारु

पक्खरा—पाखर—घोडा हाथीने सजाववाना साधन

पड्डी—पाडी

पड्डुआ—पाडु

परडा—परडकु

पारिहट्टी—पारेट—बहु वखतथी विआएली गाय के भेंस

पूणी—पूणी

फग्गु—फाग

फुंफा } —फुफाडो
फोंफा }

बब्बरी—चावरी

बिग्गाइ—बगा—बगाय

बोहारी—सावरणी

भुक्खा—भूख

भाउज्जा—भोजाई

मम्मी } —मामी
मामी }

रला—राळ

राडी—राड—कजियो

वट्टा—वाट—रस्तो

बियाउया—बीया—शियाळामां हाथपग फाटवा

सिंदु—छिंदरी

सुहेल्ली—सहेल करवी

हत्थोडी—हथोडी

हुड्डा—होड

पिणाअ—पराणे
पेडइअ—फडियो—दाणानो वेपारी
वइल्ल—वेल—वळद
वप्प—वाप
वोक्कड—वोकटो
मक्कड—मकडी—करोळियो
मणिआर—मणिआर—मणिआरु
मुम्भ }—मोभ
मोम्भ }
[वेचनार
रप्फ—राफडो
रव्वय—रवैयो
रोल—रोळो—कळह
वट्ट—वटो
वप्पीअ }—वपयो
वप्पीह }
वहोल—वहेळो—पाणीनो वहेळा
वोज्झअ—वोजो

[नारीजाति]

अआलि—एलि—अकाळे वादळा थवा
अम्मा—मा—अम्मा
अवालुया—अवालु—दातना पेटा
उत्थल्ला—उथलो
उंबी—पाकेला घउनी डुंडी
उत्तरिविडि—ऊतरेड—वासणनी माड
उत्थल्लपत्थल्ला—ऊथलपाथल
ओज्झरी—होजरी
ओप्पा—ओप
ओसरिया—ओशरी
ओसा—ओसा—झाकळ
कट्टारी—कटार
कत्ता—पासा—जुगार रमवानी आधळी कोडी
कहोणी }—कोणी
कुहिणी }
खडक्की—खडकी
खड्डा—खाटो
खणुसा—खणस—इच्छा
खली—खोळ
गडयडी—गडगडाटी (मेघनी)
गड्डी—गाडी
गंडीरी—गडेरी—शेरडीनी कातळी
गाई—गाय
गायरी—गागर
गोली—गोळी
चवेडी—चपटी वगाडवी

देश्य शब्दो

[नरजाति]

अग्गिअ-आगीओ
अग्घाड-अघेडानुं झाड
अहिल्ल } — ईश्वर-मालिक-
अहेल्ल } अल्लाह
आमोड-वाळनो जूडो-अंबोडो
उडिद-अडद
उड्ड-ओड-ओड जातनो
ओहरिस } — ओरसियो
ओघरिस }
कक्किड-काकीडो
कच्छर-कचरो
कडइअ-कडीओ-घर चणनार
कडप्प-कडपलो-जत्थो
काहार-कहार-पाणी भरनारो
कुक्कुस-कुशका-अनाजनां फोफा
कोइल-कोयला
कोत्थल-कोथळो
कोलिअ-करोळियो
कोल्हुअ-कोल्हु-सियोडो
खट्टिक-खाटकी
खोखलअ-खोखलदतो
खोड-खोडो-लगडो
खोल-खोल-खोलकुं-गधेडानुं वच्चु

गड-गड
चास-खेतरमां चास करवा ते
चिच्च } — चीबो
चिव्व }
छइल्ल-छेल-चतुर
छंट-छांटो
जवरय-जुवारा
झंखर-झाखरु-सूकु झाड
टप्परअ-टापरो-खराब कानवाळो
टार-टारडु-हलको घोडो
टुंट-ठुठो
डव्व } — डाबो हाथ
डाव }
डुंगर-डुंगरो
डुंब-डोम-चांडाळ
डुंघ-डुघो-होको
डोअ-डोयो-पाणी काढवानो डोयो
डोल-डोळो-आखनो डोळो
णक्क-नाक
दवर-दोरो
पण्हअ-पानो
परियट्ट-परीट-धोबी
पंडरंग-महादेव

समायर् (सम् + आ + चर)
आचरण करवुं
समारय् (सम् + आ + रच्)
समारवु–समु कारवु
समारंभ् (सम्+आ+रभ्) समा-
रभ करवो, हणवु
सर् (स्मर) स्मरण करवु
सव् (शप) शापवु, शाप देवो
संघ् (स + ख्या) कहेवुं
संजम् (स + यम) सजमवु,
सयम करवो
संजल् (स+ज्वल्) बळवुं, कोप
करवो
संदिस् (सम् + दिश्) सन्देशो
आपवो–सूचन करवु
संपज्ज् (स+पद्य) सपजवु–
सापडवु
संपाउण् (सम् + प्र + आप्नु)
सारी रीते पामवु
[illegible]वुज्झ् (स+बुध्य) समजवु
[illegible]म्हर् (सं + स्मर) सभारवु,
याद करवु
[illegible] वर्ध) सवर्धन करवु,
पोषवुं, साचववु
[illegible]ज्ज (स्विद) सीजवु, चीकणु थवुं,
स्वेद–परसेवावाळा थवुं

सिज्झ् (सिध्य) सीझवु–सिद्ध थवु
सिलाह (श्लाघ) सराहवु–वखाणवु
सिव्व् (सिव्य) सीववु
सिह् (स्पृह) स्पृहा करवी
सिंच् (सिञ्च) सीचवु
सुण् }
हण् } (शृणु) सुणवु–
साभळवु
सुमर् (स्मर) स्मरण करवु
सूड् }
सूर् } (सूद्) सूडवुं, नाश
करवो
सूस् }
सुस्स् } (शुष्य) शोषवु–
सुकावु
सेव् (सेव) सेववु–आश्रय
लेवो
सोच्छ (श्रोष्य) साभळवु
सोह (शोध) शोधवुं–सोवु,
शुद्ध करवु
सोह् (शुभ) सोहवु–शोभवु
हण (हन्) हणवु–मारवु
हरिस् (हर्ष) हरखवु
हस् (हस) हसवु
हिंस् (हिंस) हिंसा करवी–
हणवु
हा (हा) हीण थवु–तजवु
हो (भू) होवु, थवु

लिप्प् (लिप्य) लेपावु, खरडावु
लिह (लिख) लखवु
लुट्ट् (लुठ्य) लोटवु-आळोटवु
लुण् (लुना) लणवु-कापवु
वक्खाण् (वि + आ + ख्यान) विस्तारथी कहेवु, वखाण करवां
वग्गोल् (वि + उद् + गार-व्युद्गार) वागोळवु
वच्च् (व्रज) फरता रहेवु
वज्ज् (वर्ज) वर्जवु, छोडवु
वज्जर् (वि+उत्+चर-व्युच्चर) कहेवु
वड्ढ (वर्ध) वधवु
वण् (वन) वणवु, भात पाडीने वणवु
वर् (वृ) वरवुं, स्वीकारवु, वरदान लेवु
वरिस (वर्ष्) वरसवु
वलग्ग् (वि+लग्न) वळगवु-चडवु
वस् (वस) वसवुं-रहेवु
वह (वध) वध करवो-हणवुं
वह् (वह्) वहेवु-वावु
वंद् (वन्द) वांदवु-नमवु
वा (वा) वावुं
वाव् (वाप्) वाववु-ववराववु
विकिर् } विइर् } (वि+किर्) वेरवु
विक्के (वि+क्री) वेचवु-वेचवु
वि+चर् (वि+चर) विचरवु-फरवु
विचिंत (वि+चिन्त) चिंतववु -विशेष चिंतववु
विच्छल् (वि + क्षल) धोळवु-धोवु
विज्ज् (विद्य) विद्यमान होवु
विज्झ् (विध्य) वीधवु
विणस्स् (वि+नश्य) वणसी जवु-नष्ट थवु, वगडवु
विण्णव् (वि+ज्ञप्) वीनववु
विप्पजह (वि + प्र + जहा) त्याग करवो-दूर करवु
विराअ } विराज् } (वि+राज) विराजवु-शोभवु
विसीअ (वि + षीद) विषाद पामवो-खेद करवो
विहड् } विघड् } (वि + घट) वगडवुं-नाश पामवो
विहर् (वि+हर्) विहरवु-फरवु
विंध् (विध्य) वीधवु
वीसर् (वि+स्मर्) वीसरवुं
वेच्छ (वेत्स्थ) वेदवु-अनुभववु-जाणवु
वेढ् (वेष्ट) वीटवु
वेव् (वेप्) वेपवु-कंपवु-धूणवु
वोच्छ (वक्ष्य) कहेवु-बोलवु

पूज्
पूअ } (पूज) पूजवु

पेच्छ (प्र + ईक्ष) जोवु

फल् (फल) फळवु–फळ आववो

फुट्ट (स्फुट) थवु–खीलवु–फुटी नीकळवु

वाह (वाघ) वाघवु–वाधा करवी–अडचण करवी

वीह् (भी) वीवु

वू (ब्रू) वोलवुं

वोल्ल् (ब्रू) वोलवु

वोह (वोध) वोध थवो–जाणवु

भक्ख् (भक्ष) भक्षवुं–खावु–भरखवुं

भज्ज्
भंज् } (भंज) भाजवु–भागवुं

भण् (भण) भणवु–वोलवु–कहेवु

भम् (भ्रम) भमवु

भम्म् (भ्राम्य) भमवु

भर्
भल् } (स्मर) स्मरण करवु

भव् (भव) थवु–होवु

भा (भी) वीवु

भास् (भाष) भाखवु–भाषण करवु

भिंद् (भिनद्) भेदवु–कटका करवा

भेच्छ (भेत्स्य) भेदवु–टूकडा करवा

भोच्छ (भोक्ष्य) भोजन करवु –भोगववु

मज्ज् (मद्य) मद करवो, माचवु, खुश थवु

मन्न् (मन्य) मानवु

मरिस् (मर्श्) विमासवु–विचारवु

मरिस् (मर्ष्) सहवुं, क्षमा राखवी

मिला (म्ला) म्लान थवु–करमावु

मुज्झ् (मुह्य) मुंझावु, मूढ थवुं–मोह पामवो

मुण् (मन्) जाणवुं

मुंच् (मुञ्च) मूकवु

मेलव् (मेलय) मेळववु, मेळववु, एकमेक करवुं

मोच्छ (मोक्ष्य) मुकावुं–छूट थवु

रक्ख् (रक्ष) रक्षवु, राखवु, साचववु, रक्षण करवु

रीय् (रीय) नीकळवुं

रुव् (रुद) रोवु

रूस्
रुस्स् } (रुष्य) रूसवुं, रोष करवो

रोच्छ (रोत्स्य) रोवुं

लभ् (लभ्) लाभवु, मेळववुं

लव् (लप) लववु, वोलवुं

लह्ह (लभ) लेवु, मेळववु

पडिवज्ज् (प्रति + पद्य) पामवुं–स्वीकारवु
पढ् (पठ) पाठ करवो–पढवु
पणाम् (प्र + णाम) आपवु–सेवामा रजु करवु
पन्नव् (प्रज्ञापय) जणाववुं
पमाय् (प्र + माद्य) प्रमाद करवो
पमुच्च् (प्र + मुच्य) प्रमुक्त थवु–तद्दन छूटी जवु
पयल्ल् (प्र + सर्) फेंकवु
परिआल् (परिवार) परिवृत करवु–वींटवुं
परिक्कम् (परि + क्रम्) परिक्रमण करवु–परकमवुं –प्रदक्षिणा फरवी
परिच्चय् (परि + त्यज) परित्याग करवो
परितप्प् (परि+तप्य) परिताप पामवो–दुःखी थवु
परिदेव् (परि+दिव) खेद करवो
परिनिव्वा (परि + निर् + वा) शान्त करवुं–ओलववु
परिव्वय् (परि + व्रज्) परिव्रज्या लेवी–वघनरहित थइने चारे कोर फरवु

परिहर् (परि + हर) परिहरवु –तजवु
परिहा (परि + धा) पहेरवु
पवय् (प्र+वद) वदवु–कहेवु
पवस् (प्र+वस्) प्रवास करवो
पहार (प्र + धार) धारवु–संकल्प करवो
पा (पा) पीवु
पाव् (प्र + आप्) पामवु–प्राप्त करवु
पास्, पस्स् (पश्य) जोवु
पिज्ज् (पीय) पीवु
पिट्ट (पिट्ट) पीटवु–मारवु–पीडवु
पिसुण् (पिशुनय) चाडी करवी
पील्, पीड् (पीड) पीडवु–पीलवु
पुच्छ् (पुच्छ) पूछवु
पुज्ज् (पूर्य) पूरवु–पूगवु
पुण् (पुना) पुणवु–पवित्र करवु
पुरिय् (पूर्य) पूरवुं–पुरवु–भरवु–पुरु करवु
पुलआअ (पुलकाय) पुलकित थवु–उल्लसवु
पुलोअ, पुलअ (प्र + लोक) प्रलोकवुं–जोवु

तुवर् (त्वर) त्वरा करवी
तूर (त्वर) त्वरा करवी–झपाटावध जवुं
तोल् (तोल) तोळवु
थुण् (स्तु) थुणवु–स्तुति करवी
दक्खव् (दृश) दाखववु–देखाडवु–कही बतावबुं
दच्छ (द्रक्ष्य) जोवु–देखवु
दा (दा) देवु
दिप्प् (दीप्य) दीपवु
दिव्व् (दीव्य) द्युत रमवु, रमवु
दीव् (दीप्) दीपवु
देक्ख् (दृश्) देखवुं
घरिस् (घर्ष्) घसवु–सामा थवु
धा (धाव्) धावु–दोडवु
धाव् } (धाव) दोडवु–
धाय् } दोडवु
नच्च् (नृत्य) नाचवु
नज्झ् (नह्य) नाझवु–बांधवु
नम् } (नम्) नमवु
नव् }
नस्स् } (नश्य) नाश थवो
नास् }

नि+क्खाल् } (नि + क्षाल)
नि+क्खार् } निखारवु–धोवु
निद्धुण (निर्+धुना) खखेरवु–दूर करवु
निप्पज्ज् (निर्+पद्य) नीपजवुं
नि+मंत् (नि+मन्त्र) निमंत्रण करवु, नोतरवु
निंद् } (निन्द) निंदवुं–
निन्द् } निन्दा करवी
नीहर् (निर्+सर्) नीहरवु–नीसरवु
ने } (नी) लइ जवु–दोरवु
णे }
पक्खाल् (प्र + क्षाल) पखाळवु–धोवु
पगब्भ् (प्र + गल्भ) प्रगल्भ थवु–बडाई मारवी
पच्चप्पिण् (प्रत्यर्पण – प्रति + अर्पण) पाछु सोंपवुं
पज्जर् (प्र + उत् + चर् – प्रोच्चर) कहेवु
पट्ठव् (प्र + स्थाप्) पाठववु
पड् (पत) पडवु
पडिकूल (प्रति + कूल) प्रतिकूल थवु–विपरीत थवु
पडिनी (प्रति + नी) पाछु देवुं–सामु देवु–बदले देवु

छाय } (छाद) छावु—
छाअ } ढाकवु

छिंद् (छिनद्) छेदवु—हणवु, मारवु

छेच्छ (छेत्स्य) छेदवु

छोल्ल छोलवु

जग्ग् (जागृ) जागवु

जम्भा (जृम्भ) बगासु खावु

जम्म् (जन्मन्) जन्मवुं

जव् (जप्) जपवु—जाप करवो

जहा (जहा) छोडवु—त्याग करवो

जप् (जल्प) कहेवु

जा (या) जावु

जागर् (जागृ) जागवुं

जाण् (जाना) जाणवु

जाय् (जाय) जावु—जन्म थवो उत्पन्न थवु

जाय् (याच) जाचवु—याचना करवी—मागवुं

जाव् (याप) वीतावचु—यापन करवु

जिण् (जि) जितवुं—जय मेळववो

जीह् (जिह्री) लाजवु

जुज्झ (युध्य) जूझवु—युद्ध करवुं

जुज् (युज) योजवु—जोडवु—अडाडवु—सबंध करवो

जूर् (जूर्) जूरवु

जेम् (जेम्) जमवु

जोत } (द्योत) ज्योत थवी—
जोअ } प्रकाशवु—जोवु

झा (ध्या) ध्यावु—ध्यान करवुं

झाम् बाळवु

ठा (स्था) स्थिर रहेवु—ऊभा रहेवु—बेसी रहेवु

डस् (दश्) डसवु—करडवु

डह् (दह) दहवुं—दाझवु

डज्झ (दह्य) बळवुं—बाळवु

णिव्विज्ज् (निर् + विद्य) निर्वेद पामवो

तच्छ (तक्ष) तासवु—छोलवु, पातळु करवु

तर् (तर) तरवु

तव् (तप) तपवु—संताप थवो—तप करवु

ताल } (ताड) ताडन करवु
ताड् } —मारवु

ताव् (ताप) तपाववुं—ताववुं

तिप्प् (तिप्) टपकवु—गळवु

तुरिय् (तूर्य) त्वरा करवी—उतावळा थवु—तुरत करवु

कुप्प् (कुप्य) कोपवु–कोप करवो
कुव्व् (कुरु) करवु
कुह् (कुथ) कोहवु–सडवु
कूअ (कूज) कूकू करवु– कूहू कूहू करवु
कोव् (कोप) कोप करवो– कुपित करवु
खण् (खन्) खणवु–खोदवुं
खल् (स्खल्) स्खलित थवु– दूर थवु
खा (खाद्) खावु
खाद् } खाय् } (खाद्) खावु
खिज्ज् (खिद्य) खीजवु– खेद करवो
खिप्प् (क्षिप्य) खेपवु–खेववुं फेंकवु
खिव् (क्षिप्) खेपवु–खेववु– फेंकवुं
खुब्भ् (क्षुभ्य) खोभवु–छोभवुं–खळभळवु–क्षोभ थवो–गभरावु
गच्छ् (गच्छ्) जवु, पामवु
गज्ज् (गर्ज) गाजवुं
गड् (घट) घडवु
गरिह् (गर्ह) गारहवु–निंदवु

गवेस् (गवेष) गवेषवु–गोतवु
गंठ् (ग्रन्थ) गठवु–गूथवु
गा (गा) गावु
गिज्झ् (गृध्य) गृद्ध थवु– ललचावुं
गिला (ग्ला) ग्लान थवु– क्षीण थवु
गेण्ह् (गृह्णा) ग्रहण करवु
घड् (घट्) घडवु–बनाववु
घरिस् (घर्ष) घसवु
चड् (चट्) चडवुं
चय् (त्यज) तजवुं
चय् (शक्) शकवु
चर् (चर) चरवु–चालवु
चल् (चल) चालवु
चव् (वच्) कहेवु
चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी–उपचार करवो
चिण् (चिनु) चणवु–एकठु करवुं
चिणा (चिनु) चणवुं–एकठु
चित् (चिन्त) चिंतववु
चुक्क (च्युतक) चूकवु–भ्रष्ट थवु
चोप्पड चोपडवु
छज्ज् (सज्ज) छाजवु–शोभवु

आढव् (आ + रभ्) आरभवु-शरु करवु
आढा (आ+द) आदर करवो
आ+ने (आ+नी) आणवु-लाववु
आ+घा (आ+ख्या) आख्यान करवु-कहेवु
आभोअ (आ+भोग) ध्यानपूर्वक जोवु
आयय् (आ + दय) आदान करवु-ग्रहण करवु
आरोव् (आ+रोप) आरोपवु
आलोट्ट (आ+लुट्य) आळोटवु
आ+सार् (आ+सृ-सार) आमतेम अफळाववु-आमतेम लई जवु
इच्छ् (इच्छ) इच्छवु
उक्कुद्द् (उत्+कूर्द्) ऊंचे कूदवु
उट्ठ (उत् + स्था) ऊठवु
उ+ड्डी (उत् + डी) ऊडवु
उल्लव (उत् + लप्) बोलवु
उवचिट्ठ (उप+तिष्ठ) उपस्थित रहेवु-सेवामा हाजर रहेवु
उवणी (उप+नी) पासे लइ जवु
उव+दस् (उप+दर्शय) देखाडवुं-पासे जइने बताववु

उव+दिस् (उप+दिश) उपदेशवु, उपदेश करो
उवे (उप+इ) पासे जवु-पामवु
उंघ् — ऊंघवु
एस् (एष) एषणा करवी, शोधवु
ओग्गाल् (उद्+गार) ओगाळवु
ओप्प् (अर्प) पाणी-आपवु-चडाववु-ओपवु
ओम्वाल् (उत् + लाव) प्लवित करवु
कत्थ् (कथ) कथवु-कहेवु-वखाणवु
कप्प् (कल्प) खपवु-उचित होवु
कर् (कर) करवु
करिस् (कर्ष्) खेंचवु-काढवु-खेडवु
कह् (कथ) कथवु-कहेवु
किण् (कीणा) खरीदवु-वेचातु लेवु
कील (क्रीड) क्रीडा करवी-रमत रमवी
कुज्झ् (क्रुध्य) क्रोध करवो
कुण् (कृणु) करवु
कुद्द (कूर्द) कूदवु

कुप्प् (कुप्य) कोपवु–कोप करवो
कुव्व् (कुर्व) करवु
कुह्र् (कुथ) कोह्वु–सडवु
कूअ (कूज) कूकू करवु– कूहू कूहू करवु
कोव् (कोप) कोप करवो– कुपित करवु
खण् (खन्) खणवु–खोदवुं
खल् (स्खल्) स्खलित थवु– दूर थवु
खा (खाद्) खावुं
खाद् } खाय् } (खाद्) खावु
खिज्ज् (खिद्य) खीजवु– खेद करवो
खिप्प् (क्षिप्य) खेपवु–खेववुं फेंकवु
खिव् (क्षिप्) खेपवु–खेववु– फेंकवुं
खुब्भ् (क्षुभ्य) खोभवु–छोभवुं–खळभळवु–क्षोभ थवो–गभरावु
गच्छ् (गच्छ्) जवु, पामवु
गज्ज् (गर्ज) गाजवु
गढ् (घट) घडवु
गरिह् (गर्ह) गारहवु–निंदवु

गवेस् (गवेष) गवेषवु–गोतवु
गंठ् (ग्रन्थ) गठवु–गूंथवु
गा (गा) गावु
गिज्झ् (गृध्य) गृद्ध थवु– ललचावु
गिला (ग्ला) ग्लान थवु– क्षीण थवु
गेण्ह् (गृह्णा) ग्रहण करवु
घड् (घट्) घडवु–बनाववु
घरिस् (घर्ष) घसवु
चड् (चट्) चडवु
चय् (त्यज) तजवु
चय् (शक्) शकवु
चर् (चर) चरवु–चालवु
चल् (चल) चालवु
चव् (वच्) कहेवु
चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी–उपचार करवो
चिण् (चिनु) चणवु–एकठु कावुं
चिणा (चिनु) चणवुं–एकठु
चिंत् (चिन्त) चिंतववु
चुक्क (च्युतक) चूकवु–भ्रष्ट थवु
चोप्पड चोपडवु
छज्ज् (सज्ज) छाजवु–शोभवु

આઢવ્ (આ + રભ્) આરભવુ–શરૂ કરવુ
આઢા (આ+દૃ) આદર કરવો
આ+ને (આ+ની) આણવુ–લાવવુ
આ+ઘા (આ+ખ્યા) આખ્યાન કરવુ–કહેવુ
આભોઅ (આ+ભોગ) ધ્યાનપૂર્વક જોવુ
આયય્ (આ + દય) આદાન કરવુ–ગ્રહણ કરવુ
આરોવ્ (આ+રોપ) આરોપવુ
આલોટ્ટ (આ+લુટ્ય) આળોટવુ
આ+સાર્ (આ+સૃ–સાર) આમ તેમ અફળાવવુ–આમતેમ લઈ જવુ
ઇચ્છ્ (ઇચ્છ) ઇચ્છવુ
ઉક્કુદ્દ્ (ઉત્+કૂર્દ્) ઊંચે કૂદવુ
ઉટ્ઠ (ઉત્ + સ્થા) ઊઠવુ
ઉ+ડ્ડી (ઉત્ + ડી) ઊડવુ
ઉલ્લવ્ (ઉત્ + લપ્) બોલવુ
ઉવચિટ્ઠ (ઉપ+તિષ્ઠ) ઉપસ્થિત રહેવુ–સેવામા હાજર રહેવુ
ઉવણી (ઉપ+ની) પાસે લઇ જવું
ઉવ+દસ્ (ઉપ+દર્શય) દેખાડવું–પાસે જઇને બતાવવુ

ઉવ+દિસ્ (ઉપ+દિશ) ઉપદેશવુ, ઉપદેશ કરવો
ઉવે (ઉપ+ઇ) પાસે જવુ–પામવુ
ઉંઘ્ — ઊઘવુ
એસ્ (એષ) એષણા કરવી, શોધવુ
ઓગ્ગાલ્ (ઉદ્+ગાર) ઓગાળવુ
ઓપ્પ્ (અર્પ) પાણી–આપવુ–ચડાવવુ–ઓપવુ
ઓમ્વાલ્ (ઉત્ + પ્લાવ) પ્લવિત કરવુ
કત્થ્ (કત્થ) કથવુ–કહેવુ–વખાણવુ
કપ્પ્ (કલ્પ) ખપવુ–ઉચિત હોવુ
કર્ (કર) કરવુ
કરિસ્ (કર્ષ્) ખેંચવુ–કાઢવુ–ખેડવુ
કહ્ (કથ) કથવુ–કહેવુ
કિણ્ (ક્રીણા) ખરીદવુ–વેચાતુ લેવુ
કીલ (ક્રીડ) ક્રીડા કરવી–રમત રમવી
કુજ્ઝ્ (ક્રુધ્ય) ક્રોધ કરવો
કુણ્ (કૃણુ) કરવુ
કુદ્દ (કૂર્દ) કૂદવુ

धातु

अइवाय (अति+पात) अति-
पात करवो-हणवु

अक्खोड् (आ+क्षोद्)
खोदवु-कापवु

अग्घ (अर्घ) मूलववुं-मूल्य
कराववु

अच्च् (अर्च) अर्चवुं-पूजवु

अच्चे (अति+इ) अतीत थवु
-पार पामवु

अणुजाण् (अनु+जाना) अनुज्ञा
आपवी-समति आपवी

अणु + तप्प् (अनु + तप्य)
अनुताप करवो-पश्चात्ताप
करवो

अणु + भव् (अनु + भव)
अनुभववु-भोगववु

अणुसास् (अनु + शास्)
शिक्षण आपवुं-समजाववु

अण्ह् (अश्ना) अशन करवु-
जमवुं-खावु

अप्प् } (अर्प) आपवु
ओप्प् }

अब्भुत्त् (अव+नृथ) अबोटवु-
आभडवु-नहावुं

अभि+जाण् (अभि+जाना)
अहिजाणवु-ओळखवु-ओळखवु

अभि+नि+क्खम् (अभि-निर्
+क्रम्) हमेशने माटे
घेरथी नीकळवु-
सन्यास लेवो

अभिप्पत्थ }
अभिपत्थ } (अभि+प्र+अर्थ)
प्रार्थना करवी

अमराय् }
अमरा } (अमराय) अम-
रनी पेठे रहेवु-
पोतानी जातने
अमर मानवी

अरिह् (अर्ह) पूजवु, योग्य थवु

अल्लिव् आळवु

अवमन्न् (अप+मन्य) अप-
मानवु-अपमान करवु

अवसीअ (अव+सीद) अवसाद
पामवो-खूचवु

अहिट्ठ् (अधि + स्था - तिष्ठ)
अधिष्ठान मेळववु-
उपरी थवुं

अहिलंख् }
अहिलंघ् } (अभि + लष)
अभिलषवु-इच्छा
करवी

आगम् (आ + गम्) आववु

णाणा (नाना) अनेक प्रकारनुं

निच्चं / णिच्चं (नित्यम्) नित्य

नो (नो) नहीं

पगे (प्रगे) प्रागडवाइये—प्रात.- काळे

पुण / पुणा / उण (पुनः) पुन पुनः, फरीवार

बज्झओ (बाह्यत.) बहारथी बहार तरफ

बहिआ / बहिया (बाह्य) बहार

बहिद्धा (बहिर्धा) बहार

मज्झे (मध्ये) मध्ये—वच्चे—महीं—मां

मणा / मणयं (मनाक्) मणा—थोडु—खामी दर्शक

मा (मा) मा—नही

मुसं / मुसा / मूसा / मोसा (मृषा) मिथ्या—खोटु

व / वा (वा) वा, अथवा, के

विणा / विना (विना) विना

ब० दि० (बहुल दिवस) अधारियु

सइ (सदा) सदा

सक्खं (साक्षात्) साक्षात्—प्रत्यक्ष

सततं / सययं (सततम्) सतत—निरंतर

सया (सदा) सदा—हमेशा

सव्वत्तो / सव्वतो / सव्वओ (सर्वत) सर्व प्रकारे, चारे बाजुथी

सव्वत्थ (सर्वत्र) सर्वत्र—बधे ठेकाणे

सव्वया (सर्वदा) सर्व वखते

सव्वहा (सर्वथा) सर्व प्रकारे

सह / सद्धिं (सह / सार्धम्) सह—साथे

सुट्ठ (सुष्ठु) सारी रीते

सु० दि० (शुक्ल दिवस) अजवाळीयु

कया (कदा) क्यारे

कल्लं (कल्यम्) काले

कह
कहं } (कथम्) केम, केवी रीते

कहि
कहिं } (कुत्र) क्यां, कहीं

कालओ (कालतः) काळे करीने—वखते

किं (किम्) शुं, शा माटे

कुत्तो
कुओ } (कुतः) क्याथी, शाथी, कई बाजुथी

केवच्चिरं (कियच्चिरम्) केटला लांबा समय सुधी

केवच्चिरेण (कियच्चिरेण) केटला लांबा समय सुधी

केवलं (केवलम्) केवळ

खलु (खलु) निश्चय

खिप्पं (क्षिप्रम्) खेप—जल्दी

खु
खो
हु } (खलु) निश्चय

च
य } (च) अने

चिर (चिरम्) चिर—लांबा काळ सुधी

जया (यदा) ज्यारे

जहा
जह } (यथा) जेम

जहासुत्तं (यथासूत्रम्) सूत्रमा—शास्त्रमां कह्या प्रमाणे

जहिं (यत्र) ज्यां, जहां

जं (यत्) जे—के

जाव
जा } (यावत्) जो, ज्यां सुधी

जेण (येन) जे तरफ

तओ, तत्तो (ततः) तेथी, त्यार पछी

तहा
तह } (तथा) तेम

तहि
तहिं } (तत्र) त्यां, तहीं

ताव
ता } (तावत्) तो, त्यांसुधी

तु (तु) तो

तेण (तेन) ते तरफ

दाणि
दाणिं
इयाणि
इयाणिं } (इदानीम्) हमणां—आजकाल

दुट्ठु (दुष्ठु) दुष्ट रीते

धुवं (ध्रुवम्) ध्रुव—चोक्कस

न (न) न

नमो
णमो } (नमः) नमस्कार

णवर नर्युं—केवळ

अत्थं (अस्तम्) आथमवु–अदशन

अदुवा }
अदुव } (अथवा) .अथवा

अद्धा (अद्धा) समय

अप्पेव (अप्येव) सशय

अभिक्खणं (अभिक्षणम्)
क्षणेक्षणे–वारवार

अभितो (अभित.) चारे वाजु

अम्मो आश्चर्य

अलं (अलम्) सर्युं, निषेध,
पूरतु

अवरिं }
उवरिं } (उपरि) उपर

अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य,
अचूक

असइं (असकृत्) अनेकवार

अह (अथ) अथ–हवे–प्रारंभ
सूचक

अहत्ता (अधस्तात्) नीचे

अहव }
अहवा } (अथवा)
अथवा

अहुणा (अधुना) हमणां

अंतो (अन्तर्) अदर

आम (आम) हा–स्वीकार

आहच्च (आहत्य) बलात्कार

इइ
इअ
त्ति
ति
इति } (इति) ए प्रमाणे
समाप्तिसूचक शब्द

इओ (इतः) आथी, एथी,
वाक्यनो आरभ,
आ बाजुथी

इत्थं (इत्थम्) ए प्रकारे

इह (इह) आमां–अहीं

इहरा (इतरथा) एम नथी–
अन्यथा

ईसि }
ईसिं } (ईषत्) ईषत्–थोडु–
इशारा मात्र

उत्तरसुवे (उत्तरश्वः) आवती
काल, पछी

उप्पिं
अवरिं
उवरिं
उवरि } (उपरि) उपर

एअं (एतत्) ए

एगया (एकदा) एकवार–
एक वखत

एगंततो (एकान्तत.) एक
तरफी

एत्थ (अत्र) अहीं

एव, एवं (एवम्) एम,
ए प्रमाणे

बेचत्तालिसा, बेआला, दुचत्तालिसा (द्विचत्वारिशत्) बेंताळीश

बे सयाइं (द्वे शते) बसो

लक्ख (लक्ष) लाख

वीसा (विंशति) वीश

सट्ठि (षष्टि) साठ

सत (सप्तन्) सात

सत्तचत्तालिसा, सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्) सूडताळीश

सत्तणवइ, सत्ताणवइ (सप्तनवति) सत्ताणु

सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) साडत्रीश

सत्तरस, सत्तरह (सप्तदश) सत्तर

सत्तरि, हत्तरि (सप्तति) शीतेर

सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि) सडसट

सत्तसत्तरि, सत्तहत्तरि (सप्तसप्तति) सत्योतेर

सत्तावन्ना, सत्तपण्णासा (सप्तपञ्चाशत्) सत्तावन

सत्तावीसा (सप्तविंशति) सत्यावीश

सत्तासीइ (सप्ताशीति) सत्याशी

सय (शत) सो

सहस्स (सहस्र) हजार

सोलस, सोलह (षट्+दश-षोडश) सोळ

अव्यय

अओ, अतो (अत.) आथी-एथी

अईव, अतीव (अतीव) अतीव-विशेष

अकट्टु (अकृत्वा) नहीं करीने

अग्गओ (अग्रत·) आगळथी

अग्गे (अग्रे) आगे-आगळ

अज्झत्थं, अज्झप्पं (अध्यात्म) आत्माने लगतुं-अदरनु

अत्थु (अस्तु) थाओ

अण (नञ्) निषेध, विपरीत

अणंतरं (अनन्तरम्) अतर विना, तुरत

अण्णमण्ण (अन्योऽन्यम्) अन्योन्य-एकबीजाने

अण्णया (अन्यदा) अन्य समये

अण्णहा (अन्यथा) तेम नहि ते

तेवीसा (त्रयस्त्रिंशति) तेत्रीश
तेसट्ठि (त्रिषष्टि) त्रेसठ
तेसिइ (त्र्यशीति) त्राशी–त्र्याशी
दस } दह } (दशन्) दश
दसलक्ख } दहलक्ख } (दशलक्ष) दश लाख
दससहस्स } दहसहस्स } (दशसहस्र) दश हजार
दु (द्वि) बे
दुप्पण्णासा } वावण्णा } (द्विपञ्चाशत्) वावन
दुवालस } वारह } वारस } (द्वादश) वार
दुसय } विसय } (द्विशत) वसो
नव (नवन्) नव
नवइ (नवति) नेवु
नवासीइ (नवाशीति) नेवाशी
पणच्चत्तालिसा } पणयाला } (पञ्चचत्वारिंशत्) पिस्तालीश
पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) पात्रीश
पणपण्णा } पंचावणा } (पञ्चपञ्चाशत्) पचावन

पणवीसा (पञ्चविंशति) पचीश–पचीश
पणसट्ठि (पञ्चषष्टि) पासठ
पणसीइ } पञ्चासीइ } (पञ्चाशीति) पचाशी
पण्णवइ } पञ्चणवइ } पञ्चाणवइ } (पञ्चनवति) पचाणु
पण्णरह } पण्णरस } (पञ्चदश) पन्नर
पणसत्तरि } पणहत्तरि } (पञ्चसप्तति) पचोतेर
पण्णासा } पण्णास } पञ्चासा } (पञ्चाशत्) पचास
पयुअ } पयुत } (प्रयुत) दश लाख
पंच (पञ्च) पांच
बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) बत्रीश
बाणवइ (द्विनवति) बाणु
बावीसा (द्वाविंशति) बावीश
बासट्ठि (द्विषष्टि) बासठ
बासीइ (द्व्यशीति) बाशी
बिसत्तरि } बासत्तरि } बिहत्तरि } बावत्तरि } (द्विसप्तति) बोतेर

चउत्तीसा } (चतुस्त्रिंशत्)
चोत्तीसा } चोत्रीश

चउद्दस }
चउद्दह } (चतुर्दश) चौद
चोद्दस }
चोद्दह }

चउरासीइ } (चतुरशीति)
चोरासीइ } चोर्याशी

चउवीसा } (चतुर्विंशति)
चोवीसा } चोवीश

चउसट्ठि } (चतुष्षष्टि)
चोसट्ठि } चोसठ

चउचत्तालिसा } (चतुश्चत्वा-
चोआलिसा } रिंशत्)
चोआला } चुमालीश-
चउआला } चुअ ळीश

चत्तारि सयाइं (चत्वारि शतानि) चारसेँ

चत्तालीसा (चत्वारिंशत्) चाळीश

चोवण्णा } (चतुष्पञ्चाशत्)
चउपण्णासा } चोपन

चोसत्तरि }
चोहत्तरि } (चतुस्सप्तति)
चउसत्तरि } चुमोतेर
चउहत्तरि }

छ (षट्) छ

छचत्तालिसा } (षट्चत्वारिंशत्)
छायाला } छेँताळीश

छण्णवइ (षण्णवति) छन्नुं

छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) छत्रीश

छप्पण्णा } (षट्पञ्चाशत्)
छपण्णासा } छपन

छव्वीसा (षड्विंशति) छव्वीश

छसत्तरि } (षट्सप्तति)
छहत्तरि } छोंतेर

छासट्ठि (षट्षष्टि) छासठ

छासीइ (षडशीति) छाशी

णवणवइ } (नवनवति)
नवणवइ } नव्वाणु

ति (त्रि) त्रण

तिचत्तालिसा } (त्रिचत्वारिं-
तेआलिसा } शत्)
तेआला } तेंताळीश

तिण्णि सयाइं (त्रीणि शतानि) त्रणसेँ

तिसत्तरि } (त्रिसप्तति)
तिहत्तरि } तोंतेर

तिसय (त्रिशत) त्रणसो

तीसा (त्रिंशत्) त्रीश

तेणवइ (त्रिनवति) त्राणु

तेतीसा } (त्रयस्त्रिंशत्)
तित्तीसा } तेत्रीश

तेरह } (त्रयोदश) तेर
तेरस }

तेवण्णा } (त्रिपञ्चाशत्)
तिपण्णासा } त्रेपन

अयुत, अयुअ (अयुत) दश हजार

असीइ (अशीति) ऐंशी

इक्कवीसा } एगवीसा } एक्कवीसा } (एकविंशति) एकवीश

एआरह } एगारह } एआरस } (एकादश) अगियार

एग } एक } एअ } इक } (एक) एक

एगचत्तालिसा } इक्कचत्तालिसा } एक्कचत्तालिसा } इगयाला } (एकचत्वारिंशत्) एकताळीश

एगणवइ } इगणवइ } एगाणवइ } (एकनवति) एकाणु

एकतीसा } एक्कतीसा } इक्कतीसा } (एकत्रिंशत्) एकत्रीश

एगपण्णासा } इक्कपण्णासा } एक्कपण्णासा } एगावण्णा } (एकपञ्चाशत्) एकावन

एगसट्ठि } इगसट्ठि } (एकषष्टि) एकसठ

एगसत्तरि } एगहत्तरि } इक्कसत्तरि } इक्कहत्तरि } (एकसप्तति) एकोतेर

एगासीइ (एकाशीति) एक्याशी

एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्) ओगणचालीस

एगूणनवइ (एकोननवति) नेवाशी

एगूणसय (एकोनशत) नव्वाणु

एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) ओगणत्रीश

एगूणपण्णासा (एकोनपञ्चाशत्) ओगणपचास

एगूणवीसा (एकोनविंशति) ओगणीस

एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि) ओगणसाठ

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति) ओगणोशीतेर

एगूणासीइ (एकोनाशीति) ओगण्याऐंशी, अगण्याऐंशी

कोडाकोडी (कोटाकोटि) कोडाकोड

कोडि (कोटि) क्रोड

चउ (चतुर्) चार

चउणवइ } चोणवइ } (चतुर्नवति) चोराणु

सरस (सरस) सरस
सवाय (सपाद) सवायु-सवा
सहल (सफल) सफळ
संखय (संस्कृत) संस्कारेलु, संस्कार
संजय (संयत) संयमवाळो
संभूअ (संभूत) संभवेलो-थयेलो
संसट्ठ (संसृष्ट) संसर्गवाळु, संसर्ग
साउ (स्वादु) स्वादु-स्वादवाळु
सीअ (शीत) शीत-ठंडु
सीलभूअ (शीलभूत) शील-भूत-सदाचाररूप
सुइ (शुचि) शुचि-पवित्र
सुगंधि (सुगन्धिन्) सुगंधी वस्तु
सुजह (सु+हान) सहेलाईथी तजी शकाय ते
सुत्त (सुप्त) सूतेलु
सुत्त (सूक्त) सूक्त-सारी उक्ति, सुभाषित
सुय (श्रुत) सांभळेलु, सांभळ्यु
सुहि (सुखिन्) सुखी
सुहुम, सुखुम (सूक्ष्म) सूक्ष्म-नानु
सेट्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ-उत्तम
हअ (हत) हणायेलु-हणेलु
हय (हृत) हरेलु, हर्यु
हंतव्व (हन्तव्य) हणवा योग्य
हुत (हुत) होमेलु-हवन करायेलु
हेट्ठिल्ल (अधस्तन) हेठनु

संख्यावाचक शब्दो

अट्ठ (अष्टन्) आठ
अट्ठचत्तालिसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत) अडतालीश
अट्ठणवइ, अडणवइ, अट्ठाणवइ (अष्टनवति) अठाणु
अट्ठत्तीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्) आडत्रीश
अट्ठसट्ठि, अडसट्ठि (अष्टषष्टि) अडसठ
अट्ठसत्तरि, अट्ठहत्तरि (अष्टसप्तति) अठ्योतेर
अट्ठारस, अट्ठारह (अष्टादश) अढार
अट्ठावन्ना, अडवन्ना, अट्ठपण्णासा (अष्टपञ्चाशत्) अठ्ठावन
अट्ठवीसा, अट्ठवीस, अडवीसा (अष्टाविंशति) अठ्यावीश
अट्ठासीइ (अष्टाशीति) अठ्याशी

मणंसि (मनस्विन्) बुद्धिमान्
मय (मत) मानेलु, मानवु—मत
महग्घ (महार्घ) मोंघु
महड्डिय } (महर्धिक) मोटी
महिड्डिय } ऋद्धिवालु—धनाढ्य
मायामह (मातामह) मानो बाप
मिउ (मृदु) मृदु—कोमळ—नरम—मउ
मिलाण } (म्लान) म्लान
मिलान } थयेलु, करमाएलु, म्लान थवु
मुत्त (मुक्त) मुक्त—छुटु
मुद्ध (मुग्ध) मुग्ध
मूढ (मूढ) मूढ—मोहवाळो—अभण—अज्ञानी
मोत्तव्व (मोक्तव्य) मूकवा जेवु
रत्त (रक्त) रातु—रंगेलु
रायण्ण (राजन्य) राजपुत्र
रोत्तव्व (रुदितव्य) रोवु—रुदन
लण्ह (श्लक्ष्ण) नानु
लहु (लघु) लघु—हळवु—नानु
लहुअ } (लघुक) लघु—हळवु
हलुअ } —हलु—नानु
लंब (लम्ब) लांबु
लुक्ख } (रूक्ष) लूखु—आसक्ति
लुह } विनानु
वम्मय (वाङ्मय) वाङ्मय—शास्त्र
वद्धमाण (वर्धमान) वधतु

वक्क (वाक्य) कहेवा योग्य वाक्य
वज्ज (वर्ज्य) वर्जवा योग्य
वज्ज (वद्य) बोलवा योग्य
वच्च (वाच्य) ,, ,,
वाघायकर (व्याघातकर) व्याघात करनार—विघ्न करनार
विणट्ठ (विनष्ट) विनष्ट, विनाश
भिब्भल } (विह्वल) विह्वल,
विहल } भामळो—गभराएल
विलिअ (व्यलीक) विशेष अलीक—खोटु
विविह (विविध) विविध—जातजातनु
विहल (विफल) विफळ
वीयराग } (वीतराग) जेमा
वीयराय } राग नथी ते
वीलिअ (व्रीडित) वीलो—मोंठो
वोत्तव्व (वक्तव्य) कहेवा जेवु
सक्कय (संस्कृत) संस्कृत
सग्घ (स्वर्घ) सोंघु
सचेलय (सचेलक) चेल—वस्त्र-वाळु, कपडावाळु
सत्त (शक्त) शक्तिमान
सत्त (सक्त) आसक्त
सत्तम (सप्तम) सातमु
सम (सम) समान वृत्तिवाळु—सरखु
सयल (सकल) सकळ—सघळु

पच्छ (पथ्य) पथ्य-रसनामा हितकर

पडुप्पन्न (प्रत्युत्पन्न) वर्तमान -ताजु

पढम (प्रथम) प्रथम-परथम

पणट्ठ (प्रणष्ट) प्रनष्ट, नाश

पत्त (प्राप्त) पहोंच्यु-पहोंच्यु

पन्नत्त (प्रज्ञप्त) प्रज्ञापेलु-जणावेलु

पन्नविय (प्रज्ञपित) प्रज्ञापेलु, प्रज्ञापवु

पमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त-प्रमादी

परूविअ (प्ररूपित) प्ररूपेलु, जणावेलुं, प्ररूपवु

पंचम (पञ्चम) पाचमु

पंडित } (पण्डित) पडित-भणेलो,
पंडिअ } पढ्यो, पोपटपडित

पंत (प्रान्त) अन्तनु, छेवटनु, वधारता वधेलु

पिआउय (प्रियायुष्क) आयुष्यने प्रिय समजनार

पियामह (पितामह) बापनो बाप

पिय (प्रिय) प्रिय-वहालुं

पिहिय (पिहित) ढाकेलुं

पीण (पीन) पुष्ट

पुट्ठ (पुष्ट) पुष्ट

पुट्ठ (पृष्ट) पूछायलु

पुण्ण (पूर्ण) पूर्ण-भरेलो-सम्पूर्ण-भरपूर्ण-भरेलो

पुण्ण (पुण्य) पवित्र काम

पुराण } पुराण } पुराणु,
पुराअण } पुरातन } जूनु

पोअ (प्रोत) परोव्यु-परोवेलु

बज्झ (बाह्य) बहारनु, बहारनो देखाव

बद्ध (बद्ध) बद्ध-बाधेलो-बधाएल

बहु (बहु) बहु-घणु

बिइय }
बिइज्ज } (द्वितीय) बीजु
दुइय } -दूजु
दुइज्ज }

बुद्ध (बुद्ध) बोधवाळो-ज्ञानी

भव्व (भव्य) थवा योग्य-ठीक

भिच्च (भृत्य) पाळवा योग्य-भृत्य-नोकर

भुत्त (भुक्त) भुक्त-भोगवेलुं

भोत्तव्व (भोक्तव्य) भोजन करवा जेवु, भोगववा जेवु

मईय (मदीय) मारु

मट्ठ (मृष्ट) मांजेलु-शुद्ध

मड-मय (मृत) मृत-मरेलु

जोइअ } (योजित) जोडेलु
जोइअ }

ठड्ढ (स्तब्ध) टाढो, ठण्डो, स्तब्ध, जड, थभी गएलु

ठिय (स्थित) स्थित-स्थान

डज्झमाण (दह्यमान) दाझतु-वळतुं

तइय } (तृतीय) त्रीजु
तइज्ज }

तत्त (तप्त) तपेलुं

तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी

तस्स (त्र्यस्र) त्रासु-त्रिकोण

तिण्ण (तीर्ण) तरी गएलु

तिण्ह (तीक्ष्ण) तीणुं-भणीदार

तिम्म } (तिग्म) तीक्ष्ण तेज-दार-तेग
तिग्ग }

तुच्छ (तुच्छ) तुच्छ, राक, अधुरो

दट्ठव्व (द्रष्टव्य) देखवा जेवु

दट्ठ (दृष्ट) दीठु-देखेलु-देखवु

दसम (दशम) दशमु

दंत (दान्त) जेणे तृष्णाने दमी छे ते-शान्त

दिग्घाउ (दीर्घायुष्) दीर्घ आयुष्यवाळो

दियड्ढ } (द्वितीयार्द्ध) जेमां एक आखुं अने बीजुं अडधु छे ते-दोढ
दिवड्ढ }

दुग्गंधि (दुर्गंधिन्) [illegible]

दुप्पूरिय (दुष्पूर) मुश्केलीथी पूराय-भराय तेवु

दुरणुचर (दुरनुचर) जेनु आचरण कठण लागे ते

दुरतिक्कम (दुरतिक्रम) [illegible] मटे तेवु

दुल्लह (दुर्लभ) दुर्लभ-दुलभ-मुश्केल

दुहि (दुःखिन्) दुःखी

धणि (धनिन्) धनी-धनवाळो

धीर (धीर) धीर-धीरजवालु

नग्ग (नग्न) नग्न-नागो

नवम (नवम) नवमु

नवीण } (नवीन) नवीन-नवु
णवीण }

नाय (ज्ञात) जाणीतु-प्रसिद्ध

णिच्चल (निश्चल) निश्चल

निट्ठुर (निष्ठुर) नठोर

निण्ण } (निम्न) निम्न-नीचु, नातु, नेतु
नेण्ण }

निरट्ठग (निरर्थक) निरर्थक-नकामु

निहिय (निहित) निहित-स्थापेलु, स्थापवु

पच्च (पाच्य) पचवा-रांधवा योग्य

उपरिअल्ल (उपरितन) उपलु –उपरनु

कज्ज (कार्य) करवा योग्य

कड } (कृत) करेलुं
कय }

कयण्णु (कृतज्ञ) कृतज्ञ– कदरदान

काणीण (कानीन) व्यासऋषि

कातव्व }
कायव्व } (कर्तव्य) कर्तव्य– करवा जेवु
काअव्व }

किच्च (कृत्य) कृत्य

किलिट्ठ (क्लिष्ट) क्लेशवाळु, क्लिष्ट

किलिन्न (क्लन्न) गीलु–भीनु भींजाएलु

किलित्त (क्लप्त) क्लप्त

कुसल (कुशल) कुशळ–चतुर

केरिस (कीदृश) केवु

कोसेय (कौशेय) कौशेय– रेशमी–वस्त्र

खलपु (खलपु) खळु साफ करनार

गद्धिय (गृद्ध) अतिशय लालचु

गय (गत) गएलु, जवुं

गामणि (ग्रामणी) गामनो नेता

गिलाण } (ग्लान) ग्लान थएलु, ग्लान थवु
गिलान }

गुत्त (गुप्त) गोपवेलु–गुप्त– गुप्त

गुरु (गुरु) गुरु–भारे मोटु

गुज्झ (गुह्य) छुपाववा योग्य, गुप्त

घट्ठ (घृष्ट) घसेलु, मुंवाळु करेलु, वाटेलु

घेत्तव्व (गृहीतव्य) ग्रहण करवा जेवु

चउत्थ } (चतुर्थ) चोथु
चतुत्थ }

चउरंस } (चतुरस्र) चोरस
चउरस्स }

चंड (चण्ड) प्रचंड–क्रोधी

चारु (चारु) सारु–सुन्दर

छट्ठ (षष्ठ) छट्ठु

जन्न (जन्य) जाणवा योग्य

जाय (जात) जाएलुं, थएलु, जणवु

जिअ (जित) जीतेलु–जीतवु

जिइंदिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो उपर जय मेळवनार

जुगुच्छ (जुगुप्स) जुगुप्सा करनार, घृणा करनार

जुन्न (जीर्ण) जीर्ण, जूनु, जळी –जरी–गएलु

विशेषण

अक्खाय (आख्यात) कहेलु -कहेवु

अचेलय } (अचेलक) ऐलक-
अएलय } कपडा विनानु

अज्जयण } (अद्यतन) आजनु
अज्जतण } तानु

अज्ज (अर्य) अर्य-वैश्य-स्वामी

अज्ज (आर्य) आर्य

अट्ठम (अष्टम) आठमु

अड्ढीअ } (अर्धतृतीय) जेमा
अड्ढाइअ } बे आखा अने त्रीजु
अड्ढाइज्ज } अडधु छे ते, अढी -अढी

अणवज्ज } (अनवद्य) पाप-
अनवज्ज } रहित-निर्दोष

अणाइअ (अनादिक) आदि विनानु

अणारिय (अनार्य) अनार्य-आर्य नहि ते-अनाडी

अत्थिअ (आर्थिक) अर्थ सबधी-अर्थने लगतु

अत्थिअ (आस्तिक) आस्तिक

अधीर (अधीर) अधीर-धीरज विनानु-नवळुं

अद्धुट्ठ (अर्धचतुर्थ) जेमां त्रण आखा अने चोथुं अडधु छे ते उठ-साडात्रण

अ[illegible] (अ[illegible]) [illegible]

अप्पणिय (आत्मीय) पोतानु

अम्हारिस (अस्मादृश) अमा-रीखु-अमारा जेवु

अवज्ज (अवद्य) अवद्य-न कहो -कही-शकाय तेवु काम -पाप-दोष

अहम (अधम) अधम-हलक -नीच

अहिनव (अभिनव) अननु -नवीन

अंतिअ (अन्तिक) पासे-नजीकमां

आकुट्ठ (आक्रुष्ट) आक्रोश करेलु-आक्रोश

आगअ }
आगत } (आगत) आवेलु
आअ }

आणत्त (आज्ञप्त) आज्ञा करेलु, आज्ञा

आरिस (आर्ष) ऋषिए कहेलु

आसत्त (आसक्त) आसक्त-मोही

उच्छिट्ठ (उच्छिष्ट) एठु-अजीठु

उत्तम } (उत्तम) उत्तम
उत्तिम }

वादित्त, वाइत्त (वादित्र) वाजींत्र

वारि (वारि) वारि-पाणी

वित्त } वेत्त } (वेत्र) नेतर-नेतरनी सोटी-वेत

विन्नाण } विण्णाण } (विज्ञान) विज्ञान

विस (विष) विख

वीरिय (वीर्य) वीर्य-बळ-शक्ति

वेर (वैर) वेर-वैर

सगडय (शकटक) छकडो-शकट

सच्च (सत्य) सत्य-साचु

सत्तगुणय (सप्तगुणक) सातगणुं

सत्थ (शस्त्र) शस्त्र-हणवानुं हथीयार-तरवार वगेरे

सत्थ (शास्त्र) शास्त्र

सत्थिल्ल } सत्थि } (सक्थि) साथळ

सयढ (शकट) छकडो-गाडु-शकट

सरण (शरण) शरण-आशरो

सल्ल (शल्य) साल-दुःख

साय } सात } (सात) शाता-सुख

सावज्ज (सावद्य) पापवृत्ति

सावत्तक } सावत्तय } (सापत्न्यक) शोक्य

सासुरय (श्वाशुरक) सासरु, सासरानु घर

सित्थ (सिक्थ) सीथ

सिंग (शृङ्ग) शिंगडु-शिंगु

सीअ (शीत) शीत-टाढ

सील (शील) शील-सदाचार

सीस (शीर्ष) शीश-माथु

सुक्ख (सौख्य) सुख

सुत्त (सूत्र) सूत्र-सूतर-सूत्ररूप टुंकु वाक्य

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनुं

सोअ } सोत्त } (श्रोत्र) श्रोत्र-कान-साभळवानु साधन

सोरभ (सौरभ) सोडम

हियय (हृदय) हैयु

हुअ (हुत) होम

मलीर (मलयचीर) मलयदेशनु कोमळ, झीणु अने आछु कापड

मसाण (श्मशान) मसाण

महब्भय (महाभय) मोटो भय-मोटी बीक

महाविज्जालय (महाविद्यालय) मोटु विद्यालय-कोलेज

महु (मधु) मधु

मंगल (मङ्गल) मंगल

मंस (मांस) मांस

माइहर (मातृगृह) मायरु-मइयर

मित्त (मित्र) मित्र

मित्तत्तण (मित्रत्व) मित्रत्व-मित्रता-भाईबंधी

मिहिलानयर (मिथिलानगर) मिथिला

मुह (मुख) मुख

मोत्तिअ (मौक्तिक) मोती

रज्ज (राज्य) राज्य-राज

रय (रजस्) रज-पाप-धूळ-मेल

रयय (रजत) रजत-रूपु

रसायल (रसातल) रसातल-पाताळ

रायगिह (राजगृह) बिहारमां आवेलु हालनु राजगिर-मगधदेशनी राजधानी

रुक्खय (रुक्षक) लुखु

रुप्प (रुक्म) रूपु

रुप्प (रौप्य) रूपु

रूव (रूप) रूप-वस्तु-पदार्थ

रोमय (रोमक) रुवु-रोम

लक्खण } (लक्षण) लखण
लच्छण } -लक्षण-चिह्न

लाङ्गल (लाङ्गल) लंगर

लावण्ण } (लावण्य) लावण्य
लायण्ण } -कांति

लोमपड { लोमपट
रोमपट } रुवाटानु वस्त्र-लोबडी

लोहखंड (लोहखण्ड) लोखंड

लोह (लोह) लोढु

लोहिअ (लोहित) लोही

वण (वन) वन

वत्थ (वस्त्र) वस्त्र-वस्तर

वत्थु (वस्तु) वस्तु

वयण (वदन) वदन-मुख

वयण (वचन) वचन-वेण

वरिस (वर्ष) वरस

वाणिअ (वाणिज्य) वणज-वेपार

पल्लाण (पर्याण) पलाण
पवहण (प्रवहण) वाहन–वहाण
पंजर (पञ्जर) पांजरु
पाणीय } (पानीय) पाणी–
पाणीअ } पीवानु
पाडलिपुत्त (पाटलीपुत्र)
पाटलिपुत्र–पटणा शहेर
पायत्ताण (पादत्राण) पाद-
त्राण–जोडा
पाव (पाप) पाप
पावग (पावक) पाप
पावरणय (प्रावरणक) उपरणु
पास (पार्श्व) पासु–पडखु
पासग (दर्शक–पश्यक) द्रष्टा,
समजनारो–विचारक
पिच्छ (पिच्छ) पींछु
पित्त (पित्त) पित्त
पुच्छ (पुच्छ) पूछडुं–पूछ
पुट्ठय (पृष्ठक) पूठु
पुप्फ (पुष्प) पुष्प–फूल
फल (फल) फळ
फंदण (स्पन्दन) फांदवु–फर-
कवु–थोडु थोडु हलवु
बम्हचेर (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य–
सदाचारवाळी वृत्ति–
ब्रह्ममा परायण रहेवु ते
बयर (बदर) बोर–बेर

बार } (द्वार) बार–बारणु
दुवार }
बिइज्ज (द्वितीय) बीजु
बिगुणय, बिउणय (द्विगुणक)
बमणु
बिंदु (बिन्दु) मींडु
बिंबय (बिम्बक) बिंब–प्रति-
बिंब–बीबु
बीअ (बीज) बी–बीज
भय (भय) भय–भो
भयव्वाउलय (भयव्याकुलक)
बेबाकळो
भायण } (भाजन) भाजन–
भाण } भाणु–पात्र
भारहवास (भारतवर्ष) भारत-
देश–हिन्दुस्तान
भाल (भाल) भाल–कपाळ–
ललाट
भोयण (भोजन) भोजन–
जमण
मच्चुमुह (मृत्युमुख) मृत्युनुं
मुख–मोतनुं मोढु
मत्थय (मस्तक) माथु
मयणफल } (मदनफळ)
मयणहल } मींढोळ
मरण (मरण) मरण–मोत

तुंद (तुन्द) दूंद-पेट

दहण (दहन) देण-दहन-आगे बळवुं

दहि (दधि) दहीं

दंतपवण (दन्तपवन) दतवण-दातण

दाण (दान) दान

दारु (दारु) दारु-लाकडुं

दालिद्द (दारिद्र्य) दळदर-दारिद्र्य

दिण (दिन) दिन-दन-दनियुं, दिवस

दाहिणय (दक्षिणक) डाह्यु

दीवेल्ल / दीवतेल्ल (दीपतैल) दीवेल-दीवो बाळवानुं तेल

दुक्ख (दुःख) दुःख

दुद्ध (दुग्ध) दूध

धण (धन) धन

धणु / धणुह (धनुष्) धनुष

धम्मजाण (धर्मयान) धर्मरूप वाहन, धर्मस्थान उपर लइ जवानुं वाहन

धीरत्त (धीरत्व) धीरत्व-धीरपणु-धैर्य

नमिर (नम्र) नम्र-नरम

नयण (नयन) नेण

नाण (ज्ञान) ज्ञान

निच्छिअय (निश्चितक) नक्की

निवाण (निपान) नवाण-जळाशय

नीलय (नीलक) नीलो-नील

नेड्डु / णेड्डु (नीड) निलय-नीड-माळो

पगरक्ख (पदकरक्ष) पगरखां-पगनु रक्षण करनार

पगरण (प्रकरण) पगरण-प्रारंभ

पट्टोल (पट्टकूल) पटोळु

पद / पय / पयग (पद) पद-पगलु

पद्धर (प्राध्वर) पाधरु

पद्र पादर

पम्ह (पक्ष्मन्) पांपण

पम्हपट (पक्ष्मपट) पक्ष्म-पांपण जेवु झीणु कापड-पांभडी

परिसोसिय / परिसोसिअ (परिशोषित) परिशोषित तद्दन सुकाएलु

पलाल (पलाल) पराळ-चोखानु घास

चउव्वट्टय (चतुर्वर्त्मक) चौटु चार रस्ता

चक्क (चक्र) चक्र–चरखो

चम्म (चर्मन्) चाम–चामडु

चंडालिअ (चाण्डालिक) चडालनो स्वभाव–क्रोध

चंदण (चन्दन) चदननु झाड के लाकडु

चारित्त (चारित्र) सच्चारित्र–सद्वर्त्तन

चुच्छ (तुच्छ) तुच्छ–जूज

चेइअ (चेत्य) चिता उपर चणेलु स्मारक–चिह्न–ओटाओ, छत्री, पगला, वृक्ष, कुड, मूर्ति वगेरे

चेण्ह (चिह्न) चेन–चाळा

चेल (चेल) चेल–वस्त्र

छग्गुणय (षड्गुणक) छगणु

छट्ठय (षष्ठक) छट्ठु

छणपय } (क्षणपद) हिंसा–
छणपअ } हिंसानु स्थान

छत्त (छत्र) छत्र–छत्री

छिद्दय (छिद्रक) छींडु

छीअ (क्षुत) छींक

जउ (जतु) जतु–लाख

जल (जल) जळ–पाणी

जाण (यान) यान–वाहन

जाणु (जानु) जानु–जाघ–साथळ

जिमिय (जेमित) जमेलुं

जीवण (जीवन) जीवन–जींदगी

जुग (युग) योगनु

जुज्झ } (युद्ध) युद्ध–लडाई
जुद्ध }

जुम्म } (युग्म) युग्म–जोडु
जुग्ग } –जोडी

जोव्वणय(यौवनक) जोवन–यौवन

निलाट (ललाट) निलाट–ललाट

णयर }
णगर } (नगर) नगर–शहेर
नगर }
नयर }

णिव्व } (नीम्ब) नेवु–
निव्व } छापरानुं नेवु

तग्ग (तन्तुक) तागडो–त्रागडो

तण (तृण) तरणु–घास

तंब (ताम्र) तावु

तंबोल (ताम्बूल) तंबोळ–नागरवेलनु पान

ताण (त्राण) रक्षण–शरण–आशरो

तालु (तालु) ताळवुं

तिगुणय } (त्रिगुणक) त्रमणु
तिउणय }

तिमिर (तिमिर) तम्मर–अंधारां

तिलय (तिलक) टीलु

तेल (तैल) तेल

उत्थिअ (उत्थित) उठ्युं

उदग } (उदक) उदक–पाणी
उदय }

उप्पल (उत्पल) उत्पल–कमळ

कट्ठ (काष्ठ) काष्ठ–काट–काठ–
काठी–लाकडुं

कम्म (कर्म) काम–काय–सारी
नरसी प्रवृत्ति

कम्मवीअ (कर्मवीज) कर्मवीज
सत्–असत्–सस्कारनु वीज

कयल (कदल) केलु

कवल (कम्वल) कवल–कामळ

कक्कोड कटोलु–कक्कोडु–
कंक्कोडानु शाक

कंजिय (काञ्जिक) काजी

कंटयरक्ख (कण्टकरक्ष) काटा–
रखु–कांटाथी रक्षण
करनार–जोडा

कारण (कारण) कारण

कुम्पल } (कुड्मल) कुपळ–
कुंपल } फणगो

कुल (कुळ) कुल–फुळ

कुसग्गपुर (कुशाग्रपुर) राजगृहनुं
बीजु नाम

कुंडलय (कुण्डलक) कुडळ,
कुडालु

कोटर (कोटर) कोतर

कोमलय ([illegible]) [illegible]

कोहल ([illegible]) [illegible]

खाणु (स्थाणु) स्थाणु–[illegible]

खीर } (क्षीर)
छीर } [illegible]

खेत्त } (क्षेत्र)
खित्त } क्षेत्र–[illegible]

खेम (क्षेम) क्षेम–कुशळ

गमण (गमन) गमन–ज[illegible]

गल (गळ) [illegible]लु

गहण(ग्रहण) ग्रहण करवानु [illegible]

गीअ } (गीत) गीत–
गीत } गाएलु

गुत्त (गोत्र) गोत्र–वंश

गुरुकुल (गुरुकुल) [illegible]
[illegible] गुरुओ ज्या रहे छे [illegible]
[illegible]

घय (घृत) घी

घर (गृह) घर

घरचोल (गृहचोल) घरचो[illegible]

घाण (घ्राण) घ्राण–नाक–सु[illegible]
वानु साध[illegible]

चउक्क चोक

चउगुणय } (चतुर्गुणक)
चउग्गुणय } चोग[illegible]

दड्ड (दद्रु) धाधर–दादर
दित्ति (दीप्ति) दीप्ति–तेज
दाढा (दंष्ट्रा) दाढ
दिसा (दिशा) दिशा–दश
दिहि } धिइ } (धृति) धैर्य
देवराणी (देवराणी) देराणी
धत्ती (धात्री) धात्री
धाई (धात्री) धाई–धवराव-नारी माता
धुआ (दुहिता) दीकरी
धूलि (धूलि) धूळ
नणंदा (ननान्द) नणद
नारी (नारी) नारी–नार
नावा (नौका) नाव
निसा (निशा) निशा–रात्री
पण्णा (प्रज्ञा) प्रज्ञा
पतीति (प्रतीति) पतीज–विश्वास
परिहावणिया (परिधापनिका) पहेरामणी
पंति (पंक्ति) पंक्ति–पगत–पात
पाडिवआ } पाडिवया } (प्रतिपदा) पडवो तिथि
पिउच्छा } पिउसिआ } (पितृष्वसा) पितानी बहेन—फई
पिच्छी (पृथ्वी) पृथ्वी
पुच्छा (पृच्छा) प्रश्न–पृच्छा
पुरा (पुर्) पुरी–नगर–नगरी
पुढवी (पृथ्वी) पृथ्वी
पेडिआ (पेटिका) पेटी
बब्बरी बाबरी–माथानी बाबरी
बहिणी (भगिनी) बहेन
बारिआ (द्वारिका) बारी
बाहा (बाहु) बाहु–हाथ–बांय
भइणी, भगिणी (भगिनी) बहेन
भाउज्जा (भातृजाया) भोजाय
भीइआ, भीइका (भीतिका) बीक
भूमि (भूमि) भूमि–भों
मइ (मति) मति
मक्खिआ } मच्छिआ } (मक्षिका) माखी—माछी
मज्जाया (मर्यादा) माजा-मलाजो
मट्टिआ (मृत्तिका) माटी
महिसी (महिषी) भेंश
मंजुसा (मञ्जुषा) मजूष–पेटी
माअरा } मायरा } (मातृ) देवी—माता
माआ (मातृ) माता–जननी
माइ (मातृ) मा–माई
माउ („) माता

कड्ढा ([illegible]) [illegible]
कबंधु ([illegible]) [illegible]
कक्खा (कक्षा) [illegible]
कच्छाडिया (कच्छटिका) [illegible]
कच्छु (कच्छु) खाज-खरज
कडी (कटी) केड
कयली (कदली) केळ
कलसी (कलशी) वसलो-कळशी
कलिआ (कलिका) कळी
कंकुतिआ (कङ्कतिका) कांसकी
कंति (कान्ति) कांत, कांत
कित्ति (कीर्ति) कीरत
किया (क्रिया) क्रिया, विधि-विधान
किवा (कृपा) कृपा
किसरा (कृसरा) खीचडी
कुक्खी (कुक्षी) कूख
कुढारिया (कुठारिका) कुहाडी
कुदालिया (कुद्दालिका) कोदाळी
कुमारी (कुमारी) कुवरी, कुवारी
खड्डा (गर्ता) खाडो-खाडो
खली खोळ
खंति (क्षान्ति) क्षमा
गउ (गो) गाय-गाई
गउआ (गोका) गाय
गब्भिणी (गर्भिणी) गाभणी
गिरा (गिर्) गिरा-वाणी

गोट्ठी (गोष्ठी) [illegible]
गोणी (गोणा) गुणो-अनाज भरवानो कोथळो
गोरी (गौरी) गोरी-पार्वती, गोरी स्त्री
घिणा (घृणा) घिण-घृणा
चंचु (चञ्चु) चांच
चंदिआ, चंद्रिआ (चन्द्रिका) चांदनी, चांदी-रूपु
चंदिमा (चन्द्रिका) चन्द्रमानी चांदनी
चिंता (चिन्ता) चिंता
छवि, छवी (छवि) छवी
छाया, छाही (छाया) छाया
छुहा (क्षुधा) भूख
छुहा (सुधा) छो-चुनो
जन्नी, जणी (यज्ञ) जान
जंघा (जङ्घा) जांघ
जिब्भा, जीहा (जिह्वा) जीभ
जुत्ति (युक्ति) जुक्ति-योजना
जुवइ (युवति) युवति
तणुवी (तन्वी) पातळी
तण्हा (तृष्णा) तृष्णा
तरुणी (तरुणी) तरुण स्त्री
तिसा (तृषा) तरस-लालच
थुइ (स्तुति) स्तुति-थोय

सीस } (शिष्य) शिष्य-
सिस्स } विद्यार्थी

सीह } (सिंह) सिंह
सिंघ }

सुत्तहार (सूत्रधार) सुतार

सुमिण }
सिमिण } (स्वप्न) सपनुं-
सुविण } सोणुं
सिविण }

सुरट्ठ (सुराष्ट्र) सोरठ देश

सुरट्ठअ } सुराष्ट्रीय }
सोरट्ठीअ } सौराष्ट्रीय }
सोरठनो वतनी-सोरठी लोक

सूअर (शूकर) शूकर-भुंड
सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) श्रेष्ठी-शेठ
सोवाग (श्वपाक) चांडाळ
सोमित्ति (सौमित्री) सुमित्रानो पुत्र-लक्ष्मण

सोरहिअ (सौगंधिक) गंधी-सुरभि-सुगंधी-तेल वगेरे वेचनार
सोवण्णिय (सौवर्णिक) सोनी-सोनु घडनार
हत्थ (हस्त) हाथ
हत्थि (हस्तिन्) हाथी
हर (हर) हर-महादेव
हरिअंद (हरिश्चन्द्र) हरिचंद राजा
हरिएसबल (हरिकेशबल) मूळ चंडाळ कुळमां जन्मेलो एक जैन मुनि
हरिण (हरिण) हरण
हरिताल (हरिताल) हरताल
हरिस (हर्ष) हरख-हर्ष
हव्ववाह (हव्यवाह) हव्यवाह-अग्नि
हेमंत (हेमन्त) हेमन्त ऋतु-शियाळो

नाम [नारीजाति]

अच्छरसा (अप्सरस्) अप्सरा
अज्जू (आर्या) सासू-आजी
अलसी (अतसी) अळशी

अलाऊ } (अलावू) तुंबडी-
लाऊ } लउआ

अंगुलि (अङ्गुलि) आंगळी

आणा (आज्ञा) आज्ञा-आणा
आपत्ति (आपत्ति) ओपटी
आसिसा (आशिष्) आशिष-

इत्थी } (स्त्री) स्त्री-तिरिया
थी }

उज्जु (ऋजु) सरळ

समण (श्रमण) शुद्धि माटे श्रम करनार मतपुरुष

समत्तदंसि (सम्यक्त्वदर्शिन्) सम्यक्ने जोनार–समजनार–आचरनार

समुद्द } (समुद्र) समुद्र–
समुद्र } समुदर

सयंभु (स्वयम्भू) स्वयं थनार–ब्रह्मा, ते नामनो समुद्र

सय्ह (सह्य) सह्य नामनो पहाड, सही शकाय ते

सर (स्मर) स्मर–कामदेव

सवह (शपथ) शपथ–सोगन–सम

सव्व (सर्व) सर्व–सब–बधु

सव्वज्ज (सर्वज्ञ) सर्वज्ञ–बधु जाणनार

सव्वण्णु (सर्वज्ञ) सर्व जाणनार

सव्वसंग (सर्वसङ्ग) सर्व प्रकारनो संग–संबंध–आसक्ति

संकु (शङ्कु) शंकु–खीलो

संख (शङ्ख) शंख

संग (संग) संग–सोबत

संतोष (संतोष) संतोक

संभु (शम्भु) शंभु–सुखनुं स्थान–महादेव

संवत्तअ (संवर्तक) संवर्तक–वायु

संसार (संसार) संसार–जगत्

संसारहेउ (संसारहेतु) संसारनो हेतु–संसार वधारनु कारण

साणु (सानु) शिखर

साड (शाट) साडलो–साडी

साडय (शाटक) साडलो–साडी

साडवी } (शाटविन्) साडली–
सालवी } साडी वणनार

सारहि (सारथि) सारथि–रथ हांकनारो

साव (शाप) श्राप

सावय (श्वापद) सावज

साहु (साधु) साधक, साधन करनार–साधुपुरुष, सज्जन, साहुकार

सिआल (शृगाल) शिआळ

सिद्ध (सिद्ध) अदेही–वीतराग

सिम (सिम) बधु

सिलिम्ह (श्लेष्मन्) श्लेष्मा

सिलेसम (श्लेष्मन्) सळेखम

सिलोअ } (श्लोक) श्लोक,
सिलोग } कीर्ति

सिसु (शिशु) शिशु–बाळक

सिंगार (शृङ्गार) शृंगार–शणगार

सीआल (शीतकाल) शियाळो

वणप्फइ } (वनस्पति) वनस्पति
वणस्सइ }

वद्धमाण (वर्धमान) वर्धमान–महावीर

वम्मह (मन्मथ) मनने मथनार कामदेव

वरदंसि (वरदर्शिन्) उत्तम रीते जोनार

ववहार (व्यवहार) वेव्हार–वेपार

ववहारिअ (व्यवहारिक) वहेवारी–वेपारी

वसभ (वृषभ) वरख राशी

वसह (,,) वृषभ–बळद

वसु (वसु) वसु–धन, पवित्र मनुष्य

वंसअ (वंशक) वांसो–पीठ

वाउ } (वायु) वायु–वा
वायु }

वाणिअ (वाणिज) वाणीओ

वाणिज्जार (वाणिज्यकार) वणजारा–वणज करनारो–वेपारी

वाहि (व्याधि) व्याधि–रोग

विज्जत्थि (विद्यार्थिन्) विद्यानो अर्थी–विद्यार्थी

विडवि (विटपिन्) वीड–झाड

विण्हु (विष्णु) विष्णु

विप्परियास (विपर्यास, विपर्यास–विपरीतता–उलट

विराग (विराग) रागथी विरुद्ध भाव–वैराग्य

विवाहकाल (विवाहकाल) विवाहना–लग्नना

विहु (विधु) विधु–चन्द्र

विंचुअ (वृश्चिक) वींछी

विंछिअ (,,) ,,

वीस (विश्व) विश्व–बधु

वुड्ढ (वृद्ध) बूढो–घरडो

वुत्तंत (वृत्तान्त) वृत्तान्त–समाचार

वेय (वेद) ऋग्वेद वगेरे वेद

वेवाहिअ (वैवाहिक) वेवाई

वेस (वेष) वेष–भेख

वेसाह (वैशाख) वैशाख मास

वोज्झ (वह्य) बोजो

वोज्झअ बोजो

स, सुव (स्व) पोतानु

स (श्वन्) श्वान–कूतरो

सउणि (शकुनि) शकुनि–पक्षी

सज्ज (षड्ज) षडज–एक प्रकारनो सूर

सढ (शठ) शठ–लुच्चो

सद्द (शब्द)–साद–अवाज

सप्प (सर्प) साप

सम (सम) बधु

मुडअ ([illegible]) [illegible]
[illegible]

मूअ }
मूक } (मूक) मूंगो
मूग }

मूसअ } (मूषक) मूषक-
मूसय } उंदर

मेरा (मेरा) मर्यादा

मेरामण (मेरा+मनु-मेरु+मण) महेरामण-समुद्र

मेह (मेघ) मे-मेघ-वरसाद

मेहावि (मेधाविन्) मेधावाळो-बुद्धिमान्

मोक्ख (मोक्ष) मोक्ष-छूटकारो

मोचिअ (मौचिक) मोची-मोजा सीवनार

मोर } (मयूर) मोर-मयूर
मयूर }

मोह (मोह) मोह-मूढता

मोहणदास (मोहनदास) ते नामनो वीरपुरुष-मोहनदास गांधी

रट्ठकूड } (राष्ट्रकूट) राठोड
रट्ठऊड }

रट्ठधम्म (राष्ट्रधर्म) राष्ट्रनो धर्म-समग्र देशनुं हित करनारी प्रवृत्ति

रणवास ([illegible]) [illegible]

रस (रस) रस

रसाल } (रसाल) रसाळ-
रसालु } रसाळु

रस्सि (रश्मि) [illegible] के [illegible]

राग (राग) राग-आसक्ति

रायरिसि (राजर्षि) राजर्षि

रिच्छ (ऋक्ष) रींछ

रिसि } (ऋषि) ऋषि
इसि }

रुक्ख (वृक्ष) रुख-झाड

लाह } (लाभ) लाभ-लाहो
लाभ }

लेहसालिअ (लेखशालिक) निशाळीओ-निशाळे भणवा जनार

लोअ } (लोक) लोक-जगत-
लोग } लोको

लोह (लोभ) लोभ

लोहयार (लोहकार) लुहार

लोहार (,,) लुहार-लुवार

वग्घ (व्याघ्र) वाघ

वच्छ (वत्स) वच्छु-संतान-वाछडो

वच्छयर (वत्सतर) वछेरो

मग्ग (मार्ग) माग–मारग

मग्गु (मद्गु) एक प्रकारनी माछली

मच्चु } (मृत्यु) मोत–मरण
मिच्चु }

मढ (मठ) मढी–मठ–सन्यासियोनु रहेठाण

मणि (मणि) मणि

मयगल (मदकल) मेंगल–मद झरतो हाथी

मयंक (मृगाङ्क) मृगना निशानवाळो चन्द्र

मरहट्ठ (महाराष्ट्र) मोटो देश–महाराष्ट्र देश

मरहट्ठअ (महाराष्ट्रीय) महाराष्टनो वतनी–मराठी लोक

मसय (मशक) मच्छर

महण्णव (महार्णव) महेरामण–समुद्र

महप्पसाय (महाप्रसाद) मोटा प्रसादवाळो–सुप्रसन्न–कृपाळु

महातवस्सि (महातपस्विन्) मोटो तपस्वी

महादोस (महादोष) महादोष मोटो दोष

महावीर (महावीर) महावीर देव

महासड्ढि (महाश्रद्धिन्) मोटी अचल श्रद्धावाळो

महासव (महास्रव) मोटो आश्रव–पापोनो मोटो मार्ग

महेसि {महा+ऋषि / महर्षि} व्यास वगेरे महर्षि

मंजार (मार्जार) मणजर–बिलाडो

मंति (मन्त्रिन्) मन्त्री–कारभारी

मंतु (मन्तु) अपराध–शोक

माधव (मा+धव) लक्ष्मीपति–माधव–कृष्ण

मार (मार) मारनारो–तृष्णा

माराभिसंकि (माराभिशङ्किन्) मार–तृष्णा–थी शकित रहेनार–दूर रहेनार–तृष्णाथी डरनारो

मालिअ (मालिक) माळी–माळा वेचनार

मास (माष) महीनो–मास

मिलिच्छ (म्लेच्छ) म्लेच्छ

मुइंग } (मृदङ्ग) मृदग
मिइंग }

मुग्गरय (मुद्गरक) मगदळ–मोगरी

मुणि (मुनि) मुनि–मनन करनार–मौन राखनार–संत

पुरिम [पुरस्तन] पहेलानु, पूर्व
पुरिस [पुरुष] पुरुष
पुव्व [पूर्व] पूर्व-पूर्वनु
पुव्वण्ह [पूर्वाह्ण] दिवसनो पूर्व भाग
पूयर [पूतर] पूरो-पोरो
पोक्खर [पुष्कर] पोखर-तळाव
पोट्ठिय [पृष्ठिक] पीठ ऊपर भार वहेनार पोठीयो-महादेवनो पोठीयो
फलाहार [फलाहार] फराळ
फास [स्पर्श] स्पर्श
फेण [फेन] फीण
वक } [वक] वगलो
वग }
वप्फ [बाष्प] वाफ
वहिणीवइ [भगिनीपति] बनेवी
वंधव [बान्धव] बांधव-भाई
वंधु [बन्धु] वंधु-भाइ-भाई
वंभण } [ब्राह्मण] ब्रह्म-विद्याने जाणनार-समजनार पुरुष
वम्हण }
माहण }
वंभयारी [ब्रह्मचारिन्] ब्रह्मचारी
वाघ } [वाघ] वाघो-वाद
वाह }
वाल [वाल] वाळ-वाळक
वाहु [वाहु] वाहु-वांय-हाथ
बिडाल [बिडाल] बिलाडो
बिंदु [बिन्दु] बिंदु, नाडु, टीपुं
बुद्ध [बुद्ध] बुद्धदेव
बुह [बुध] बुद्धिमान्-डाह्यो पुरुष
भड [भट] भड-शूर
भमर [भ्रमर] भमरो
भाइणेज्ज [भागिनेय] भाणेज
भाणु [भानु] भानु-भाण-सूरज
भार [भार] भार
भारय [भारक] भारो
भारवह [भारवह] भार वहन करनार-मजूर
भारहर [भारहर] भार लइ जनार मजूर
भिंग [भृङ्ग] भृग-भमरो
भिक्खु [भिक्षु] भिक्षु
भूअ [भूत] भूत-प्राण, जीव
भूमिवइ [भूमिपति] भूमिनो पति, राजा
भूवइ [भूपति] भू-पृथ्वी-नो पति भूपति-भूपत-राजा
भोगि } [भोगिन्] भोगी-भोगोने भोगवनार
भोइ }
मअ [मृग] मृग-वनपशु-हरण
मउड [मुकुट] मोड-मुगट
मउल [मुकुल] मोर-कळी
मकडय [मर्कटक] माकडो

चित्तयार (चित्रकार) चितारो
छगलय (छाग) छालु–बकरुं
छत्त (छात्र)–विद्यार्थी
छप्पअ } (षट्पद) छपगो
छप्पय } –भमरो
छाइल्ल } (छायालु) छायाळ–
छायालु } छायावालु
छावय (शावक) छैयो–छोकरो
छुहागुड (सुधागुड) छागोळ–
चुनो अने गोळनुं मिश्रण
छेअ (छेद) छेडो
ज (यद्) जे
जट्ट (जर्त) जाट जातनो माणस
जडालु (जटाल) जटालु–
जटावालु
जणय (जनक) जनक–पिता
जण्हु (जह्नु) ते नामनो सगरपुत्र
जम्म (जन्मन्) जन्म
जर (ज्वर) ज्वर–ताव
जरढय (जरठक) घरडो–जरडो
जंतु (जन्तु) जतु–प्राणी–जीववंत
जंवु (जम्बु) जांवु, जांवुनु झाड
जामाउय (जामातृक) जमाइ
जायतेय (जाततेजस्) जेमां तेज
छे ते–अग्नि
जिण (जिन) जय पामनार
वीतराग

जीव (जीव) जीव
जीवाउ (जीवातु) जीवननुं औषध
जेट्ठ (ज्येष्ठ) मोटो–जेठ
जोइसिअ (ज्योतिषिक) जोशी
जोगि (योगिन्) योगी–जोगी
झुणि (ध्वनि) झणझणाट–अवाज
ध्वनि
डंड (दण्ड) दंड, दंडो, डांटियो
डंस (दंश) डंख
णक्क नाक
णातसुत } (ज्ञातसुत) ज्ञातवंशनो
णायसुय } पुत्र–महावीर
णिलाडवट्ट (ललाटपट्ट) निलवट
ण्हाविअ } (नापित) नवरावनारो–
नाविअ } नावी–हजाम
त } (तद्) ते
ण }
तलाय (तडाग) तलाव
तरस (तरक्ष) तरस नामनु जनावर
तरु (तरु) तरु–द्रु–झाड
तव (तपस्) तप–तपश्चर्या
तव (स्तव) स्तव–स्तुति
तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी
तस (त्रस) त्रस प्राणी–गति
करी शके तेवा प्राणी
तंतु (तन्तु) तांतणो
तंवोलिअ (ताम्बूलिक) तबोळी

खय (क्षय) खे–क्षय

खार } (क्षार) खारो
छार }

खंध (स्कन्ध) कांध–खांध–भाग, मोटी डाळ

गग्ग (गार्ग्य) गर्गनो पुत्र–ते नामनो एक ऋषि

गड्डह } (गर्दभ) गधेडो
गद्दह }

गणधर } (गणधर) गणने धारण
गणहर } करनार–समूहनी व्यवस्था करनार–आचार्य

गणवइ } (गणपति) गणोनो पति –गणपति

गणि (गणिन्) गण–समूहने साचवनार आचार्य

गब्भ (गर्भ) गर्भ, गाभो

गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) गर्भने जोनार, जन्म धारण करनार

गय (गज) हाथी

गरुल (गरुड) गरुड

गवक्ख (गवाक्ष) गोखलो–गोख

गध (गन्ध) गध

गंधिअ (गान्धिक) गाधी–गधवाळी वस्तुने वेचनार

गाम (ग्राम) गाम

गाहय (ग्राहक) घराक

गिहि (गृहिन्) गृहस्थ

गुय्ह (गुह्य) गुह्यक–यक्ष, गुह्य–गूढ

गुरु (गुरु) गुरु–गोर, वडिल माता पिता वगेरे

गुहिलउत्त (गुहिलपुत्र) गुहिलोत

गोतम } (गौतम) गौतम
गोयम } गोत्रनो मुनि

गोधूम (गोधूम) गोधम–घउं

घड (घट) घडो

घरवइ } (गृहपति) घरनो पति–
गहवइ } गृहस्थ

घूअ (घूक) घूअड–घूड

घोडअ (घोटक) घोडो

चउव्वेइ (चतुर्वेदिन्) चतुर्वेदी चोबे, चोवा

चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) चक्र फेरवनार–चक्रवर्ती राजा

चक्खु (चक्षुस्) चक्षु–आंख

चम्मार (चर्मकार) चमार

चंद (चन्द्र) चद्र

चाइ (त्यागिन्) त्यागी

चास (चाष) खेतरमा चाष करवा ते

चित्त (चित्र) एक सारथिनु नाम

चित्तकूड } (चित्रकूट)
चित्तऊड } चित्तोड

कंसआर } (कास्यकार)
कंसार } कसारो

काग } (काक) कागडो
काक }

काम (काम) काम–तृष्णा–इच्छा

काय (काय) काया–काय–शरीर

काल (काल) काल–समय

कावड्डिअ (कापर्दिक) कावडियु–
कोडो–कोटी

कासव (काश्यप) काश्यप गोत्रनो
ऋषि–ऋषभदेव

कांवलिअ(काम्वलिक) कामळीयो,
कावळीओने वेचनार वा
ओढनार

किण्हसार (कृष्णसार) काली–
यार मृग

किलेस (क्लेश) कलेश

किसाणु (कृशानु) अग्नि

कुक्खि, कुच्छि (कुक्षि) कूख

कुडुम्बि (कुटुम्बिन्) कणबी

कुढार (कुठार) कुठार–कुहाडो

कुढारय (कुठारक) कुहाडो

कुद्दालय (कुद्दालक) कोदाळो

कुमारवर (कुमारवर) उत्तम
कुमार

कुलवइ (कुलपति) कुलनो पति–
आचार्य

कुंथु (कुन्थु) कंथवो–एक नानो
जीवडो

कुंभार (कुम्भकार) कुंभार

केवट्ट (कैवर्त) कैवर्त–केवट–होडी
हाकनार

केसरि (केशरिन्) केशवाळो–
याळवाळो–सिंह–केसरी सिंह

कोइल } (कोकिल) कोकिल–
कोकिल } कोयल

कोड (क्रोड) गोद–खोळो

कोणय (कोणक) खूणो

कोल } (क्रोड) खोळो
कोड }

कोलिक } (कौलिक) कोळी–
कोलिअ } एक जात

कोवपर (कोपपर) कोपमा तत्पर–
कोपी–क्रोधी

कोस (कोश) कोह–पाणी काढ–
वानो, कोश–खजानो

कोसिअ (कौशिक) कोशिक
गोत्रवाळो इन्द्र अथवा
चडकौशिक सर्प

कोह (क्रोध) क्रोध

कोहदंसि (क्रोधदर्शिन्) क्रोधने
जोनार–क्रोधी

खग्ग (खड्ग) खड्ग–तलवार

खत्तिय (क्षत्रिय) क्षत्रिय

इम (इदम्) आ
इयर (इतर) इतर, बीजुं
इसि (ऋषि) ऋषि
इंद (इन्द्र) इन्द्र
उच्छाह (उत्साह) उत्साह
उच्छु (इक्षु) इख–शेरडी
उट्ट (उष्ट्र) ऊंट
उण्हाल (उष्णकाल) उनाळो
उत्तर (उत्तर) उत्तरदिशा, उत्तरनु
उदहि (उदधि) उद–पाणी–ने
धारण करनार–समुद्र
उद्धव, ओद्धव (उद्धव)
ओधव–कृष्ण
उप्पाअ (उत्पाद) उत्पाद–उत्पत्ति
ऊरु (ऊरु) ऊरु–साथळ
उवज्झाय (उपाध्याय) उपाध्याय–
अध्यापक–गुरु–ओझा
उवासग (उपासक) उपासक–
उपासना करनार
उवाहि (उपाधि) उपाधि–प्रपंच
ऊसव (उत्सव) उत्सव
एअ, एय (एतद्) ए
एग
इक्क } (एक) एक
एक्क
एरावण (ऐरावण) ऐरावण–
मोटो हाथी
ओट्ठ (ओष्ठ) ओठ–होठ
क (किम्) कोण
कइम, कतम (कतम) क्यो,
केटलामो
कच्छव (कच्छप) काचबो
कण्णिआर (कर्णिकार) कणेर
कण्ण (कर्ण) कान, कानो
कण्ह (कृष्ण) कृष्ण–कान
कप्पडय (कर्पटक) कपडुं–कापडुं
कमंडलु (कमण्डलु) कमंडल
कयर (कतर) कयो
कयविक्कय (क्रयविक्रय) खरीदवुं
वेचवुं–क्रयविक्रय करवो
करेणु (करेणु) करी–हाथी
कलंब (कदम्ब) कदंबनुं झाड
कलह (कलह) कलह–कळो
कलाव (कलाप) कडपलो–समूह
कवड्ड (कदर्प) कोडो
कवि (कपि) कपि–वानर
कवि (कवि) कवि
कवित्थ (कपित्थ) कोठुं
कविल (कपिल) कपिल ऋषि
कस (कश) चाबुक
कसिवल (कृषिवल) खेडवाळो–
खेडुत
कटग (कण्टक) कांटो
कंद (स्कन्द) स्कन्द–गणपति

नाम [नरजाति]

अकम्म (अकर्मन्) कर्म रहित निर्मळ-पवित्र

अक्क (अर्क) सूर्य, आकडानु झाड-आकडो

अग्गि (अग्नि) अग्नि, आग

अच्चि (अर्चिस्) आच, जाळ

अच्छ (अक्ष) आस-हास

अणागम } (अन्+आगम) न
अनागम } आववुं ते, अनागमन

अण्णयर } (अन्यतर) अनेरुं
अन्नयर } -बीजो कोई

अप्प (आत्मन्) आत्मा-आप पोते

अण्ण (अन्य) अन्य, बीजु

अप्पाण (आत्मन्) आतमा-आप पोते

अभोगि } (अभोगिन्) अभोगी-
अभोइ } भोगोने नहि भोगवनार

अमु (अदस्) ए

अमुणि (अमुनि) मुनि नहि ते-वडवड करनार

अम्ह (अस्मद्) हुं

अय (अयस्) अयस-लोढु

अरय (अरक) आरो-पैडानो

अरिहंत(अरिह्+अन्त)वीतराग देव

अलाह } (अलाभ) अलाभ-
अलाभ } अप्राप्ति

अवर (अपर) अवर-बीजु

असमण (अश्रमण) श्रमण नहि ते

असंजम (असंयम) असंयम

अहर (अधर) नीचु, बीजु

अंक (अङ्क) अंक-खोळो

अंतर (अन्तर) अंतरनु

अंध } (अन्ध) आंधळो
अंधल }

अंब (आम्र) आंबो

अंबकाल } (आम्रकाळ)
अंबगाल } आंबागाळो

अंबमउड (आम्रमुकुट) अंबोटो

आइच्च (आदित्य) आदित्य-सूर्य

आयरिय (आचार्य) आचार्य-धर्मगुरु, विद्यागुरु

आरिय (आर्य) आर्य-सज्जन

आस (अश्व) अश्व-घोडो

आसाढ (आषाढ) अषाढ मास

आसंक (आशङ्क) आचको

आल्हाअ (अह्लाद) आह्लाद-आनंद

आहार (आचार) आचार

आहार (आहार) आहार-खावानुं

ब्राह्मणोवडे चौद विद्याओ
शीखाय छे
महिनामां त्रीश दिवस
होय छे
पांच माणसोमां परमेश्वर
वसे छे
तेणे गुरुने पन्नर प्रश्नो
पूछ्या
तमे अठ्योतेर ब्राह्मणोने
धन आप्युं
में नव्वाणु मुनिओने वंदन
कर्युं

ते आचार्यने छप्पन शिष्यो
छे, पण तेमां एक के
बे ज सारा छे

चंद्र सोळ कळाओवडे
शोभे छे

पूर्वे पुरुषो बोंतेर कळा
शीखता हता अने स्त्रीओ
चोसठ कळा शीखती हती

हमणां श्रावक अने साधु
बार अंगोने भणे छे

धणस्स कोडीए वि न
संतोसो होइ
तस्स घरे पोत्थयाण सत्तरं
दीसइ
सयेण दुसय विढविज्जइ
एगो हं नत्थि मे कोवि
सव्वे संतु निरामया
सव्वे सुहिणो होंतु
सव्वे भद्दाइ पासंतु
न होत्था को वि दुहिओ

पंचण्हं वयाणं पढम वयं
(व्रतम्) पसंसिज्जइ
चत्तारो कसाया दुक्खाइ
देंति
दस बाला निसाए पढंति
बारह इत्थीओ वत्थाइ
निक्खारंति
अट्ठारस जणा छत्तीसाहितो
चोरेहिंतो न बीहेंति

छासीइ (षडशीति) छाशी
सत्तासीइ (सप्ताशीति) सत्याशी
अट्ठासीइ (अष्टाशीति) अठ्याशी
नवासीइ (नवाशीति) नेवाशी
एगूणनवइ (एकोननवति) ,,
नवइ (नवति) नेवु

एगणवइ
इगणवइ
एगाणवइ
(एकनवति) एकाणु

बाणवइ (द्विनवति) बाणु
तेणवइ (त्रिनवति) त्राणु

चउणवइ
चोणवइ
(चतुर्नवति) चोराणु

पण्णणवइ
पञ्चणवइ
पञ्चाणवइ
(पञ्चनवति) पचाणु

छण्णवइ (षण्णवति) छन्नुं

सत्तणवइ
सत्ताणवइ
(सप्तनवति) सत्ताणु

अट्ठणवइ
अट्ठाणवइ
अडणवइ
(अष्टनवति) अट्ठाणु

णवणवइ
नवणवइ
(नवनवति) नव्वाणु

एगूणसय (एकोनशत) ,,
सय (शत) सो

दुसय
बिसय
(द्विशत) बसो

बे सयाइं (द्वे शते) बसो
तिसय (त्रिशत) त्रणसो
तिण्णि सयाइ (त्रीणि शतानि) त्रणसें
चत्तारि सयाइ (चत्वारि शतानि) चारसें इत्यादि
सहस्स (सहस्र) हजार

दससहस्स
दहसहस्स
(दशसहस्र) दस हजार

अयुत
अयुअ
(अयुत) ,,

लक्ख (लक्ष) लाख

दसलक्ख
दहलक्ख
(दशलक्ष) दसलाख

पयुअ
पयुत
(प्रयुत) दस लाख

कोडि (कोटि) क्रोड
कोडाकोडी (कोटाकोटि) क्रोडानुक्रोड

अट्ठावन्ना
अडवन्ना } (अष्टपञ्चाशत्) अट्ठावन
अट्ठपण्णासा

एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि) ओगणसाठ

सट्ठि (षष्टि) साठ

एगसट्ठि
इगसट्ठि } (एकषष्टि) एकसठ

बासट्ठि (द्विषष्टि) बासठ

तेसट्ठि (त्रिषष्टि) त्रेसठ

चउसट्ठि
चोसट्ठि } (चतुष्षष्टि) चोसठ

पणसट्ठि (पञ्चषष्टि) पासठ

छासट्ठि (षट्षष्टि) छासठ

सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि) सडसठ

अट्ठसट्ठि
अडसट्ठि } (अष्टषष्टि) अडसठ

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति) ओगणोसित्तेर

सत्तरि
हत्तरि } (सप्तति) शित्तेर

एगसत्तरि
एगहत्तरि
इक्कसत्तरि
इक्कहत्तरि } (एकसप्तति) एकोतेर

बिसत्तरि
बासत्तरि
बिहत्तरि
बाहत्तरि
बावत्तरि } (द्विसप्तति) बोंतेर

तिसत्तरि
तिहत्तरि } (त्रिसप्तति) तोंतेर

चोसत्तरि
चोहत्तरि
चउसत्तरि
चउहत्तरि } (चतुस्सप्तति) चूमोतेर

पण्णसत्तरि
पणहत्तुरि } (पञ्चसप्तति) पचोतेर

छसत्तरि
छहत्तरि } (षट्सप्तति) छोंतेर

सत्तसत्तरि
सत्तहत्तरि } (सप्तसप्तति) सत्योतेर

अट्ठसत्तरि
अट्ठहत्तरि } (अष्टसप्तति) अठ्योतेर

एगूणासीइ (एकोनाशीति) ओगण्याएंशी–अगण्याएशी

असीइ (अशीति) एशी

एगासीइ (एकाशीति) एकाशी

बासीइ (द्व्यशीति) बाशी

तेसिइ (त्र्यशीति) त्राशी–त्र्याशी

चउरासीइ
चारासीइ } (चतुरशीति) चोर्याशी

पणसीइ
पञ्चासीइ } (पञ्चाशीति) पंचाशी

छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) छत्रीश

सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) साडत्रीश

अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्) आडत्रीश

एगुणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्) ओगणचालीश

चत्तालीसा (चत्वारिंशत्) चाळीश

एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्) एकताळीश

बेचत्तालिसा, बेआलिसा, बेआला, दुचत्तालिसा (द्विचत्वारिंशत्) बेंताळीश

तिचत्तालिसा, तेआलिसा, तेआला (त्रिचत्वारिंशत्) त्रेंताळीश—तेंताळीश

चउचत्तालिसा, चाआलिआ, चोआला, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्) चुमाळीश—चुआळीश

पणचत्तालिसा, पणयाला (पञ्चचत्वारिंशत्) पिस्ताळीश

छचत्तालिसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्) छेंताळीश

सत्तचत्तालिसा, सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्) सुडताळीस

अट्ठचत्तालिसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्) अडताळीस

एगूणपण्णासा (एकोनपञ्चाशत्) ओगणपचास

पण्णासा, पण्णास, पञ्चासा (पञ्चाशत्) पचास

एगपण्णासा, इक्कपण्णासा, एक्कपण्णासा, एगावण्णा (एकपञ्चाशत्) एकावन

दुप्पपण्णासा, बावण्णा (द्विपञ्चाशत्) बावन

तेवण्णा, तिपण्णासा (त्रिपञ्चाशत्) त्रेपन

चोवण्णा, चउपण्णासा (चतुष्पञ्चाशत्) चोपन

पणपण्णा, पणपण्णासा, पचावण्णा (पञ्चपञ्चाशत्) पचावन

छप्पण्णा, छप्पण्णासा (षट्पञ्चाशत्) छप्पन

सत्तावन्ना, सत्तपण्णासा (सप्तपञ्चाशत्) सत्तावन

पण्णरस } (पञ्चदश) पन्नर

सोलस } (षट्+दश-षोडश) सोळ
सालह

सत्तरस } (सप्तदश) सत्तर
सत्तरह

अट्ठारस } (अष्टादश) अढार
अट्ठारह

कइ (कति)

प० बी० } कई (कति)

च० छ० } कइण्ह, कइण्ह (कतीनाम्)

बाकी बधां 'रिसि'ना बहुवचनी रूपो जेवां जाणवां.

नीचे जणावेला शब्दोमां जेओ आकारांत छे तेमनां रूपो 'वाया'नी जेवां जाणवानां छे अने जे शब्दो इकारांत छे तेमनां रूपो 'गति'नी जेवां समजवानां छे.

एगूणवीसा (एकोनविंशति) ओगणीश

वीसा (विंशति) वीश

एगवीसा } (एकविंशति) एकवीश
इक्कवीसा
एक्कवीसा

बावीसा (द्वाविंशति) बावीश

तेवीसा(त्रयोविंशति)तेवीश-त्रेवीश

चउवीसा } (चतुर्विंशति) चोवीश
चावीसा

पणवीसा (पञ्चविंशति) पच्चीश-पचवीश

छव्वीसा (षड्विंशति) छव्वीश

सत्तावीसा (सप्तविंशति) सत्तावीश

अट्ठावीसा } (अष्टाविंशति) अठ्यावीश
अट्ठवीसा
अडवीसा

एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) ओगणत्रीश

तीसा (त्रिंशत्) त्रीश

एगतीसा } (एकत्रिंशत्) एकत्रीश
एक्कतीसा
इक्कतीसा

बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) बत्रीश

तेत्तीसा } (त्रयस्त्रिंशत्) तेत्रीश
तित्तीसा

चउत्तीसा } (चतुस्त्रिंशत्) चोत्रीश
चोत्तीसा

पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) पांत्रीश

त० चउहि, चउहिं, चउहिँ (चतुर्भिः)
चउहि, चउहिं, चउहिँ

च० छ०— चउण्ह, चउण्ह (चतुर्णाम्)

शेष बहुवचनी रूपो 'भाणु'नां बहुवचनी रूपो जेवां छे.

पंच (पञ्च) त्रणे लिंगनां रूपो

प० बी०—पच (पञ्च)

त०— पचेहि, पचेहिं, पंचेहिँ (पञ्चभिः)
पचहि, पचहिं, पचहिँ

च० छ०—पचण्ह, पचण्ह, (पञ्चानाम्)

स०— पंचसु, पचसु (पञ्चसु)

शेष बहुवचनी रूपो 'जिण'नां बहुवचनी रूपो जेवां छे.

आ रीते आ नीचे आपेला बीजा बधा शब्दोनां रूपो जाणवानां छे:

छ (षट्) छ
सत्त (सप्तन्) सात
अट्ठ (अष्टन्) आठ
नव (नवन्) नव
दस, दह (दशन्) दश
एआरह, एगारह, एआरस (एकादश)

दुवालस, बारह, बारस
तेरह, तेरस (त्रयोदश) तेर
चउद्दस, चउद्दह, चोद्दस, चोद्दह (चतुर्दश) चौद

उभासुतो, उभेसुतो (उभेषु)
स०— उभेसु, उभेसु

दु (द्वि) त्रणे लिंगनां रूपो

प०— दुवे, दोण्णि } वेण्णि } दो, वे, बे (द्वौ)
दुण्णि } विण्णि } (द्वे)

बी०— ,, ,, ,, ,, ,, ,,
,, ,,

त०— दोहि, दोहिं, दोहिँ (द्वाभ्याम्)
वेहि, वेहिं, वेहिँ

च० छ०— दोण्ह, दोण्ह, दुण्ह (द्वयोः द्वीनाम् ?)
वेण्ह, वेण्ह, विण्ह, विण्हं

प०— दुत्तो, दुतो, दोओ, दोउ (द्वितः)
दोहिंतो, दोसुंतो (द्वाभ्याम्)
(द्वयोः द्विषु ?)

स०— दोसु, दोसु
वेसु, वेसु

ति (त्रि) त्रणे लिंगनां रूपो

प० } तिण्णि (त्रीणि)
बी० }

च० छ० तिण्ह, तिण्ह (त्रयाणाम्, त्रीणाम् ?)

शेष बहुवचनी रूपो 'रिसि'नां बहुवचनी रूपो जेवां छे.

चउ (चतुर्) त्रणे लिंगनां रूपो

प० बी० चत्तारो चउरो, चत्तारि (चत्वारः चतुरः, चत्वारि)

पाठ २२ मो

संख्यावाचक शब्दो

विशेषताः—

अट्ठारस (अष्टादश) सुधीना संख्यावाचक शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां 'ण्ह' अने 'ण्हं' प्रत्यय लागे छेः

एगण्ह, एगण्हं { एकेषाम्, एकानाम् ? }

दुण्ह, दुण्ह, (द्वयोः) उभयण्ह, उभयण्ह { उभयेषाम्, उभयानाम् ? } वगेरे

एग, एक्क, इक्क, एअ (एक)

आ शब्दनां पुंलिंगी रूपो 'सव्व'नी जेवां थाय छे. स्त्रीलिंगी रूपो 'माला'नी जेवां थाय छे अने नपुंसकलिंगी रूपो नपुंसक 'सव्व'नी जेवां थाय छे.

उभ, उह (उभ)

प०—	उभे	(उभे)
बी०—	उभे	(उभान्)
	उभा	
त०—	उभेहि	(उभेभिः, उभैः)
	उभेहिं	
	उभेहिँ	
च० छ०—	उभण्ह, उभण्हं	(उभेषाम्, उभानाम् ?)
पं०—	उभत्तो, उभतो, उभओ उभाओ, उभाउ	(उभत)
	उभाहि, उभेहि	
	उभाहिंतो, उभेहिंतो	(उभेभ्यः)

मूरख माणस लपलप करे छे
राजा हसीने लोकोने नम्यो
हुं पापोने रोकवा माटे
उतावळो थयो
महावीरने जोवा माटे लोको-
वडे दोडाय छे
भोगो भोगवी भोगवीने
तेओवडे खेद पमाय छे
तत्त्वने जाणीने, विद्वान-
वडे मुक्त थवाय छे

प्रह्लाद कुमार प्रजानां दुःखोने
समजीने तेनो सेवक थयो
जगतमां वधुं हसवा जेवुं
देखाय छे अने रोवा जेवुं
पण देखाय छे
पुण्य एकठुं करवा योग्य
अने पाप वाळवा योग्य छे
ते भणतो भणतो ऊंघे छे
भणातो पाठ तेनावडे संभ-
ळाय छे

सज्जणो सत्थवयणं सोच्चा
सद्दहइ
मणूसा पुण्णं किच्चा देवा
होंति
पावं परिच्चज्ज साहूहिं सव्वं
कीरइ
इंदो महावीरं वंदित्ता थुणइ
अवस्सं वोत्तव्वं वयंति
महाणुभावा

दट्ठव्वं पासंति देक्खिरा
नरा
नविरो वालो पियरं पणमइ
पायगेण ईसिं अन्नं पयिज्जइ
एगया एव मए सुयं जं
महावीरेण एवं कहिअं
एयाणं पालणेण पावं विणट्ठं,
पुण्णं च जायं

परंतवो (परंतपः) शत्रुने तपावनार-प्रतापी
लेहओ (लेखक) लखनार वगेरे

केटलांक अव्ययो

अग्गे (अग्रे) आघे-आगळ
अकट्टु (अकृत्वा) नहि करीने
अईव } अतीव } (अतीव) अतीव-विशेष
अग्गओ (अग्रत.) आगळथी
अओ } अतो } (अत) आथी-एथी
अण्णमण्ण (अन्योऽन्यम्) अन्योअन्य-एक बीजाने
अत्थ (अस्तम्) आथमवुं
अत्थु (अस्तु) थाओ
अद्धा (अद्धा) समय
अण (नञ्-अन) निषेध-विपरीत
अण्णहा (अन्यथा) तेम नहि तो
अणंतरं (अनन्तरम्) अंतर विना, तुरत
अदुवा } अदुव } (अथवा) अथवा
अहुणा (अधुना) हमणा
अप्पेव (अप्येव) सशय
अभितो (अभितः) चारे बाजु
अम्मो आश्चर्य
अलं (अलम्) सर्यु-निषेध पूरतु
अवस्सं (अवश्यम) अवश्य
असइं (असकृत्) अनेकवार
उप्पिं } अवरिं } उवरि } (उपरि) उपर
अहत्ता (अधस्तात्) नीचे
आहच्च (आहत्य) बलात्कार
इओ } इतो } (इत) आ तरफ, वाक्यारभ
इहरा (इतरथा) एम नथी-अन्यथा
ईसिं (ईषत्) थोडु
उत्तरसुवे (उत्तरश्व) आवती काल पछी
एगया (एकदा) एकवार-एक दिवसे
एगततो (एकान्तत.) एक तरफी
एत्थ (अत्र) अही
कल्लं (कल्यम्) काले
कह } कहं } (कथम्) केम, केवी रीते
कालओ (कालतः) काले करीने, वखते
केवच्चिरं (कियच्चिरम्) केटला लांबा समय सुधी
केवच्चिरेण (कियच्चिरेण) केटला लांबा समये

कर्तृदर्शक कृदंत

मूळ धातुने 'इर' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं कर्तृदर्शक कृदंत बने छे,

हस+इर-हसिरो (हसनशीलः) हसनारो
नव+इर-नविरो (नम्रः-नमनशीलः) नमनारो
हसाव+इर-हसाविरो (हासनशीलः) हसावनारो
हसिरा, हसिरी (हसनशीला) हसनारी
नविरा, नविरी वगेरे, (नम्रा-नमनशीला) नमनारी

अनियमित कर्तृदर्शक कृदंतो

पायगो, पायआ (पाचकः) पाक करनार-रांधनार
नायगो, नायआ (नायक) नायक-नेता-दोरनार
नेआ, नेता — नेता " " "
विज्जं (विद्वान्) विद्वान्
कत्ता (कर्ता) कर्ता-करनार
विकत्ता (विकर्ता) विकार करनार
वत्ता (वक्ता) वक्ता-बोलनार
हता (हन्ता) हणनार
छेत्ता (छेत्ता) छेदनार
भेत्ता (भेत्ता) भेदनार
कुंभआरो (कुम्भकार) कुभ करनार-कुभार
कम्मगरो (कर्मकरः) कर्म-काम-करनार-कामगरो
भारहरो (भारहरः) भार लई जनार
थणंधयो (स्तनधय) धावनार बाळक

आणत्त (आज्ञप्तम्) आज्ञा करेलु, आज्ञा

संखय (संस्कृतम्) संस्कारेलु,

आकुट्ठ (आक्रुष्टम्) आक्रोश करेलु, आक्रोश

विणट्ठ (विनष्टम्) विनष्ट, विनाश

पणट्ठ (प्रणष्टम्) प्रनष्ट, नाश

मट्ठं (मृष्टम्) शुद्ध, शोधन

हय (हतम्) हणेलु–हणाएलु, हणवु

जाय (जातम्) जायेलु–थएलु, जणवु

गिलाण } (ग्लानम्) ग्लान थएलु,
गिलानं } ग्लान थवु

परूविअं (प्ररूपितम्) प्ररूपेलु, जणावेलु, प्ररूपवु

ठिय (स्थितम्) स्थित, स्थान

पिहिय (पिहितम्) ढांकेलु, ढांकवु

पन्नत्त } (प्रज्ञप्तम्) प्रज्ञापेलु,
पण्णत्तं } प्रज्ञापवु

पन्नविय (प्रज्ञपितम्) ,,

सक्कय (संस्कृतम्) संस्कृत

किलिट्ठ (क्लिष्टम्) क्लेशवालु, क्लिष्ट

सुय (स्मृतम्) समरेलु, याद करेलु

सुय (श्रुतम्) सांभळेलु, सांभळवु

संसट्ठ (संसृष्टम्) संसर्गवालु, संसर्ग

घट्ठ (घृष्टम्) घसेलु, घसवु वगेरे

उच्चारणना भेदथी नीपजेलां आवां अनेक रूपोनी साधनिका, वर्णविकारना नियमोद्वारा समजी लेवानी छे.

भविष्यकृदन्त

मूळ धातुने इस्संत, इस्समाण अने इस्सई प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं भविष्यत्कृदंत बने छेः

करिस्संतो (करिष्यन्) करतो होईश
करिस्समाणो (करिष्यमाणः) ,,
करिस्सन्ती (करिष्यन्ती) करती होईश
करिस्सई ,, ,,
कराविस्समाणो (कारापयिष्यमाणः)
कराविस्संतो (कारापयिष्यन्) करावतो होईश

इत्यादि

प्रेरक–

करावितो (कारापित) } करावापलो-करावेलो
कारिओ (कारितः) }

अनियमित भूतकृदन्त[८४]

गयं (गतम्) गयेलु, जवु,
मयं (मतम्) मानेलु, मानवु, मत
कडं (कृतम्) करेलुं, करवु
हडं (हृतम्) हरेलु, हरवु
मडं (मृतम्) मरेलुं, मरवु
जिअं (जितम्) जितेलु, जितवु
तत्तं (तप्तम्) तपेलु, तपवु
कय (कृतम्) करेलु, करवु

दट्ठ (दृष्टम्) दीठु–देखेलु, देखवु
मिलाणं } (म्लानम्) म्लान
मिलान } थएलु–करमाएलु, म्लान थवु
अक्खाय (आख्यातम्) कहेलु, कहे
निहियं (निहितम्) निहित-स्थापेलु, स्थाप

---

८७ आ कृदतो अने बीजा कृदतो पण [पानु २०५–२११ विभक्तिवाळां जणावेला छे ते उपरथी तेमना मूळ शब्दो विद्यार्थीओ जाते शोधी लेवा. जेमके:—

विभक्तिवाळु–	मूळ शब्द–
गय	गय
मड	मड
दट्ठ	दट्ठ
पायगो	पायग
लेहओ	लेहअ
हसिरो	हसिर
कज्ज	कज्ज
भिच्चो	भिच्च
हसेतव्व	हसेतव्व वगेरे

भणावीअमाणो
भणाविज्जंती साहुणी (भणाप्यमाना साध्वी)
भणाविज्जमाणा   भणावाती साध्वी
भणावीअंती
भणावीअमाणा
भणाविज्जई
भणावीअई   इत्यादि

ए ज प्रमाणे—

सुस्सूसंतो (शुश्रूषन्)   चंकमंतो (चङ्क्रमन्)
सुस्सूसमाणो (शुश्रूषमाणः) चंकममाणो (चङ्क्रममाणः)

सुस्सूसिज्जंतो सुस्सूसिज्जमाणो सुस्सूसीअंतो सुस्सूसीअमाणो	(शुश्रूष्यमाणः)	चंकमिज्जंतो चंकमिज्जमाणो चंकमीअंतो चंकमीअमाणो	(चङ्क्रम्यमाणः)

आ बधा रूपो जाणी लेवां.

भूतकृदन्त

मूळ धातुने 'त' के 'अ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं भूतकृदंत बने छे.

ए बन्ने प्रत्ययो लागतां पूर्वना 'अ'नो 'इ' थाय छे.

गम् + अ + त—गमितो } (गतः) गयेलो
गम् + अ + अ—गमिओ }

भावे—

गमितं, गमिअं (गतम्) जवुं-गति

कर्मणि—

गमितो गामो } (गतो ग्रामः) जवायलुं गाम
गमिओ गामो }

कर्तरि प्रेरक वर्तमान कृदन्त—

करावि+अ+न्त—करावंतो, करावेंतो (कारापयन्) करावतो
कार +न्त— कारंतो, कारेंतो (कारयन्) ,,
करावि+अ+माण—करावमाणो, करावेमाणो (कारापयमानः) ,,
कार + माण— कारमाणो, कारेमाणो (कारयमाणः) ,,

सादुं भावे वर्तमान कृदंत—

भण्+इज्ज+न्त—भणिज्जंतं
,, + ,, +माण—भणिज्जमाणं
भण्+ईअ +न्त—भणीअंतं
,, + ,, +माण—भणीअमाणं
} (भण्यमानम्) भणातुं— भणवामां आवतुं

सादुं कर्मणि वर्तमान कृदन्त—

भणीअंतो, भणिज्जंतो गंथो (भण्यमानः ग्रन्थः) भणातो ग्रंथ
भणीअमाणो भणिज्जमाणो सिलोगो (भण्यमानः श्लोकः),, श्लोक
भणिज्जंती, भणीअंती गाहा (भण्यमाना गाथा) भणाती गाथा
भणिज्जमाणी, भणीअमाणी पंती (भण्यमाना पङ्क्तिः),, पंक्ति
भणिज्जई, भणीअई

प्रेरक भावे

भणाविज्जंतं (भणाप्यमानम्) भणावातुं—
भणाववामां आवतुं

भणावीअंतं वगेरे

प्रेरक कर्मणि

भणाविज्जंतो मुणी (भणाप्यमानः मुनिः)
भणावातो मुनि

भणाविज्जमाणो
भणावीअंतो

होअत, होएंतं, होइन (भवन्) थतुं
हौंतं हुंत
होअती, होएंती, होइंती (भवन्ती) थती
होअता, होएंता, होइंता (भवन्ती) ,,
होंती, होंता
हुती, हुता

माण-

भण्+माण— भणमाणो, भणेमाणो (भणमानः) भणतो
भणमाण, भणेमाण (भणमानम्) भणतुं
भणमाणी भणेमाणी (भणमाना) भणती
भणमाणा, भणेमाणा
हो+अ+माण—होअमाणो, होएमाणो (भवमान) थतो
होमाणो
होअमाण, होएमाण (भवमानम्) थतुं
होमाण
होअमाणी, होएमाणी (भवमाना) थती
होअमाणा, होएमाणा
होमाणा, होमाणी

ई-

भण् + ई— भणई, भणेई (भणन्ती) भणती
हो +अ+ई होअई, होएई (भवन्ती) थती
होई

ए ज प्रमाणे कर्तरि प्रेरक अंग, सादुं भावे अंग, सादुं कर्मणि अंग अने प्रेरक भावे तथा कर्मणिअंगने पण उक्त त्रणे प्रत्ययो लगाडवाथी तेमनां वर्तमान कृदंतो बने छे.

कातव्वं कायव्वं काअव्वं	}	(कर्तव्यम्) कर्तव्य- करवा जेवु

भोत्तव्वं (भोक्तव्यम्) भोजन करवा जेवु, भोगववा जेवुं

मोत्तव्व (मोक्तव्यम्) मूकवा जेवु

दठ्ठव्वं (द्रष्टव्यम्) देखवा जेवु

वर्तमान कृदन्त

मूळ धातुने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं वर्तमान कृदन्त बने छे.

'ई' प्रत्यय तो फक्त स्त्रीलिंगमा ज वपराय छे.

'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लागतां पूर्वना 'अ'नो विकल्पे 'ए' थाय छे.

न्त—

भण् + न्त—	भणंतो,	भणेंतो,	भणितो	(भणन्)	भणतो
	भणत,	भणेंतं	भणितं	(भणत्)	भणतुं
	भणती,	भणेंती,	भणिती,	(भणन्ती)	भणती
	भणंता,	भणेंता,	भणिता,[८६]	(भणन्ती)	,,
हो+अ+न्त—	होअंतो,	होअतो,	होइतो,	(भवन्)	थतो
	होंतो	हुंतो			

---

८६ कोइ पण विशेषणदर्शक नामना अंत्य 'अ'नो वाराफरती 'ई' अने 'आ' करवाथी ते नाम स्त्रीलिंगी थाय छे:—

भणन्— भणत— भणता, भणती

नील— नील— नीला, नीली

सर्व— सव्व— सव्वा, सव्वी

शूर्पणख— सुप्पणह—सुप्पणहा, सुप्पणही

साधन— साहण— साहणा, साहणी

अणीअ, अणिज्ज–

हस् + अणीअ — { हसणीअं, हसणिज्जं { हसणीयं } (हसनीयम्) हसवा जेवुं, हसवु जोईए

प्रेरक विध्यर्थ कृदंत

हसावि + तव्व — { हसावितव्व, हसाविअव्वं, हसावियव्वं } (हसापयितव्यम्) हसाववा जेवुं, हसाववुं जोईए

हसावि + अणीअ – { हसावणीअ, हसावणिज्ज, हसावणीय } (हसापनीयम्)

ए ज प्रमाणे वयणीयं, वयणिज्जं. करणीयं, करणिज्जं गुम्नूसितव्वं, चंकमितव्वं, सुस्सूसणिज्जं, सुस्सूसणीयं वगेरे रूपो समजी लेवानां छे.

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

कज्जं (कार्यम्) करवा योग्य

किच्चं (कृत्यम्) कृत्य

गेज्झं (ग्राह्यम्) ग्रहण करवा योग्य

गुज्झं (गुह्यम्) छूपाववा योग्य, गुज्झ

वज्जं (वर्ज्यम्) वर्जवा योग्य

वज्जं (वद्यम्) बोलवा योग्य

अवज्जं (अवद्यम्) नहि बोलवा योग्य–पाप

वच्चं (वाच्यम्) बोलवा योग्य

वक्कं (वाक्यम्) कहेवा योग्य–वाक्य

जन्नं (जन्यम्) जणवा योग्य

भिच्चो (भृत्य) पाळवा योग्य–भृत्य-नोकर

भज्जा (भार्या) भरण पोषण योग्य–भारजा

अज्जो (अर्यः) अर्य–वैश्य, स्वामी

अज्जो (आर्यः) आर्य

पच्चं (पाच्यम्) पचवा–रांधवा–योग्य

भव्वं (भव्यम्) थवा योग्य–ठीक

घेत्तव्वं (ग्रहीतव्यम्) ग्रहण करवा जेवुं

वोत्तव्वं (वक्तव्यम्) कहेवा जेवुं

रोत्तव्वं (रुदितव्यम्) रोवु–रुदन

अभिभूय (अभिभूय) अभिभव करीने
पडिबुज्झ (प्रतिबुध्य) समजीने

उच्चारणना भेदथी नीपजेलां आ बधां अनियमित रूपोनी साधनिका, सामे जणावेलां संस्कृत रूपोद्वारा ज समजी शकाय एम छे. आ उपरांत बीजां घणां य अनियमित रूपो छे तेमनी पण साधनिका, आ रूपोनी पेठे ज छे माटे ए बधां रूपो नथी जणाव्यां.

विध्यर्थ कृदन्त

मूळ धातुने तव्व, अणीअ के अणिज्ज प्रत्यय लगाडवाथी विध्यर्थ कृदंत बने छे.

'तव्व'नी पूर्वना 'अ'नो 'इ' के 'ए' थाय छे.

तव्व–

हस् + तव्व— { हसितव्वं, हसेतव्वं / हसिअव्वं, हसेअव्वं } (हसितव्यम्) हसवा जेवुं, हसवुं जोईए

हो + तव्व— { होइतव्वं, होएतव्वं / होइअव्वं, होएअव्वं / होतव्वं, होयव्वं / होअव्वं } (भवितव्यम्) थवा योग्य, थवुं जोईए

ना + तव्व – नातव्वं, नायव्वं (ज्ञातव्यम्) जाणवा योग्य, जाणवुं जोईए

चिव्व + तव्व { चिव्वितव्वं, चिव्वेतव्वं / चिव्विअव्वं, चिव्वेअव्वं } (चेतव्यम्) एकठुं करवा योग्य, एकठुं थवुं जोईए

'तुं' अने 'त्तए' प्रत्यय लागतां पूर्वना 'अ'नो 'इ' के
थाय छे.

तुं–

भण् + तु— { भणितु[85] भणेतु / भणिउ, भणेउं } (भणितुम्) भणवा

हो + तुं— { होतु, होइउं / होउ, होएउ } (भवितुम्) थवा

प्रेरक हेत्वर्थ कृदन्त

[मूळ धातुनुं प्रेरक अंग करवा माटे जुओ पाठ १८मो]

भण्-भणावि+तुं- { भणावितुं / भणाविउ } (भणापयितुम्)भणाव

त्तए—

कर् + त्तए—करित्तए, करेत्तए (कर्तवे-कर्तुम्) करव

गम् + त्तए—गमित्तए, गमेत्तए (गन्तवे-गन्तुम्) गमन
माटे-ज

आहर् + त्तए—आहरित्तए, आहरेत्तए (आहर्तवे-आ
आहार करव

दल्+त्तए—दलइत्तए, दलएत्तए (दातवे—दातुम्) देव

---

८५ व्यंजनांत धातुने छेडे 'अ' लागे छे अने स्वरांत छेडे 'अ' विकल्पे लागे छे ए साधारण नियम छे.

भण् + तु – भण + तु – भणितु, भणेतु
हो + तु – होअ + तुं – होइतु, होएतु
हो + तु – होतु

अनियमित हेत्वर्थ [illegible]

कर् + तुं- { कातुं, काउं, कट्टु (कर्तुम) [illegible]

गेण्ह + तुं-घेत्तुं (ग्रहीतुम) ग्रहण [illegible]

दरिस् + तुं-दट्ठुं (द्रष्टुम्) [illegible]

भुज् + तुं-भोत्तुं (भोक्तुम्) [illegible] माटे

मुच् + तु-मोत्तुं (मोक्तुं) छूटवा माटे-[illegible] माटे

रुद् + तु-रोत्तुं (रोदितुम्) रोवा माटे

वच् + तुं-वोत्तुं (वक्तुम्) बोलवा माटे

लह + तुं-लद्धुं (लब्धुम्) लेवा माटे

रुध् + तुं-रोद्धुं (रोद्धुम्) रोध करवा माटे-रोकवा माटे

[भण्] + तु — { भणितु, भणेतु / भणिउ, भणेउ } (भणितुम्) भणवा माटे

[हो] + तुं — { होतुं, होइउं / होउ, होएउ } (भवितुम्) थवा माटे

प्रेरक हेत्वर्थ कृदन्त

[मूळ धातुनुं प्रेरक अंग करवा माटे जुओ पाठ १८मो]

भण्-भणावि+तुं- { भणावितुं / भणाविउ } (भणापयितुम्) भणाववा माटे

त्तए—

कर् + त्तए—करित्तए, करेत्तए (कर्तवे-कर्तुम्) करवा माटे

गम् + त्तए—गमित्तए, गमेत्तए (गन्तवे-गन्तुम्) गमन करवा माटे-जवा माटे

आहर् + त्तए—आहरित्तए, आहरेत्तए (आहर्तवे-आहर्तुम्) आहार करवा माटे

दल्+त्तए—दलइत्तए, दलएत्तए (दातवे—दातुम्) देवा माटे

---

८५ व्यंजनांत धातुने छेडे 'अ' लागे छे अने स्वरांत धातुने छेडे 'अ' विकल्पे लागे छे ए साधारण नियम छे.

भण् + तु – भण + तु – भणितु, भणेतु

हो + तु – होअ + तुं – होइतु, होएतु

हो + तु – होतु

[illegible]	[illegible]
[illegible] सुणइ	[illegible]
[illegible] सुणावि [illegible]	[illegible] कोई [illegible]
दीप पड्या मन [illegible]	[illegible]
महयावो [illegible] शुश्रूषति	[illegible] दीसइ [illegible]
अतिथपण अत्थो चिम्मइ	न दीसइ आइरिसो को वि

पाठ २१ मो

केटलांक नामधातुओ

संस्कृतमां प्रेरक प्रक्रिया उपरांत बीजी पण अनेक प्रक्रियाओ छे. तेवी के–सन्नंत, यङंत, यङ्लुगंत अने नामधातुप्रक्रिया. परंतु प्राकृतमां ए माटे खास कांइ विशेष विधान नथी. आर्षप्राकृतमां ए प्रक्रियाओना रूपाख्यानो वपराएला मळे छे, ते बधाने वर्णविकार तथा उच्चारणभेदना नियमोद्वारा साधित करवाना छे.

सन्नंत–सुस्सूसइ (शुश्रूषति) सांभळवाने इच्छे छे, शुश्रूषा-सेवा-करे छे.

वीमंसा (मीमांसा) विचार करवो

यङन्त–लालप्पइ (लालप्यते) लपलप करे छे–बोल बोल करे छे

यङ्लुगंत–चंकमइ (चङ्क्रमीति) चंक्रमण करे छे–फर्या करे छे

चंकमणं (चङ्क्रमणम्) चंक्रमण–फर फर करवुं

त+पत्तिअ=तेत्तिअं
त+पत्तिल=तेत्तिलं } (तावत्) तेटलु
त+पद्दह=तेद्दहं

क+पत्तिअ=केत्तिअं
क+पत्तिल=केत्तिल } (कियत्) केटलु
क+पद्दह=केद्दहं

पत+पत्तिअ=पत्तिअं
पत+पत्तिल=पत्तिलं } (पतावत्) पटलुं
पत+पद्दह=पद्दहं (इयत्)

पर+क= { परक्कं / पारक्कं } (परकीयम्) पारकुं

राय+क्क=रायक्कं (राजकीयम्) रायकुं-राजानुं

अम्ह+पच्चय=अम्हेच्चयं (असदीयम्) अमारु-आमचा

तुम्ह+पच्चय=तुम्हेच्चय (युष्मदीयम्) तमारुं-तुमचा

सव्वंग+इअ+सव्वंगिओ (सर्वाङ्गीणम्) सर्व अंगमां व्यापेलुं

पह+इअ=पहिओ (पथिक) पथिक

अप्प+णय=अप्पणयं (आत्मीयम्) आपणुं

केटलांक वैकल्पिक रूपो

नव+ल्ल=नवल्लो, नवो (नवक.) नवलुं, नवुं

पक्क+ल्ल=पकल्लो, पक्को (एककः) एकलुं

मनाक्+अय=मणयं (मनाक्) मणा-खामी

,, +इयं=मणियं, ,, ,, ,,

मिस्स+आलिअ=मीसालिअं, मीसं (मिश्रम्) मिश्र-मेळेलु

दीघ+र=दीघरं, दीघं, दिग्घ (दीर्घम्) दीर्घ-लांबुं

विज्जु+ल=विज्जुला (विद्युत्) विजळी

पत्त+ल=पत्तलं, पत्तं (पत्रम्) पातळुं

पीत+ल=पीअलं, पीतलं, पीवलं, पीअं (पीतम्) पीळुं

अन्ध+ल=अंधळो (अन्धः) आंधळो

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

७ 'त्तो' प्रत्यय पंचमीना अर्थने सूचवे छे:

अन्न+त्तो=अन्नत्तो	(अन्यत:)	[illegible], [illegible]
कु+त्तो=कुत्तो	(कुत:)	क्यांथी, शाथी
ज+त्तो=जत्तो	(यत:)	ज्यांथी, जेथी
त+त्तो=तत्तो	(तत:)	त्यांथी, तेथी
इ+त्तो=इत्तो	(इत:)	अहींथी, आथी

८ 'हि' 'ह' अने 'त्थ' प्रत्यय सप्तमीना अर्थने सूचवे छे:

ज+हि=जहि	(यत्र)	जहि–ज्यां
ज+ह=जह	,,	,, ,,
ज+त्थ=जत्थ	(यत्र)	,, ,,
त+हि=तहि	(तत्र)	तहि–त्यां
त+ह=तह	,,	,, ,,
त+त्थ=तत्थ	,,	,, ,,
क+हि=कहि	(कुत्र)	कहि–क्यां
क+ह=कह	,,	,, ,,
क+त्थ=कत्थ	(कुत्र)	,, ,,

९ 'तेनुं तेल' एवा अर्थने सूचववा 'एल्ल' (तैल[83]) प्रत्यय वपराय छे:

---

८३ दीपस्य तैलम्—दीपतैलम् ए शब्दमांनो 'तैल' शब्द ज कोई काळे पोतानुं व्यक्तित्व खोई प्रत्ययरूपे थएलो छे. माटे ज भाषामां 'धूपेल तेल' शब्दनो व्यवहार प्रचलित छे.

पीण+इमा=पीणिमा (पीनिमा पीनत्वम्) [illegible]

देव+त्तं=देवत्तं (देवत्वम्) देवपणुं

बाल+त्तण=बालत्तण (बालत्वम्) बाळपणुं

५ 'वार' अर्थने बताववा 'हुत्तं' अने 'खुत्तो' प्रत्ययनो [illegible]

एग+हुत्तं=एगहुत्तं (एककृत्व-एकवारम्) एक वार

ति+हुत्तं=तिहुत्तं (त्रिकृत्वः-त्रिवारम्) त्रण वार

ति+खुत्तो=तिखुत्तो
तिक्खुत्तो } (त्रिकृत्व - ,,)

६ आल, आलु, इत्त, इर, इल्ल, उल्ल, मण, मंत [illegible]
प्रत्ययो 'वाळुं' अर्थने सूचवे छे:

आल- रस+आल=रसालो (रसवान्) रसाळ-रसवाळुं
जडा+आल=जडालो (जटावान्) जटावाळो

आलु- दया+आलु=दयालु (दयालुः) दयाळु-दयावाळुं
लज्जा+आलु=लज्जालू (लज्जालु) लाजाळु-लाजवाळुं

इत्त- मान+इत्त=माणइत्तो (मानवान्) मानवान

इर- रेहा+इर=रेहिरो (रेखावान्) रेखावान
गव्व+इर=गव्विरो (गर्ववान्) गर्ववान

इल्ल- सोभा+इल्ल=सोभिल्लो (शोभावान्) शोभावान

उल्ल- सद्द+उल्ल=सद्दुल्लो (शब्दवान्) शब्दवान

कम्म (कर्मन्)

कम्म + उणा = कम्मुणा (कर्मणा)
कम्म + उणो = कम्मुणो (कर्मणः)

केटलांक अनियमित रूपो

मणसा (मनसा)
मणसो (मनसः)
मणसि (मनसि)
वयसा (वचसा)
सिरसा (शिरसा)
कायसा (कायेन)
कालधम्मुणा (कालधर्मेण)

केटलाक तद्धित प्रत्ययोनी समज

१ 'तेनुं आ' ए अर्थमां 'केर' प्रत्यय लागे छे:

अम्ह+केरं=अम्हकेरं (अस्माकम् इदम्–अस्मदीयम्) अमारुं
तुम्ह+केरं=तुम्हकेरं (युष्माकम् इदम्–युष्मदीयम्) तमारुं
पर+केरं =परकेरं (परस्य इदम्–परकीयम्) पारकुं
राय+केरं=रायकेरं (राज्ञः इदम्–राजकीयम्) राजानुं

२ 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्यय 'तेमां थएल' अर्थने सूचवे छे:

गाम+इल्ल–गामिल्लं (ग्रामे भवम्) गाममां थएलुं
घर+इल्ल–घरिल्लं (गृहे भवम्) घरेलु–घरमां थएलुं

शब्दोनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे:

पूस + णो = पूसाणो   राय + णो = रायाणो

अपवाद

प्रथमा अने संबोधन सिवायना 'ण'कारादि [illegible]
'राय'ने बदले 'राइ' अने 'रण्'नो उपयोग थाय छे:

राय + णा = राइणा, रण्णा
राय + णो = राइणो, रण्णो

प्रथमा अने संबोधननो बहुवचन 'णो' लागतां तो 'राय'ना स्थाने एक मात्र 'राइ' वपराय छे.

'इणं' प्रत्यय लागतां 'राय'नो 'य' लोप पामे छे:

राय + इणं = राइणं, (राजानम्)
राय + इणं = राइणं (राज्ञाम्)

[याद्दी: राइ+ण=राईण, राईणं ए रूपमां 'इणं' प्रत्यय नथी पण षष्ठी बहुवचननो 'ण' प्रत्यय छे.]

३ [illegible]
[illegible] राइणो, राइणो (राज्ञ

अप्प (आत्मन्)

१ अप्पा (आत्मा) [illegible]
२ अप्पाणं (आत्मानम्) अप्पाणो (आत्मनः)
३ अप्पणिआ, अप्पणइआ अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ
अप्पणा (आत्मना) (आत्मभिः)
४-६ अप्पाणो (आत्मनः) अप्पाण, अप्पाणं (आत्मनाम्)
५ अप्पाणो (आत्मनः) अप्पत्तो, अप्पाओ (आत्मतः) वगेरे

पूस (पूषन्)–इंद्र, सूर्य

१ पूसा (पूषा)
२ पूसाणं (पूषणम्) पूसाणो (पूषणः)
३ पूसणा (पूष्णा) ,, (पूष्णः)
४-६ पूसाणो (पूष्णः) पूसहि, पूसहिं पूसहिँ (पूषभिः)
५ ,, ,, पूसिण, पूसिणं (पूष्णाम्)
पूसत्तो, पूसतो (पूषतः) वगेरे

मघव }
मढव } मघवन्

१ मघवं, मघवा (मघवा) मघवाणो (मघवानः)
वगेरे 'पूस'नी पेठे.

साधनिकानी समज

प्रत्ययो

	एकवचन	बहुवचन
१	+	
२	इणं	णो

ए बधां नामोनां रूपो [illegible]

{ अद्धाणो, अद्धाणं, अद्धाणाण
{ अद्धो, अद्ध, अद्धेण

{ साणो, साणं, साणाण
{ सो, सं, सेण

{ रायाणो, रायाणं, रायाणाण
{ रायो, राय, रायेण [illegible]

छेडाना 'अन्'नो 'आण' न थाय [illegible]

वधारानां केटलांक रूपो जुदी रीते थाय छे.

राय (राजन्)

१ राया (राजा) — राइणो, रायाणो ([illegible])

२ राइणं (राजानम्) — ,, ,, [illegible]

३ राइणा, रण्णा (राज्ञा) — राईहि, राईहिं, [illegible]
([illegible])

४ राइणो, रण्णो (राज्ञे) — राईण, राईणं ([illegible])
राइण, राइणं

५ राइणो, रण्णो (राज्ञः) — राइत्तो, राइत्तो, राई[illegible]
राईउ (राजतः)
राईहि, राईहिंतो (राजभ्यः)

६ राइणो, रण्णो (राज्ञः) — राईण, राईणं (राज्ञाम्)
राइण, राइणं

भगवत्

प्र० ए० भगवं (भगवान्)
प्र० व० भगवंतो (भगवन्तः)
तृ० ए० भगवता (भगवता)
ष० ए० भगवओ (भगवतः)

भवत्

प्र० ए० भवं (भवान्)
प्र० व० भवंतो (भवन्तः)
द्वि० ए० भवंतं (भवन्तम्)
द्वि० व० भवतो (भवतः)
भवओ
तृ० ए० भवता (भवता)
भवया
प० ए० भवतो (भवत)
भवओ (,,)
ष० व० भवयाण (भवताम्)

'अन्' छेडावाळां नकारांत नामोना 'अन्'नो विकल्पे 'आण' थाय छे:-

अध्वन्-[अध्व्+अन्=अध्व्+आण-अद्धाण] अद्धाण, अद्ध.

आत्मन्-अप्पाण, अप्प

उक्षन् { उच्छाण, उच्छ / उक्खाण, उक्ख }

ग्रावन्-गावाण, गाव

युवन्-जुवाण, जुव

ब्रह्मन्-बम्हाण, बम्ह

मघवन्-मघवाण, मघव

मूर्धन्-मुद्धाण, मुद्ध

राजन्-रायाण, राय

पाठ २० मो

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतमां व्यंजनांत प्रयोग [illegible] अकारांत थयां पछी पण बधा रूपो पु[illegible] समजवाना छे. (जुओ पृ० ७१ [illegible])

'अत्' अने 'अन्' छेडावाळा नामोनां [illegible] ते आ प्रमाणे छे:

नामने छेडे आवेला 'अत्' प्रत्ययने स्थाने [illegible] 'अत्'ने स्थाने 'अंत'नो व्यवहार थाय छे.

अत्—भवत् - भवंत	मत् - श्रीमत् [illegible]
गच्छत् - गच्छंत	गुणवत् - गुणवंत
नयत् - नयंत, नेंत	धनवत् धणवंत
गमिष्यत्- गमिस्संत	ज्ञानवत् - नाणवंत / णाणवंत
भविष्यत्- भविस्संत	नीतिमत्- नीइमंत / णीइमंत

'अंत' छेडावाळां ए बधां नामोनां रूपो अकारांत नामना [illegible] समजवानां छे:—

भगवंतो, भगवंतं, भगवंतेण इत्यादि 'वीर' प्रमाणे. भवंतो, भवंतं, भवंतेण इत्यादि 'सव्व' प्रमाणे.

'अत्' छेडावाळां नामोनां अनियमित रूपोः

सव्वन्न (सर्वज्ञ) सर्वज्ञ-[illegible]
देवन्न (दैवज्ञ) दैवने जाणनार
किलेस (क्लेश) क्लेश-कलेश
पिलोस (प्लोष) शोष-दाह

निन्दोअ [illegible]
निन्दोग) [illegible]
निविड [illegible]
कासव (काश्यप) [illegible]
कविल (कपिल) [illegible]

केवटवडे दरियो तराय छे
पितावडे प्रह्लाद बंधाय छे
काश्यपवडे चंडाल स्पर्शाय छे
राजावडे कीर्ति भेगी कराय छे

कपिलवडे तत्त्व कहेवाय छे
ऋषभदेववडे धर्म कहेवायो
सर्वज्ञवडे क्लेशो जिताय छे
तेणीवडे शास्त्रो समजाय छे
जेणीवडे बकरां दोहाय छे
पणीवडे धर्म जणातो नथी

निवेण सत्तुणो जिव्वंति
गोवालेण गउओ दुब्भंते
भारवहेहिं भारो वुब्भए
दायारेण दाणेण पुण्णाइं लब्भंते
मुणिणा संजमो घेप्पते

मालाआरेण जलेण उज्जाणाणि सिंचंते
कसिवलेण तणाइं लुव्वंति
सोयारेहिं सत्थयाइं सुव्वंते
वद्धमाणेण मम वरं पुच्छंते
बालेण गामो गम्मइ
बालेहिं हस्सइ

अमु (अदस्)

१ अह, अमू   अमुउ, अमुओ, अमू (अमू.)

बाकीनां ' धेणु ' वत.

सामान्य शब्दो

केवट्ट (कैवर्त) केवट-खेवट-धीजी [illegible]नार

जट्ट [जर्त (?)] जाट जातनो माणस

धुत्त (धूर्त) धूर्त-धूतारो

मुहुत्त (मुहूर्त) मुहूरत-महुरत

सज्झ (सह्य) सह्याद्रि

गुज्झ (गुह्य) गुह्यक-यक्ष, गुह्य-गूढ

[illegible] ([illegible]) [illegible]

साण्ह ([illegible]) [illegible]

सावय (श्राव[illegible]) [illegible]-[illegible]

पल्हाअ ([illegible]) [illegible] राजकुमार

आल्हाअ (आह्लाद) आ[illegible]द-आनंद

पज्ज (प्राज्ञ) प्राज्ञ-डाह्यो

४ } किस्सा, कीसे, काए (कस्याः)
अने }
६ } (कीअ, कीआ, कीइ, कीए) काण, काणं (कासाम्!)

कीअ, कीआ, कीइ, कीए
काअ, काइ, काए

७ काहिं (कस्याम्)
कीअ, कीआ, कीइ, कीए   कीसु, कीसुं (कासु)
काअ, काइ, काए (कायाम्!)   कासु, कासुं

इमा, इमी (इदम्-इमा)

१ इमिआ, इमा, इमी (इयम्)   इमीआ, इमीउ, इमीओ, इमी
इमाउ, इमाओ, इमा (इमाः)

३ इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए   इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ
इमाअ, इमाइ, इमाए
(इमया? अनया)   इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ
आहि, आहिं, आहिँ (आभिः)

४ } से,   सिं (आसाम्)
अने } इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए   इमीण, इमीणं
६ } इमाअ, इमाइ, इमाए   इमाण, इमाणं (इमानाम्!)
(अस्यै, इमायै?)

समजवानां छे.

जी, जा (यत् या)

	जीआ, जीइ [illegible]
१ जा (या)	जाउ, जाओ, जा ([illegible])
	,, ,, ,, ,,
२ जं (याम्)	,, ,, ,, ,,
४ अने ६ } जिस्सा, जीसे (यस्यै, यस्याः)	जाण, जाण ([illegible]) ([illegible])

जीअ, जीआ, जीइ, जीए

जाअ जाइ, जाए

७ जाहिं (यस्याम्)	जासु (यासु)
जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जासुं

जाअ, जाइ, जाए

स्त्रीलिंगी सर्वादि

'सव्वी' 'सव्वा' 'ती' 'ता' 'जी' 'जा' 'की' 'का' 'इमी' 'इमा' 'एई' 'एआ' अने 'अमु' वगेरे स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना ... 'माला' 'नदी' अने 'धेणु' नी जेवां योजी लेवानां छे.

विशेषता आ प्रमाणे छे

ती, ता }
णी, णा } (तत्-ता)

१	सा (सा)	तीआ, तीउ, तीओ, ती
		ताउ, ताओ, ता (ताः)
२	तं (ताम्)	तीआ, तीउ, तीओ, ती
	णं	ताउ, ताओ, ता (ताः)
३	तीअ, तीआ, तीइ, तीए	तीहि, तीहिं, तीहिँ
	ताअ, ताइ, ताए (तया)	ताहि, ताहिं, ताहिँ

अथवा

७ प्रेरणासूचक कोई पण प्रत्यय न लगा ... अन्त्य 'अ'नो 'आ' करवो अने ... इय के इज्ज प्रत्यय पूर्व प्रमाणे लगा ... रूपोमां अने प्रेरक कर्मणिप्रयोगना अंगो बनाव ...

[याद्री: आ सिवाय बीजा कोई पण प्रत्य ... कर्मणिप्रयोगनां अंगो बनी शकतां नथी]

अंगना रूपाख्यान-

करावीअइ (कारापयते)

कर्+आवि-कराविनईअ-करावीअ--करावी-अइ, -अए, -अन्ति अने इ प्रमाणे

कर्-कार+ईअ-कारीअ--कारी-अइ,-अए (कार्यते)
कारी-अन्ति, कारी-अन्ते (कार्यन्ते)

कर्+आवि-करावि-इज्ज-कराविज्ज--करावि-ज्जइ,-ज्जए
(कारापयते)

कर्-कार-इज्ज-कारिज्ज--कारि-ज्जइ-ज्जए (कार्यते)
कार्-इज्ज-कारिज्ज--कारि-ज्जसि,-ज्जसे (कार्यसे)

ए रीते धातुमात्रनां प्रेरकभावे अने प्रेरककर्मणिनां अंगो तैयार करी सर्वकाळनां रूपो उक्त साधनिका प्रमाणे साधी जवां जोइए.

भविष्यकाळ

कराविहिइ, कराविहिए करावित्सते (कारापयिष्यते)
[जुओ पाठ १२ मो]

भणीअमु, भणीअमु
भणिइज्जमो, भणीइज्जमो, भणिइज्जइत्था
भणिज्जइज्जा, भणिइज्जइज्ज भणिइज्जमु,
भणिज्जमु

अद्यतन भूतकाळ

भणीअ, भणिइत्था, भणिइअ, भणिअंसु, भणंसु

भविष्य काळ

भणिस्सं, भणेस्सं, भणिस्सामि, भणेस्सामि,
भणिहामि, भणेहामि
भणिहिमि, भणेहिमि

वगेरे बधा रूपो कर्तरि प्रमाणे (जुओ पाठ १२)

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा.
भणंती, भणमाणी (नारीजाति)
भणंता, भणमाणा („)

प्रेरक भावेप्रयोग
अने
कर्मणिप्रयोग

१ धातुनुं प्रेरक भावेप्रयोगी के कर्मणिप्रयोगी रूप करवुं होय त्यारे मूळ धातुने प्रेरणासूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाडवो अने 'आवि' प्रत्यय लागेला ते तैयार थएल अंगने भावे के कर्मणि प्रयोगना सूचक उक्त 'ईअ', 'ईय' अथवा 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त साधनिकाने अनुसारे लगाडवा.

अग —   अंगना रूपाख्यान —

करावीअइ (कारप्यते)

कर्।आवि-कराविं+ईअ-करावीअ—करावी-अइ, -अए, -अस्

-असे इ आदि

कार् -कार+ईअ-कारीअ—कारी-अइ,-अए (कार्यते)

कारी-असि, कारी-असे (कार्यसे)

कर्+आवि-करावि-इज्ज-कराविज्ज—करावि-ज्जइ,-ज्जए

(कारप्यते)

कार्-कार-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जइ-ज्जए (कार्यते)

कार्-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जसि,-ज्जसे (कार्यसे)

ए रीते धातुमात्रनां प्रेरकभावे अने प्रेरककर्मणिनां अंगो तैयार करी सर्वकाळनां रूपो उक्त साधनिका प्रमाणे साधी जवां जोइए.

भविष्यकाळ

कराविहिइ, कराविहिए कराविस्सते (कारापयिष्यते)

[जुओ पाठ १२ मो]

भणीइज्जउ, भणेइज्जउ
भणिज्जामो, भणेज्जामो, भणिज्जाम
भणिज्जाइत्था भणेज्जाइत्था भणिज्जन्तु,
भणेज्जन्तु

अद्यतन भूतकाळ

भणीअ, भणिन्था, भणित्थ, भणिंसु, भणंसु

भविष्यकाळ

भणिस्सं, भणेस्सं, भणिस्सामि, भणेस्सामि,
भणिहामि, भणेहामि
भणिहिमि, भणेहिमि

वगेरे बधां रूपो कर्तरि प्रमाणे (जुओ पाठ १२)

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा.
भणंती, भणमाणी (नारीजाति)
भणंता, भणमाणा (,,)

प्रेरक भावेप्रयोग
अने
कर्मणिप्रयोग

१ धातुनुं प्रेरक भावेप्रयोगी के कर्मणिप्रयोगी रूप करवुं हो[illegible] त्यारे मूळ धातुने प्रेरणासूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाड[illegible] अने 'आवि' प्रत्यय लागेला ते तैयार थएल अंगने भावे [illegible] कर्मणि प्रयोगना सूचक उक्त 'ईअ', 'ईय' अथवा 'इज्ज' प्रत्[illegible] पूर्वोक्त साधनिकाने अनुसारे लगाडवा.

अंग— अंगना रूपाख्यान—

करावीअइ (काराप्यते)

कार्+आवि-करावि+ईअ-करावीअ—करावी-अइ, -अए, -अंति
-अंते इत्यादि

कार्-कार+ईअ-कारीअ—कारी-अइ,-अए (कार्यते)
कारी-अंति, कारी-अंते (कार्यन्ते)

कार्+आवि-करावि-इज्ज-कराविज्ज—करावि-ज्जइ,-ज्जए
(काराप्यते)

कार्-कार-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जइ-ज्जए (कार्यते)
कार्-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जसि,-ज्जसे (कार्यसे)

ए रीते धातुमात्रनां प्रेरकभावे अने प्रेरककर्मणिनां अंगो तैयार करी सर्वकाळनां रूपो उक्त साधनिका प्रमाणे साधी जवां जोइए.

भविष्यकाळ

कराविहिइ, कराविहिए करावित्सते (कारापयिष्यते)

[जुओ पाठ १२ मो]

[illegible] भूतकाळ

भणीअ, भणिआ, भणिअं, [illegible], [illegible]

भविष्यकाळ

भणिहसं, भणेहमं, भणिहामि, भणेहामि,

भणिस्सामि, भणेस्सामि

भणिहिमि, भणेहिमि

वगेरे बधा रूपो कर्तरि प्रमाणे (जुओ पाठ १२)

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा

भणती, भणमाणी (नारीजाति)

भणंता, भणमाणा („)

प्रेरक भावेप्रयोग
अने
कर्मणिप्रयोग

१ धातुनुं प्रेरक भावेप्रयोगी के कर्मणिप्रयोगी रूप [illegible] त्यारे मुळ धातुने प्रेरणासूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय [illegible] अने 'आवि' प्रत्यय लागेला ते तैयार थएल अंगने भावे अने कर्मणि प्रयोगना सूचक उक्त 'ईअ', 'ईय' अथवा 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त साधनिकाने अनुसारे लगाडवा.

अंग—

अंगना रूपाख्यान —

कराबीअइ (काराप्यते)

कर्+आवि-कराविन+ईअ-करावीअ—करावी-अइ,-अए, -असि, -असे इत्यादि

कर्—कार+ईअ-कारीअ—कारी-अइ,-अए (कार्यते)
कारी-असि, कारी-असे (कार्यसे)

कर्+आवि-करावि-इज्ज-कराविज्ज—करावि-ज्जइ,-ज्जए (काराप्यते)

कर्-कार-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जइ-ज्जए (कार्यते)
कार्-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जसि,-ज्जसे (कार्यसे)

ए रीते धातुमात्रनां प्रेरकभावे अने प्रेरककर्मणिनां अंगो तैयार करी सर्वकाळनां रूपो उक्त साधनिका प्रमाणे साधी जवां जोइए.

भविष्यकाळ

कराविहिइ, कराविहिए कराविस्सते (कारापयिष्यते)
[जुओ पाठ १२ मो]

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा

भणती, भणमाणी (सर्वपुरुष)

भणंता, भणमाणा (,,)

प्रेरक भावेप्रयोग
अने
कर्मणिप्रयोग

१ धातुनुं प्रेरक भावेप्रयोगी के कर्मणिप्रयोगी रूप [illegible] त्यारे मूळ धातुने प्रेरणासूचक [illegible] मात्र 'आवि' [illegible] अने 'आवि' प्रत्यय लागेला ते तैयार थएल [illegible] कर्मणि प्रयोगना सूचक उक्त 'ईअ', 'इज्ज' [illegible] पूर्वोक्त साधनिकाने अनुसारे लगाडवा.

अथवा

२ प्रेरणासूचक कोइ पण प्रत्यय न लगाडी मात्र मूळ धातुना उपान्त्य 'अ'नो 'आ' करवो अने ए 'आ' वाळा अंगने उक्त ईअ, ईय के इज्ज प्रत्यय पूर्व प्रमाणे लगाडवा, ए रीते पण प्रेरक भावे प्रयोगनां अने प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां रूपो बनावी शकाय छे.

[यादीः आ सिवाय बीजी कोइ रीते प्रेरक भावेप्रयोग के प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां अंगो बनी शकतां नथी.]

अग— अंगना रूपाख्यान—

करावीअइ (कारापयते)

कर्+आवि-करावि+ईअ-करावीअ—करावी-अइ,-अए,-असि, असे इत्यादि

कर्—कार+ईअ-कारीअ—कारी-अइ,-अए (कार्यते)
कारी-असि, कारी-असे (कार्यसे)

कर्+आवि-करावि-इज्ज-कराविज्ज—करावि-ज्जइ,-ज्जए (कारापयते)

कर्-कार-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जइ-ज्जए (कार्यते)
कार्-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जसि,-ज्जसे (कार्यसे)

ए रीते धातुमात्रनां प्रेरकभावे अने प्रेरककर्मणिनां अंगो तैयार करी सर्वकाळनां रूपो उक्त साधनिका प्रमाणे साधी जवां जोइए.

भविष्यकाळ

कराविहिइ, कराविहिए कराविस्सते (कारापयिष्यते)
[जुओ पाठ १२ मो]

भणीइंसु, भणीअंसु
भणिज्जसी, भणिज्जही, भणिज्जहीअ
भणिज्जइत्था, भणिज्जइत्थ, भणिज्जिंसु,
भणिज्जंसु

अद्यतन भूतकाळ

भणीअ, भणित्था, भणित्थ, भणिंसु, भणंसु.

भविष्यकाळ

भणिस्सं, भणेस्सं, भणिस्सामि, भणेस्सामि,
भणिहामि, भणेहामि
भणिहिमि, भणेहिमि

वगेरे वधां रूपो कर्तरि प्रमाणे (जुओ पाठ १२)

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा.
भणती, भणमाणी (नारीजाति)
भणंता, भणमाणा (,,)

प्रेरक भावेप्रयोग
अने
कर्मणिप्रयोग

१ धातुनुं प्रेरक भावेप्रयोगी के कर्मणिप्रयोगी रूप करवुं होय त्यारे मूळ धातुने प्रेरणासूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाडवो अने 'आवि' प्रत्यय लागेला ते तैयार थएल अंगने भावे अने कर्मणि प्रयोगना सूचक उक्त 'ईअ', 'ईय' अथवा 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त साधनिकाने अनुसारे लगाडवा.

सर्वपुरुष { भणीएज्ज, भणीएज्जा
सर्ववचन { भणिज्जेज्ज, भणिज्जेज्जा

पुच्छीयसि तुम (पृच्छयसे त्वम्)
पुच्छिज्जसि

पुच्छ्+ईय+सि–पुच्छी–यसि,–येसि,–यसे,–येसे
पुच्छ्+इज्ज+सि–पुच्छि–ज्जसि, ज्जेसि,–ज्जसे, ज्जेसे

पुच्छीयामि
पुच्छिज्जामि अहं (पृच्छये अहम्)

पुच्छ्+ईय+मि— पुच्छी–यमि,–यामि,–येमि
पुच्छ्+इज्ज+मि—पुच्छि–ज्जमि–ज्जामि,–ज्जेमि

सर्वपुरुप { पुच्छीयेज्ज, पुच्छीयेज्जा
सर्ववचन { पुच्छिज्जेज्ज, पुच्छिज्जेज्जा

आज्ञार्थ

पुच्छी–यउ,–येउ, पुच्छिज्जउ, ज्जेउ
पुच्छी–यंतु,–येंतु, पुच्छि–ज्जंतु,–ज्जेंतु

विध्यर्थ

पुच्छ्+ईय–पुच्छीयिज्जामि, पुच्छीयेज्जामि
(अहं पृच्छयेय)

पुच्छीयिज्जामो, पुच्छीयेज्जामो
(वयं पृच्छयेमहि)

भूतकाळ

भण्—भणीअसी, भणीअही, भणीअहीअ,
भणीयइत्था, भणीयइत्थ.

ए रीते धातुमात्रनां भाववाची अने कर्मवाची अंगो बनावी लेवाना छे अने तैयार थएलां अंगने ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी तेमनां रूपो साधी लेवानां छे:

वर्तमानकाळ

भावप्रधान

वीहीअइ, वीहिज्जइ (भीयते)
वीह्+ईअ+इ-वीही—अइ,-एइ-अए,-एए,
वीह्+इज्ज+इ-वीहि-ज्जइ,-ज्जेइ,-ज्जए,-ज्जेए

सर्वपुरुष सर्ववचन { वीहीएज्ज, वीहीएज्जा
वीहिज्जेज्ज, वीहिज्जेज्जा

भावप्रधान प्रयोगोमां भाव-क्रिया-ज मुख्य होय छे. प्रथम के द्वितीय पुरुष एमां संभवतो नथी तेम बे त्रण वा तेथी अधिक संख्या पण संभवी शकती नथी माटे ते द्वारा ते ते पुरुषोनुं वा एकथी अधिक संख्यानुं सूचन थइ शकतु नथी. साधारण रीते भावप्रयोग, त्रीजा पुरुषना एकवचनद्वारा व्यवहारमां आवे छे.

कर्मप्रधान

भणीअइ, भणिज्जइ गंथो (भण्यते ग्रन्थ)
भण्+ईअ+इ—भणी-अइ,-एइ,-अए, एए
भण्+इज्ज+इ-भणि-ज्जइ,-ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए
भणीयंति गंथा (भण्यन्ते ग्रन्थाः)
भणिज्जंति

भण्-ईय+न्ति— भणी-यंति,-येंति,-यंते,-येंते,-यइरे,-येइरे
भण्+इज्ज+न्ति—भणि-ज्जंति, ज्जेंति,-ज्जंते,-ज्जेंते,ज्जइरे,ज्जेइरे

गणाय छे. तेथी ज खावुं, पीवुं, जोवुं, घडवुं, करवुं वगेरे सकर्मक धातुओ पण तेमना कर्मनी अविवक्षानी अपेक्षाए अकर्मक तरीके लेखाय छे. ए बन्ने प्रकारना अकर्मक धातुओनो भावेप्रयोग थाय छे.

कर्ता, क्रिया द्वारा जेने विशेषपणे इच्छे ते कर्म—नानी मोटी बधी क्रियाओनुं फळ जे प्रयोग कर्मने ज सूचित करे ते कर्मणिप्रयोग.

भावे अने कर्मणिप्रयोगनां अंगो

भावसूचक अंगो

बीह् - बीहीअ बीहिज्ज	खा - खाईअ खाइज्ज	बोल्ल - बोल्लीअ बोल्लिज्ज
उंघ - उंघीअ उंघिज्ज	लज्ज - लज्जीअ लज्जिज्ज	हो - होईअ होइज्ज
कह् - कहीअ कहिज्ज	वुड्ड - वुड्डीअ वुड्डिज्ज	

कर्मसूचक अंगो

पा - पाईअ पाइज्ज	पढ् - पढीय पढिज्ज	कह् - कहीय कहिज्ज
दा - दाईअ दाइज्ज	कड्ढ् - कड्ढीअ कड्ढिज्ज	बोल्ल्-बोल्लीय बोल्लिज्ज
झा - झाईय झाइज्ज	घड् - घडीय घडिज्ज	
ला - लाईय लाइज्ज	खा - खाईय खाइज्ज	

पाठ १९ मो

भावे प्रयोग
अने
कर्मणि प्रयोग

प्रत्ययो

ईअ } (य)
ईय
ईज्ज

कोइ पण धातुनुं भावप्रधान के कर्मप्रधान अंग बनाववुं होय त्यारे तेने 'ईअ' 'ईय' अथवा 'इज्ज'–ए त्रणमांथी गमे ते एक प्रत्यय लगाडवानो छे.

ए त्रणे प्रत्ययो फक्त वर्तमानकाळ, विध्यर्थ, आज्ञार्थ के ह्यस्तन-भूतकाळमां ज वापरी शकाय छे. तेथी भविष्यकाळ, क्रियातिपत्ति वगेरे अर्थमां भावेप्रयोग अने कर्मणिप्रयोग, कर्तरिप्रयोगनी जेम समजवानो छे.

भाव एटले क्रिया. जे प्रयोग मुख्यपणे क्रियाने ज बतावे ते भावेप्रयोग.

अकर्मक धातुओनो भावेप्रयोग थाय छे. गूजराती व्याकरणमां रोवुं, जणवुं, सुवुं, उंघवुं, लाजवुं वगेरे धातुओ ज अकर्मक तरीके प्रसिद्ध छे. त्यारे अहीं तो जे धातुओ सकर्मक होय छतां प्रयोगमां तेमनुं कर्म न कहेवायुं होय–अध्याहारमां होय तेओ पण अकर्मक

निठ्ठुर (निष्ठुर) नठोर

छठ्ठ (षष्ठ) छठ्ठु

गुत्त (गुप्त) गुप्त–गोपवेल–सुरक्षित

सुत्त (सुप्त) सुतेल

मुद्ध (मुग्ध) मुग्ध

पुरुष स्त्रीने चुकावे छे

माताए बाळकने पखाळाव्युं

नोकरो छोकरांने रमाडशे

सूतार लाकडाने छोलावत
तो सुंवाळुं थात

राजाए घीने खरीदाव्युं

गोवाळो पशुने पाणी
पीवडावे

भाई वहेनने सासराने घरे
पाठवे छे

माता पुत्रीने माटे घरेणां
घडावशे

ते सारां कार्यो वडे कीर्तिने
फेलावे छे

शेठ चोमासा पहेलां घरने
समरावशे

सेट्ठी सरीरम्मि तेल्लं चोप्प-
डावइ

निवो कुमारं हत्थिरिम चडा-
विहिइ

भिक्खो भिक्खूणं दाणं अल्लि-
वावसी

हत्थीओ वेज्जस्स सरीर
देक्खावंति

माया पुत्तं मिट्ठ किसरं
अण्हावेहिइ

नणंदा पुत्तिं उंघावंती[७९]
तया पुत्ती न रुयती

विज्जत्थी अन्नं विज्जत्थि
विहाणम्मि उट्ठावेइ

गुरू सीसं पणामावइ

महावीरो गोयमं सरावइ

गोयमो लोगे धम्मं सुणावेइ

---

७९ क्रियातिपत्तिनु नारीजातिनु रूप छे.

जामाउअ (जामातृक) जमाइ
मग्गु (मद्गु) एक प्रकारनी माछली
कंद (स्कन्द) स्कन्द–गणपति
हरिअंद (हरिश्चन्द्र) हरिचंद राजा

[नान्यतरजाति]

दुद्ध (दुग्ध) दूध
सित्थ (सिक्थ) सीथ
आमलय (आमलक) आमळु–आंवळु
बिंबय (बिम्बक) बिंब–प्रतिबिंब–बींबुं
कुंडलय (कुण्डलक) कुंडळ–कुंडाळु
उप्पल (उत्पल) उत्पल–कमळ
मसाण (श्मशान) मसाण
अहिन्नाण (अभिज्ञान) एंधाण
चम्म (चर्मन्) चाम–चामडु
पुट्ठय (पृष्ठक) पूठु

[नारीजाति]

गोट्ठी (गोष्ठी) गोठ–गोठडी
विट्ठी, वेट्ठि (विष्टि) वेठ
धत्ती (धात्री)
किवा (कृपा) कृपा
घिणा (घृणा) घ्रिण–घृणा
सामा (श्यामा) युवती–स्त्री
गोरी (गौरी) गौरी–पार्वती, गौरी स्त्री
रेखा, रेहा, लेहा (रेखा) रेखा–लीह–लींटो
किया (क्रिया) क्रिया–विधि–विधान
किसरा (कृसरा) खीचडी
समिद्धि (समृद्धि) समृद्धि

विशेषण

मुत्त (मुक्त) मुक्त–छूटु
सत्त (शक्त) शक्त–शक्तिमान
भुत्त (भुक्त) भुक्त–भोगवेलु
नग्ग (नग्न) नागु
सत्त (सक्त) आसक्त
किलिन्न (क्लिन्न) गीलु–भीनु–भींजाएलु
निच्चल (निश्चल) निश्चळ

ओम्वाल् (उत्+प्लाव) प्लावित करवु
वग्गोल् (वि+उद्+गार-व्युद्गार) वागोळवु
परिआल् (परि+वार) परिवृत करवु-वींटवु
पयल्ल् (प्र+सर्) फेलवु
नीहर् (निर्+सर्) नीहरवु-नीसरवु
समार् (सम्+आ+रच्) समारवु
सूड् } सूर् } (षद) सूडवु-नाश करवो

गढ् (घट) घडवु
जम्भा (जृम्भ) बगासु खावु
तुवर् (त्वर) त्वरा करवी
पेच्छ् (प्र+ईक्ष) जोवु
चोप्पड् - चोपडवु
अहिलंख् } अहिलंघ् } (अभि+लष) अभिलषवु-इच्छा करवी
चड् (चट्) चडवुं
नि+क्खाल् } नि+क्खा } (नि+क्षाल्) नीखारवुं-धोवु
विच्छल (वि+क्षल) वीछळवु-धोवु

सामान्य शब्दो [नरजाति]

खग्ग (खड्ग) खड्ग-तरवार
उप्पाअ (उत्पाद) उपाद-उत्पत्ति
रस्सि (रश्मि) राश-बळदनी के घोडानी राश
मुइंग } मिइंग } (मृदङ्ग) मृदंग
विंचुअ (वृश्चिक) वींछी
भिंग (भृङ्ग) भृग-भमरो
सिंगार (शृङ्गार) शृंगार-शणगार
निव (नृप) नृप-राजा
छप्पअ } छप्पय } (षट्पद) छपगो-भमरो

सज्ज (षड्ज) षड्ज-एक प्रकारनो सूर
इसि (ऋषि) ऋषि
तव (स्तव) स्तव स्तुति
नेह (स्नेह) स्नेह-नेह
सर (स्मर) स्मर-कामदेव
पाउस (प्रावृष्) पाउस-पावस वरसादनी ऋतु
वुत्तंत (वृत्तान्त) वृत्तान्त-समाचार
नत्तुअ } नत्तिअ } (नप्तृक) नाती-पौत्र
वुड्ढ (वृद्ध) वूढो-घरडो

कील (क्रीड) क्रीडा करवी–रमत रमवी

छोल्ल–छोलवुं

ताव (तापय) तावबुं–तपाववुं

झाम – बाळवु

किण (क्रीणा) खरीदवुं–वेचातुं देवुं

आढा (आ+दृ) आदर करवो

पन्नव् (प्रज्ञापय) जणाववु

संघ् (स+ख्या) कहेवु

पच्चर् (प्र+उत+चर्–प्रोच्चर) कहेवु

वज्जर् (वि+उत्+चर–व्युच्चर),,

चव् (वच्) ,,

जंप् (जल्प) ,,

पिसुण् (पिशुनय) चाडी करवी

मुण् (मन्) जाणवुं

पिज्ज् (पीय) पीवु

उंघ् – उंघवु

अब्भुत्त् (अवभृथ) अवोटवु–आभडवु–नहावु

उट्ठ (उत्+स्था) ऊठवु

छाय } छाअ } (छाद्) छावु–ढांकवु

मेलव् (मेलय) मेळववु–भेळववु–एकमेक करवु

दक्खव् (दृश्) दाखववुं–देखाडवु–कही बताववु

पणाम् (प्र+णाम) आपवुं–सेवामां रजु करवु

ओग्गाल् (उद्+गार) ओगाळवु

आरोव् (आ+रोप) आरोपवु

भर् } भल् } (स्मर्) स्मरण करवु

चय् (शक्) शकवुं

जीह् (जिह्री) लाजवु

अण्ह् (अश्ना) अशन करवु–जमवु–खावु

आढव् (आ+रभ्) आरंभवु–शरू करवु

चुक्क् (च्युत्क) चूकवु–भ्रष्ट थवु

पुलोअ } पुलअ } (प्र+लोक्) प्रलोकवु–जोवु

पुलआअ (पुलकाय) पुलकित थवु–उल्लसवु

वलग्ग (वि+लग्न) वळगवु–चडवु

पक्खाल् (प्र+क्षाल्) पखाळवु–धोवु

सिह् (स्पृह्) स्पृहा करवी

पट्ठव् (प्र+स्थाप्) पाठववु

विण्णव् (विज्ञप्) वीनववु

अल्लिव् – आलवु

क्रियातिपत्ति

खाम— खामतो, खामेंतो, खामितो[७८]
खाममाणो, खामेमाणो
खामे — खामेंतो, खामितो, खामेमाणो
खमाव— खमावतो, खमावेंतो, खमावितो
खमावमाणो, खमावेमाणो
खमावे— खमावेंतो, खमाविंतो, खमावेमाणो

आ प्रकारे प्रत्येक प्रेरक अंगने बधी जातना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी तेमनां रूपो साधी लेवानां छे.

प्रेरक सह्यभेद अने बधी जातनां प्रेरक कृदंतो बनाववां होय त्यारे पण प्रेरक अंगने ज ते ते सह्यभेदी अने कृदंतना प्रत्ययो जोडी रूपाख्यानो साधवानां छे. सह्यभेद वगेरेना प्रत्ययोनी समज हवे पछीना पाठोमां आवनारी छे.

धातु

उव+दंस् (उप+दर्शय) देखाडवु–पासे जइने बतावबु
आ+सार् (आ+सृ–सार) आमतेम अफळाववु–आमतेम लइ जवु
अक्खोड् (आ+खोद्) खोदवु–कापवु
उल्लव् (उत्+लप्) बोलवु
जाव् (याप) वीताववु–यापन करवुं
आभोअ (आ+भोग) ध्यानपूर्वक जोवुं
परिनिव्वा (परि+निर्+वा) शांत करवुं–ओलववु
अग्घ (अर्घ) मूलववु–मूल्य कराववु

---

७८ नारीजातिमां 'खामती', 'खाममाणी' एवां रूपो करवानां छे: जुओ पृ० २६४.

भविष्यकाळ एकव०

खाम— खामिस्सं, खामेस्सं
खामिस्सामि, खामेस्सामि
खामिहामि, खामेहामि

खामे—खामेस्सं, खामेस्सामि, खामेहामि, खामेहि

खमाव— खमाविस्सं, खमावेस्सं.
खमाविस्सामि, खमावेस्सामि
खमाविहामि, खमावेहामि
खमाविहिमि, खमावेहिमि

खमावे— खमावेस्सं, खमावेस्सामि
खमावेहामि, खमावेहिमि

सर्व पुरुष सर्ववचन } खाम— खामेज्ज, खामेज्जा
खमाव— खमावेज्ज, खमावेज्जा

आज्ञार्थ

खाम— खाममु, खामामु, खामिमु, खामेमु
खामे— खामेसु, खामेहि, खामे
खमाव— खमावउ, खमावतु
खमावे— खमावेउ, खमावेतु

विध्यर्थ

खाम— खामिज्जामि, खामेज्जामि
खामे— खामेज्जसि, खामिज्जसि
खमाव— खमाविज्जइ, खमावेज्जइ
खमावे— खमावेज्जइ, खमाविज्जइ
सर्व पुरुष सर्ववचन } खाम— खामिज्जइ, खामेज्जइ

पण लागे छे अने आ 'अवे' प्रत्यय लागता धातुना उपांत्य 'अ'नो 'आ' गाय छे' कर् + अवे = कारवे - (कारापय)-
कारवेइ - (कारापयति)

उक्त रीते धातुमात्रमां प्रेरक अगो साधी लेवाना छे अने ते रीते सधाएलां प्रेरक अंगोने ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेमनां दरेक प्रकारना रूपाख्यानो तैयार थाय छे. ए रूपाख्यानो साधवानी बधी प्रक्रिया आगला पाठोमां आवी गइ छे छतां उदाहरणरूपे अहीं एक एक रूप आपवामां आवे छे:

प्रेरक अंग — रूप

वर्तमानकाळ

	एकवचन	बहुवचन
खाम—	खाममि,	खाममो, खामामो
	खामामि	खामिमो,
	खामेमि	खामेमो
खामे—	खामेमि	खामेमो
खमाव—	खमावमि, खमावामि	खमावमो, खमावामो .
	खमावेमि	खमाविमो, खमावेमो
		इत्यादि

सर्व पुरुष } खामेज्ज, खामेज्जा
सर्ववचन } खमावेज्ज, खमावेज्जा

भूतकाळ

खामसी, खामही, खामहीअ, खामंसु, खामिंसु, खामित्थ
खामेसी, खामेही, खामेहीअ,
खमावसी, खमावही, खमावहीअ, खमावंसु,खमाविंसु,खमावित्थ
खमावेसी, खमावेही, खमावेहीअ

१ मूळ धातुना उपांत्यमां रहेला 'इ'नो प्रायः 'ए' थाय छे अने 'उ'नो प्रायः 'ओ' थाय छेः

विस् + वेस् – वेसइ, वेसेइ, वेसावइ, वेसावेइ
दुह् + दोह् – दोहइ, दोहेइ, दोहावइ, दोहावेइ.

२ उपांत्यमां दीर्घस्वरवाळा धातुमात्रने 'अवि' प्रत्यय पण वधारे लागे छेः

चूस् + अ – चूसइ, चूसेइ
चूसावइ, चूसावेइ
चूसाविइ

३ 'अ' अने 'ए' प्रत्यय लागतां धातुना उपांत्य 'अ'नो 'आ' थाय छेः

खम् — खाम — खामइ
खम् — खामे — खामेइ

४ एकमात्र 'भम' धातुनुं प्रेरक अंग 'भमाड'[७७] (भम्+आड) पण थाय छेः

भम् + अ – भामइ. भम् + ए – भामेइ.
भम् + आव – भमावइ. भम् + आवे – भमावेइ.
भम् + आड – भमाडइ, भमाडेइ.

५ आर्षप्राकृतमां कोइ कोइ प्रयोगोमां प्रेरणासूचक 'अवे' प्रत्यय

७७ गुजराती भाषामां पण 'आड' प्रत्ययवाळा प्रेरक धातुओनो प्रचार कांई ओछो नथी. चाटवु–चटाडवु. उघवुं–उघाडवु. जागवुं–जगाडवु. जीववु–जीवाडवु. जमवु–जमाडवु. वगेरे.

अचेइ कालो तूरंति राईओ	समणो गिहाइं न कुव्विज्जा
वरेहि वरं	पंडिओ खंतिं सेवेज्ज
हे धूआ! जहेव देवस्स वट्टिज्जासि तहेव पइणो वट्टिज्जासि	मिअं कालेण भक्खए
खमह जं मए अवरद्धं	तुम्हे गच्छंतो तया अम्हे गच्छमाणा
दीवो होंतो तया अंधयारो नस्संतो	तओ तस्स मा भाहि
वच्च, देहि से संदेसं, मा रुयह	उट्ठेह, वच्चामो
गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया!	अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं	पवहणं जुत्तमेव उवणेहि
	संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जं अम्हाणं कज्जं

पाठ १८ मो

प्रेरकभेद

प्रेरक प्रत्ययो

अ } (अय)
ए }

आव } (आपय)
आवे }

मूळ धातुने 'अ' 'ए' 'आव' अने 'आवे' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं प्रेरक अंग तैयार थाय छे:

कर् + अ = कार	कर् + आव = कराव
कर् + ए = कारे	कर् + आवे = करावे

कयली (कदली) केळ
नारी (नारी) नारी–नार
रयणी (रजनी) रजनी–रेण
राई (रात्री) रात
धाई(धात्री)धाई–धवरावनारी माता
कुमारी (कुमारी) कुंवारी
तरुणी (तरुणी) तरुण स्त्री
समणी (श्रमणी) साध्वी
साहुवी } (साध्वी) ,,
साहुणी }
तणुवी (तन्वी) पातळी–स्त्री
इत्थी } (स्त्री)–स्त्री तिरिया
थी }

वहिणी (भगिनी) वहेन
वाराणसी } (वाराणसी) वारा-
वाणारसी } णसी–बनारस नगर
पिच्छी (पृथ्वी) पृथ्वी
पुहवी (पृथ्वी) ,,
साडी (शाटी) साडी
मित्ती (मैत्री) मित्रता–मैत्री वृत्ति
अज्जू (आर्या) सासू–आजी
कणेरू (करेणू) हाथणी
ककंधू (कर्कन्धू) बोरडी
अलाऊ } (अलाबू) तुंबडी–
लाऊ } लउआ
वहू (वधू) वहू

तेनी जीभ उपर अमृत छे अने तारी जीभ उपर झेर छे

तेनी सासु मने आशिष आपशे के तारुं कल्याण थाओ

गाय अने हाथणी फूलनी माळावडे शोभशे

कीर्ति अने कार्यनी सिद्धि माटे प्रयत्न करो

जेने विवेकनी समज नथी ते पशु छे

हे बेन ! तारी नणंदनी आंखने सळी न अडे तेम तुं बेस.

आजे पडवो छे तेथी ब्राह्मणो नहि भणे.

पुत्र भणे तो पंडित थाय. [क्रियाति०]

आकाशमां वीजळी हमणां झबकशे एम जोशीए कह्युं

ससा (स्वसृ) स्वसा–बेन
वाया (वाच्) वाचा–वाणी
सरिआ } सरिया } (सरित्) सरिता–नदी
पाडिवआ } पाडिवया } (प्रतिपदा) पडवो तिथि
गिरा (गिर्) गिरा–वाणी
पुरा (पुर्) पुरी–नगर–नगरी

संपया } संपआ } (संपदा) संपदा–संपत्ति
चंदिआ } चंद्रिआ } (चन्द्रिका) चांदनी, चांदी–रूपु
चंदिमा (चन्द्रिका) चन्द्रमानी चांदनी
रच्छा (रथ्या) रथ चाले तेवी पहोळी शेरी–शेरी

[यादी: 'अच्छरसा'थी मांडीने 'संपआ' सुधीनां नामो मूळ अकारांत नथी, ए ध्यानमां राखवानुं छे.]

जुत्ति (युक्ति) जुक्ति–योजना
रत्ति (रात्रि) रात
माइ (मातृ) मा–माइ
भूमि (भूमि) भूमि–भों
जुवइ (युवति) युवति
धूळि (धूलि) धूळ
रइ (रति) प्रेम–राग
मइ (मति) मति
दिहि } धिइ } (धृति) धैर्य
सिप्पि (शुक्ति) छीप
सत्ति (शक्ति) शक्ति
सति (स्मृति) स्मृति–सरत
दित्ति (दीप्ति) दीप्ति–तेज
पंति (पङ्क्ति) पंक्ति–पंगत–पात
थुइ (स्तुति) स्तुति–थोय

कित्ति (कीर्ति) कीर्ति–कीरत
सिद्धि (सिद्धि) सिद्धि
रिद्धि (ऋद्धि) ऋद्धि–रध
संति (शान्ति) शांति
कंति (कान्ति) कांति
खंति (क्षान्ति) क्षमा
कंति (कान्ति) खांत–इच्छा–होंश
गउ (गो) गाय–गउ
कच्छु (कच्छु) खाज–खरज
विज्जु (विद्युत्) वीजळी
उज्जु (ऋजु) सरळ
माउ (मातृ) माता
दद्दु (दद्रु) धावर–दराज
चंचु (चञ्चु) चांच
गाई (गो) गाय
वावी (वावी) वाव

४ इकारांत उकारांतनुं संबोधननुं एकवचन विकल्पे दीर्घ थाय छे: 'बुद्धि !' 'बुद्धी !', 'धेणु !' 'धेणू'.

५ ईकारांत ऊकारांतनुं संबोधननुं एकवचन ह्रस्व थाय छे: 'नदि !' 'वहु !'

शब्दो

सद्धा (श्रद्धा) श्रद्धा
मेहा (मेधा) मेधा–बुद्धि
पण्णा (प्रज्ञा) प्रज्ञा
सण्णा (सज्ञा) सज्ञा–सान–समज
संझा (सध्या) सांज
वंझा (वध्या) वांज–वाझणी
भुक्खा (बुभुक्षा) भूख
तिसा (तृषा) तरस–लालच
तण्हा (तृष्णा) तृष्णा
सुण्हा, ण्हुसा (स्नुषा) स्नुषा–पुत्रवहू
पुच्छा (पृच्छा) प्रश्न
चिंता (चिन्ता) चिंता
आणा (आज्ञा) आज्ञा–आण
छुहा (क्षुधा) भूख
कउहा (ककुभा) दिशा
निसा (निशा) निशा–रात्री
दिसा (दिशा) दिशा–दश
नावा (नौका) नाव
गउआ (गोका) गाय

सलाया (शलाका) सळी
मट्टिआ (मृत्तिका) माटी
मक्खिआ, मच्छिआ (मक्षिका) माखी–माछी
कलिआ (कलिका) कळी
विज्जुला (विद्युत्) वीजळी
जिब्भा, जीहा (जिह्वा) जीभ
अच्छरसा (अप्सरस्) अप्सरा
आसिसा (आशिष्) आशिष–आशीर्वाद
धूआ (दुहिता) दीकरी
नणंदा (ननान्दृ) नणद
पिउच्छा, पिउसिआ (पितृष्वसा) पितानी वहेन–फई
माउसिआ, माउच्छा (मातृष्वसा) माशी–मातानी वहेन
बाहा (बाहु) बाहु–हाथ–बांय
माआ (मातृ) माता–जननी
माअरा, मायरा (मातृ) देवी, माता

नामनुं अंग अने प्रत्ययनो अंश ए बन्ने छूटा पाडीने ज जणावेलां छे अने साथे ए उपरथी साधित थतां दरेक रूपो पण जुदां जुदां बतावेलां छे.

आकारात, इकारांत, ईकारांत, उकारांत अने ऊकारांत—नारीजाति—नामोना बधां रूपो तद्दन सरखां छे, जे फेर छे ते नहि जेवो छे. एथी मूळ अंग अने प्रत्ययोनो विभाग—ए पद्धति एक ज स्थळे मुकी ए बधी साधनिका समजावेली छे.

दीर्घ ईकारांत नामोने प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां एक 'आ' प्रत्यय नवो लागे छे तथा आकारात सिवाय उक्त बधां नामोने तृतीयाथी सप्तमी सुधीना एकवचनमां पण 'आ' प्रत्यय वधारे लागे छे—आपेलां रूपो ज आ फेरफार बतावी आपे छे.

ए चारे प्रकारनां नामोना बधां रूपो तद्दन सरखां छे छतां संस्कृत साथेनी सरखामणी बताववा अने विशेष स्पष्ट करवा ते दरेकनां सर्व रूपो जणावेलां छे तथा ए रूपो द्वारा भाषाना प्रचलित रूपोनी सरखामणीनुं पण भान थाय एम छे.

१ 'त्तो' अने 'म्' प्रत्यय सिवायना बीजा बधा प्रत्ययो लागतां पूर्वनो स्वर दीर्घ थाय छे: 'बुद्धीओ', 'धेणूओ'.

२ 'म्' प्रत्यय लागतां पूर्वनो स्वर ह्रस्व थाय छे: 'नदिं', 'वहुं'.

३ ज्यां मूळ अंग ज वापरवानुं छे त्यां तेने दीर्घ करीने वापरवानुं छे: 'बुद्धी, धेणू'.

२	वहुं (वधूम्)	वहूउ, वहूओ वहू (वधूः)
३	वहूअ वहूआ (वध्वा) वहूइ वहूए	वहूहि (वधूभिः) वहूहिं वहूहिँ
४	वहूअ वहूआ वहूइ वहूए (वध्वै)	वहूण (वधूनाम्) वहूणं
५	वहुअ वहूआ (वध्वा.) वहूइ वहूए वहूहिंतो	वहूहिंतो (वधूभ्य) वहूसुंतो
६	वहूअ वहूआ (वध्वाः) वहूइ वहूए	वहूण (वधूनाम्) वहूणं
७	वहूअ वहूआ (वध्वाम्) वहूइ वहूए	वहूसु (वधूषु) वहूसुं
सं०	वहु (वधु !)	वहूओ, वहूउ (वध्वः) वहू

४	धेणूअ	धेणूण (धेनूनाम्)
	धेणूआ	धेणूण
	धेणूइ	
	धेणूए (धेनवे, धेन्वै)	
५	धेणूअ	
	धेणूआ (धेन्वाः, धेनो.)	
	धेणूइ	
	धेणूए	
	धेणूहिंतो	धेणूहिंतो (धेनुभ्य)
		धेणूसुंतो
६	धेणूअ	
	धेणूआ (धेन्वा , धेनो)	धेणूण (धेनूनाम्)
	धेणूइ	धेणूण
	धेणूए	
७	धेणूअ	धेणूसु (धेनुषु)
	धेणूआ (धेन्वाम् , धेनौ)	धेणूसुं
	धेणूइ	
	धेणूए	
सं०	धेणु, धेणु (धेनो !)	धेणूउ, धेणूओ (धेनवः)
		धेणू

ऊकारांत

वहू (वधू)

१	वहू (वधूः)	वहूउ, वहूओ (वध्वः)
		वहू

६ नदीअ	नदीण (नदीनाम्)
नदीआ (नद्या)	नदीणं
नदीइ	
नदीए	
७ नदीअ	नदीसु (नदीषु)
नदीआ (नद्याम्)	नदीसुं
नदीइ	
नदीए	
सं० नदि ! (नदि !)	नदीआ
	नदीउ
	नदीओ (नद्य.)
	नदी

उकारांत

धेणु (धेनु)

१ धेणू (धेनुः)	धेणूउ
	धेणूओ (धेनवः)
	धेणू
२ धेणुं (धेनुम्)	धेणूउ
	धेणूओ
	धेणू (धेनू)
३ धेणूअ	धेणूहि
धेणूआ (धेन्वा)	धेणूहिं (धेनुभिः)
धेणूइ	धेणूहिँ
धेणूए	

ईकारांत

नदी

१ नदी (नदी)	नदी+आ=नदीआ नदीउ नदीओ (नद्यः) नदी
२ नदिं (नदीम्)	नदीआ नदीउ नदीओ नदी (नदीः)
३ नदीअ नदीआ (नद्या) नदीइ नदीए	नदीहि (नदीभिः) नदीहिं नदीहिँ
४ नदीअ नदीआ नदीइ नदीए (नद्यै)	नदीण (नदीनाम्) नदीणं
५ नदीअ नदीआ (नद्याः) नदीइ नदीए नदीहिंतो	 नदीहिंतो (नदीभ्यः) नदीसुंतो

२ बुद्धिं (बुद्धिम्)	बुद्धि+उ=बुद्धीउ
	बुद्धि+ओ=बुद्धीओ
	बुद्धि=बुद्धी (बुद्धीः)
	बुद्धीहि
३ बुद्धीअ	
बुद्धि+आ=बुद्धीआ(बुद्ध्या)	बुद्धीहिं (बुद्धिभिः)
बुद्धीइ	बुद्धीहिँ
बुद्धीए	
४ बुद्धीअ	बुद्धीण (बुद्धीनाम्)
बुद्धीआ	बुद्धीणं
बुद्धीइ (बुद्ध्यै)	
बुद्धीए (बुद्धये)	
५ बुद्धीअ	
बुद्धीआ (बुद्ध्याः)	
बुद्धीइ	
बुद्धीए (बुद्धेः)	
बुद्धीहिंतो	बुद्धीहिंतो (बुद्धिभ्यः)
	बुद्धीसुंतो
६ बुद्धीअ	
बुद्धीआ (बुद्ध्याः)	बुद्धीण (बुद्धीनाम्)
बुद्धीइ	बुद्धीण
बुद्धीए (बुद्धेः)	
७ बुद्धीअ	बुद्धीसु (बुद्धिषु)
बुद्धीआ (बुद्ध्याम्,	बुद्धीसुं
बुद्धीइ बुद्धौ)	
बुद्धीए	

सं० बुद्धी, बुद्धि (बुद्धे !) बुद्धीउ, बुद्धीओ, बुद्धी (बुद्धयः)

माला+इ=मालाइ
माला+ए=मालाए
माला+हिंतो=मालाहिंतो	माला+हिंतो=मालाहिंतो (मालाभ्यः)
माला+सुंतो=मालासुंतो

६ माला+अ=मालाअ	माला+ण=मालाण (मालानाम्)
माला+इ=मालाइ (मालया)	माला+णं=मालाणं
माला+ए=मालाए

७ माला+अ=मालाअ (मालायाम्)	माला+सु=मालासु (मालासु)
माला+इ=मालाइ	माला+सुं=मालासुं
माला+ए=मालाए

सं० माला=माले ! (हे माले !)	माला+उ=मालाउ
माला=माला !	माला+ओ=मालाओ
माला+माला (मालाः)

वाया (वाक्) [मूळ अकारांत नहि]

'वाया'ना वधा रूपो 'माला' जेवां ज करवाना छे. विशेषता मात्र संबोधनमां छेः 'हे वाया !' ए एक ज रूप थाय, पण 'वाये !' 'वाया !' एवां बे रूपो न थाय

इकारांत

वुद्धि

१ वुद्धी (वुद्धि)	वुद्धि+उ=वुद्धीउ
वुद्धि+ओ=वुद्धीओ (वुद्धय.)
वुद्धि=वुद्धी

	वाच्	— वाया	— हे वाया !
मूळ अकारांत	माल	— माला	— हे माले ! हे माला !
	रम	— रमा	— हे रमे ! हे रमा !
	कान्त	— कान्ता	— हे कांत ! हे कांता !
	देवत	— देवता	— हे देवते ! हे देवता !
	मेध	— मेधा	— हे मेहे ! हे मेहा !

रूपाख्यान

माला [मूळ अकारांत]

	एकवचन	बहुवचन
१	माला=माला (माला)	माला+उ=मालाउ
		माला+ओ=मालाओ
		माला=माला (मालाः)
२	माला+म्=मालं (मालाम्)	माला+उ=मालाउ
		माला+ओ=मालाओ
		माला=माला (मालाः)
३	माला+अ=मालाअ (मालया)	माला+हि=मालाहि(मालाभिः)
	माला+इ=मालाइ	माला+हिं=मालाहिं
	माला+ए=मालाए	माला+हिँ=मालाहिँ
४	माला+अ=मालाअ	माला+ण=मालाण(मालानाम्)
	माला+इ=मालाइ	माला+णं=मालाणं
	माला+ए=मालाए (मालायै)	
७६५	माला+अ=मालाअ (मालायाः)	

७६ अकारांत नामने लागता 'उ', 'ओ', 'तो' अने 'त्तो' प्रत्ययो पण अहीं जणावेला तमाम नामोने लागे छे. जेमके—मालाउ, मालाओ, मालातो, मालत्तो

न कोवए आयरियं
संनिहिं न कुव्विज्जा
संवुडो निद्धुणे पावस्स
मलं

सव्वं गंथं कलहं च विप्प-
जहेय भिक्खू
रावणो सीलं रक्खंतो तया
रामो तं रक्खंतो

पाठ १७ मो

आकारांत इकारांत ईकारांत उकारांत अने ऊकारांत नामो [नारीजाति]

प्राकृतमा आकारांत नामो बे जातनां छेः—केटलांक आकारांत नामोनुं मूळ रूप अकारांत होय छे अने नारीजातिने लीधे तेओ आकारांत वनेलां होय छे त्यारे बीजां केटलांक आकारांत नामोनुं मूळ रूप तेवुं आकारांत नथी होतुं पण तेओ वीजी रीते आकारांत थयेलां होय छे.

आ नीचे ए बन्ने आकारात नामोना रूपो आपेलां छे. जेओ मूळथी अकारात नथी तेमनुं संबोधननुं एकवचन प्रथमा विभक्ति जेवुं ज थाय छे त्यारे जेओ मूळथी अकारांत छे तेमनुं संबोधननुं एकवचन करता तेमना अंत्य 'आ'नो विकल्पे 'ए' करवामां आवे छे—ए वेय नामोनां रूपोमां वीजो कशो भेद नथी.

जेमकेः—ननान्दृ — नणंदा — हे नणंदा !
अप्सरस् — अच्छरसा — हे अच्छरसा !
सरित् — सरिया — हे सरिया !
सरिआ — हे सरिआ !

एकवचन	बहुवचन
भण्—भणंतो, भणमाणो	भणंता, भणमाणा
हो— होअंतो, होअमाणो	होअंता, होअमाणा
होंतो, होमाणो	

भण्—भणेज्ज, भणेज्जा
हो— होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा

[यादीः—नारीजातिमां न्ती, न्ता तथा माणी अने माणा प्रत्ययो लगाडवाना छे. आवां नारीजातिनां रूपो तथा क्रियातिपत्तिनो बहुवचनी प्रयोग वांचवामां के जोवामां नथी आव्यो छतां अहीं जे आ बधां रूपो बताव्यां छे ते मात्र कल्पनाथी समझवानां छे.]

मुनि पापने वर्जे
आचार्यने कोपाववा नहि
खेतरमां बी वाव
धर्मना काम माटे त्वरा कर
इच्छुं छुं धर्म माटे धन वापरे
पुत्र भणे तो पंडित थाय. (क्रियाति०)

श्रद्धा राखुं छुं ते सत्य वचनने बोले
समय छे हुं धन भेगुं करुं
धारुं छुं तुं सारा काम माटे संमति आपे
शिष्यने गुरुनी पासे लई जा
तने व्रत माटे सूचन करुं

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते
वसे गुरुकुले निच्चं
उत्तमट्ठं गवेसए
गोयमा! समयं मा पमायए

बालाणं मरणं असइं भवे
सावज्जं वज्जए मुणी
दीवो होंतो तया अंधयारो नस्संतो

वळी, ज्यारे एक क्रिया बीजी क्रियानुं कारण होय त्यां पण आ पाठमां जणावेला विध्यर्थ प्रत्ययो पण वपराय छे –

'जइ गुरुं उवासेय सत्थन्तं गच्छेय' —
'जो गुरुनी उपासना करे तो शास्त्रनो छेडो पामे'

धातुओ

उवणी (उप+नी) पासे लई जवु
पच्चप्पिण् (प्रत्यर्पण–प्रति+अर्पण) पाछु सोंपवु
पडिनी, पडिणी (प्रति+नी) पाछु देवु–सामु देवु–बदले देवु
वर् (वृ) वरवु–स्वीकारवु–वरदान लेवु
वाव् (वाप्) वाववु, ववरावववु
तूर् (त्वर) त्वरा करवी–झपाटाबध जवु
संदिस् (सम्+दिश्) सदेशो आपवो–सूचन करवु
उवदंस् (उप+दर्श) देखाडवु–पासे जइने बतावववु
अणुजाण् (अनु+जाना) अनुज्ञा आपवी–समति आपवी
संवड्ढ् (सवर्ध्) सवर्धन करवु–पोषवु–साचववु
चिणा (चिनु) चणवु–एकठु करवु

क्रियातिपत्ति

ज्यारे परस्पर संकेतवाळां बे वाक्योनुं एक संयुक्त वाक्य बनेलुं होय अने तेमा जणाती बन्ने क्रियाओ कोई मात्र सांकेतिक क्रिया जेवी अशक्य भासती होय त्यार क्रियातिपत्तिनो प्रयोग थाय छे. क्रियातिपत्ति एटले क्रियानी अतिपत्ति–असंभवितता. क्रियानी असंभवितताने सूचववा ज क्रियातिपत्तिनो उपयोग थाय छे.

प्रत्ययो

सर्वपुरुष, सर्ववचन —न्तो, माणो, ज्ज, ज्जा

आर्ष प्राकृतना वपराएला बीजां केटलांक अनियमित

(कुर्यात्)	कुज्जा
(कुर्याः)	
(निदध्यात्)	निहे
(अभितापयेत्)	अभितावे
(अभिभाषेत)	अभिभा
(स्यात्)	सिया सिआ
(आच्छिन्द्यात्)	अच्छे
(आभिन्द्यात्)	अब्मे
(हन्यात्)	हणिया

क्रियापद साथे नीचे जणावेला शब्दोनो संबंध होय तो आ पाठमां जणावेला विध्यर्थ प्रत्ययोनो प्रयोग थइ शके छे

उअ } अव्यय — 'उअ कुज्जा' — 'धारुं छुं करे'
अवि } — अवि भुंजिज्ज — 'खाय पण'

श्रद्धा के संभावना अर्थना धातुनो प्रयोगः

सद्दह (धातु) — 'सद्दहामि सो पाढ पढिज्ज' — 'श्रद्धा राखुं छुं ते पाठने भणे'

'संभावेमि तुमं न जुज्झिज्जसि' — 'संभावना करुं छुं तुं नहीं लडे'

'जं' साथे काळवाचक कोइ पण शब्द (काळ, वेला, समय, अवसर वगेरे)

'कालो जं भणिज्जामि' — 'वखत छे हुं भणुं'
'वेला जं गापज्जसि' — 'वेळा छे तुं गा'

३ पु०	हसिज्जए	हसिज्ज, हसेज्ज
	हसेज्जए	हसिज्जा, हसेज्जा
	हसे	
	हसेय	
	हसिज्ज	
	हसेज्ज	
	हसिज्जा	
	हसेज्जा	

सर्वपुरुष } हसिज्जइ
सर्ववचन } हसेज्जइ

'हो'नुं विकरणवाळुं 'होअ' अंग थाय. तेनां रूपो 'हस्' प्रमाणे जाणवां अने ए रीते विकरण लगाडेलां तमाम स्वरांत धातुनां रूपो जाणवां.

विकरण विनाना 'हो'नां रूपो आ प्रमाणेः

१ पु०	होज्जामि	होज्जामो
२ पु०	होज्जासि	होज्जाह
	होज्जसि	
३ पु०	होज्जए	होज्ज
	होए	होज्जा
	होएय	
	होज्ज	
	होज्जा	

सर्वपुरुष } होज्जइ
सर्ववचन } होएज्जइ } (विकरणवाळुं)
होइज्जइ }

पाठ १६ मो

विध्यर्थ (चालु)

विध्यर्थना ज खास प्रत्ययो आ नीचे प्रमाणे छे:

१ पु०	ज्जामि	ज्जामो
२ पु०	ज्जासि	ज्जाह
	ज्जसि	
३ पु०	ज्जए	ज्ज, ज्जा
	ए	
	एय	
	ज्ज	
	ज्जा	

सर्वपुरुष } ज्जइ
सर्ववचन }

'ज्ज' के 'ज्जा' आदिवाळा प्रत्ययो लगाडतां पहेलां धातुना अं 'अ'नो 'इ' अने 'ए' थाय छे. जेमके:—

हस्

१ पु०	हसिज्जामि	हसिज्जामो
	हसेज्जामि	हसेज्जामो
२ पु०	हसिज्जासि	हसिज्जाह
	हसेज्जासि	हसेज्जाह
	हसिज्जसि	
	हसेज्जसि	

तुं ईंडाने न हणजे
ते पापप्रवृत्तिने न करे
हे चित्र ! जा अने हरणने
शोध
मुनि असंजमने वर्जे
नु चौटामां जा अने दाड-
मने लाव

पोते पोताने शोध वहार
न भम
तेनां वधां शल्यो वळो
ब्राह्मण ! बोकडानो होम न
कर पण तलनो होम कर
सर्व भूतोमां प्रेम करो
प्राणीना प्राण न हणो
घोडा उपर पलाण राख

सावज्जं वज्जउ मुणि
ण कोवउ आयरियं
न हण पाणिणो पाणे
संनिहिं न कुणउ माहणो
संवुडो निद्धुणाउ पावस्स
रजं
सव्वं गंथं कलहं च विप्प-
जहाहि भिक्खू !
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
जेणाहं णाणा दुक्खं न
गच्छेज्जा
गच्छाहि णं तुमं चित्ता !

वित्तेण ताणं न लहउ पमत्ते
उत्तमट्ठं गवेसउ
वसामु गुरुकुले निच्चं
असंजमं णवर न सेवेज्जा
भिक्खू न कम्मंवि छिंदेह
वालस्स वालत्तं पस्स
वालाण मरणं असइं भवेज्ज
सुयं अहिट्ठिज्जा
गोयम ! समयं मा पमायउ
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं
न य णं दाहामु तुमं नियंठा !

हो

१३ मा पाठमां बताव्या प्रमाणे प्रत्येक स्वरात धातुनां विकरणवाळां अने विकरण विनानां अंगो बनाववां अने ए तैयार थएलां अंगो द्वारा प्रस्तुत विध्यर्थ अने आज्ञार्थनां रूपो साधी लेवां. जेमके:

हो (विकरण विना)

१ पु० होमु	होमो

होअ (विकरणवाळुं)

१ पु० होअमु	होअमो
होआमु	होआमो
होइमु	होइमो
होएमु	होएमो

पूर्व प्रमाणे 'हो' वगेरे बधा स्वरांत धातुओनां अंगो बनावी विध्यर्थ अने आज्ञार्थना बधां रूपो साधवानां छे.

सामान्य शब्दो

नरजाति

आयरिय (आचार्य) आचार्य–धर्मगुरु, विद्यागुरु
पाण (प्राण) प्राण–जीव
पाणि (प्राणिन्) प्राणी
असंजम (असयम) असंयम
अप्प (आत्मन्) आत्मा–आप–पोते
चित्त (चित्र) एक सारथिनु नाम
बोज्झ (वह्य) बोजो

भारय (भारक) भारो
हरिण (हरिण) हरण
दाडिम (दाडिम) दाडम
तिल (तिल) तल
छेअ (छेद) छेडो
बोक्कड (वर्कर) बोकडो–बकरो
गब्भ (गर्भ) गाभो
पायय (पादक) पायो
वंसअ (वंशक) वासो–पीठ

१ उपर्युक्त वधा प्रत्ययो लागतां धातुना अकारांत अंगनां अंत्य 'अ' नो 'ए' विकल्पे थाय छे. जेमके:—

हस् + उ – हस् + अ + उ = हसेउ, हसउ

हस् + मो – हस् + अ + मो = हसेमो, हसमो

['अ' विकरण माटे जुओ पाठ १ नि० १]

२ प्रथम पुरुषना प्रत्ययो लागतां धातुना अकारांत अंगमा अंत्य 'अ'नो 'आ' तथा 'इ' विकल्पे थाय छे जेमके—

हस् + मु – हस् + अ + मु = हसामु, हसिमु, हसमु

३ अकारांत अंगने लागता 'हि' प्रत्ययनो प्रायः लोप थाय छे अने क्यांक ए अंगना अंत्य 'अ'नो 'आ' पण थाय छेः

हस्+अ+हि=हस गच्छ्+अ+हि=गच्छाहि

४ कोइक ज प्रयोगमां त्रीजा पुरुषनो (एकवचननो) 'उ' के 'तु' प्रत्यय लागतां पूर्वना 'अ' नो 'आ' पण थाय छे.

जेमके—सुण् + अ + उ = सुणाउ, सुणउ, सुणेउ

रूपाख्यान

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	हसमु, हसामु हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो हसिमो, हसेमो
२ पु०	हससु, हसेसु हसाहि, हसहि, हस	हसह, हसेह
३ पु०	हसउ, हसेउ हसतु, हसेतु	हसंतु, हसेंतु, हसितु
सर्व पुरुष सर्व वचन	हसेज्ज हसेज्जा	

[ज्ज, ज्जा माटे जुओ पाठ ३]

९ अनुज्ञा-निमणुंक-‘ भवं हि अणुन्नाओ घडं कुणउ’--‘ तमे निमाएल छो, घडाने करो ’

१० अवसर-समय-‘ भवओ अवसरो घडं कुणउ ’-‘ तमारो अवसर छे घडाने करो ’ अर्थात् तमारो काम करवानो समय थई गयो छे एटले काम करो.

११ अधीष्टि-मान साथेनी प्रेरणा-‘ भवं पंडिओ वयं रक्खउ ’-‘ तमे पडित छो, व्रतने साचवो ’

धातु

वज्ज् (वर्ज्) वर्जवु-तजी देवु
कोव् (कोप्) कोपावनु
सेव् (सेव्) सेववुं-धारण करवु आश्रय लेवो
छिंद् (छिन्द्)छेदवु-हणवु-मारवु
लभ् (लभ्) लाभवु-मेळववु
भव् (भव्) थवु-होवु
गवेस् (गवेष्) गवेषवु-शोधवु
विकिर् } विइर् } (वि+किर्) वेरवु
विप्पजह् (वि+प्र-जहा) त्याग करवो-दूर करवु
कप्प्(कल्प्) खपवु-उपयोगमा लेवु
हण् (हन्) हणवु
कुव्व् (कुरु) करवु
पास् } पस्स् } (पश्य) जोवु

संजल् (स+ज्वल्), बळवु-कोप करवो
उवास् (उप-आस्) उपासना करवी
गच्छ् (गच्छ्) जवु-पामवु
भा (भी) बीवु
जिण् (जि) जीतवु-जय मेळववो
खल् (स्खल्) स्खलित थवु-दूर थवु
निद्धुण् (निर्+धुना) खखेरवु-दूर करवु
वस् (वस्) वसवु-रहेवु
पमाय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो-आळस करवी
विणस्स् (वि+नश्य) वणसी जवु-नष्ट थवु-वगडवु
आलोट्ट् (आ+लुटय) आळोटवुं

पालिभाषामा विध्यर्थनुं बीजुं नाम सप्तमी छे अने आज्ञार्थनुं बीजुं नाम पचमी छे. सस्कृतमा आचार्य हेमचंद्रे पण, ए ज नाम स्वीकारेल छे पाणिनीय व्याकरणमा विध्यर्थनुं नाम 'विधिलिङ्' छे अने आज्ञार्थनुं नाम 'लोट्' छे.

इच्छासूचन, विधि, निमंत्रण, आमंत्रण, अधीष्ट, संप्रश्न, प्रार्थना, प्रैष, अनुज्ञा, अवसर अने अधीष्टि आटला अर्थोने सूचववा विध्यर्थ अने आज्ञार्थना प्रत्ययोनो प्रयोग थाय छे. ते प्रत्येक अर्थनी माहिती आ प्रमाणे छेः

१ **इच्छासूचन**–'हुं इच्छुं छुं ते भोजन करे' एवा अर्थनी सूचना ते इच्छासूचन. 'इच्छामि स भुंजउ'

२ **विधि**–कोईने प्रेरणा करवी· 'सो वत्थं सिव्वउ'–'ते कपडाने सीवे'

३ **निमंत्रण**–प्रेरणा कर्या पछी प्रवृत्ति न करनार दोषनो भागीदार थाय एवी प्रेरणा· 'दुवेलं संझं कुणउ'–'बे वार संध्या करो'

४ **आमंत्रण**–प्रेरणा कर्या पछी प्रवृत्ति करवी के न करवी ते इच्छा उपर रहे एवी प्रेरणाः 'एत्थ उवविसउ'–'अहीं बेसो'

५ **अधीष्ट**–सादर प्रेरणा–'वयं पालउ'–'व्रतने पाळो'

६ **संप्रश्न**–एक प्रकारनी धारणा–'किं अहं वागरणं पढामु उअ आगमं पढामु'–'शुं हुं व्याकरण भणुं के आगम भणुं?'

७ **प्रार्थना**–मागणी–'पत्थणा मम आगमं पढामु'–'मारी मागणी छे–हुं आगम भणुं'

८ **प्रैष**–धिक्कारपूर्वकनी प्रेरणा–'घडं कुणउ'–'घडाने करो'

९ अनुज्ञा–निमणुंक–'भवं हि अणुन्नाओ घडं कुणउ'––'तमे निमाएल छो, घडाने करो'

१० अवसर–समय–'भवओ अवसरो घडं कुणउ'–'तमारो अवसर छे घडाने करो' अर्थात् तमारो काम करवानो समय थई गयो छे एटले काम करो.

११ अधीष्टि–मान साथेनी प्रेरणा–'भवं पंडिओ वयं रक्खउ'–'तमे पंडित छो, व्रतने साचवो'

धातु

वज्ज् (वर्ज्) वर्जवु–तजी देवु
कोव् (कोप्) कोपावबु
सेव् (सेव्) सेववुं–धारण करवु आश्रय लेवो
छिंद् (छिन्द्) छेदवु–हणवु–मारवु
लभ् (लभ्) लाभवु–मेळववु
भव् (भव्) थवु–होवु
गवेस् (गवेष्) गवेषवु–शोधवु
विकिर / विइर् (वि+किर्) वेरवु
विप्पजह (वि+प्र–जहा) त्याग करवो–दूर करवु
कप्प्(कल्प्) खपवु–उपयोगमा लेवु
हण् (हन्) हणवु
कुव्व् (कुर्) करवु
पास् / पस्स् (पश्य) जोवु

संजल् (स+ज्वल्), बळवु–कोप करवो
उवास् (उप–आस्) उपासना करवी
गच्छ् (गच्छ्) जवु–पामवु
भा (भी) बीवु
जिण् (जि) जीतवु–जय मेळववो
खल् (स्खल्) स्खलित थवु–दूर थवु
निद्धुण् (निर्+धुना) खखेरवु–दूर करवु
वस् (वस्) वसवु–रहेवु
पमाय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो–आळस करवी
विणस्स् (वि+नश्य) वणसी जवु–नष्ट थवु–बगडवु
आलोट्ट् (आ+लुट्य) आळोटवुं

प्राकृतमां विध्यर्थनुं बीजुं नाम सत्तमी छे अने आज्ञार्थनुं बीजुं नाम पंचमी छे. संस्कृतमा आचार्य हेमचंद्रे पण, ए ज नाम स्वीकारेल छे. पाणिनीय व्याकरणमा विध्यर्थनु नाम 'विधिलिङ्' छे अने आज्ञार्थनुं नाम 'लोट्' छे.

इच्छासूचन, विधि, निमंत्रण, आमंत्रण, अधीष्ट, संप्रश्न, प्रार्थना, प्रैप, अनुज्ञा, अवसर अने अर्धीष्टि आटला अर्थोने सूचववा विध्यर्थ अने आज्ञार्थना प्रत्ययोनो प्रयोग थाय छे. ते प्रत्येक अर्थनी माहिती आ प्रमाणे छेः

१ **इच्छासूचन**–'हुं इच्छुं छुं ते भोजन करे' एवा अर्थनी सूचना ते इच्छासूचन 'इच्छामि स भुंजउ'

२ **विधि**–कोईने प्रेरणा करवी 'सो वत्थं सिव्वउ'–'ते कपडाने सीवे'

३ **निमंत्रण**–प्रेरणा कर्या पछी प्रवृत्ति न करनार दोषनो भागीदार थाय एवी प्रेरणा 'दुवेलं संझं कुणउ'–'बे वार संध्या करो'

४ **आमंत्रण**–प्रेरणा कर्या पछी प्रवृत्ति करवी के न करवी ते इच्छा ऊपर रहे एवी प्रेरणाः 'एत्थ उवविसउ'–'अहीं बेसो'

५ **अधीष्ट**-सादर प्रेरणा–'वयं पालउ'–'व्रतने पाळो'

६ **संप्रश्न**–एक प्रकारनी धारणा–'किं अहं वागरणं पढामु उअ आगमं पढामु'–'शुं हुं व्याकरण भणुं के आगम भणुं?'

७ **प्रार्थना**–मागणी–'पत्थणा मम आगमं पढामु'–'मारी मागणी छे–हुं आगम भणुं'

८ **प्रैप**–धिक्कारपूर्वकनी प्रेरणा–'घडं कुणउ'–'घडाने करो'

९ अनुज्ञा–निमणुंक–'भवं हि अणुन्नाओ घडं कुणउ'—'निमाएल छो, घडाने करो'

१० अवसर–समय–'भवओ अवसरो घडं कुणउ'–'तमारो अवसर छे घडाने करो' अर्थात् तमारो काम करवानो समय थई गयो छे एटले काम करो.

११ अधीष्टि–मान साथेनी प्रेरणा–'भवं पंडिओ वयं रक्खउ'–'तमे पंडित छो, व्रतने साचवो'

धातु

वज्ज् (वर्ज्) वर्जवुं–तजी देवु
कोव् (कोप्) कोपाववु
सेव् (सेव्) सेववुं–धारण करवु आश्रय लेवो
छिंद् (छिन्द) छेदवु–हणवु–मारवु
लभ् (लभ्) लाभवु–मेळववु
भव् (भव्) थवु–होवु
गवेस् (गवेष्) गवेषवु–शोधवु
विकिर्, विइर् (वि+किर्) वेरवु
विप्पजह् (वि+प्र–जहा) त्याग करवो–दूर करवु
कप्प् (कल्प्) खपवु–उपयोगमां लेवु
हण् (हन्) हणवु
कुव्व् (कुर्) करवु
पास्, पस्स् (पश्य) जोवु

संजल् (स+ज्वल्), बळवु–कोप करवो
उवास् (उप–आस्) उपासना करवी
गच्छ् (गच्छ) जवु–पामवु
भा (भी) बीवु
जिण् (जि) जीतवु–जय मेळववो
खल् (स्खल्) स्खलित थवु–दूर थवु
निद्धुण् (निर्+धुना) खखेरवु–दूर करवु
वस् (वस्) वसवु–रहेवु
पमाय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो–आळस करवी
विणस्स (वि+नश्य) वणसी जवु–नष्ट थवु–बगडवु
आलोट्ट् (आ+लुट्य) आळोटवुं

पालिभाषामा विध्यर्थनुं बीजुं नाम सत्तमी छे अने आज्ञार्थनुं बीजुं नाम पंचमी छे संस्कृतमा आचार्य हेमचंद्रे पण, ए ज नाम स्वीकारेल छे. पाणिनीय व्याकरणमां विध्यर्थनुं नाम 'विधिलिङ्' छे अने आज्ञार्थनुं नाम 'लोट्' छे.

इच्छासूचन, विधि, निमंत्रण, आमंत्रण, अधीष्ट, संप्रश्न, प्रार्थना, प्रैष, अनुज्ञा, अवसर अने अधीष्टि आटला अर्थोने सूचववा विध्यर्थ अने आज्ञार्थना प्रत्ययोनो प्रयोग थाय छे ते प्रत्येक अर्थनी माहिती आ प्रमाणे छे:

१ **इच्छासूचन**–'हुं इच्छुं छुं ते भोजन करे' एवा अर्थनी सूचना ते इच्छासूचन 'इच्छामि स भुंजउ'

२ **विधि**–कोईने प्रेरणा करवी' 'सो वत्थं सिव्वउ'–'ते कपडाने सीवे'

३ **निमंत्रण**–प्रेरणा कर्या पछी प्रवृत्ति न करनार दोषनो भागीदार थाय एवी प्रेरणा' 'दुवेलं संझं कुणउ'–'बे वार संध्या करो'

४ **आमंत्रण**–प्रेरणा कर्या पछी प्रवृत्ति करवी के न करवी ते इच्छा ऊपर रहे एवी प्रेरणा: 'एत्थ उवविसउ'–'अहीं बेसो'

५ **अधीष्ट**–सादर प्रेरणा–'वयं पालउ'–'व्रतने पाळो'

६ **संप्रश्न**–एक प्रकारनी धारणा–'किं अहं वागरणं पढामु उअ आगमं पढामु'–'शुं हुं व्याकरण भणुं के आगम भणुं?'

७ **प्रार्थना**–मागणी–'पत्थणा मम आगमं पढामु'–'मारी मागणी छे–हुं आगम भणुं'

८ **प्रैष**–धिक्कारपूर्वकनी प्रेरणा–'घडं कुणउ'–'घडाने करो'

तस्स पिउणो भाउणो य
जोव्वणं विघडीअ
मरहट्ठीआ लोहं चयंति
सत्तमंसि वरिसंसि आगमिस्सं
मम भाउणो भालं विसाल-
मत्थि
तस्स छट्ठो भायरो न परि-
व्वयिहिए
अहं विइज्जे दिणे दीवेल्लं
पाएहिमि
मम वहिणीवई एमया धणं
संपाउणित्था
पिअ! मम वयणं न सुणि-
हिसि?

सुरट्ठीआ कोहं न काहिंति
तुम्हे सोरट्ठीए घोडए
वक्खाणेह
सोवण्णिओ दहणंसि तंवं
खिवित्था
मूओ केवलं कंजिअं पाहिइ
दुवारंसि कोहलं पडिहिइ
गड्डहो तुरंगमो य दोन्नि
भायरा संति
दिणे दिणे तुमं आसं च
पक्खालिस्सं
तेल्लेण दीवा दीवेहिंति
सो तुज्झ भाया तस्स जामा-
ऊहिं सह गच्छीअ

पाठ १५ मो
विध्यर्थ अने आज्ञार्थ
प्रत्ययो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	मु	मो
२ पु०	सु } (स्व) हि } (हि)	ह (ध्वम्)
३ पु०	उ } (तु) तु }	न्तु (अन्तु)

धातु

अच्चे (अति+इ) अतीत थवु-पार पामवु
पडिवज्ज् (प्रति+पद्य) पामवु-स्वीकारवु
कोव् (कोप) कोप करवो, कुपित करवु
आगम् (आ+गम्) आववु
अहिट्ठ् (अधि+स्था–तिष्ठ) अधिष्ठान मेळववु–उपरि थवु
एस् (एष) एषणा करवी–शोधवु
परिव्वय् (परि+व्रज्) परिव्रज्या लेवी–बंधन रहित थइ चारे कोर फरवु

संपाउण् (संप्राप्नु = सम्+प्र+आप्+नु) सारी रीते पामवु
आयय् (आ+दय) आदान करवु-ग्रहण करवु
परिदेव् (परि+दिव) खेद करवो
विहड् } विघड् } (वि+घट) वगडवु-नाश पामवो
पक्खाल् (प्र+क्षाल) पखाळवु-धोवुं
समारंभ् (सम्+आ+रम्भ) समारंभ करवो-हणवु
णिव्विज्ज् (निर्+विद्य) निर्वेद पामवो

तेओनो ए गधेडो रंगेलो छे
घोडो, पोठियो अने ऊंट धान्य खाशे
अमारा बनेवीनो पुत्र वरसे वरसे धन पामशे
तमारा भाईए पोताना जमाईने सवायुं आप्युं
अढी वरसे, साडा त्रण मासे अने दोढ दिवसे अमे आवशुं
तमारो जमाई दिवसे दिवसे

निर्वेद पामे छे तेथी तमारुं कुटुंब खेद पामे छे
पांचमे के आठमे दिवसे ते जशे
मुनि मरणनो पार पाम्यो
अमे पिताने कुपित नहि करीशुं
चोथानी अंदर साडा त्रण छे
अमे शब्दोने बोलीशुं
आगनी आंचमां दीवेल पडशे
एकवार सातमे वरसे ते दातारे बधुं धन आप्युं

संख्यासूचक विशेषण

पढम (प्रथम) प्रथम–परथम

विइय / विइज्ज / दुइय / दुइज्ज (द्वितीय) बीजु–दूजु

तइय / तइज्ज (तृतीय) त्रीजु

चउत्थ (चतुर्थ) चोथु

पंचम (पञ्चम) पांचमु

छट्ठ (षष्ठ) छट्ठु

सत्तम (सप्तम) सातमु

अट्ठम (अष्टम) आठमु

नवम (नवम) नवमु

दसम (दशम) दशमु

सवाय (सपाद) सवायु–सवा

दियड्ढ / दिवड्ढ (द्वितीयार्ध) जेमां एक आखु अने बीजु अडधु छे ते–दोढ

अड्ढीअ / अड्ढाइअ / अड्ढाइज्ज (अर्धतृतीय) जेमां बे आखा अने त्रीजु अडधुं छे ते–अढी

अद्धुट्ठ (अर्धचतुर्थ) जेमां त्रण आखा अने चोथु अडधु छे ते–ऊठ–साडा त्रण

पाय (पाद) पा–चोथो भाग

अद्ध / अड्ढ (अर्ध) अडधु

पाऊण (पादोन) पोणु–पोणो भाग

अव्यय

[75]अहव / अहवा (अथवा) अथवा

अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य–अचूक

अत्थ (अस्तम्) आथमवु–अदर्शन

एगया (एकदा) एकवार

कहि, कहिं (कुत्र) क्यां–कहीं

आम (आम) हा–स्वीकार

अतो (अतर्) अदर

इओ (इत) आथी, एथी, वाक्यनो आरभ, आ बाजुथी

केवलं (केवलम्) केवळ–नकरु

तहि, तहिं (तत्र) त्यां–तहीं

---

७५ उपयोग—'एत्थ तुम अहवा सो आगच्छउ' अर्थात् 'अहीं तु अथवा ते आवो'

आस (अश्व) अश्व-घोडो
पोट्टिय (पृष्टिक) पीठ ऊपर वहन करनार-पोठेओ-महादेवनो पोठियो
कवड्ड (कपर्द) कोडो-कोडी
गड्डह, गद्दह (गर्दभ) गधेडो
उट्ट (उष्ट्र) ऊंट
वच्छ (वत्स) वच्चु-सतान-वाछडो
वच्छयर (वत्सतर) वच्छेरो
अंध, अंधल (अन्ध) आंधळो
देवर (देवर) देवर-देर-दियर
जेट्ठ (ज्येष्ठ) मोटो, जेठ
रुक्ख (वृक्ष) रुख-झाड

मरहट्ठ (महाराष्ट्र) मोटो देश महाराष्ट्र देश
मरहट्ठीअ (महाराष्ट्रीय) महाराष्ट्रना वतनी-मराठी लोक
मूअ (मूक) मूंगो
घोडअ (घोटक) घोडो
तुरंगम (तुरगम) तरत जनार-तुरग-घोडो
अक्क (अर्क) सूर्य, आकडानु झाड
नग्ग (नग्न) नागो, लुच्चो
सुरट्ठ (सुराष्ट्र) सोरठ देश
सुरट्ठीअ, सोरट्ठीअ (सुराष्ट्रीय) सौराष्ट्रीय-सोरठना वतनी-सोरठी लोक

सामान्य शब्दो [नान्यतरजाति]

असु (अश्रु) आंसु
लोहिअ (लोहित) लोही
सत्थिल्ल, सत्थि (सक्थि) साथळ
तालु (तालु) ताळवु
दारु (दारु) दारु-लाकडु
वार, दुवार (द्वार) वार-बारणु
णडाल (ललाट) निलाट-ललाट
भाल (भाल) भाल-कपाळ-ललाट
वरिस (वर्ष) वरस

दिण (दिन) दिन-दन-दनियु-दिवस
जोव्वण (यौवन) जोवन-यौवन
दीवेल्ल, दीवतेल्ल (दीपतैल) दीवेल-दीवो बाळवानु तेल
कोहल (कूष्माण्ड) कोळु
दहण (दहन) देण-दहन-आग-बळवु
धन्न (धान्य) धान्य
तेल्ल (तैल) तेल
तंब (ताम्र) तांबु
कंजिय (काञ्जिक) कांजी

अकारांत अंग-दायार

१ दायारं	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ
२ दायारं	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ
सं० दाय! दायार!	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ

बाकी बधां नरजाति प्रमाणे

उकारांत अंग-दाउ

[याद: उकारांत अंग एकवचनमां वपरातुं नथी. जुओ पाठ १४ नि० १]

१-२, सं० } दाऊणि, दाऊइं, दाऊइँ (दातृणि)

अकारांत अंग-सुपिअर (सुपितृ)

१ सुपिअरं	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ
२ सुपिअरं	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ
सं० सुपिअरं, सुपिअर! सुपिअ!	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ

उकारांत अंग-सुपिउ (सुपितृ)

१-२, सं० } सुपिऊणि, सुपिऊइं सुपिऊइँ (सुपितृणि)

सामान्य शब्दो (नरजाति)

कुक्खि, कुच्छि } (कुक्षि) कूख
वाणिअ (वाणिज) वाणिओ
धणि (धनिन्) धनवाळो-धणी
बहिणीवइ (भगिनीपति) बनेवी

अग्गि (अग्नि) अग्नि-आग
रस्सि (रश्मि) रास-लगाम
झुणि (ध्वनि) झण-झणझणाट, अवाज-ध्वनि
अच्चि (अर्चिस्) आंच-जाळ

सं० दायार! दाय! (दातः)
दायारो! दायारा! दायारा! (दातारः)
दाउणो, दायवो, दायओ,
दायउ, दाऊ

[यादी–पिआ; पिअरं वगेरे रूपोमां 'आ' के 'अ'ने स्थाने 'या' के 'य'नुं पण चलण छे. पिआ, पिया. पिअरं, पियरं. पिअरे, पियरे वगेरे]

संबंधवाचक ऋकारांत (नरजाति) अंगो

भाउ, भायर } (भ्रातृ) भाई — पिउ, पियर } (पितृ) पिता

जामाउ, जामायर } (जामातृ) जमाइ

विशेषणवाचक ऋकारांत (नरजाति) अंगो

दाउ, दायार } (दातृ) दातार — भत्तु, भत्तार } (भर्तृ) भर्ता–भरतार–पोषण करनार

कत्तु, कत्तार } (कर्तृ) करनार

ऋकारांत (नान्यतरजाति)

ऋकारांतनां 'कत्तार' वगेरे अकारांत अंगनां रूपाख्यानो पेली बे विभक्तिमां 'कमल'नी जेवां समजवानां छे अने 'कत्तु' वगेरे उकारांत अंगनां रूपाख्यानो मात्र पेली बे विभक्तिना बहुवचनमां 'महु'नी जेवां समजवानां छे तथा बाकी बधां संबोधनसहित रूपाख्यानो नरजातिक रूपाख्यानो प्रमाणे साधी लेवानां छे. जेमके–

दाउ, दायार (दातृ)

१	दायारो, दाया (दाता)	दायारा (दातारः) दाउणो, दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ
२	दायारं (दातारम्)	दायारे, दायारा दाउणो, दाऊ (दातॄन्)
३	दायारेण, दायारेणं दाउणा, (दात्रा, दातृणा)	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ (दातृभि)
४	दायारस्स दाउणो, दाउस्स (दातु , दातृण)	दायाराण, दायाराणं दाऊण, दाऊणं (दातॄणाम्)
५	दायाराओ, दायाराउ दायारा दाउणो, दाऊओ, दाऊउ (दातृत· दातु·, दातृणः)	दायाराओ, दायाराउ दायाराहि, दायारेहि दायाराहिंतो, दायारेहिंतो दायारासुंतो, दायारेसुंतो दाऊओ, दाऊउ (दातृतः) दाऊहिंतो, दाऊसुंतो, (दातृभ्यः)
६	दायारस्स दाउणो, दाउस्स (दातुः दातृण·)	दायाराण, दायाराणं दाऊण, दाऊणं, (दातॄणाम्)
७	दायारंसि, दायारम्मि दायारे (दातरि) दाउंसि, दाउम्मि	दायारेसु, दायारेसुं दाऊसु, दाऊसुं (दातृषु)

३	पिअरेणँ, पिअरेणं पिउणा (पित्रा, पितृणा ?)	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ (पितृभिः)
४	पिअरस्स पिउणो, पिउस्स (पितुः, पितृणः ?)	पिअराण, पिअराणं पिऊण, पिऊणं (पितॄणाम्)
५	पिअराओ पिअराउ, पिअरा पिउणो, पिऊओ, पिऊउ (पितृतः, पितुः, पितृणः ?)	पियराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअरेहि, पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो, पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो पिऊओ, पिऊउ, (पितृतः) पिऊहिंतो (पितृभ्यः) पिऊसुंतो
६	पिअरस्स पिउणो, पिउस्स, (पितुः, पितृणः ?)	पिअराण, पिअराणं पिऊण, पिऊणं (पितॄणाम्)
७	पिअरंसि, पिअरम्मि, पिअरे, (पितरि) पिउंसि, पिउम्मि	पिअरेसु, पिअरेसुं पिऊसु, पिऊसुं (पितृषु)
सं०	पिअरं ! पिअ ! (पित) पिअरो, पिअरा ! पिअर !	पिउणो ! पिअवो, पिअओ, पिअउ, पिऊ

२ विशेषणरूप ऋकारात नामना अंत्य 'ऋ'नो बधी विभक्तिओमां 'आर' थाय छे. जेमके–

दातृ=दातार, दायार. कर्तृ=कत्तार. भर्तृ=भत्तार.

३ फक्त संबोधनना एकवचनमा आ विशेषणरूप ऋकारांत नामोना अंत्य 'ऋ'नो 'अ' विकल्पे थाय छे. जेमके–

दातृ = दाय ! दायार ! दायारो ! दायारा !
कर्तृ = कत्त ! कत्तार ! कत्तारो ! कत्तारा !
भर्तृ = भत्त ! भत्तार ! भत्तारो ! भत्तारा !

उक्त बन्ने प्रकारनुं ऋकारांत नाम उपर जणावेली साधनिका प्रमाणे प्रथमाथी सप्तमी सुधीनी बधी विभक्तिओमां अकारांत अने उकारांत बने छे तेथी तेना अकारांत अंगना रूपाख्यानोनी साधनिका 'वीर'नी पेठे समजी लेवी अने उकारांत अंगनां रूपाख्यानोनी साधनिका 'भाणु'नी पेठे समजी लेवी.

रूपाख्यानो

पिउ, पिअर (पितृ)

एकवचन	बहुवचन
१ पिअरो, पिआ (पिता)	पिअरा (पितर) पिउणो, पिअवो, पिअओ पियउ, पिऊ
२ पिअरं (पितरम्)	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ (पितॄन्)

२ संबंधसूचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ'नो बधी विभक्तिओमां 'अर' थाय छे. जेमके–पितृ = पितर, पियर. जामातृ=जामातर, जामायर भ्रातृ= भातर, भायर

३ मात्र प्रथमाना एकवचनमां उक्त नामना अंत्य 'ऋ'नो 'आ' विकल्पे थाय छे. जेमके– पितृ = पिता, पिया
जामातृ = जामाता, जामाया. भ्रातृ = भाता, भाया

४ फक्त संबोधनना एकवचनमां ए नामोना अंत्य 'ऋ'नो 'अ' अने 'अरं' ए बन्ने विकल्पे थाय छे. जेमके–

पितृ = पित ! पितरं ! पितरो ! पितरा !
पिय ! पियरं ! पियरो ! पियरा !

जामातृ = जामात ! जामातरं ! जामातरो ! जामातरा !
जामाय ! जामायरं ! जामायरो ! जामायरा !

भ्रातृ = भात ! भातर ! भातरो ! भातरा !
भाय ! भायरं ! भायरो ! भायरा !

ऋकारान्त (विशेषणसूचक)

१ उक्त नियम पेलो अने त्रीजो–संबंधसूचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामने लगतो छे ते, आ विशेषणसूचक ऋकारांत नामोने पण लगाडवानो छे. जेमके–

दातृ=दातु, दाउ. कर्तृ=कत्तु. भर्तृ=भत्तु } नियम पेला प्रमाणे
दाता, दाया. कत्ता. भत्ता. } नियम त्रीजा प्रमाणे

जेहिं अहं विसीएस्सामि
तेहिं दुहसीसेहिं किं मज्झ?
कयावि सुविणे वि न रोच्छं
सीलभूओ मुणी जगे विह-
रिस्सइ

अह सो सारही विचिंतेहिइ
जं वोच्छं तं सोच्छिसे
नाऽणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि
तवेणं पावाइं भेच्छं
महासड्ढी अमरायइ

पाठ १४ मो

ऋकारान्त शब्दो

ऋकारांत नामोनी बे जात छे:—केटलांक ऋकारांत नाम संबंधसूचक विशेष्यरूप छे. अने केटलांक ऋकारांत नाम मात्र विशेषणरूप छे.

संबंधसूचक विशेष्यरूप—जामातृ, पितृ, भ्रातृ वगेरे.
मात्र विशेषणरूप —कर्तृ, दातृ, भर्तृ वगेरे.

ऋकारांत—(संबंधसूचक विशेष्यरूप)

१ प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचन सिवाय बधी विभक्तिओमां संबंधसूचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ'नो विकल्पे 'उ' थाय छे. जेमके— पितृ = पितु, पिउ.
जामातृ = जामातु, जामाउ. भ्रातृ = भातु, भाउ.

पंडितो हरखाशे नहि अने
'कोप करशे नहि
अमे बे, ए प्रकारे आचा-
र्यने वारंवार कहीशुं
ए विद्यार्थी वडाई मारशे
नहि पण संयम राखशे
हु ए साचुं कहीश
सारथी बळदोने साचवशे
अने वाहनमां जोडशे
तपस्वी योगी, व्याधिओथी
वीशे नहि

गार्ग्य मुनि गणधर थशे
वननो केसरी वनना हाथीने
तेना माथामा छेदशे
आचार्य, पूर्ण अने तुच्छ
वंनेने धर्म कहेशे
'बधाओने जीवित प्रिय
छे' एम कोण नहि
अनुभवशे
दुष्ट शिष्यो भणशे नहि
पण निरंतर वडाइ मा-
रशे अने कूदशे

समणे महावीरे जहा पुण्ण-
स्स कत्थिहिइ तहा तु-
-च्छस्स कत्थिहिइ
धम्मं वेच्छं
सुहं भोच्छं
एगे डसइ पुच्छम्मि, एगे
विंधइ अभिक्खणं
दुक्खं महब्भयं ति वोच्छं
जिणस्स वयणाइं कण्णेहिं
सोच्छं
दाणं दाहं, पुण्णं काहं ततो
य दुक्खं छेच्छं
रूवेसु विराग गच्छं
धम्मेण मरणाओ मोच्छं

वीरो भडो जुद्धं काहिइ
रायगिहं गच्छं, महावीरं
वंदिस्सं
गुरुणो सच्चमाहंसु
अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ
तुमं किं किं पाव, पुण्णं न
कासी
सढे उक्कुद्दिहिए, एगम्मि-
स्सति य
तस्स मुहं दच्छं तेण य सुहं
पाविस्सं
वीरे छणपएण ईसिमवि न
लिप्पिहिइ

इह (इह) अहीं-आमां

दाणि
दाणिं
इयाणि
इयाणिं } (इदानीम्) हमणा-आजकाल

एअं (एतत्) ए

उप्पिं
अवरिं
उवरिं
उवरि } (उपरि) ऊपर

धातुओ

विहर् [वि+हृ] विहरवु-फरवु-

डस् [दश] डसवु-करडवु

पगब्भ् [प्र+गल्भ] प्रगल्भ थवु-वडाइ मारवी

अमराय
अमरा } [अमराय] अमरनी पेठे रहेवु-पोतानी जातने अमर मानवी

अइवाअ [अति+पात] अति-पात करवो-हणवु

विसीअ [वि+षीद] विषाद पामवो-खेद करवो

कत्थ् [कत्थ्]कथवु-कहेवु, वखाणवु

फुट्ट् [स्फुट्] स्फुट थवु-खीलवु-फुटी नीकळवु

विचिंत् [वि+चिन्त] चिंतववुं-विशेष चिंतववु

विंध् [विध्य] वींधवु

उक्कुद् [उत्+कूद] उंचे कूदवु-अद्धर ऊछळवु

भज्ज्
भंज् } [भञ्ज] भांजवु-भागवु

अवसीअ [अव+सीद] अवसाद पामवो-खूचवु

लिप्प् [लिप्य] खरडावु

संजम् [सं+यम] संजमवु-संयम करवो

पडिकूल् [प्रति+कूल] प्रतिकूल थवु-विपरीत थवुं

सर् [स्मर] स्मरण करवु

पमुच्च् [प्र+मुच्य] प्रमुक्त थवु-तद्दन छूटी जवु

सेव् [सेव्] सेववु

विज्ज् [विद्य] विद्यमान होवु

हिंस् [हिंस] हिंसा करवी-हणवु

उवे [उप+इ] पासे जवु-पमवु

सामान्य शब्दो [नान्यतरजाति]

रूव (रूप) रूप–वस्तु–पदार्थ

कम्म (कर्मन्) कर्म–पुण्य पापनी प्रवृत्ति

कुंपल (कुड्मल) कुपळ–कणगो

जाण (यान) यान–वाहन

मच्चुमुह (मृत्युमुख) मृत्युनु मुख–मोतनुं मोढु

जुम्म / जुग्ग (युग्म) युग्म–जोड–जोडी

छणपय / छणपअ (क्षणपद) हिंसा–हिंसानु स्थान

मरण (मरण) मरण–मोत

धम्मजाण (धर्मयान) धर्मरूप वाहन–धर्मनु वाहन, धर्मस्थान उपर लइ जवानुं वाहन

महब्भय (महाभय) मोटो भय–मोटी बीक

पुच्छ (पुच्छ) पूछडी

वयण (वचन) वचन–वेण

वयण (वदन) वदन–मुख

विशेषण

तिम्म / तिग्ग (तिग्म) तीक्ष्ण–तेजदार–तेग

पुण्ण (पुण्य) पुण्य–पवित्र काम

पंत (प्रान्त) अतनु–छेवटनुं–वापरतां वधेलु

विब्भल / विहल (विह्वल) विह्वल–भांभळो–गभराएल

जोइअ / जोइय (योजित) जोडेलु

डज्झमाण (दह्यमान) दाझतु–बळतु

पुण्ण (पूर्ण) पूर्ण–भरेलो–संपत्तिवाळो

तुच्छ (तुच्छ) तुच्छ–रांक–अधूरो

पन्नत्त (प्रज्ञप्त) प्रज्ञापेलु–जणावेलु

लुक्ख / लूह (रूक्ष) लूखु, आसक्ति विनानु

सीलभूअ (शीलभूत) शीलभूत–सदाचाररूप

अव्यय

इत्थं (इत्थम्) ए प्रकारे

तु (तु) तो

ईसिं / ईसि (ईषत्) ईषत्–थोडु इशारामात्र

जंतु (जन्तु) जतु–प्राणी–जीवजत
जोगि (योगिन्) योगी–जोगी
केसरि (केसरिन्) केसरावाळो –याळवाळो–सिंह–केसरीसिंह
मंति (मन्त्रिन्) मत्री–कारभारी
चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) चक्र फेरवनार–चक्रवर्ती राजा

वसु (वसु) वसु–धन, पवित्र मनुष्य
संभु (शम्भु) शंभु–सुखनु स्थान –महादेव
शंकु (शङ्कु) शकु–खीलो

सामान्य शब्दो (नरजाति)

मग्ग (मार्ग)–माग
मार (मार) मारनारो–तृष्णा
दुस्सीस, दुस्सिस्स (दुश्शिष्य) दुष्ट शिष्य–विद्यार्थी
ववहारिअ (व्यावहारिक) वहेवारी–वेपारी
थेर (स्थविर) स्थिर बुद्धिवाळो–पाकट–वयोवृद्ध सत
गग्ग (गार्ग्य) गर्गनो पुत्र–ते नामनो एक ऋषि
वेवाहिअ (वैवाहिक) वेवाई
ववहार (व्यवहार) वेव्हार –वेपार
कंसआर, कसार (कांस्यकार) कसारो
लेहसालिअ (लेखशालिक) निशा-ळीओ–निशाळे भणवा जनार

सुमिण, सिमिण, सुविण, सिविण (स्वप्न) स्वप्न–सपनु–सोणु
गणहर, गणधर (गणधर) गणने धारण करनार–समूहनी व्यवस्था करनार–आचार्य
अणागम, अनागम (अन्+आगम) न आववु ते–अनागमन
कण्ण (कर्ण) कान, कानो
विराग (विराग) रागथी विरुद्ध भाव–वैराग्य
विप्परियास (विपर्यास) विप-र्यास–विपरीतता–भ्राति
सढ (शठ) शठ–लुच्चो
अकम्म (अकर्मन्) कर्म रहित –निर्मळ–पवित्र

इमम्मि
अमुम्मि } (अमुष्मिन्)

अमूसु
अमूसुं } (अमीषु)

बाकी बधां 'भाणु'नी प्रमाणे

अमु (अदस्) आ [नान्यतरजाति]

१ अद (अद) अमु	अमूणि अमूइं अमूइँ	(अमूनि)
२ " "	" " "	"

बाकी बधां 'अमु'नी प्रमाणे

इकारांत अने उकारांत शब्दो (नरजाति)

सारहि (सारथि) सारथि–रथ हांकनारो

वरदंसि (वरदर्शिन्) उत्तम रीते जोनार

माराभिसंकि (माराभिशङ्किन्) मार–तृष्णा–थी शंकित रहेनार–दूर रहेनार–तृष्णाथी डरनारो

वाहि (व्याधि) व्याधि–रोग

महासड्ढि (महाश्रद्धिन्) मोटी–अचल–श्रद्धावाळो

तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी

उवाहि (उपाधि) उपाधि–प्रपंच

पवासि (प्रवासिन्) प्रवास करनार

पहु (प्रभु) प्रभु–प्रभावशाळी–समर्थ

तंतु (तन्तु) तातणो

महातवस्सि (महातपस्विन्) मोटो तपस्वी

सम्मत्तदंसि (सम्यक्त्वदर्शिन्) सत्यने जोनार–समजनार–आचरनार

पसु (पशु) पशु

विहु (विधु) विधु–चंद्र

रूपाख्यान [उदाहरण]

एकवचन—

१ पु०	सोच्छं,	सोच्छिमि,	सोच्छिस्सामि
	सोच्छिस्सं,	सोच्छेमि,	सोच्छेस्सामि
	सोच्छेस्सं,	सोच्छिहिमि,	सोच्छिहामि
		सोच्छेहिमि,	सोच्छेहामि
२ पु०	सोच्छिसि,	सोच्छेसि,	सोच्छहिसि, सोच्छेहिसि
	सोच्छिसे,	सोच्छेसे,	सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे
३ पु०	सोच्छिइ,	सोच्छेइ,	सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ
	सोच्छिए,	सोच्छेए,	सोच्छिहिए, सोच्छेहिए इत्यादि

आर्ष प्राकृतमा वपराएलां बीजां केटलांक अनियमित रूपो:

(भोक्ष्याम.) — भोक्खामो
(भविष्यति) — भविस्सइ
(करिष्यति) — करिस्सइ
(चरिष्यति) — चरिस्सइ
(भविष्यामि) — भविस्सामि
(भू-भो+ष्यामि) — होक्खामि

अमु (अदस्) आ [नरजाति]

१	अह, अमू, असो	(असौ)	अमुणो, अमू	(अमी)
२	अमुं	(अमुम्)	अमुणो, अमू	(अमून्)

३ पु० हिइ २ पु० हिसि १ पु० हामि, हाम वगेरे

सोच्छ (श्रु) सांभळवुं	वेच्छ (विद्) वेदवुं-अनुभववुं-जाणवुं
रोच्छ (रुद्) रोवुं	
मोच्छ (मुच्) मुकावुं-छूटवुं	भेच्छ (भिद्) भेदवुं-टुकडा करवा
भोच्छ (भुज्) भोजन करवुं, भोगववुं	छेच्छ (छिद्) छेदवुं
	दच्छ (दृश्) जोवुं-देखवुं
वोच्छ (वच्) कहेवुं-बोलवुं	गच्छ (गम्) जवुं, गमवुं

मात्र आ उपर्युक्त दस धातुओने 'हि' आदिवाळा (हिइ, हिसि, हिमो, हिम, हिइ वगेरे) प्रत्ययो लगाडतां तेमनी आदिनो 'हि' विकल्पे लोपाय छे. जेमके:–

सोच्छ + हिमि = सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि—वगेरे

वळी, मात्र प्रथम पुरुषना एकवचनमां ज ए दसे धातुओनुं अनुस्वारवाळुं पण एक रूप वधारे थाय छे. जेमके:–

सोच्छं	वेच्छं	दच्छं
सोच्छिस्सं	वेच्छिस्सं	दच्छिस्सं वगेरे

बाकीनी बधी साधनिका 'भण' धातुनी समान छे.

पाठ १३ मो

भविष्यकाळ (चालु)

स्वरात धातुनां भविष्यकाळनां रूपो साधतां त्रीजा पाठमां फक्त स्वरांत धातु माटे जे विशेष साधनिका बतावी छे तेनो उपयोग करवो.

अंगोनी समज

	विकरणविनानु		विकरणवाळु
१	हो	२	होअ
	पा		पाअ
	ने		नेअ

रूपाख्यान (उदाहरण)

१	पु०	होस्सं, होइस्सं, होएस्सं
,,	,,	पास्सं, पाइस्सं, पाएस्सं
,,	,,	नेस्सं, नेइस्सं, नेएस्सं

केटलांक अनियमित रूपाख्यानो

कर्

भविष्यकाळमां 'कर्'ने बदले 'का' पण वपराय छे अने तेनां बधां रूपो स्वरात धातुनी सरखा थाय छे तथा प्रथम पुरुपना एकवचनमां 'काह' रूप वधारे थाय छे. जेमके;

३ पु० काहिइ २ पु० काहिसि १ पु० काहिमि, काहं वगेरे.

विज्जत्थी भिक्खु य सया
गुरुं उवचिट्ठिस्सइ
गुरूणमंतिए सीसो उरुणा
सह उरु न जुंजिस्सइ
मिउं पि गुरुं सीसा चंडं
पकरंति
हत्थीसु परायणं नायमाहु
मच्चू णरं णेइ हु अंतकाले
रिसी रायरिसिं इमं वय-
णमब्बवी
सव्वे साहुणो, गुरुणो
अणुसासणं कल्लाणं म-
न्निस्संति
'अहं अचेलए सचेलए
वा' इइ भिक्खू न
चिंतिस्सइ
सव्वे जणा अंबस्स तरुं
वक्खाणिस्संति
मज्झे मज्झे तुं बोल्लिस्ससि,
तुमे नच्चिस्सह, सो य
गाइस्सति
वाणिज्जारा अम्हे गामे
गामे वाणिज्जं करेहामो
वत्थूइं च विक्केहिमु
अम्हे लोहारा लोह तावि-
इस्सामु तस्स य भाय-
णि घडेहिमो
माहणा पाणिणो पाव न
हणिस्सति
अह अम्हे समणं वा मा
हणं वा निमंतिस्सामो
सो सक्कं मूढो किमवि
न संवुज्झिहिइ
तुमं वत्थं सिव्विस्सहि, अहं
च पट्टोल वणिस्सं
अहं सोवण्णिओ सुवण्णं
सोहिहामि तस्स य
आभरणाइं घडिहिमि
आसी भिक्खू जिइंदिओ
दंडेहि वित्तेहि,कसेहि चेव
अणारिया तं रिसिं
तालयंति
ताहे सो कुलवती समणं
महावीरं अणुसासति,
भणति य कुमारवर!
सउणी ताव अप्पणियं
णेडुं रक्खति
रायरिसिम्मि नमिम्मि
निक्खंते मिहिलानगरे
सव्वथ सोगो आसी

सुतार लाकडांने छोलशे अने पछी घडशे

गृहस्थो, ब्राह्मणो अने साधुओने अन्न आपशे

श्रमण महावीर, कुंभारने अने मोचीने धर्म समजावशे

सरैयो सुगंधी वस्तुने वखाणशे

मोची, मारा माटे पगरखां सीवशे

कुशळ तरनारो तळावने पोताना वे हाथे तरशे

कामळीयाना शरीर उपर कामळ अने लोवडी शोभशे

उनाळाना दिवसोमां कोयल आंवा उपर कुहू कुहू करशे

गुरु विद्यार्थीओने तेमनो पाठ समजावशे

तेली तलने पीलशे अने तेल वेचशे

सोनी सोनानां अने रूपानां घरेणां घडशे अने तेमने तासशे

मारा दुःखी जीवननुं औषध धर्म थशे

हुं पहाडना शिखरे चंद्रने जोईश

वांदराओ आंवाना झाडमां कूदशे

उनाळामां सूर्यनो प्रचंड ताप तपशे

तंवोळी तंवोळ वेचशे अने अमे तंवोळ खाईशुं

विद्यार्थीओनी वच्चे आचार्यो शोभशे

आ आंवो शियाळामां फळशे

तमे वे दयाळु अने कृतज्ञ थशो

ऋषिओ कमडळथी शोभशे

जेओ पोताना भोगोने छोडशे तेओने लोको त्यागी कहेशे

मारो सोनी घरेणांने ओपशे

केटलीक वनस्पतिओ उनाळामां फळशे अने तेमने तुं खाईश

कणबी खेतरने वारंवार खोदशे

हवे हुं पान खाईश, ते तेनो पाठ समजशे अने तमे पाणी पीशो

धातुओ

[illegible]

[illegible] करवो

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मन्न् (मन्य) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ओतु

[illegible] (वि+[illegible]) [illegible] करवा

उवचिट्ठ (उप+तिष्ठ) उपस्थित [illegible]–[illegible] हाजर रहेवु

ताव् (ताप) तावव्-तावु

विंक (वि+की) वेचवु-वेचवु

अप्प् } ओप्प् } (अर्प्) आपवु

पील् } पीड् } (पीड्) पीलवु-पीलवु

फल् (फल) फळवु-फळ आववा

[illegible] (नि+[illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

तच्छ् (तक्ष्) ताछवु- छोलवु

अणुसास् (अनु+शास्) शिखाम[illegible] आपवु-[illegible]

संतुज्झ् (सं+[illegible]) [illegible]

वण् (वन) वणवु-[illegible] पाडवो

कूज } कूअ } (कूज) [illegible]

कुंभारनुं कुल पण उत्तम थशे.

वणजारो गामेगाम प्रवास करशे अने वस्तुओ वेचशे

लुहार लोढाने वढशे

नमि, विद्यार्थीओने अने ऋषिओने मध आपशे

साळवी पटोळां, मलीर अने वरचोळाने वेचशे

पगरक्ख (पदकरक्ष) पगरखा –पगनु रक्षण करनार

वत्थ (वस्त्र) वस्त्र–वस्तर

पट्टोल (पट्टकूल) पटोळु

खेत्त } (क्षेत्र) क्षेत्र–खेतर
खित्त }

मिहिलानयर (मिथिलानगर) मिथिला

घरचोल (गृहचोल) घरचोळु

पम्हपड (पक्ष्मपट) पक्ष्म–पापण–जेवु झीणु कापड–पांभडी

वित्त } (वेत्र) नेतर–नेतरनी
वेत्त } सोटी–बेत

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनु

रयय (रजत) रजत–रूपु

रुप्प (रुक्म) रुपु

रुप्प (रौप्य) ,,

लोमपड } (लोमपट) रुवाटानु वस्त्र
(रोमपट) –लोवडी

पम्ह (पक्ष्मन्) पापण

नेड्ड } (नीड) निलय–नीड–
णेड्ड } माळो

सामान्य शब्द (विशेषण)

घट्ठ (घृष्ट) घसेलु–सुवाळु करेलु, वाटेलु

मट्ठ (मृष्ट) मांजेलु–शुद्ध

अंतिअ (अन्तिक) पासे–नजीकमां

चंड (चण्ड) प्रचंड–क्रोधी

लहुअ } (लघुक) लघु–हळवु
हलुअ } हलु–नानु

नाय (ज्ञात) जाणितु–प्रसिद्ध

अम्हारिस (अस्मादृश) अमारीशु–अमारा जेवुं

सचेलय (सचेलक) चेल–वस्त्रवाळु–कपडावाळु

अचेलय } (अचेलक) ऐलक–
अपलय } कपडा विनानु

अव्यय

सव्वत्थ (सर्वत्र) सर्वत्र–बधे स्थळे

मज्झे (मध्ये) मध्ये–वचे–महीं–मां

जं (यत्) जे–के

सक्खं (साक्षात्) साक्षात्–प्रत्यक्ष

सययं (सततम्) सतत–निरतर

अह (अथ) अथ–हवे–प्रारंभसूचक

मणा } (मनाक्) मणा–थोडु–
मणयं } खामी दर्शक

सइ (सदा) सदा

अभिक्खणं (अभिक्षणम्) क्षणे क्षणे–वारवार

अहुणा (अधुना) हमणा

वाणिज्जार (वाणिज्यकार) वण-जारो–वणज करनारो–वेपारी

कांवलिअ (काम्बलिक) काम-ळीओ–कामळीओने वेच-नार वा ओढनार

मोचिअ (मौचिक) मोची–मोजा सीवनार

कुडुंबि (कुटुम्बिन्) कणबी

कोडुंबिअ (कौटुम्बिक) कणबी, राजानु कामकाज करनार

साड (शाट) साडलो–साडी

साडय (शाटक) ,, ,,

सोरहिय (सौरभिक) सरैयो–सुरभि–सुगंधी–तेल वगेरेने वेचनार

कस (कश) चाबुक

सुत्तहार [illegible]

तेलिअ [illegible]

मालिअ [illegible]

दोसिअ [illegible]

उप्पाल [illegible]

सीआल [illegible]

तंबोलिअ [illegible]

दंड (दण्ड) [illegible]

जोइसिअ (ज्योतिषिक) [illegible]

साडवि } [illegible]
सालवि }

मणिआर [illegible]

सामान्य शब्दो (नान्यतरजाति)

लोह (लोह) लोढुं

वाणिज्ज (वाणिज्य) वणज–वेपार

तेल (तैल) तेल

तंबोल (ताम्बूल) तंबोळ–नागरवेलनु पान

मलीर (मलयचीर) मलय देशनु कोमळ, झीणुं अने आछु कापड

कंटयरक्खा [illegible] –कांटाथी रक्षण [illegible]

कंबल (कम्बल) [illegible]

चेल (चेल) [illegible]

बीअ (बीज) [illegible]

जीवण (जीवन) [illegible]

पायत्ताण (पादत्राण) [illegible]

મેહાવિ (મેધાવિન્) મેધાવાળો–બુદ્ધિમાન

વણપ્ફઇ
વણસ્સઇ } (વનસ્પતિ) વનસ્પતિ

કરેણુ (કરેણુ) કરી–હાથી

કુંથુ (કુંથુ) કથવો–એક નાનો જીવડો

વિજ્જત્થિ (વિદ્યાર્થિન્) વિદ્યાનો અર્થી–વિદ્યાર્થી

વિહુ (વિધુ) ચંદ્ર

કમંડલુ (કમણ્ડલુ) કમંડળ

મંતુ (મન્તુ) અપરાધ, શોક

તરુ (તરુ) તરુ–દ્રુ–ઝાડ

જંબુ (જમ્બુ) જાંબુ, જાંબુનું ઝાડ

વિડવિ (વિટપિન્) વીડ–ઝાડ

સાણુ (સાનુ) શિખર

બંધુ (બન્ધુ) બંધુ–ભાઈ–ભાઈ

પીલુ (પીલુ) પીલુ, પીલુનું ઝાડ

ઉરુ (ઉરુ) ઉરુ, સાથળ

પાવાસુ (પ્રવાસિન્) પ્રવાસી

વિશેષણ

કયણ્ણુ (કૃતજ્ઞ) કૃતજ્ઞ–કદરદાન

ગુરુ (ગુરુ) ગુરુ–ભારે–મોટું

લહુ (લઘુ) લઘુ–હળવું, નાનું

મિઉ (મૃદુ) મૃદુ–કોમળ–નરમ

દુહિ (દુઃખિન્) દુઃખી

દુગંધિ (દુર્ગન્ધિન્) દુર્ગન્ધી ચીજ

ચારુ (ચારુ) ચારુ–સુંદર

સુહિ (સુખિન્) સુખી

સાઉ (સ્વાદુ) સ્વાદુ–સ્વાદવાળુ

દિગ્ઘાઉ (દીર્ઘાયુષ્) દીર્ઘ આયુષ્યવાળુ

સુઇ (શુચિ) શુચિ–પવિત્ર

સુગંધિ (સુગન્ધિન્) સુગંધી વસ્તુ

બહુ (બહુ) બહુ–ઘણુ

ગામણિ (ગ્રામણી) ગામનો નેતા

સામાન્ય શબ્દો (નરજાતિ)

જર (જ્વર) જ્વર–તાવ

અંબ (આમ્ર) આંબો

કોકિલ
કોઇલ } (કોકિલ) કોયલ

તિલ (તિલ) તલ

લોહાર (લોહકાર) લુહાર–લુવાર

સોવણ્ણિય (સૌવર્ણિક) સોની

ગંધિઅ (ગાન્ધિક) ગાંધી–ગંધવાળી વસ્તુને વેચનાર

पु० २	स्ससि (ष्यसि)	स्सह (ष्यथ)
	स्ससे (ष्यसे)	
	हिसि	हिह (ष्यध्वे)
	हिसे	
पु० ३	स्सइ (ष्यति)	स्संति (ष्यन्ति)
	हिइ	हिंति, हिंते

सर्व पुरुष, सर्व वचन } ज्ज, ज्जा

१ भविष्यकाळना प्रत्ययो लगाडतां धातुना मूळ अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' अने 'इ' वाराफरती थाय छे:

भण्+अ=भण+स्सामि=भणेस्सामि, भणिस्सामि वगेरे

रूपाख्यान

पु० १	भणिस्सामि,[७४]	भणेस्सामि	भणिस्सामो, भणेस्सामो
	भणिहामि,	भणेहामि	भणिस्सामु, भणेस्सामु
	भणिहिमि,	भणेहिमि	भणिस्साम, भणेस्साम
	भणिस्सं,	भणेस्सं	भणिहामो, भणेहामो
			भणिहामु, भणेहामु
			भणिहाम, भणेहाम
			भणिहिमो, भणेहिमो
			भणिहिमु, भणेहिमु
			भणिहिम, भणेहिम
पु० २	भणिस्ससि,	भणेस्ससि	भणिस्सह, भणेस्सह
	भणिस्ससे,	भणेस्ससे	भणिस्सथ, भणेस्सथ

७४स्सामो, हामो, हिमो } आ त्रण प्रत्ययोनी पेठे स्सामु, स्साम. हामु, हाम. हिमु, हिम. प्रत्ययो पण वपराय छे.

जे क्रोधदर्शी छे ते गर्भ-
दर्शी छे अने जे गर्भ-
दर्शी छे ते दुःखदर्शी छे.
हे पंडितो ! हुं वधा प्रकारे
लोभने तजुं छुं.
चंडकौशिक सर्पमां अने
देवेन्द्रमां महावीरे मित्र-
पणुं राख्युं.
वायु वडे वृक्षो कंप्या अने
पाणीनां विंदुओ उड्यां.
शुं विचारकने उपाधि
होय छे ?
कौशिक देवेन्द्रे श्रमण
महावीरने पूज्या.
समुद्रना हाथीए पाणी
पीधुं.
लोभ संसारनो हेतु छे

सुप्रसन्न मुनिओ क्रोधदर्शी
होता नथी,
ए भिक्षु शेठना कुळनो
हतो.
हे भिक्षो ! मारा घरमां
दूध नथी, घी नथी पण
पाणी छे
ए गृहस्थने वे वाळक हतां.
तेओए हाथवडे पांजराने
फेंक्यु.
कोने आंखो नथी ?
पक्षी पांजरामां कंप्युं अने
हल्या कर्युं.
शेठ राजाने नम्यो अने
राजा गणपतिने नम्यो.
तमे पाणी इच्छो छो ?
मुनिओना पति महावीर
राजगृहमां विहर्या.

मुणिणो सया जागरंति
अमुणिणो सया सुत्ता संति
'घयं पिवामि 'त्ति साहुस्स
णो भवइ[७३]
पक्खीसु या उत्तमे मरुले
विराजइ

एगे भिक्खुणो उद्दगेण
मोक्खं पचयंति
सउणी पंजरंसि उड्डेइ
ते उवासगा भिक्खुं निमंत-
यन्ति
वहवे गहवइणो भिक्खुं वंदंते

७३ 'भवइ' एटले योग्य होय छे.

एक वार साधुओ ब्राह्मणने घरे गया

भिक्षुओ उपाधिओने छोडे छे अने स्वयंभूनुं ध्यान करे छे.

तपथी सुकायेला मुनिने अनार्यो हसे छे

ब्राह्मणोए भिक्षुओनुं अपमान कर्युं.

हे मुने! तुं संसारने तरेलो छे

कर्म वडे उपाधि थाय छे

मारे बधा भूतोमां मित्रपणुं छे, कोईनी पण साथे वैर नथी

अमुनिओ हमेशा सुतेला छे अने मुनिओ हमेशा जागे छे

श्रमण महावीरने चण्डकौशिक सर्प डस्यो.

कोइ पण पुरुष [illegible] [illegible] अने मूत्र [illegible] [illegible]

वळरो अने मूत्र [illegible] थाय छे अने मुनिओ [illegible] पीए छे

महावीरना उपासक [illegible] वैशाली गाममां [illegible] [illegible]

वधां आभरणो भारे छे.

कुलपनिध श्रमण महावीरने कह्युः कुमार! [illegible] ऋषिओनो मठ छे

सामित्रि रामने [illegible] छे

मुनिओ आहार माटे [illegible] कुळोमां फरे छे.

ग्रीष्मने त्रीजे मासे [illegible] चोथे पखे महावीर बुद्ध थया

विशेषण

बुद्ध (बुद्ध) बोधवाळो–ज्ञानी
हुत (हुत) होमेलु–हवन कराएलुं
सेट्ठ (श्रेष्ठ)[७२] श्रेष्ठ–सारु
संभूअ (संभूत) संभवेलो–थएलो
चउत्थ } (चतुर्थ) चोथु
चतुत्थ }
तिण्ण (तीर्ण) तरी गएलु
सुत्त (सुप्त) सुतेलुं–आळसु

अप्पणिय (आत्मीय) आपणु
पासग (दर्शक–पश्यक?) द्रष्टा समजनारो–विचारक
परिसोसिय } (परिशोषित) परिशोषित–
परिसोसिअ } रहून सुकाएलु
विइज्ज (द्वितीय) बीजु

अव्यय

ताव } (तावत्) तो, त्यां सुधी
ता }
एगया (एकदा) एक वखत–एक वार
सया (सदा) सदा–हमेशा

जाव } (यावत्) जो, ज्यां सुधी
जा }
एत्थ (अत्र) अहीं
चिरं (चिरम्) चिर–लांबा काळ सुधी

धातुओ

अवमन्न् (अव+मन्य) अपमानवु–अपमान करवुं
आ+घा (आ+ख्या) आख्यान करवु–कहेवु
जाय् (याच) जाचवु–याचना करवी–मागवु
प+वय् (प्र+वद) वदवु–कहेवु

पूज् } (पूज) पूजवु
पूअ }
चय् (त्यज) तजवु–छोडवुं
भण् (भण) भणवु–बोलवु, कहेवु
डस् (दश्) डसवु–डख मारवो
रक्ख् (रक्ष) रक्षवु–राखवु–साचववुं–रक्षण करवुं

---

७२ उपयोग—जेमां श्रेष्ठ कहेवु होय ते नाम छट्ठी अने सातमी विभक्तिमां आवे छे: 'पाणीसु सेट्ठे माणवे' अथवा पाणीण सेट्ठे माणवे'

धणु (धनुस्) धनुष

जाणु (जानु) जान-[illegible]

वारि (वारि) वारि-पाणी

मउ [illegible]

माणु [illegible]

अकारांत (नरजाति)

वसह (वृषभ) वृषभ-बळद

कोसिअ (कौशिक) कौशिक गोत्रवाळो नर अथवा नाग-कौशिक सर्प

आहार (आहार) आहार-[illegible]

ण्हाविअ } नाविअ } (नापित) नवरावनारो-नावी-हजाम

मअ (मृग) मृग-वनपशु-हरण

भार (भार) भार

कुमारवर (कुमारवर) उत्तम कुमार

आहार (आधार) आधार

गरुल (गरुड) गरुड

रण्णवास (अरण्यवास) अरण्यमां वसवुं-वनमां रहेवुं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

माल [illegible]

पक्ख (पक्ष) [illegible]

वेसाह [illegible]

उवासग (उपासक) उपासक [illegible]

कोववर [illegible]

सोवाग [illegible]

अकारांत (नान्यतरजाति)

आभरण (आभरण) आभरण-घरेणुं

घर (गृह) घर

पंजर (पञ्जर) पांजरुं

उदग } उदय } (उदक) उदक-पाणी

हुअ (हुत) होम

रूव (रूप) रूप

कुल (कुल) कुल-कुळ

घय (घृत) घी

तण (तृण) [illegible]

मित्तत्तण (मित्रत्व) [illegible]

दुक्खदंसि (दुःखदर्शिन्) दुःखने जोनार–दुःख पामनार

भोगि } (भोगिन्) भोगी–
भोइ } भोगोने भोगवनार

उदहि (उदधि) उद–पाणी–ने धारण करनार–समुद्र

साहु (साधु) साधक–साधन करनार, साधु पुरुष, सज्जन, शाहुकार

जंतु (जन्तु) जंतु–प्राणी

सिसु (शिशु) शिशु–बाळक

मच्चु } (मृत्यु) मृत्यु–मोत
मिच्चु } –मरण

बिंदु (बिन्दु) बिंदु–मीडुं, टीपुं

भाणु (भानु) भानु–भाण–सूरज

वाउ } (वायु) वायु–वा
वायु }

विण्हु (विष्णु) विष्णु

हत्थि (हस्तिन्) हाथी

कुलवइ (कुलपति) कुलनो पति –आचार्य

नरवइ (नरपति) नरोनो पति नरपति–नरपत–राजा

भूमिवइ (भूमिपति) भूमिनो पति–राजा

उवाहि (उपाधि) उपाधि

सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) श्रेष्ठी–शेठ

गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) गर्भने जोनार–जन्म धारण करनार

अभोगि } (अभोगिन्) अभोगी–
अभोइ } भोगोने नहि भोगवनार

पक्खि (पक्षिन्) पक्षी–पांख-वाळुं

सोमित्ति (सौमित्रि) सुमित्रानो पुत्र–लक्ष्मण

भिक्खु (भिक्षु) भिक्षु

चक्खु (चक्षुष्) चक्षु–आंख

सयंभु (स्वयंभू) स्वयं थनार–ब्रह्मा, ते नामनो समुद्र

संसारहेउ (संसारहेतु) संसारनो हेतु–संसार वधवानुं कारण

गुरु (गुरु) गुरु–वडिल, माता पिता वगेरे

तरु (तरु) तरु–द्रुम–झाड

बाहु (बाहु) बाहु–बाय–हाथ

इकारांत अने उकारांत (नान्यतर जाति)

अक्खि } (अक्षि) आंख
अच्छि }

अट्ठि (अस्थि) हड्डी–हाडकुं–हाड

जउ (जतु) जतु–लाख

वत्थु (वस्तु) वस्तु

दहि (दधि) दहीं

वारि (वारि)

१-२ वारि+म्=वारिं (वारि) वारि+णि=वारीणि, वारि+इं=वारीइं, वारि+ईं=वारीइँ } (वारीणि)

सं० वारि ! (वारि !) " " " (")

(जुओ पाठ छट्ठानो अंत)

महु (मधु)

१-२ महु+म्=महुं (मधु) महु+णि=महूणि, महु+इं=महूइं, महु+ईं=महूइँ } (मधूनि)

सं० महु ! (मधु !) " " " (")

चतुर्थीना एकवचनमां वारिणे, वारिस्स. महुणे, महुस्स वगेरे समजवानां छे पण 'वारये' के 'महवे' रूपो समजवानां नथी.

इकारांत अने उकारांत नाम (नरजाति)

मुणि (मुनि) मुनि-मनन करनार-मौन राखनार मुनि

सउणि (शकुनि) शकुनि-पक्षी

पइ (पति) पति-स्वामी-धणी-मालिक

घरवइ } गहवइ } (गृहपति) घरनो पति-गृहस्थ

रिसि } इसि } (ऋषि) ऋषि

भूवइ (भूपति) [illegible]-[illegible]-[illegible]

गणवइ (गणपति) गणनो [illegible]-[illegible]

अमुणि (अमुनि) मुनि नहि ते-[illegible]

कोद्दंडि (कौदण्डिन्) [illegible]-योधो

दुक्खदंसि (दुखदर्शिन्) दुःखने जोनार–दुख पामनार

भोगि } (भोगिन्) भोगी–
भोइ } भोगोने भोगवनार

उदहि (उदधि) उद–पाणी–ने धारण करनार–समुद्र

साहु (साधु) साधक–साधन करनार, साधु पुरुष, सज्जन, शाहुकार

जंतु (जन्तु) जतु–प्राणी

सिसु (शिशु) शिशु–बाळक

मच्चु } (मृत्यु) मृत्यु–मोत
मिच्चु } –मरण

विंदु (विन्दु) विंदु–मीडु, टीपु

भाणु (भानु) भानु–भाण–सूरज

वाउ } (वायु) वायु–वा
वायु }

विण्हु (विष्णु) विष्णु

हत्थि (हस्तिन्) हाथी

कुलवइ (कुलपति) कुलनो पति –आचार्य

नरवइ (नरपति) नरोनो पति नरपति–नरपत–राजा

भूमिवइ (भूमिपति) भूमिनो पति–राजा

उवाहि (उपाधि) उपाधि

सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) श्रेष्ठी–शेठ

गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) गर्भने जोनार–जन्म धारण करनार

अभोगि } (अभोगिन्) अभोगी–
अभोइ } भोगोने नहि भोगवनार

पक्खि (पक्षिन्) पखी–पाख-वाळु

सोमित्ति (सौमित्रि) सुमित्रानो पुत्र–लक्ष्मण

भिक्खु (भिक्षु) भिक्षु

चक्खु (चक्षुष्) चक्षु–आंख

सयंभु (स्वयभू) स्वय थनार–ब्रह्मा, ते नामनो समुद्र

संसारहेउ (ससारहेतु) ससारनो हेतु–ससार वधवानु कारण

गुरु (गुरु) गुरु–वडिल, माता पिता वगेरे

तरु (तरु) तरु–द्रुम–झाड

बाहु (बाहु) बाहु–बाय–हाथ

इकारांत अने उकारांत (नान्यतर जाति)

अक्खि } (अक्षि) आंख
अच्छि }

अट्ठि (अस्थि) हड्डी–हाडकु–हाड

जउ (जतु) जतु–लाख

वत्थु (वस्तु) वस्तु

दहि (दधि) दही

वारि (वारि)

१-२ वारि+म्=वारिं (वारि) . ...वारि+णि=वारीणि
वारि+इं=वारीइं
वारि+इँ=वारीइँ } वारीणि

सं० वारि ! (वारि !) ,, ,, ,, (,,)

(जुओ पाठ छट्ठानो प्रारंभ)

महु (मधु)

१-२ महु+म्=महुं (मधु)... महु+णि=महूणि
महु+इं =महूइं
महू+इँ =महूइँ } (मधूनि)

सं० महु ! (मधु !) ,, ,, ,, (,,)

चतुर्थीना एकवचनमां वारिणे, वारिस्स. महुणे, महुस्स रूपो समजवानां छे पण 'वारये' के 'महवे' रूपो समजवानां नथी.

इकारांत अने उकारांत नाम (नरजाति)

मुणि (मुनि) मुनि-मनन करनार-मौन राखनार संत

सउणि (शकुनि) शकुनि-पक्षी

पइ (पति) पति-स्वामी-धणी-मालिक

घरवइ, गहवइ } (गृहपति) घरनो पति-गृहस्थ

रिसि, इसि } (ऋषि) ऋषि

भूवइ (भूपति) भू-पृथ्वी-नो पति-भूपति-भूपत-राजा

गणवइ (गणपति) गणोनो पति-गणपति

अमुणि (अमुनि) मुनि नहि ते-बडबड करनार

कोहदंसि (क्रोधदर्शिन्) क्रोधने जोनार-क्रोधी

२ प्रथमाना, संबोधनना अने चतुर्थीना स्वरादि प्रत्ययो लगाडी पूर्व स्वरनो एटले अंगना अंत्य 'इ' के 'उ'नो लोप करवानो छे.—

रिसि + अओ = रिस् = अओ = रिसओ
भाणु + अवो = भाण् + अवो = भाणवो
रिसि + अये = रिस् + अये = रिसये
भाणु + अवे = भाण् + अवे = भाणवे

३ नवा रूपोमां तृतीया एकवचन, 'णो' प्रत्ययवाळां बधां रूपो अने चतुर्थीनु एकवचन छे परंतु ते बधांनी साधना उपर जणावेला विभाग उपरथी समजाय तेवी ज छे.

संस्कृतमां 'इन्' छेडावाळा (दण्डिन्, मालिन्) नामोनां प्रथमा —द्वितीया बहुवचनमा अने पंचमी—षष्ठी एकवचनमां दण्डिनः, मालिनः रूपो प्रसिद्ध छे. ए रूपोनुं प्राकृत रूपांतर दंडिणो, मालिणो थाय छे. आ जोतां अहीं जणावेलां रिसिणो, भाणुणो रूपोनी घटना सहजमा समजी शकाय तेम छे. वळी, 'इन्' छेडावाळां नामोनां बधां रूपो लगभग इकारांत नामनी जेवा थाय छे.

इकारांत उकारांत नान्यतर

इकारांत अने उकारांत नान्यतर अंगनां, तृतीयाथी सप्तमी सुधीनां बधा रूपोनी साधना इकारांत अने उकारांत नरजाति अंगनां रूपोनी समान छे अने प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधननां रूपोनी साधना, अकारांत नान्यतर अंगनां रूपोनी जेवी छेः—

५ भाणु+त्तो=भाणुत्तो
भाणु+ओ=भाणूओ भाणूओ
भाणु+उ=भाणूउ भाणूउ
(भानुतः, भानो)
भाणु+णो=भाणुणो भाणु+हिंतो=भाणूहिंतो
भाणु+हिंतो=भाणूहिंतो (भानुभ्यः)
भाणु+सुंतो=भाणूसुंतो

६ भाणु+स्स=भाणुस्स(भानोः) भाणु+ण=भाणूण
भाणु+णो=भाणुणो भाणूणं (भानूनाम्)

७ भाणु+ंसि+भाणुंसि भाणु+सु=भाणूसु (भानुषु)
भाणु+म्मि=भाणुम्मि भाणूसुं
(भानुस्मिन् ?, भानौ)

सं० भाणु=भाणु (भानो !) भाणु+अवो=भाणवो (भानवः)
भाणु=भाणू भाणु+अओ=भाणओ („)
भाणु+अउ=भाणउ („)
भाणु+णो=भाणुणो
भाणु=भाणू

अकारांत नामना रूपोनी साधनामां जे प्रत्ययो वपराएला छे ते ज प्रत्ययो उपर्युक्त रूपोनी साधनामां वधारे प्रमाणमां वपराएला छे अने तद्दन नवां रूपो बहु थोडां छे.

१ प्रथमाना अने संबोधनना एक तथा बहुवचनमां तथा द्वितीयाना बहुवचनमां इकारांत अने उकारांत मूळ अंग फक्त दीर्घ करीने वापरवानुं छे:— रिसि = रिसी

७ रिसि+°सि=रिसिंसि (ऋषिस्मिन्? ऋषौ)	रिसी+सु=रिसीसु, रिसीसुं (ऋषिषु)
रिसि+म्मि=रिसिम्मि	
सं० रिसि=रिसि! (ऋषे!)	रिसि+अउ=रिसउ (ऋषयः)
रिसि=रिसी!	रिसि+अओ=रिसओ ,,
	रिसि+अयो=रिसयो ,,
	रिसि+णो=रिसिणो !
	रिसि=रिसी !

भाणु (भानु)

१ भाणु = भाणू (भानुः)	भाणु+अवो=भाणवो (भानवः)
	भाणु+अवे=भाणवे[७१] (,,)
	भाणु+अओ=भाणओ (,,)
	भाणु+अउ=भाणउ (,,)
	भाणु+णो=भाणुणो
	भाणु=भाणू
२ भाणु+म्+भाणुं (भानुम्)	भाणु+णो=भाणुणो
	भाणु=भाणू (भानून्)
३ भाणु+णा=भाणुणा(भानुना)	भाणु+हि=भाणूहि भाणूहिं, भाणूहिँ (भानुभिः)
४ भाणु+अवे=भाणवे(भानवे)	भाणु+ण=भाणूण (भानूनाम्)
भाणु+णो=भाणुणो	भाणूणं
भाणु+स्स=भाणुस्स	

---

७१ प्रथमाना-बहुवचनना 'अवे' प्रत्ययनो उपयोग आर्ष प्राकृतमां ठीक ठीक थयेलो छे

पाठ ११ मो

इकारांत अने उकारांत (नरजाति)

	एकवचन	बहुवचन
१	रिसि = रिसी (ऋषिः)	रिसि + अउ = रिसउ रिसि + अओ = रिसओ रिसि + अयो = रिसयो (ऋषयः) रिसि + णो = रिसिणो
२	रिसि+म्=रिसिं (ऋषिम्)	रिसि = रिसी रिसि = रिसी (ऋषीन्) रिसि + णो = रिसिणो
३	रिसि+णा=रिसिणा(ऋषिणा)	रिसि + हि = रिसिहि रिसिहिं रिसिहिँ (ऋषिभिः)
४	रिसि+अये=रिसये (ऋषये) रिसि + स्स = रिसिस्स रिसि + णो = रिसिणो	रिसि + ण = रिसीण रिसीणं (ऋषीणाम्
५	रिसि+ओ=रिसीओ(ऋषित) रिसि+उ=रिसीउ रिसि + णो = रिसिणो ” रिसि + हिंतो = रिसीहिंतो	रिसीओ रिसीउ रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो (ऋषिभ्य) रिसि+सुंतो=रिसीसुंतो
६	रिसि+स्स=रिसिस्स (ऋषेः) रिसि+णो=रिसिणो	रिसि+ण=रिसीण रिसीणं (ऋषीणाम्)

तवस्स वाघायकरं वयणं
वयासी
इमं पण्हं उदाहरित्था
गोयमो समणं महावीरं
एवं वयासी
सीलं कहं मायसुतस्स
आसी ?
नमिरायो देविंदमिणमब्बवी
अंगणम्मि वाला मोरा य
नच्चिसु
ते पुत्ता जणयं इणं वयणं
कहिंसु
वद्धमाणो जिणो अभू
सो दुद्धं पासी
तुमं छगलयं गामं नेही
माणवा हसीअ
जिणा एवं कहिंसु
आसी अम्हे महिड्डिया
तेणं कालेणं तेणं समयेण
पाडलिपुत्ते नयरे होत्था
जेणेव समणे महावीरे तेणेव
गोयमो गच्छीअ
पुच्छिसु णं समणा माहणा य

सो पुरिसो पाडलिपुत्तं
नयर गमणाए पहारेत्थ
रायगिहे नयरे होत्था
अहू जिणा, अत्थि जिणा
सव्वे वि जिणा धम्मम्मि
सच्चमुत्तमं आहंसु
ते पाणीयं पाही
बालो हसीअ
तुम्हे तत्थ ठाहीअ
आसिसु बंधवा दोवि
सो इमं वयणमब्बवी
अत्थि इहेव भारहवासे
कुसग्गपुरं नाम नयरं
सीसे विणयेणं आयरिये
सेवित्था
तंसि हेमंते नायपुत्ते महा-
वीरे रीइत्था
जं आरिया ते एवं वयासी
समणे महावीरे गामाणुगामं
विहरित्था
हरिएसवलो नाम जिइंदिओ
समणो आसि
किं अम्हे असच्चं भासीअ ?

ए पाणी पीधुं अने
अमोए दूध पीधुं.
पाणी नीचुं जाय छे एम
कोण नथी जाणतुं ?
ज्ञान वडे हुं क्रोधने अवश्य
हणु छुं.
तेणे दुष्ट रीते संकल्प कर्या.
अमे वेए सारी रीते सेवा
करी.
आजनुं दूध सरस हतुं.
सवारे अने पछी पण बाळको
आंगणामां रम्या.
श्रमणो मोघां वस्त्रोने अड-
कता नथी.
लोकोए ज्ञान माटे पंडितोने
पूज्या.
अमे साचुं बोल्या.
राजा अने इंद्र विनयपूर्वक
बोल्या.
हुं अने तु महाविद्यालयमां
गया अने राष्ट्रधर्मने
भण्या

'बधा प्राणीओ हणवा लायक
छे' एम अनार्योए कह्युं.
'कोई पण प्राणी हणवा योग्य
नथी' एम आर्योए कह्युं
मोहनदास महापुरुषे गामे
गाम विहार कर्यो अने
राष्ट्रधर्मने उपदेश्यो
प्रद्युम्ननो शिष्य पाटलिपुत्र
गयो
दुकाळमां देशना माणसोए
दुःख भोगव्यु
मोठा शिष्यो हसता नथी.
तमे शिष्योने शीघ्र पूछ्युं.
खोटुं वचन शा माटे बोल्यो ?
पुराणुं साचुं छे एम नथी
अने नवुं खोटुं छे एम
पण नथी
आर्योने नमस्कार
दिवसना आगला भागमां
सूर्यने पूज्यो
हिंदुस्तानना लोको सोंघुं
अन्न खाय छे.

बाला धाविंसु
मा य चांडालियं कासी[७०]

तंसि देसंसि दुक्कालो होसी
मिच्छा ते एवमाहंसु

७० रुक्कनुं 'मा कार्षीत्' (अद्यतन भूत सू० १) रूप अने आ 'मा कासी' रूप ए बन्ने एक सरखां छे.

असइं [असकृत्] वारंवार

गामाणुग्गामं } [ग्रामानुग्रामम्]
गामाणुगामं } गामे गाम–दरेक गामडे

नमो } [६९नम] नमस्कार
णमो }

पगे [प्रगे] प्रागडवाश्ये–प्रात:काळे

मा [मा] मा–नहि

धातु

अच्च् [अर्च] अर्चवु–पूजवु

उव+दिस् [उप+दिश] उपदेशवु–उपदेश करवो.

नच्च् [नृत्य] नाचवु

प+हार [प्र+धार] धारवु–सकल्प करवो.

ने } [नी] लइ जवुं–दोरवु
णे }

आ+णे [आ+नी] आणवु–लाववु

सेव् [सेव] सेववु

हस् [हस्] हसवु

पढ् [पठ] पाठ करवो–पढवु

पुच्छ् [पृच्छ] पूछवु

भण् [भण] भणवु

रीय् [रीय] नीकळवु

वि+हर् [वि+हर] विहरवु–फरवु

अणु+भव् [अनु+भव] अनुभववु भोगववु

हुं गाममां गयो अने साथे बकराने लइ गयो.

आर्य पुरुषोए महावीरने अनेकवार वांद्या.

मेघ वरस्यो अने मोरो नाच्या.

'महावीरनुं शील केवुं छे'–एम ब्राह्मणोए पूछ्युं.

तेमणे घणां सारां कामो कर्यां अने जीवनने सफळ कर्युं.

महावीर हेमंत ऋतुमां नीकळ्या

ज्यारे तेणे पूछ्युं त्यारे तमे खोटुं बोल्या

अमे सत्यनो जाप कर्यो.

---

६९ अकारनी पछी आवेला विसर्गने बदले 'ओ' थाय छे.—
नमः = नमो. तमः = तमो. मनः = मणो. ततः = ततो.

विशेषण

महड्डिय } [महर्धिक] मोटी
महिड्डिय } ऋद्धिवाळु–धनाढ्य

वाघायकर [व्याघातकर] व्याघात करनार–विघ्न करनार

महग्घ [महार्घ] मोंघु

सग्घ [स्वर्घ] सोंघु

केरिस [कीदृश] केवु

नवीण } [नवीन[66]] नवीन–
णवीण } नवु

अज्जयण } [अद्यतन] आजनु–
अज्जतण } ताजु

सरस [सरस] सरस

पच्छ [पथ्य] पथ्य–रस्तामां हितकर

जुगुच्छ [जुगुप्स] जुगुप्सा करनार–घृणा करनार

सण्ह } [सूक्ष्म] सूक्ष्म–सूखम
सुहुम } नानु सूनु
सुखुम }

सहल [सफल] सफळ

विहल [विफल] विफळ

विलिअ [व्यलीक] विशेष अलीक–खोटु

वीलिअ [व्रीडित] वीलो–मोंठो

पुराण } [पुराण] पुराणु–
पुराअण } जूनु–पुरातन

निण्ण } [निम्न] निम्न–नीचु
नेण्ण } नानु–नेनु[67]

अव्यय

तेण [तेन] ते तरफ

जेण [येन] जे तरफ

अवस्सं [अवश्यम्] अवश्य

एव } [एवम्] एम–ए प्रमाणे
एवं }

सुट्ठु [सुष्ठु] सारी रीते

दुट्ठु [दुष्ठु] दुष्ट रीते

खिप्पं [क्षिप्रम्] खेप–जलदी[68]

पच्छा [पश्चात्] पछी

इहेव [इहैव] अहीं ज

---

६६ जुओ पृ० ९० नियम १२७. ६७ 'नेनुं' ए प्रांतिक उच्चारण छे. नेनु = नानु. ६८ सरखावो—'खिप्प' उपरथी खेपियो–खेप करनारो—त्वराथी कागळ पहोंचाडनारो.

हेमंत (हेमन्त[६५]) हेमत ऋतु—शियाळो

मूसअ } (मूषक) मूषक—उदर
मूसय }

पल्हाअ } (प्रह्लाद) प्रह्लाद नामनो भक्त राजपुत्र
पल्हाद }

मोहणदास (मोहनदास) ए नामनो वीरपुरुष—मोहनदास गांधी

रट्ठधम्म (राष्ट्रधर्म) राष्ट्रनो धर्म—समग्र देशनुं हित करनारी प्रवृत्ति

गाम (ग्राम) गाम

देविंद (देवेन्द्र) देवोनो इंद्र—देवोनो स्वामी

मोर } (मयूर) मोर
मयूर }

हरिएसवल (हरिकेशबल) मूळ चंडाळ कुळमां जन्मेलो एक जैन मुनि

विंछिअ (वृश्चिक) वीछी

नान्यतर

गमण (गमन) गमन—जवुं

पाणीय } (पानीय) पाणी, पीवानुं
पाणीअ }

दुद्ध (दुग्ध) दूध

रायगिह (राजगृह) विहारमां आवेलुं हालनुं राजगिर—मगध देशनी राजधानी

कुसग्गपुर (कुशाग्रपुर) राजगृहनुं बीजुं नाम

विन्नाण } (विज्ञान) विज्ञान
विण्णाण }

भारहवास (भारतवर्ष) भारतदेश—हिंदुस्थान

महाविज्जालय (महाविद्यालय) मोटुं विद्यालय—कोलेज

पाडलिपुत्त (पाटलिपुत्र) पाटलिपुत्र—पटणा शहेर

चंडालिय (चाण्डालिक) चंडाळनो स्वभाव—क्रोध

नाण (ज्ञान) ज्ञान

पवहण (प्रवहण) वाहन, वहाण

अच्छेर (आश्चर्य) आश्चर्य—अचरज

---

६५ जुओ संधि पृ० १३१–३२ नियम २०–२२.

नरजाति

आरिय (आर्य)-सज्जन

णातसुत } (ज्ञातसुत[५७]) ज्ञात-
णायसुय } वंशनो पुत्र-महावीर

छगलय (छाग) छालु-बकरु

नातपुत्त } (ज्ञातपुत्र) ज्ञात-
णातपुत्त } वंशनो पुत्र-
नायपुत्त } महावीर

देस (देश) देश

मिलिच्छ (म्लेच्छ) म्लेच्छ

ऊसव (उत्सव) उत्सव

मअ[५८] (मृग) मृग-हरण

मयंक (मृगाङ्क) मृगना निशान
वाळो-चन्द्र

पज्जुण्ण } (प्रद्युम्न[५९]) प्रद्युम्न
पज्जुन्न } नामनो कृष्णनो पुत्र

वच्छ } (वत्स[६०]) वत्स-
बच्चु-पुत्र

उच्छाह (उत्साह) उत्साह

रिच्छ ([६१]ऋक्ष) रीछ

गोतम } ([६२]गौतम) गौतम
गोयम } गोत्रनो मुनि

पवंच (प्रपञ्च) प्रपच

संख (शङ्ख) शख

कंटग (कण्टक) कांटो

पंथ (पन्थ) पथ-मार्ग

कलंब (कदम्ब) कदंबनु झाड

सप्प (सर्प) साप

मंजार (मार्जार) मणजर-
बिलाडो

दुक्काल (दुष्काल) दुकाळ

वम्मह ([६३]मन्मथ) मनने
मथनार-कामदेव

पण्ह (प्रश्न[६४]) प्रश्न

कण्ह (कृष्ण) कृष्ण-कान

पण्हुअ (प्रस्नुत) पानो

पुव्वण्ह (पूर्वाह्ण) दिवसनो पूर्व
भाग

---

५७ जुओ पृ० १०४ नियम १७१. ५८ जुओ पृ० ६१ नियम ३७. ५९ जुओ पृ० १०८ नियम १८०. ६० जुओ पृ० १०५ नियम १७३ त्स. ६१ जुओ पृ० ६२ नियम ४०. ६२ जुओ पृ० ६६ नियम ६२. ६३ जुओ पृ० १०७ नियम १७७ न्म. ६४ जुओ पृ० ११० तथा १११ नियम १८४, १८५ श्न, ष्ण.

धातुने लगाडवानो छे ते, आर्ष प्राकृतमां क्वचित् व्यजनांत धातुने पण लागेलो छे, वद+सी=वदासी=आर्ष प्राकृत होवाने कारणे 'वद'नु 'वदा' थयुं छे.

कर

भूतकाळमां 'कर'ने वदले 'का' पण थाय छे.

कर + ईअ = करीअ

'कर'नो 'का' थयो त्यारे	का + सी = कासी का + ही = काही का + ही = काहीअ

आर्ष प्राकृतमां वपराएलां बीजां केटलांक अनियमित रूपो.

कर्-अकरिस्सं	(अकार्षम्)	१ पु०	एक०
कर्=का-अकासी	(अकार्षीत्)	३ पु०	,,
ब्रू-अब्बवी	(अब्रवीत्)	,,	,,
वच-अवोच	(अवोचत्)	,,	,,
अस्-आसी, आसि	(आसीत्)	,,	,,
आसिमु	(आस्म)	१ पु०	वहु०
ब्रू—आह	(आह)	३ ,,	एक०
,, आहु	(आहु)	,,	वहु०
दृश-अदक्खू	(अद्राक्षुः)	,,	,,

भू } अभू (अभूत् के अभुवन्) एक० तथा वहु०
हू } अहू ,, ,,

उक्त आर्षरूपो संस्कृत अने प्राकृत एम बे भिन्न भिन्न भाषाना अस्तित्वनो स्पष्ट रीते निषेध करे छे. ए बधां रूपो मात्र उच्चारणभेदना नमूना छे

धातु-	रूपाख्यान	
हो	होत्था	(हो + त्था)
री	रीइत्था	(री + इत्था)
प+हार्	पहारित्थ पहारेत्थ	(पहार् + इत्थ)
भुंज्	भुंजित्था	(भुंज् + इत्था)
वि+हर्	विहरित्था	(विहर् + इत्था)
सेव्	सेवित्था	(सेव् + इत्था)
गच्छ्	गच्छिंसु	(गच्छ् + इंसु)
पुच्छ्	पुच्छिंसु	(पुच्छ् + इंसु)
कर्	करिंसु	(कर् + इंसु)
नच्च्	नच्चिंसु	(नच्च् + इंसु)
आह्	आहंसु	(आह् + अंसु)

केटलांक नियमित रूपो

अस्-होवुं

अत्थि, अहेसि, आसि (सर्व पुरुष सर्व वचन) आसिमो, आसिमु (आस्म) रूप, प्रथम पुरुषना बहुवचनार्थे आर्ष प्राकृतमां क्वचित वपराएलुं मळे छे

'वद्' धातुनुं 'वदीअ' रूप थवुं योग्य छे छतां आर्ष प्राकृतमां 'वदीअ'ने बदले 'वदासी' अने 'वयासी'[56] रूपनो उपयोग थएलो छे अर्थात् उक्त 'सी' प्रत्यय स्वरांत

क्रियापदोमा वपरातो इंसु (तृतीय पु॰ बहुव॰) भूतकाळनो सूचक छे अने ते प्राकृतमां पण प्राय ते ज काळ, पुरुष अने वचनने सूचवे छे.

५६ 'वदासी' उपरथी 'वयासी'—जुओ पृ० ७२-७३ नियम ६१-७०

एकवचन-बहुवचन

व्यंजनांत धातुओने लगाडवाना } ईअ (ईत्[५२])
१ पु० ,,
२ पु० ,,
३ पु० ,,

वंद्-वंदीअ (वंद् + ईअ)
हस्-हसीअ (हस् + ईअ)
कर्-करीअ (कर् + ईअ)

खास करीने आर्ष प्राकृतमां वपराएला प्रत्ययोः

प्रायः तृतीय पुरुष एक वचन } त्था (इष्ट)[५३]
इत्था
इत्थ

प्रायः तृतीय पुरुष-बहुवचन } इत्थ (इष्ट)[५४]
इंसु (इषुः)[५५]
अंसु

---

५२ 'ईअ' अने संस्कृतनो भूतकाळ सूचक 'ईत्' बन्ने समान छे. 'अभाणीत्' 'अवादीत्' वगेरे सस्कृत क्रियापदोमां आवेलो 'ईत्' (तृ० पु० एक०) भूतकाळने दर्शावे छे, प्राकृतमां ते सर्व पुरुष अने सर्व वचनमां आवे छे.

५३ आ 'इत्थ' प्रत्यय अने संस्कृतनो 'इष्ट' प्रत्यय बन्ने समान छे. इष्ट-इठ्ठ-इत्थ, इत्था, त्था. अजनिष्ट, अभविष्ट वगेरे सस्कृत रूपोमां आवेलो 'इष्ट' (तृतीय पु० एक०) भूतकाळनो सूचक छे. प्राकृतमां पण ते, प्रायः तृतीय पुरुषना एकवचनने सूचवे छे.

५४ जुओ टिप्पण ५४ मु.

५५ आ 'इंसु' अने 'अंसु' तथा संस्कृतनो भूतकाळ-दर्शक 'इषु.' ए बधा समान छे. 'अवादिषुः' 'अव्राजिषु.' वगेरे संस्कृत

પાઠ ૧૦ મો

ભૂતકાળ-પ્રત્યયો

સ્વરાંત ધાતુઓને લગાડવાના-		એકવચન—વહુવચન			
	૧ પુ૦	સી,	હી,	હીઅ	(સીત્)[૫૧]
	૨ પુ૦	,,	,,	,,	,,
	૩ પુ૦	,,	,,	,,	,,

'પા' ધાતુનાં રૂપો

સર્વ પુરુષ સર્વ વચન	
પાસી (પા + સી),	પાઅસી (પા + અ + સી)
પાહી (પા + હી),	પાઅહી (પા + અ + હી)
પાહીઅ (પા+હીઅ),	પાઅહીઅ (પા + અ+ હીઅ)

'હો' ધાતુનાં રૂપો

હોસી	(હો + સી)	હોઅસી	(હો + અ + સી)
હોહી	(હો + હી)	હોઅહી	(હો + અ + હી)
હોહીઅ	(હો + હીઅ)	હોઅહીઅ	(હો + અ + હીઅ)

---

૫૧ પ્રાકૃતમાં વપરાતો ભૂતકાળનો 'સી' પ્રત્યય અને સસ્કૃતમાં વપરાતો ભૂતકાળનો 'સીત્' પ્રત્યય વન્ને સમાન છે. 'અધાસીત્' 'અગ્રાસીત્' વગેરે સસ્કૃતરૂપોમા વપરાએલો 'સીત્' (તૃતીય પુ૦ એક૦) ભૂતકાળને દર્શાવે છે, પ્રાકૃતમા તે વ્યાપક થઈ સર્વ પુરુષ અને સર્વ વચનને દર્શાવે છે. 'હી' અને 'હીઅ' એ વન્ને પણ 'સી'ની સાથે જ સમાનતા ધરાવે છે.

एस लोगे संसारंसि गिज्झइ

तं वयं बूम माहणं जो एगमवि पाणं न हणेज्जा

पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि?

जहा अंतो तहा बाहिं एवं पासंति पंडिता

कामा खलु दुरतिकमा

असमणा सया सुत्ता, समणा सया जागरंति

कडेहिंतो कम्मेहिंतो केसिमवि न मोक्खो अत्थि

मूढस्स पुरिसस्स संगेण अलं

लाभो त्ति न मज्जेज्जा, अलाभो त्ति न सोएज्जा

सततं मूढे धम्मं [४९]नाभिजाणति

जिणा अलोभेण लोभं जयंति

संसारे एगेसिं माणवाणं अप्पं च खलु आउयं

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं

खत्तिया धम्मेणं जुज्झं जुज्झंति

जहा लाहो तहा लोहो लाहा लोहो पवड्ढइ

समणा सव्वेसिं पाणाणं सुहमिच्छंति[५०]

---

४९ जुओ संधि पृ० १२८ नियम ६ न+अभिजाणति=नाभिजाणति

५० जुओ संधि पृ० १३१ नियम १८

तप वडे वधता वर्धमान
मनुष्योना क्षेम माटे संन्यास
ले छे.
दांतोथी लोढाने खाओ छो.

मजूरो रूपा माटे पहाडने
खोदे छे.
बापना खोळामां पुत्र
आळोटे छे

एगो हं नत्थि मे को वि
नाहमन्नस्स कस्स वि
धीरो वा पंडितो मुहुत्तमवि
नो पमायए
इमे तसा पाणा, इमे थावरा
पाणा न हतव्वा इति सव्वे
आयरिया भासंति
अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे
विविहेहिं दुक्खेहिं जूरइ
तओ से एगया पासेहिं
दिव्वइ
कोहेण, मोहेण, लोहेण वा
चित्तं खुब्भइ तत्तो अलं
तव एएहिं
अयं पुरिसे गढिए सोयइ,
जूरइ, तिप्पइ, पिट्टइ,
परितप्पइ
जे अज्झत्थं जाणति ते
बहिया वि जाणति
अलं बालस्स संगेणं
वीराणं मग्गो दुरणुचरो

वुड्ढो कामे जहाइ
पावगेण कम्मेण पुणो पुणो
कलहो जायति
अलं पमादेण कुसलस्स
पंडिओ न हरिसेइ, न कुप्पइ
पाणाणं असातं महब्भयं
दुक्खं
नत्थि जीवस्स नासो त्ति
मूढाणं अप्पाणे दुप्पूरिए
अत्थि
समणाणं कयविक्कयो महा-
दोसो न कप्पइ
तुमे सच्चं समणं तहा
सच्च माहणं न गरिहह
'पुत्ता मे' 'धणं मे'
'भोयणं मे' त्ति गढिए
पुरिसे मुज्झइ
ते पुत्ता तव ताणाए नालं,
तुमं पि तेसिं सरणाए
नालं होसि

अमे, तमे अने तेओ वधा, संसारना पाशने कापीए छीए.

श्रमणो पाणी वडे वस्त्रोने शुद्ध करे छे.

कुशळ पुरुषो निर्दोष वचनने उत्तम कहे छे

तपोमां ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ छे.

क्षत्रियोनुं लक्षण धैर्य अने वीर्य छे.

जितेंद्रिय पुरुषो बुद्धनी अने महावीरनी सेवा करे छे

वधा जीवो लोभथी पापने मार्गे चाले छे

धीर क्षत्रियो मनुष्योनुं कुशळ इच्छे छे.

तमे धैर्य वडे लोभने जितो छो.

झाडो वधे छे अने करमाय छे तेथी तेमां जीव छे.

आचार्यो जागे छे अने ध्यान धरे छे.

ब्राह्मणो अने श्रमणो शास्त्रो वडे लडे छे.

चैत्यमां महावीरनां अने बुद्धनां पगलां छे.

मारो भाई टाढथी ध्रूजे छे.

आ ब्राह्मण ए लोकोने शाप आपे छे.

आ सागर खळभळे छे.

ते अने हु लाकडां छोलीए छीए.

केटलाको निरर्थक कोपे छे.

तमे, तेने, मने अने एने जितो छो.

साचा ब्राह्मण विना बीजुं कोण उत्तम छे?

कोई ब्राह्मण जन्म वडे ब्राह्मण थतो नथी

संसारमां वधा, वधानां शरणरूप छे.

संसारमां चारे बाजु त्रस अने स्थावर जीवो छे.

श्रमणो पापरूप कर्मोनो त्याग करे छे.

श्रमणोमां वर्धमान श्रेष्ठ छे.

दानोमां अभयदान श्रेष्ठ छे.

पगथी अग्निने हणो छो.

पर्वतने तमे नखोथी खणो छो.

पुष्पोमां अरविंद श्रेष्ठ छे.

थोडुं पण असत्य महाभयरूप छे

कप्प् ४८(कल्प) खपवु–उचित होवु
वज्ज् (वर्ज) वर्जवु–छोडवु
चय् (त्यज) तजवु
चर् (चर) चरवु, चालवु
सं+जल् (सं+ज्वल) जळवु–तपवु–क्रोध करवो.

अभिप्पत्थ्, अभिपत्थ् (अभि+प्र+अर्थ) प्रार्थना करवी
अभि+जाण् (अभि+जाना) अहिजाणवु–ओळखवु
खण (खन्) खणवु–खोदवु
परि+चय् (परि+त्यज) परित्याग करवो

अचार्यो कुशळ माटे निरंतर प्रयास करे छे.
संसारमां पापनो भार वधे छे
जेम जेम वासना वधे छे तेम तेम लोभ वधे छे
युद्धने वखते धैर्य दुर्लभ होय छे
अमे निरर्थक बोलता नथी.
भमराओ फुलोमां दोडे छे
झाडो पाणी पीए छे अने ताप सहे छे
नमिराज युद्धने तजे छे.
क्षत्रियो शस्त्रो अने अस्त्रो वडे निर्दोष मनुष्यनां माथां कापे छे
छात्रो हमेशां गुरुकुळमां रहे छे.

तेना आंगणामां सूरजनु तेज दीपे छे
तेओ तमने वारंवार याद करे छे.
अमे महेलनी उपर छीए
अमारामां ते एक जितेंद्रिय पंडित छे.
तमे एने वारंवार वांदो छो.
एओ, तमे अने अमे दूध पीए छीए
पापी ब्राह्मण सर्वमां हलको छे.
संसारमां कोई, कोईनु शरण नथी.
तमे अंदरनुं जाणो छो तेथी प्रमाद करता नथी

---

४८ उपयोग—'खपतुं नथी' एवा अर्थमा आ धातु छे अने तेनो उपयोग—'श्रमणोने क्रयविक्रय खपतो नथी.'

सुत्त (सुप्त) सुतेलु
सुत्त (सूक्त) सूक्त–सारी उक्ति–सुभाषित
वद्धमाण (वर्धमान) वधतु
गढिय (गृद्ध) अतिशय लालचु
अहम (अधम) अधम–हलकु–नीच
जिइंदिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो उपर जय मेळवनार
निरट्ठय (निरर्थक) निरर्थक–नकामु
धीर (धीर) धीर–वीरजवाळुं
अणारिय (अनार्य) अनार्य–आर्य नहि ते–अनाडी
पिय (प्रिय) प्रिय–वहालु
दुप्पूरिय (दुप्पूर्य) मुश्केलीथी पूराय–भराय–तेवु
सयल (सकल) सकल–सघलु
कुसल (कुशल) कुशळ–चतुर
दुरतिक्कम (दुरतिक्रम) न मटे तेवुं
मड / **मय** (मृत) मृत–मरेलुं
सेट्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ–उत्तम
दंत (दान्त) जेणे तृष्णाने दमी छे ते, दमेलु–शांत
कड / **कय** (कृत) करेलु
विविह (विविध) विविध–जात जातनु

धातुओ

भास् (भाष्) भाखवुं–भाषण करवु
प+माय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो
जूर् (जुर्) जूरवु
तिप्प् (तिप्) टपकवु–गळवु
पिट्ट् (पिट्ट) पीटवु–मारवु–पीडवु
परि+तप्प् (परि+तप्य) परिताप पामवो–दु:खी थवुं
समा+यर् (सम्+आ+चर) आचरण करवुं
अणु+तप्प् (अनु+तप्य) अनुताप करवो–पश्चात्ताप करवो.
प+यय् (प्र+यत्) प्रयत्न करवो
अभि+नि+क्खम् (अभि+निष्+क्रम्) हमेशने माटे घरथी नीकळवु–संन्यास लेवो
परिहर् (परि+हर्) परहरवु–तजवुं
तच्छ् (तक्ष्) तासवुं–छोलवुं–पातलु करवुं

छत्त (छत्र) छत्र–छत्री

वम्हचेर } (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य–
वमचेर } सदाचारवाळी वृत्ति–
ब्रह्मना परायण रहेवु ते

सच्च (सत्य) सत्य–साचु

साय } (सात) शाता–सुख
सात }

गुरुकुल (गुरुकुल) सदाचारवाळा गुरुओ ज्या रहे छे ते स्थान

सुत्त (सूत्र) सूत्र–सूतर, सूत्ररूप टूंकु वाक्य

अव्यय

अल [४६] (अलम्) बस–सर्यु–थयु

तओ } (ततः) तेथी, त्यार पछी
तत्तो }

अवरिं } (उपरि) ऊपर
उवरिं }

मुसं
मुसा } (मृषा) मिथ्या–खोटु
मूसा
मोसा

हु
खु } (खलु) निश्चय
खो

एगया (एकदा) एकवार–एक वखत

धुवं (ध्रुवम्) ध्रुव–चोक्कस

अज्झत्थं } (अध्यात्म) आत्मने लगतु–अदरनु
अज्झप्पं }

सततं } (सततम्) सतत–निरंतर
सयय }

[४७] इइ
इअ
त्ति } (इति) इति–ए प्रमाणे समाप्तिसूचक
ति
इति

विशेषण

अवज्ज (अवद्य) अवद्य–न वदी–कही–शकाय तेवु काम–पाप–दोष

अणवज्ज } (अनवद्य) पापरहित–निर्दोष
अनवज्ज }

दुरणुचर (दुरनुचर) जेनु आचरण कठण लागे ते.

---

४६ 'अल'नी साथे आवता नामने त्रीजी विभक्ति लागे छे.
अल जुद्धेण. अल तवेण.

४७ 'इति'ना उपयोग माटे जुओ टिप्पण ४५मु.

पमाद (प्रमाद) प्रमाद–असावधानता–आळस

संग (संग) संग–सोबत

असमण (अश्रमण) श्रमण नहि ते

तेअ (तेजस्) तेज

तस (त्रस) त्रास पामी गति करी शके तेवा प्राणी

थावर (स्थावर) स्थिर रहेनार–गति न करी शके ते प्राणी –वनस्पति वगेरे

पव्वय (पर्वत) पर्वत

तव (तपस्) तप–तपश्चर्या

नह (नख) नख

अय (अयस्) अयस्–लोढु

जायतेय (जाततेजस्) जेमा तेज छे ते–अग्नि

पाय (पाद) पा–चोथो भाग

उट्ट (उष्ट्र) ऊंट

नान्यतरजाति

पाव (पाप) पाप

पावग (पापक) पाप

फंदण (स्पन्दन) फादवु–फरकवु –थोडु थोडु हलवु

जुज्झ } **जुद्ध** } (युद्ध) युद्ध–लडाई

कारण (कारण) कारण

पय (पद) पद–पगलु

सत्थ (शस्त्र) शस्त्र–हणवानु हथीआर–तरवार वगेरे

महब्भय } **महाभय** } (महाभय) मोटो भय

रय (रजस्) रज–पाप, धूळ, मेल

अरविंद (अरविन्द) अरविंद–उत्तम कमळ

दाण (दान) दान

अभयप्पयाण (अभयप्रदान) अभयदान–प्राणीओ निर्भय रहे–बने–तेवी प्रवृत्ति

असाय } **असात** } (असात) शाता नहि –सुख नहि ते

रज्ज (राज्य) राज्य–राज

सरण (शरण) शरण–आशरो

धीरत्त(धीरत्व)धीरत्व–धीरपणु–धैर्य

पुप्फ (पुष्प) पुष्प–फूल

अत्थ (अस्त्र) अस्त्र–फेंकवानु हथीआर–बाण वगेरे

सत्थ (शास्त्र) शास्त्र

चेइअ (चैत्य) चिता ऊपर चणेलु स्मारक चिह्न–ओटलो, छत्री, पगलां, वृक्ष, कुंड, मूर्ति वगेरे.

नान्यतरजाति

१	एस, एअं, इणं, इणमो (एतत्)	एआणि, एआइं, एआइँ (एतानि)
२	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,,

बाकीनां नरजाति प्रमाणे.

सामान्य शब्दो

नरजाति

दुम (द्रुम) द्रुम–झाड

भमर (भ्रमर) भमरो

रस (रस) रस

जणय (जनक) जनक–पिता

साव (शाप) शाप–श्राप

भारहर (भारहर) भार लइ जनार –मजूर

लाह } लाभ } (लाभ) लाभ–लावो

अलाह } अलाभ } (अलाभ) अलाभ–अप्राप्ति

कयविक्कय (क्रयविक्रय) खरीदवुं–वेचवुं–क्रयविक्रय करवो

जम्म (जन्मन्) जन्म

छत्त (छात्र)–विद्यार्थी

वद्धमाण (वर्धमान) वर्धमान–महावीरनुं नाम

एरावण (ऐरावण) ऐरावण–मोटो हाथी

लोअ } लोग } (लोक) लोक–जगत्–लोको

मुहुत्त (मुहूर्त) मुरत–वखत–थोडो समय

नह (नभस्) नभ–आकाश

महादोस (महादोष) महादोष–मोटो दोष

नास (नाश) नाश

नास (न्यास) न्यास–थापण

सूअर (शूकर) शूकर–भुंड

काल (काल) काल–समय

खत्तिअ (क्षत्रिय) क्षत्रिय

नमिराय (नमिराज) नमिराज–ते नामनो मिथिलानो एक राजर्षि

नान्यतरजाति

१ इणं, इणमो, इदं (इदम्) इमाणि, इमाइं, इमाइँ (इमानि)
,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
बाकीनां नरजाति प्रमाणे.

एअ (एतद्)–ए [नरजाति]

१	एस, एसो, एसे (एषः) इणं, इणमो	एए (एते)
२	एअं (एतम्)	एए, एआ, (एतान्)
३	एएण, एएणं, (एतेन) एइणा	एएहि, एएहिं, (एतैः–एतेभिः?) एएहिँ
४	से, एअस्स (एतस्य)	सिं, एएसिं (एतेषाम्) एआण, एआणं
५	एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिंतो, (एतस्मात्)	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एएहिं, (एतेभ्यः) एआहिंतो, एएहिंतो, एआसुंतो, एएसुंतो.
६	चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एअंसि, एअस्सिं, (एतस्मिन्) एअम्मि	एएसु, एएसुं, (एतेषु)

अम्ह, अम्हं, महं	
५ ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममा, (मत्)	ममत्तो, ममाओ, ममाउ,
	अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ (अस्मत्)
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७ मे, ममाइ, मि, मए, मइ (मयि)	अम्हेसु, अम्हेसुं अम्हसु, अम्हसु

इम (इदम्) आ-[नरजाति]

१ अयं, इमो, इमे (अयम्)	इमे (इमे)
२ इमं, इणं, णं (इमम्)	इमे, इमा (इमान्) णे, णा
३ इमेण, इमेणं, इमिणा णेण णेणं (अनेन)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ एहि, एहिं, एहिँ (एभिः) णेहि, णेहिं, णेहिँ
४ इमस्स, से, अस्स (अस्य)	सिं, इमेसिं, (एषाम्) इमाण, इमाणं
५ इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिंतो, इमा (अस्मात्)	इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहि, इमेहि (एभ्य.) इमाहिंतो, इमेहिंतो, इमासुंतो, इमेसुंतो.
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे.	
७ इमंसि, इमस्सि, इमम्मि इह, अस्सि (अस्मिन्)	इमेसुं, इमेसु, एसु, एसुं (एषु)

तुहत्तो, तुह्याओ, तुह्याउ,
तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

७ तुवम्मि, तुवंसि, तुवस्सि	तुवेसु, तुवेसुं (युष्मासु)
तुमम्मि, तुमंसि, तुमस्सि	तुवसु, तवसुं
तुमे	तुमेसु, तुमेसुं
तुम्हम्मि,तुम्हंसि,तुम्हस्सि	तुमसु, तुमसुं
तुम्मि, तइ, तए, (त्वयि)	तुहेसु, तुहेसुं
	तुहसु, तुहसुं
	तुम्हेसु, तुम्हेसुं
	तुम्हसु, तुम्हसुं
	तुसु, तुसुं

अम्ह (अस्मद्) हुं [त्रणे जाति]

१ हं; अहं, अहयं (अहम्)	मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो(वयम्)
२ म्मि, अम्मि, अम्ह, मं, (माम्)	,, ,, ,, ,, (अस्मान्) णे (नः)
३ मइ, मए (मया)	अम्हेहि, अम्हाहि. (अस्माभिः) अम्ह, अम्हे, णे
४ मम, मज्झ, मज्झं (मह्यम्, मम, मे)	मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, अम्हाणं, णो (न) (अस्माकम्)

समो य जो तव्वेसु भूएसु स वीतरागो | जेण मोहो हओ न सो संसारे परियट्टइ

जेहिं बद्धो जीवो संसारे परियट्टइ ते रागा य दोसा य कम्मबीअं | सव्वे पाणा पियाउआ सुहमिच्छंति.

पाठ ९ मो

'तुम्ह', 'अम्ह', 'इम' अने 'एअ'नां रूपाख्यानो

तुम्ह (युष्मद्) तुं (त्रणे जाति)

	एकवचन	बहुवचन
१	तुं, तुमं, तं (त्वम्)	तुम्हे, तुज्झे (यूयम्)
२	,, ,, ,, तुमे, तुए (त्वाम्)	,, ,, (युष्मान्) वो (व.)
३	ते, तइ, तए (त्वया)	तुम्हेहि, तुम्हेहिं, तुम्हेहिँ (युष्माभिः) तुज्झेहि, तुज्झेहिं तुज्झेहिँ (युष्मेभिः?)
४	तुह. तुज्झ, तुव, तुम, ते, तुव, (तव, ते) तुहं (तुभ्यम्)	तुमाण, तुमाणं (युष्माकम्) तुम्हाण, तुम्हाणं तुज्झाण, तुज्झाणं तुम्हाहँ वो (व.)
५	तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, (त्वत्) तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ,	तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहिंतो, तुम्हेहिंतो तुम्हासुंतो, तुम्हेसुंतो (युष्मत्)

कर्मबीजवडे संसारमां फर्या करे छे.
अमे बीजाओनुं मंगळ इच्छीए छीए
ते पोताना दोषोने जुए छे.
हाथीथी हणायेलो खेडुत भयथी धुजे छे.
तेना आंगणामां वघां वाळको रमे छे.
जे मूढ शिष्यो, आचार्यने वांदता नथी तेओ दुःख सहे छे
वीतराग पुरुष सर्वेमां उत्तम ब्राह्मण छे.
वीतराग सर्व भूतोने सरखां जुए छे

जहा जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थति तहा जुन्ने दोसे समणो दहइ
जस्स मोहो हओ तस्स न होइ दुक्खं
सव्वेसिं पाणाणं भूआणं दुक्खं महब्भयं ति बेमि
'सव्वे वि पाणा न हतव्वा' एव ते पडुप्पन्ना जिणा ते सव्वे वि आइक्खंति.
जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ.
पमत्तस्स सव्वतो भयं विज्जइ [45]इअ महावीरो भासते
जस्स मोहो न होइ तस्स दुक्खं हय
'एगेसिं माणवाणं आउयं अप्प खलु
अधीरेहिं पुरिसेहिं इमे कामा न सुजहा
पुरिमाओ, दाहिणाओ, उत्तराओ कत्तो आगओ त्ति न जाणइ जीवो
जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ

---

४५ जुओ पृ० ७० 'इति' तथा पृ० १३० नियम ११-१४.

धातुओ

जाण् (जाना) जाणवु
प+मत्थ् (प्र+मथ्) मथवु-
नाश करवो
कील् } (क्रीड्) क्रीडा करवी-
कीड् } खेलवु
रम् (रम्) रमवु
णम् } (नम्) नमवु
नम् }

डह् } (दह्) दहवु-बळवु-
बाळवु
सह् (सह्) सहवु-सहन करवु
पास् (पश्य) जोवुं
परि+यट्ट् (परि+वर्त्त) परिवर्तवु
फर्या करवु-बदलावु
आ+इक्ख् (आ+चक्ष) आचक्षवु
-कहेवुं

वधांने सदा सुख प्रिय छे.
जेओ शरीरमां आसक्त छे
तेओ मूढ छे.
राग अने द्वेष संसारमां
अनादिना छे
मेघ, वधा भागोमा चारे
वाजुए वरसे छे.
अमे वे, जेनां कपडां सी-
वीए छीए ते राजा छे
अग्नि जेम लाकडांने वाळे
छे तेम वुद्ध पुरुप पोताना
दोषोने वाळे छे.
प्रमत्त पुरुष भयथी कंपे छे.
उत्तर, पूर्वमां शीत छे अने
दक्षिणमां ताप छे.
एक पण भूत हणवा योग्य
नथी.

वधां बाळको गाय छे.
वधा खेडुतो टाढ अने ताप
सहे छे.
जे, कोई जीवने हणतो
नथी तेने अमे ब्राह्मण
कहीए छीए.
कोण क्याथी आवेलो छे?
माणसो शरीरना क्षेम माटे
तपे छे
पंडितो हर्षवडे दुःख सहे छे.
सर्व शिष्यो माथावडे आ-
चार्यने नमे छे
हुं वधांओने माटे चंदन
घसुं छुं.
जे, तेनाथी गभराय छे ते
भड नथी
बद्ध अने आसक्त पुरुषो

विशेषण

पडुप्पन्न (प्रत्युत्पन्न) वर्तमान–ताजु

पमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त–प्रमादी

सम (सम) समान वृत्तिवाळु–साधु

वीयराग } (वीतराग) जेमां राग
वीयराय } नथी ते

सुजह (सु+हान) सहेलाइथी तजी शकाय ते

जुन्न (जीर्ण) जीर्ण–जूनु–जळी–जरी–गयेलु

पिय (प्रिय) प्रिय–वहालु

आसत्त (आसक्त) आसक्त–मोही

हअ (हत) हणायेलु–हणेलु

आगअ }
आगत } (आगत) आवेलु
आअ }

पिआउय (प्रियायुष्क) आयुष्यने प्रिय समजनार

उत्तम } (उत्तम) उत्तम
उत्तिम }

बुद्ध (बुद्ध) बोध पामेल–ज्ञानी

बद्ध (बद्ध) बद्ध-बाधेल–बधायेल

सीअ (शीत) शीत–ठडु

अधीर (अधीर) अधीर–धीरज विनानुं–नवलु

हंतव्व (हन्तव्य) हणवा योग्य

अप्प (अल्प) अल्प–थोडुं

अणाइअ (अनादिक) आदि विनानुं

अव्यय

कुत्तो } (कुत) क्यांथी, शाथी,
कुओ } कई बाजुथी

जहा } (यथा) जेम
जह }

एव } (एवम्) एम–ए रीते
एवं }

सव्वत्तो }
सव्वतो } (सर्वत) सर्व प्रकारे चारे बाजुथी
सव्वओ }

तहा } (तथा) तेम
तह }

अंतो (अन्तर्) अदर

खलु (खलु) निश्चय

पुरिम ४४ (पुरस्म) पहेलानु, पूर्व
पुव्व (पूर्व) पूर्व, पूर्वनु
वीस (विंश) विंश-वीसु
स.सुव (स्व) स्व-पोते, पोतानु
सम (सम) सघळु
सव्व (सर्व) सर्व सब-सघळु
सिम (सिम) सघळु

सामान्य शब्दो [नरजाति]

भूअ (भूत) भूत-प्राण-जीव
सीस / स्सिस्स (शिष्य) शिष्य, विद्यार्थी
कसिवल (कृषिवल) खेडवाळो-खेडुत
अंक (अङ्क) अङ्क-खोळो
बंधव (बान्धव) बांधव-भाई
पासाय (प्रासाद) प्रासाद-महेल
जीव (जीव) जीव
ताव (ताप) ताव, ताप-तडको
बंभण / वम्हण / माहण (ब्राह्मण) ब्रह्मविद्याने समजनार पुरुष
कोड (क्रोड) गोद-खोळो
पास (पाश) पाश-फांसो, पाशलो-फांसलो
दिणयर (दिनकर) दिननो करनार-सूरज, दीकरो
संसार (संसार) संसार-जगत्

नान्यतर

अंगण (अङ्गण) आंगणु
सीअ (शीत) शीत-टाढ
खेम (क्षेम) क्षेम-कुशळ
महब्भय (महाभय) महाभय-मोटो भय
वत्थ (वस्त्र) वस्त्र-वस्तर-कपडु
कट्ठ (काष्ठ) काष्ठ-काठ-काठी-लाकडु
कम्मबीअ (कर्मबीज) कर्मबीज-सत्-असत् संस्कारनु बीज
भोयण (भोजन) भोजन-जमण
धण (धन) धन
ताण (त्राण) रक्षण-शरण-आशरो
घर (गृह) घर
आउय (आयुष्क) आयुष्य-जींदगी

---

४४ पूर्व-पुरिव-पुरिम.

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७ कंसि, कस्सिं, कहिं. कम्मि (कस्मिन्) कत्थ (कुत्र) काहे, काला, [43]कइआ (कदा)	केसु, केसुं (केषु)

क (नान्यतर)

१ किं (किम्)	काणि, काइं, काइँ (कानि)
,, (,,)	,, ,, ,, (,,)

बाकीनां नरजाति—क—प्रमाणे

सर्वनाम

अण्ण, अन्न (अन्य) अन्य-बीजु	एअ, एय (एतद्) ए
अण्णयर, अन्नयर (अन्यतर) अनेरु-बीजु कोई	तुम्ह (युष्मद्) तु
अंतर (अंतर) अंदरनु	अम्ह (अस्मद्) हुं
अवर (अपर) अवर-बीजु	क (किम्) कोण
अहर (अधर) नीचु, बीजु	कइम, कतम (कतम) कयो, केटलाक
इम (इदम्) आ	कयर (कतर) कयो
इयर (इतर) इतर-बीजु	अमु (अदस्) ए
उत्तर (उत्तर) उत्तरदिशा, उत्तरनु	ज (यद्) जे
एग, इक्क, एक्क (एक) एक, बीजु	त, ण (तद्) ते
	दाहिण, दक्खिण (दक्षिण) दक्षिण, दक्षिणनु

४१ आ त्रणे रूपो ' कदा-क्यारे 'ना ज अर्थमा वपराय छे.

७ तंसि तम्सि, तहिं,	तेसु, तेसुं (तेषु)
तम्मि (तस्मिन)	
तत्थ (तत्र)	
ताहे, ताला, ८२तइआ (तदा)	
णसि, णस्सि, णहिं,	णेसु, णेसुं
णम्मि, णत्थ	

त (नान्यतर)

१ तं (तत्)	ताणि, ताइ, ताइँ (तानि)
णं	णाणि, णाइ, णाइँ
२ ,, ,, (,,)	,, ,, ,, (,,)

बाकीनां नरजाति—त—प्रमाणे

क (किम्) नरजाति

१ को (कः)	के (के)
२ कं (कम्)	के, का (कान्)
३ केण, केणं, किणा (केन)	केहि, केहिं, केहिँ (केभि , के)
किण्णा	
४ कस्स, कास (कस्य)	कास, केसिं (केषाम्)
	काण, काणं, (कानाम् ?)
५ कम्हा (कस्मात्)	काओ, काउ
किणो, कीस	काहि, केहि
काओ, काउ	काहिंतो, केहिंतो
	कासुंतो केसुंतो

---

८२ आ त्रणे रूपो 'तदा-त्यारे'ना ज अर्थमा वपराय छे.

[41]त, ण, (तद्) नरजाति

१ स, सो, से (सः)	ते, णे (ते)
२ तं, णं (तम्)	ते, ता (तान्)
	णे, णा
३ तेण, तेणं, तिणा (तेन)	तेहि, तेहिं, तेहिँ (तेभि, तैः)
णेण, णेणं	णेहि, णेहिं, णेहिँ
४ तस्स, तास (तस्य)	सिं, तास, तेसिं (तेषाम्)
	ताण, ताणं, (तानाम् ?)
	णेसिं, णाण, णाणं
५ तो, ताओ, ताउ (ततः)	ताओ, ताउ (ततः)
तम्हा (तस्मात्)	ताहि, तेहि
	ताहितो, तेहिंतो (तेभ्य)
	तासुंतो, तेसुंतो
णाओ, णाउ	णाओ, णाउ
	णाहि, णेहि,
	णाहिंतो, णेहिंतो
	णासुंतो, णेसुंतो
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	

---

४१ प्राकृत भाषामां 'त' अने 'ण' ए बन्ने 'त'ना अर्थमां वपराय छे माटे 'त'नी साथे 'ण'नां रूपो जणावी दीधां छे 'त' अने 'न'–'ण' लखवामां तद्दन सरखा छे तेथी आ 'ण' लिपिदोषने लीधे प्रचलित थयो होय तो ना न कहेवाय. 'त्यां'ने बदले 'न्यां'नो प्रयोग गोहिलवाडमां प्रचलित छे ज

सव्व (नान्यतरजाति)

१ सव्वं (सर्वम्)	सव्वाणि, सव्वाइं, सव्वाइं	(सर्वाणि)
२ ,, (,,)	,, ,, ,,	,,

बाकीनां नरजाति—सव्व—प्रमाणे

ज (यद्) नरजाति

१ जो, जे (य.)	जे (ये)
२ जं (यम्)	जे, जा (यान्)
३ जेण, जेणं (येन) जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ (येभि, य)
४ जस्स, जास (यस्य)	जेसिं (येषाम्) जाण, जाणं (यानाम्?)
५ जम्हा (यस्मात्) जाओ, जाउ (यत.)	जाओ, जाउ (यत) जाहि, जेहि जाहिंतो, जेहिंतो (येभ्य.) जासुंतो, जेसुंतो ,
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७ जंसि, जस्सिं (यस्मिन्) जहिं, जम्मि जत्थ (यत्र) जाहे, जाला, [४०]जइआ (यदा)	जेसु, जेसुं (येषु)

ज (नान्यतर)

१ जं (यत्)	जाणि, जाइं जाइँ (यानि)
२ ,, ,,	,, ,, ,, ,,

बाकीनां नरजाति—ज—प्रमाणे

४० आ त्रणे रूपो 'यदा—ज्यारे'ना ज अर्थमां वपराय छे

अकारांत सर्वनामोने नरजातिमां स्सिं, हिं अने त्थ प्रत्यय उपरांत उक्त ंसि अने म्मि प्रत्ययो पण लागे छे. मात्र 'ए' प्रत्यय प्राय: नथी लागतो.

रूपाख्यान—(सव्व नरजाति)

१ सव्वो, सव्वे (सर्वः)	सव्वे (सर्वे)
२ सव्वं (सर्वम्)	सव्वे, सव्वा (सर्वान्)
३ सव्वेण, सव्वेणं (सर्वेण)	सव्वेहि सव्वेहिं, सव्वेहिँ (सर्वेभिः सर्वैः)
४ सव्वस्स (सर्वस्य)	सव्वेसिं (सर्वेषाम्) सव्वाण सव्वाणं (सर्वाणाम्?)
५ सव्वाओ सव्वाउ सव्वम्हा (सर्वस्मात्)	सव्वाओ, सव्वाउ (सर्वतः) सव्वाहि, सव्वेहि सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो (सर्वेभ्यः) सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो
६ सव्वस्स (सर्वस्य)	सव्वेसिं (सर्वेषाम्) सव्वाण, सव्वाणं (सर्वाणाम् ?)
७ सव्वंसि (सर्वस्मिन्) सव्वस्सिं, सव्वम्मि सव्वहिं, सव्वत्थ (सर्वत्र)	सव्वेसु, सव्वेसुं (सर्वेषु)

———

पाठ ८ मो

अकारांत सर्वादि (नरजाति अने नान्यतर जाति)

सव्व (सर्व)
ज (यद्)
त (तद्)
क (किम्)

अकारांत सर्वनामोना रूपाख्यानो नरजातिमां 'वीर' जेवां अने नान्यतरजातिमां 'कमल' जेवा थाय छे. जे खास विशेषता छे ते, आ नीचे समजुती साथे आपी छे.

१ प्रथमाना बहुवचनमां मात्र एकलु सव्वे (सर्वे), जे (ये), ते (ते), के (के) थाय छे अर्थात् प्रथमाना बहुवचनमां अकारांत सर्वनामो, नरजातिमां 'ए' प्रत्यय ले छे.

६ षष्ठीना बहुवचनमां सव्वेसिं (सर्वेषाम्), जेसिं (येषाम्), तेसिं (तेषाम्), केसिं (केषाम्) पण थाय छे अर्थात् षष्ठीना बहुवचनमां अकारांत सर्वनामो, नरजातिमां उक्त 'ण' उपरांत 'एसिं' प्रत्यय पण ले छे:—

सव्व + एसिं = सव्वेसिं सव्व + ण = सव्वाण.

७ सप्तमीना एकवचनमां सव्वस्सिं, सव्वहिं (सर्वस्मिन्) सव्वत्थ (सर्वत्र) जस्सिं, जहिं (यस्मिन्) जत्थ (यत्र) तस्सिं, तहिं (तस्मिन्) तत्थ (तत्र), कस्सिं, कहिं (कस्मिन्) कत्थ (कुत्र) एम त्रण त्रण रूपो पण थाय छे अर्थात् सप्तमीना एकवचनमां

कलहथी वैर थाय छे
श्रमणो मठमां रहे छे
आंकना पाडाने भूली जइप
छीए
खीर पीओ छो
बळदो पाणीनो कोस
खेंचे छे
राजाना भंडारमां रूपुं छे
पंडित पुरुषो मोक्षने इच्छे छे

बळदना कांधमां धोंसरु
शोभे छे
पंडितो शीलने शोधे छे
पण गोत्रने पूछता नथी
शीलनो मार्ग दुर्लभ छे
बाळको उपाध्याय पासेथी
पाठ भणे छे
भद्र पुरुषो दुःखथी शोक
करता नथी

घाणं गधस्स गहणं वयंति
लोहा मोहो जायइ
दुक्खेसुंतो वेया वि न
रक्खंति
सोत्तं सद्दस्स गहणं वयंति
दुक्खेहिंतो वीहंति पंडिता ?
कायं फासस्स गहणं वयंति
सुक्खेसु मित्तं सुमिरति
समणे महावीरे जयति
मूढो पुणो पुणो वज्झं देक्खइ
पडिता ! खीरं पिवित्था

मूढा कामेसु मुज्झंति
चन्दणस्स रसमापिवति
अप्पाणो अप्पाणस्स मित्तं
किं वहिया मित्तमिच्छसि
पुरिसे वीरियं पुण दुलहं
पुरिसस्स काये पुण दुलहे
अप्पाणं जिणासु संजया !
पुट्ठो पंडिओ जहासुत्तं वदति
पंडिता पुट्ठा न होंति
गीअस्स सद्दं सुणह

चन्द्रओ (चन्द्र) [illegible] बहुवचन [illegible]

तत्तो (तत) [illegible]

कि (किम्) [illegible]

धातु

गवेस् (गवेष) शोधवुं

वस् (वस्) वसवुं-रहेवुं

वय् (वद्) [illegible]

पिव् (पिब) पीवुं

आ+पिद् | आ+पिय् | आ+पिव् } (आ+पिब) पीवुं पीवुं-मर्यादाथी पीवुं-[illegible]

नुकशान न थाय ए रीते [illegible]

जय् (जय) जितवुं

हव् | भव् } (भव) होवुं-थवुं

पढ् (पठ) पढवुं-भणवुं

सोअ | सोच् } (शोच) शोचवुं-विचारवुं, शोक करवो

भण् (भण) भणवुं

घडामां तळावनुं पाणी छे

नटो ढोल साथे मार्गमां नाचे छे

बाळको कातिवडे शोभे छे

जिनो शीलने वखाणे छे

कुहाडावडे चन्दनने छेदुं हुं

गरूडनु जोडुं तळावमां पडे छे

बाळको छींक करे छे

खेतरमां खार छे तेथी फणगा बळी जाय छे

शब्दोनो कोश करुं हुं

गाडावडे नगर भणी जाउं हुं

तृष्णाथी कलह थाय छे अने कलहथी द्वेष थाय छे

संयमी श्रमण सुखोथी हरखातो नथी अने दुःखोथी कोपतो नथी

नटो गीत गाय छे अने नाचे छे

सिंहो अने वाघो तळावनुं पाणी पीए छे

वाघ अने सिंह पांजरामां दोडे छे

भद्र पुरुष शठोने जीते छे

सीस (शीर्ष) शीष–माथु

गुत्त (गोत्र) गोत्र–वश

गहण (ग्रहण) ग्रहण करवानु साधन

पंजर (पञ्जर) पाजरु

सील (शील) सदाचार

लावण्ण / **लायण्ण** (लावण्य) लावण्य–काति

रसायल (रसातल) रसातल–पाताल

कुम्पल / **कुंपल** (कुड्मल) कुपळ–फणगो

रुप्प (रुक्म) रुपु

जुग्म / **जुग्ग** (युग्म) युग्म-जोडु

कम्म (कर्म) काम–कार्य–सारी–नरसी प्रवृत्ति

घाण (घ्राण) नाक–सुघवानु साधन

सयढ (शकट) शकट–गाडु–छकडो

पद / **पय** (पद) पद–पगलु

जुग (युग) धोंसरु

खीर / **छीर** (क्षीर) क्षीर–खीर–दूध

लक्खण / **लच्छण** (लक्षण) लखण–चिह्न

छीअ (क्षुत) छीक

खेत्त / **छेत्त** (क्षेत्र) खेतर–छेतर

सोअ / **सोत्त** (श्रोत्र) श्रोत्र–कान–साभळवानु साधन

वीरिय (वीर्य) वीर्य–बळ–शक्ति

विशेषण

मूढ (मूढ) मूढ–मोहवाळो–अभण–अज्ञानी

पुट्ठ (पुष्ट) पुष्ट

संजय (सयत) सयमवाळो

पुट्ठ (पृष्ट) पूछाएलु

पंडित / **पंडिअ** (पडित) पडित–भणेलो, पज्यो, पोपट पडित

दुलह (दुर्लभ) दुर्लभ–दुल्लभ–मुश्केल

अव्यय

नो (नो) नहि

च / **अ** / **य** (च) अने

बहिआ / **बाहिया** (वहिर्) बहार

जहासुत्तं (यथासूत्रम्) सूत्रमा–शास्त्रमा–कह्या प्रमाणे

पुण / **पुणो** / **उण** (पुन) पुन. पुन–फरी वार

पाठ ७ मो

नर जाति

[३८]घड (घट) घडो
नड (नट) नट
पडह (पटह) पडो-ढोल
भड (भट) भड-शूरो
मोह (मोह) मोह-मूढता
काय (काय) काय-काया-शरीर
सद्द (शब्द) शब्द-साद-अवाज
हरिस (हर्ष) हरख-हर्ष
[३९]मढ (मठ) मढी-मठ-सन्यासी-ओनु रहेठाण
सढ (शठ) शठ-लुच्चो
कुढार (कुठार) कुहाडो
पाढ (पाठ) पाडो-आंकनो पाडो-पाठ
समण (श्रमण) शुद्धि माटे श्रम करनार-सतपुरुष
मोक्ख (मोक्ष) मोक्ष-छूटकारो

वेय (वेद) ऋग्वेद वगेरे चार वेद
फास (स्पर्श) स्पर्श
तलाय (तडाग) तलाव
गरुल (गरुड) गरुड
खार, छार (क्षार) खारो
खंघ (स्कन्ध) कांध-खांध, भाग, मोटी डाळ
पोक्खर (पुष्कर) तळाव
खय (क्षय) क्षय
कोस (कोश) पाणी काढवानो कोस, खजानो
पाण (प्राण) प्राण-जीव
गंघ (गन्ध) गंध
काम (काम) काम-तृष्णा-इच्छा
अप्पाण (आत्मन्) आत्मा-पोते-आप

नान्यतर जाति

जल (जल) जळ-पाणी
रयय (रजत) रजत-रूपु
गीअ, गीत (गीत) गीत, गाएलु

मित्त (मित्र) मित्र
दुक्ख (दुःख) दुःख
सुक्ख (सौख्य) सुख
चारित्त (चारित्र) सच्चारित्र-सद्वर्तन

---

३८ पृ० ८४ नियम १००. ३९ पृ० ८५ नियम १०३.

कुंभार शीआळामां पात्रो
घडे छे
वाघने पींछा नथी होतां
अग्नि वनने बाळे छे
ज्ञानमां मंगळ छे
महावीरने माथावडे वंदन
करुं छुं
राजाने कान नथी
सिंहना हृदयमां भय नथी
हाथी सूंढवडे वनमां फळो
खाय छे

चामडा माटे वाघने हणेछे
हाथीओ बळदोथी बीता नथी
सिंहनुं पूंछडुं लांबुं होय छे
आंखमां क्रोधने जोउं छुं
सूर्य के चंद्र भमता नथी
बळदो शिंगडाथी शोभे छे
चमार चामडाने शुद्ध करे छे
मुखवडे वचनो बोलुं छुं
पुरुष नाना होठथी शोभे छे
वरसाद नित्य पडे छे
वरसाद विना वनो सुकाय छे

अजिणाए वहंति वग्घे
फलाइं भायणम्मि सोहंति
वुहा पुरिसा हियये वेरं
न रक्खंति
निवो वणेसु सिंघे वा वग्घे
वा हणइ
सिवो फलं न खायइ
चंदणस्स वणंसि जामि
कुंभारो नगराओ आगच्छइ
चम्मारो अजिणाए नगरं जाइ

निवस्स मत्थयंमि कमलाणि
छज्जंति
मत्थएण वंदामि महावीरं
वणे गए देक्खह
वग्घस्स वा सीहस्स वा
सिंगं नत्थि
लोहाओ लोहो वड्ढइ
रागा दोसो जायइ
कोहेण पित्तं कुप्पइ

परि+क्कम् (परि+क्रम्) परिक्रमण करवु–परक्रमवु –प्रदक्षिणा फरवी
इच्छ् (इच्छ) इच्छवु
रक्ख् (रक्ष) राखवु–पाळवु
वह् (वह्) वहेवु–वावु

विशेषण

लंब (लम्ब) लांबु
लण्ह (श्लक्ष्ण) नानु
वज्झ (बाह्य) बहारनु–बहार देखातु

अव्यय

न (न) न
३५व (वा) वा–अथवा–के
३६विणा, विना (विना) विना
सया, सइ (सदा) सदा–हमेशा
सह३७ (सह), सद्धिं (सार्धम्) सह–साथे
निच्चं, णिच्चं (नित्यम्) नित्य

वैरथी वैर वधे छे
नगरनी पडखे चंदननुं वन छे
सिंह, के वाघथी शियाळ वीप छे
मांसने माटे सिंहने हणो छो
दांतो माटे हाथीओने मारे
बुद्धनी साथे महावीर बोले

---

३५ व नो उपयोग—बुद्धो व वीरो व कविलो (कपिलः) व सव्वणू.

३६ 'विणा' के 'विना'नी साथे आवता नामने बीजी, त्रीजी के पांचमी विभक्ति लागे छे. मेहं विणा. मेहेण विना. मेहाउ विणा.

३७ 'सह' के 'सद्धिं'नी साथे आवता नामने त्रीजी विभक्ति लागे छे:
बुद्धेण सह. महावीरेण सद्धिं.

णगर
नगर
णयर
नयर } (नगर) नगर–शहेर

मुह (मुख) मुख
पित्त (पित्त) पित्त
सिंग (शृङ्ग) शिंगडुं
फल (फल) फळ
वण (वन) वन
भायण
भाण } (भाजन) भाजन–भाणु–पात्र

मंगल (मङ्गल) मगल
पास (पार्श्व) पासु–पडखु
हियय (हृदय) हृदय–हैयु
गल (गल) गळु
पुच्छ (पुच्छ) पूंछडु–पूछ
पिच्छ (पिच्छ) पीछु
मंस (मांस) मांस
अजिण (अजिन) अजिन–चामडुं
भय (भय) भय–भो
चम्म (चर्म) चामडु

नाम (नरजाति)

सीह
सिंघ } (सिंह) सिंह

वग्घ (व्याघ्र) वाघ
सिगाल
सिआल } (शृगाल) शियाळ

सीआल (शीतकाल) शीआळो
गय (गज) गज–हाथी
वसह (वृषभ) वृषभ–बळद
ओट्ठ (ओष्ठ) ओठ–होठ

दंत (दन्त) दांत
कुंभार (कुम्भकार) कुभार
चम्मार (चर्मकार) चमार
हव्ववाह (हव्यवाह) हव्यवाह–अग्नि
कोह (क्रोध) क्रोध
लोह (लोभ) लोभ
दोस (द्वेष) द्वेष
दोस (दोष) दोष
राग (राग) राग–आसक्ति

धातुओ

घड् (घट्) घडवु–बनाववु
जहा (जहा) छोडवु—त्याग करवो
जागर् (जागृ) जागवु

भक्ख् (भक्ष) भक्षवु–खावु–भरखवु
जाय् (जाय) जन्म थवो–उत्पन्न थवु

पाठ १९	भावे प्रयोग अने कर्मणि प्रयोगना प्रत्ययो, तेमना तमाम रूपो, अनियमित रूपो, स्त्रीलिंगी सर्वनामो, सामान्य शब्दो, भा० वा० .	२८६–२९८
पाठ २०	व्यंजनांत शब्दोनां रूपो, तद्धित प्रत्ययो, तद्धितांत शब्दो, भा० वा०	२९९–३१०
पाठ २१	नामधातुओ, कृदंतो–हेत्वर्थकृदंत, संबंधकभूत कृदंत. विध्यर्थकृदंत, तमाम जातनां वर्तमान कृदंत, भूतकृदंत, भविष्य कृदंत, कर्तृकृदंत, अव्ययो, भा० वा०	३१०–३२८
पाठ २२	संख्यावाचक शब्दो, तेमनां रूपो, भा० वा०...	३२९–३३६

शब्दकोश ३३७–३८५

नाम (नरजाति)	३३७–३४९
नाम (नारीजाति)	३४९–३५३
नाम (नान्यतरजाति)	३५३–३५९
विशेषण	३६०–३६५
संख्यावाचक शब्दो..	३६५–३६९
अव्यय	३६९–३७२
धातु	३७३–३८१

देश्यशब्दो (नरजाति)	३८२–३८३
,, (नारीजाति)	३८३–३८४
,, (नान्यतरजाति)..	३८५

अर्धमागधीनुं साहित्य ३८६–३८८

पाठ ९ 'तुम्ह', 'अम्ह', 'इम' अने 'एअ'ना रूपो, सामान्य शब्दो [1]अ०, वि०, वा०, भा० वा० १९४-२०५
पाठ १० भूतकाळना प्रत्ययो, रूपो, धा०, नामो, वि०, अ०, भा० वा० .. ... . [2]२०६-२१५
पाठ ११ इकारांत तथा उकारांत नामो, तेमना रूपो, सामान्य नामो, वि०, अ०, धा०, भा० वा० २१६-२२५
पाठ १२ भविष्यकाळना प्रत्ययो, रूपो, नामो, वि०, अ०, धा०, भा० वा०... . . २२६-२३४
पाठ १३ भविष्यकाळ, केटलाक अनियमित रूपो, 'अमु'ना रूपो, नामो, वि०, अ०, वा०, भा० वा०... २३५-२४३
पाठ १४ ऋकारांत शब्दो, तेमना रूपो, नामो, सङ्ख्यासूचक वि०, अ०, धा०, भा० वा० .. ... २४३-२५३
पाठ १५ विध्यर्थ अने आज्ञार्थना प्रत्ययो, रूपो, तेमनो उपयोग, धा०, नामो, वि०, अ०, भा० वा० २५३-२५९
पाठ १६ विध्यर्थना खास प्रत्ययो, रूपो, तेमनो उपयोग, अनियमित रूपो, धा०, क्रियातिपत्तिना प्रत्ययो, रूपो, भा० वा० ... ... २६०-२६५
पाठ १७ नारीजातिना रूपो (आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत) रूपोनी समजण, नामो, भा० वा० .. .. २६५-२७७
पाठ १८ प्रेरक भेदना प्रत्ययो, त्रणे काळना रूपो, विध्यर्थ, आज्ञार्थ अने क्रियातिपत्तिना रूपो, धा०, नामो, वि०, भा० वा० ... ... २७७-२८५

---

१ अ०—अव्यय, वि०—विशेषण, धा०—धातुओ.

२ २०८ में पाने 'केटलाक नियमित रूपो'ने बदले 'केटलाक अनियमित रूपो' वाचवु.

ह्रस्वनो दीर्घ ,, १९४ ... ... १२४
दीर्घनो ह्रस्व ,, १९५–१९७ ... १२५
संधि ,, १—२५ ... १२६–१३३
समास ,, १—४ ... १३४–१४५
समासमा ह्रस्वनो दीर्घ ... १४५
,, दीर्घनो ह्रस्व

द्वितीय भाग

पाठ १ वर्तमानकाळ–एकवचनना प्रत्ययो, धातुओ, रूपो तथा भाषांतरनां वाक्यो १४८–१५१
पाठ २ द्विवचनदर्शक 'दु' शब्दनो उपयोग, वर्तमान-काळ–बहुवचनना प्रत्ययो, धातुओ, रूपो तथा भाषांतरवाक्यो १५१–१५४
पाठ ३ ज, जा प्रत्यय, स्वरांत धातुओ, रूपो तथा भा०[1] वा०... ... . १५५–१५८
पाठ ४ 'अस्'ना रूपो, धातुओ, भा० वा० .. १५८–१६०
पाठ ५ धातुओ, भा० वा० सार अने प्रश्नो तथा रूपो १६३–१६५
उवसग्ग तथा धातुओ १६६–१७०
पाठ ५ नरजाति—अकारांत नामना रूपो, तेमनी समजण, नामो, भा० वा०... ... ... १७०–१७५
पाठ ६ नान्यतरजाति—अकारांत नामना रूपो, नामो, धातुओ, विशेषण, अव्यय अने भा० वा० ... १७६–१७९
पाठ ७ नाम (नरजाति, नान्यतरजाति) विशेषण, अव्यय, धातुओ तथा भा० वा० . . . १८०–१८३
८ अकारांत सर्वनाम, तेमना रूपो, सामान्य शब्दो, विशेषण, अव्यय, धातुओ, भा० वा० ... १८४–१९३

---

१ भा० वा० एटले भाषांतरवाक्यो.

विषय						पृष्ठ
प्	,,	,,	१७८	..	...	१०८
व्	,,	,,	१७९	...	...	,,
म्	,,	,,	१८०	...	...	,,
य्	,,	,,	१८१	...	...	,,
र्[१]	,,	,,	१८२	...	...	१०८–११०
ळ्	,,	,,	१८३	...	...	११०
श्	,,	,,	१८४	...	...	११०–१११
ष्	,,	,,	१८५	...	...	१११–११२
स्	,,	,,	१८६	..	...	११२–११४
ह्	,,	,,	१८७	...	...	११४–११५
विसर्ग	,,	,,	१८८	...	...	११५
स्वरभक्ति (सयुक्त व्यजनमा 'अ' 'इ' 'ई' 'उ' स्वरोनु उमेरण			१८९			११६–११८
व्यत्यय (अक्षरोनी आगळ पाछळ फेरवदली)		,,	१९०	...	...	११८–११९
शब्दोनो फेरफार		,,	१९१	.	...	११९–१२०
अनुस्वारनो वधारो		,,	१९२	.	...	१२०–१२१
जातिनो फेरफार		,,	१९३	..	...	१२१–१२३

१ आ फेरफारमां ११० पृष्ठ उपर नीचे प्रमाणे उमेरीने वाचवु.

र्ध्व नो ब्भ, पछी—

र्य नो ज्ज — भार्या – भज्जा	मर्यादा – मज्जाया
कार्य – कज्ज	पर्याय – पज्जाय
वर्य – वज्ज	पर्याप्त – पज्जत्त

र्य नो र—

विषय					पृष्ठ
य 'ना	,,	,,	,, १४४–१४८	...	...९४—९५
र 'ना	,,	,,	,, १४९–१५२	...	...९५—९६
ळ 'ना	,,	,,	,, १५३–१५४	...	... ९६
व 'ना	,,	,,	,, १५५–१५६	...	...९६—९७
श 'ना	,,	,,	,, १५७–१५९	...	. ९७
ष 'ना	,,	,,	,, १६०–१६३	...	.. ९८
स [1] 'ना	,,	,,	,, १६४–१६५	...	...९८—९९
ह 'ना	,,	,,	,, १६६–१६७	...	... ९९
दरना व्यजननो लोप		,,	१६८]	...	.. ९९–१०१
संयुक्त व्यंजनना× फेरफार]					१०२–११५
सयुक्तना फेरफार		नियम	१६९ ...	...	१०२–१०४
,,	,,	,,	१७० ...	...	१०४
,,	,,	,,	१७१ ...	...	,,
,,	,,	,,	१७२ ...	...	१०४–१०५
,,	,,	,,	१७३ ...	...	१०५–१०६
,,	,,	,,	१७४ ...	...	१०६
,,	,,	,,	१७५ ...	...	,,
,,	,,	,,	१७६ ...	...	१०७
,,	,,	,,	१७७ ...	...	१०७–१०८

१ 'स 'ना फेरफारमा आ प्रमाणे वाचवुः

१६४ स नो छ | १६५ स नो ह

'ह 'ना फेरफार

१६६ ह नो घ | १६७ ह नो र

×• आ प्रकरणमां फुदडीना निशानवाळा फेरफार सर्वसाधारण छे.

विषय					पृष्ठ
[व्यंजनोना फेरफार*]				... ...	...७१-१०१
[अन्त्य व्यंजनना फेरफार (नियम ६४-६८)				..	...७१—७२
व्यंजनलोप तथा व्यंजनना डवलपणाना फेरफार		नियम	६९—८४	.	.. ७२—८१
'क'ना	,,	,,	८५—८९	...	...८२—८३
'ख'ना	,,	,,	९०—९१	...	. ८३
'ग'ना	,,	,,	९२—९४	...	.. ८३—८४
'घ'ना	,,	,,	९५	..	.. ८४
'च'ना	,,	,,	९६—९८	...	.. ८४
'ज'ना	,,	,,	९९	...	.. ८४
'ट'ना	,,	,,	१००-१०२	...	.. ८४—८५
'ठ'ना	,,	,,	१०३-१०५	..	. ८५
'ड'ना	,,	,,	१०६	...	..८५—८६
'ण'ना	,,	,,	१०७	...	... ८६
'त'ना	,,	,,	१०८-११५	...	..८६—८८
'थ'ना	,,	,,	११६-११८	...	... ८८
'द'ना	,,	,,	११९-१२४	...	..८८—९०
'ध'ना	,,	,,	१२५-१२६	...	... ९०
'न'ना	,,	,,	१२७-१२९	...	..९०—९१
'प'ना	,,	,,	१३०-१३४	...	...९१—९२
'फ'ना	,,	,,	१३५	...	... ९२
'ब'ना	,,	,,	१३६-१३८	...	...९२—९३
'भ'ना	,,	,,	१३९-१४०	...	... ९३
'म'ना	,,	,,	१४१-१४३	...	... ९३

* गुजराती आंकडामां जणावेला नियमो सर्वसाधारण छे.

अनुक्रमणिका

प्रथम भाग

विषय		पृष्ठ
पुनरपि (प० सुखलालजी)...		५—१०
प्रस्तावना ...		११—१६
अर्धमागधीनो परिचय		१—३९
वर्णविज्ञान		४०—४६
शब्दविभाग		४६—४८
शब्दरचना		४९-१४५
[स्वरोना फेरफार*]		४९—७०
'अ'ना फेरफार	(नियम ૧—૭)	...૪૯—૫૩
'आ'ना ,,	,, ૮-૧૪	...૫૩—૫૬
'इ'ना ,,	,, ૧૫-૧૯	...૫૬—૫૭
'ई'ना ,,	,, ૨૦-૨૫	...૫૭—૫૮
'उ'ना ,,	,, ૨૬-૩૧	...૫૯—૬૦
'ऊ'ना ,,	,, ૩૨-૩૬	...૬૦—૬૧
'ऋ' अने 'ऌ'ना ,,	,, ૩૭-૪૮	...૬૧—૬૪
'ए'ना ,,	,, ૪૯-૫૦	... ૬૪
'ऐ'ना ,,	,, ૫૧-૫૪	...૬૪—૬૫
'ओ'ना ,,	,, ૫૫-૫૭	... ૬૬
'औ'ना ,,	,, ૫૮-૬૨	...૬૭—૬૮
संस्कृत शब्दोना ,,	,, ૬૩]	...૬૮—૭૦

---

* गुजराती आंकडामां जणावेला नियमो सर्वसाधारण छे.